

৭ ২৪২

বাগবাজার রীডিং লাইব্রেরী

তারিখ নির্দেশক পত্র

পনের দিনের মধ্যে বইখানি ফেরৎ দিতে হবে।

পত্রাক	প্রদানের তারিখ	গ্রহণের তারিখ	পত্রাক	প্রদানের তারিখ	গ্রহণের তারিখ
৪০	২২/৮	২২/৮	৩৪৫	১৪/৩	২৪/৩
৩৪১	৩১/৮	১৭/৮	৭১	১৩.১২৩	
১২৮	১১/৮	২২/৮	১৬৪	১১/৮	১৬/৮
১৩৪	২২/৮	২/৯	৭৩১.	৫/১০/৭৪.	
৬৪১	২৪/১/৭৩	১৬/৮			
৩৭৭	২৭/৮	১১/৯			
৩৭৭	২৬/১২	২৭/১২			
৩৭৭	২/১১/৭৪	১২/৭৪			
১৬১	৫/৬	২৪/৬			
৭৫	৫/৩	২৭/৩			
১৫০	২০/৬	২৭/৬			
১৭৭	৮/৬/৭৭	১৭/৬			
১৫৫	১৪/৮	১৭/৮			

करने की एकान्त आवश्यकता है, हमें सतर्क हो जाना चाहिए कि पर्वों के प्रति उदासीन रहकर अपने किसी भी वीर (Hero) की स्थिति पर परदा न पड़ने पावे। हमें इस बात को हृदयंगम करना चाहिए कि जो जाति अपने पर्वों को बिना ज्यादा उत्साह से मनाती है, अपनी वीर-पूजा की साधना में वह उतनी ही भ्रष्टाचारशील होती है और फलस्वरूप वह उतनी ही जाग्रत और सजीव होती है।

“क्रमशः क्रमशः घटनाओं की,—

बन जाती एक कहानी।

पूर्व-स्वरूप बनाकर वह,

रह जाती एक निशानी ॥”

— — —

को भ्रम में डालकर उन्हें पथ भ्रष्ट करते हैं, वस्तुतः वे समाज के घोर शत्रु हैं।
 संसार की गति कुछ ऐसी विचित्र है कि प्रत्येक वस्तु या विषय के विकास के साथ—
 जो प्रारंभ में नितान्त शुद्ध होता है—उसकी विकृति भी प्रारंभ हो जाती है। हम
 देखते हैं कि हिन्दू-संस्कृति के बहुत से ऐसे मत और सम्प्रदाय, केवल १०० या ५०
 वर्ष के भी पुराने नहीं होने पाये कि वे विकृत हो गये। कोई सिद्ध संत महात्मा
 जिस विशाल ज्ञान और अनुभव के आधारपर अपना पंथ चलाता है, उसके सर्व साधारण
 अनुयायी तो उस हद तक ज्ञानवान और क्रियावान नहीं होते, उनमें से बहुसंख्यक
 कर्म केवल निष्ठा और विश्वास के ही कारण उस पंथ का अनुयायी कहलानेका अधिकारी
 हुआ करता है। महात्मागांधी के राष्ट्रवाद तथा उनके अहिंसा-दर्शन को आज
 के गांधी युग में कितने आदमी यथार्थ रूप से समझते हैं? कितने आदमी राष्ट्रवाद
 के सच्चे अर्थ को जानकर तदनुकूल आचरण करने हैं? फिर भी आज देश के
 अन्दर अखिल आदमी गांधी-वादी और राष्ट्र-वादी कहे जाते हैं। राष्ट्रीय सभा में
 देश से अधिक काम करने वाला बहुसंख्यक स्वयं-सेवक वर्ग केवल लक्षण के आधार
 पर ही, केवल अंध विश्वास के ही कारण राष्ट्रीय संस्कृति का महत्व पूर्ण भ्रष्ट माना
 जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लाखों और अरबों वर्ष की प्राचीन हिन्दू-
 संस्कृति में भी विकृति का उत्पन्न होना स्वाभाविक है, फिर भी यत्किंचित् लक्षणिक
 मात्र भी उसका सम्माननीय और गौरव की ही चीज है और उसी साधारण भाव की
 सीढ़ी से आगे बढ़ कर साधारण से साधारण आदमी को उच्च से उच्च धार्मिक-ज्ञान की
 सिद्धि प्राप्त होते हुए देखा जाता है।

हमारा तात्पर्य यह है कि समाज के अन्दर यदि किसी को धर्म-विश्वास, संस्कृति
 और आचार विचार के संबन्ध में दोष दिखाई देते हैं, तो वह स्वयं अपने ज्ञान से,
 अपने कार्य से और अपनी विशुद्धता से स्वयं एक आदर्श बन सकता है; परन्तु उसे
 यह अधिकार नहीं है कि वह स्वयं को ऊंचा उठाये बिना साधारण आदमियों जनता को
 उसके स्वभाविक आचार से विचलित करने का अपराध करे।

अन्त में अपने समाज के पूर्व व्योहारों का प्रकरण समाप्त करते हुए हम यह
 कहते हैं कि अपने हर एक पक्ष के प्रति हमें आकृष्ट होकर उसके रहस्य का ज्ञान प्राप्त

व्रत और पर्व का महत्व

हमारे यहाँ जितने भी पर्व प्रचलित हैं, उनमें भिन्न भिन्न प्रकार के सूप-शास्त्र, पक्वान्ना विधि की व्यवस्थाएँ दी गई हैं, जिनका विस्तृत और साक्षोपाह्व वर्णन, उनका कार्यवर्णन और उद्देश्य तथा उनका इतिहास पुराणों में अंकित है जिसके सम्यक् (एक स्थलीय अथवा एकाज्ञीय नहीं) पठन-पाठन से पर्वों के कार्य-कारण का यथार्थ परिचय प्राप्त होता है ।

अपने अनेकों पर्वों के अवसर पर व्रत आदि रखने का विधान है । कोई व्रत निरुद्धार और निर्जल तथा कोई फलाहार युक्त बनाये गये हैं । व्रतों का विधान औषध तथा शरीर विज्ञान के विचार से, मानसिक स्थिति को शान्त, स्वस्थ और विरजित हीन रखने के लिये रखा गया है तथा उसके अधिकारी की व्याख्या भी सर्वत्र स्पष्ट कर दी गई है अतएव सब समय सबके लिये व्रत रचना कदापि अनिवार्य नहीं है । आजकल पर्वों का विकृत रूप, व्रतों की व्यापकता आदि तथाकथित प्रगतिशील आदमियों की आलोचना का विषय बन रहे हैं । हम मानते हैं कि इस प्रकार की बाधागर्दी आलोचना का विषय है, परन्तु उसके मौलिक उद्देश्य को न समझ कर की जाने वाली आलोचना का कोई अर्थ ही नहीं होता । विकृत रूप में ही सही, हमारे पर्व उसी रूप में जीवित तो हैं, हमारा वीर-पूजा का आदर्श तो कायम है, इसी प्रकार दानपुण्य, नियम संयम-व्रत और गंगा स्नान के उल्टे सोपे रूप से हिन्दुत्व का एक अस्तित्व तो बना ही हुआ है, और सब पूछिये तो “अकणात् मन्द कारणं श्रेयम्” (Some thing is better than nothing) के ही न्याय से हजारों वर्षों तक आपदाओं से टकरा लेती हुई हिन्दू संस्कृति आज भी कायम है अतएव जो लोग अपनी संस्कृति के मौलिक आदर्श और तत्व की जानकारी नहीं रखते उन्हें न तो हमारी रुढ़ियों, प्रचलनों, व्रतों और पर्वों की आलोचना करने का ही अधिकार है और न उनके सुधार का ही, क्योंकि जिसे मूल का ही ज्ञान नहीं वह सुधार क्या करेगा ? जो लोग विशाल-हिन्दुत्व के विषय में कुछ भी ज्ञान न रखते हुए भी व्रत, पूजा, पर्व, गंगास्नान, श्राद्ध-तर्पण, यज्ञ हवन और दान-पुण्य के कार्यों की आलोचना करते हुए इन्हें व्यर्थ बताकर सर्व-साधारण श्रद्धालु और विश्वासु ब्रह्मचारी

कई कई ऐतिहासिक घटनाओं का स्मारक बन गया है। वेवता-वाह के आधार पर भी कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिसका किसी वेवता के साथ सम्बन्ध न हो। आसुवे तथा काम-विश्राव की रीति से भी प्रत्येक दिन जी और पुरुष के लिये विशेष तथा नवीन अवस्था का होता है, जिसका सीधा सम्बन्ध चांद्रमास सोम-तत्त्व से रहता है, इसलिये मनुष्य के लिये प्रत्येक दिन एक विशेष अवस्था का पर्व ही होता है।

हिन्दू-समाज की प्रचलित १५ तिथियों में सभी कई प्रकार के पर्व हैं। उन प्रकारों में एक साधारण प्रचलित प्रकार यह है :—

अमावस्या—पितरों की, प्रतिपदा—ब्रह्मा की, द्वज—अश्विनीकुमारों की, तीस—गौरी की, चौथ—गणेश की, पंचमी—नागों की, छठ—स्वामि कार्तिक की, सप्तमी—सप्त ऋषियों की, नवमी—दुर्गा की शक्तियों की, दशमी—कुलदेवों की, एकादशी—विष्णु की, द्वादशी—वामनावतार की, त्रयोदशी—महादेव की, चतुर्दशी—रुद्र की तथा पूर्णिमा—चन्द्रमा की होती है।

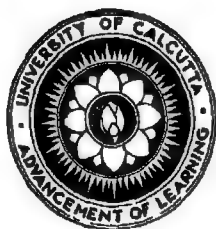
अगर जितने पर्व गिनाये गये हैं, समग्र हिन्दू-समाज में वे चलते हैं। भेद सिर्फ इतना है कि कहीं कहीं कोई पर्व विशेष निरुक्षित रूप में मनमा जाता है और कहीं कहीं वह उतना निरुक्षित नहीं है। देश, काल और वायु, जल तथा भाषा के भेद से विधियाँ भी भूयक सी जान पड़ती हैं; परन्तु सांस्कृतिक आदर्श सामूहिक रूप से एक ही है। उदाहरणार्थ हम देखते हैं कि चैत्र शुक्ल तृतीया को हमारे मारवाड़ी समाज में “गनगौर” का पर्व कहा जाता है। इस अवसर पर सब सुहागिन विश्वा शिव-पार्वती की मूर्ति बनाकर पूजती हैं, सयारोह में दान-पुष्प और गान आदि करती हैं। सद्यः विवाहिता लज्जाओं के लिये “गनगौर” विशेष अभिलाषा का प्रथम आनन्द जाता है, जब कि उत्तर भारत के हिन्दू-वर्गों में यह पर्व वैसे समारोह के साथ नहीं मनाया जाता और वहां भाद्रपद शुक्ल ३ को “कजली तोज” नाम से “गनगौर” के समकक्ष मानकर पूजा होती है, फिर भी मारवाड़ में कजली तोज या हर-विष्णु के समकक्ष मानकर पूजा होती है, तथा उत्तर भारत में चैत्र शुक्ल ३ के गौरी-पूजन से कोई हिन्दू समकक्ष नहीं है, अर्थात् पूजन सर्वत्र होता है।

বাস্তব সাহিত্যের কথা

শ্রীশ্রীকুমার সেন

এম-এ, পি-এইচ-ডি

অধ্যাপক, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়



কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃক প্রকাশিত

১৯৩৯

Published by the University of Calcutta and Printed by S. N. Guha
Ray at Sree Saraswati Press Ltd., 1, Ramanath Mazumder
Street, Calcutta.

✓ 782
Acc 22/2/06
25/2/2003

॥ স্বর্গতা কনিষ্ঠা ভগিনী ভক্তির অরণ্যে ॥
(১৩১৭—১৩২৬)

সূচীপত্র

বিষয়	পৃষ্ঠা
ভূমিকা	১৮০
প্রথম পরিচ্ছেদ	.

দশম হইতে ত্রয়োদশ শতাব্দী

- § ১ বাঙ্গালা সাহিত্যের আদি যুগ : বাঙ্গালাদেশে
রচিত সংস্কৃত কাব্য—জয়দেবের গীতগোবিন্দ—বাঙ্গালা
ভাষার উৎপত্তি—বৌদ্ধসিদ্ধাচার্যদের রচিত বাঙ্গালা গান। ১—৫
- § ২ তুর্কী অভিযানের পরে : তুর্কী আক্রমণের কল—
বাধীন সুলতান রাজ্যের প্রতিষ্ঠা—সুলতান ও উচ্চ রাজ-
কর্মচারিকর্তৃক বাঙ্গালাদেশে বিজ্ঞা ও সাহিত্য চর্চার
পোষকতা—বিবিধ বাঙ্গালা কাব্যধারার উৎপত্তি—
পাচালী কাব্য—পঞ্চদশ শতাব্দীতে বাঙ্গালা সাহিত্যের
অবস্থা। ৫—৭

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ

পঞ্চদশ শতাব্দী

- § ৩ কুন্তিবাস ওঝা ও মালাধর বন্দু : রামায়ণ
কাহিনীর লোকপ্রিয়তা—কুন্তিবাসের জীবনী—রাজা
গণেশের পুত্র যদু বিজ্ঞোৎসাহিতা—মালাধর বন্দুর
জীবনী—শ্রীকৃষ্ণবিজয় কাব্য রচনা—সৈয়দ হোসেনের
রাজ্যলাভ। ৮—১২

- § ৪ পঞ্চদশ শতাব্দীর শেষ, ষোড়শ শতাব্দীর
প্রারম্ভ—হোসেনশাহী আমল : চতুর্ভুজের হরি-
রচিত কাব্য—যশোব্রাহ্ম খানের শ্রীকৃষ্ণবিজয় কাব্য—

বিষয়

পৃষ্ঠা

মনসামঙ্গল কাহিনী—বিজয় গুপ্তের মনসামঙ্গল—বিগ্র-
দাসের মনসামঙ্গল—লক্ষ্মণ পরাগল খানের পৃষ্ঠপোষকতায়
কবীজ্ঞ কত্বক ভারত-পাঁচালী বা মহাভারত কাব্য
রচনা—পরাগলের পুত্রের পৃষ্ঠপোষকতায় ত্রীকর নন্দী
কত্বক স্বতন্ত্রভাবে অশ্বমেধ-পর্ব রচনা—হোসেন শাহের
পৌত্র ফীকজ শাহের পৃষ্ঠপোষকতায় ত্রীধর কত্বক বিজ্ঞা-
সুন্দর রচনা ।

১৩—২০

§ ৫ বড়ু চণ্ডীদাস ও তাঁহার কাব্য ত্রীকৃষ্ণকীর্তন :
পুঁথির আবিষ্কার ও প্রকাশ—চণ্ডীদাসের উপাখ্যান—
ত্রীকৃষ্ণকীর্তনের রচনাকাল—কাব্যটির বিশেষত্ব ।

২১—২৪

তৃতীয় পরিচ্ছেদ

ষোড়শ শতাব্দী

§ ৬ চৈতন্ত্যদেব ও তাঁহার প্রভাব : শ্রীচৈতন্ত্যদেব
জন্মের সময় দেশের অবস্থা—শ্রীচৈতন্ত্যের জীবনী—তাঁহার
প্রধান পারিষদবর্গ—হরিদাসের কথা—রঘুনাথ দাসের
কথা—সনাতন, রূপ ও জীব গোস্থামী—শ্রীচৈতন্ত্যের
প্রবর্তিত ধর্মের বিশেষত্ব ।

২৫—৩৫

§ ৭ বৈষ্ণব গীতিকাব্য : ব্রজবুলি ভাষার উদ্ভব ও
ব্যবহার—রাধাকৃষ্ণলীলা ও শ্রীচৈতন্ত্যজীবনীবিষয়ক পদ
রচনা—বাক্সালা সাহিত্যে নূতন যুগের অবতারণা—আদি
পদকর্তৃগণ—ভাগবত আচাধ্যের কৃষ্ণপ্রথমতরঙ্গিনী—মাধব
আচাধ্যের এবং কৃষ্ণদাসের ত্রীকৃষ্ণমঙ্গল কাব্য ।

৩৬—৩৯

§ ৮ শ্রীচৈতন্ত্য-জীবনী : মুরারি গুপ্ত রচিত সংস্কৃত
কাব্য—পরমানন্দ সেন করিকর্ণপুর রচিত সংস্কৃত কাব্য ও
নাটক—বৃন্দাবনদাসের চৈতন্ত্যভাগবত—লোচন দাসের

বিষয়

পৃষ্ঠা

চৈতন্যমঙ্গল—কৃষ্ণদাস কবিরাজের চৈতন্যচরিতামৃত—
জয়ানন্দের চৈতন্যমঙ্গল—গোবিন্দদাসের কড়চা—অদ্বৈত
আচার্যের জীবনী, দিব্যসিংহের বালালীলাসুন্দর, ঈশান
নাগরের অদ্বৈতপ্রকাশ, হরিচরণ দাসের অদ্বৈতমঙ্গল—
আচার্যাপত্নী সীতাদেবীর জীবনীকাব্য—বৈষ্ণব সাধনা-
ঘটিত বিবিধ গ্রন্থ—লোচন দাসের ছন্দভাসার—কবি-
বল্লভের রসকদম্ব।

৪০—৪৬

§ ৯ চণ্ডীমঙ্গল ও অপরাপর শাক্ত কাব্য: চণ্ডীমঙ্গল
কাহিনীদ্বয়, কালকেতুর কাহিনী ও ধনপতির উপাখ্যান—
মাণিক দত্তের চণ্ডীমঙ্গল—মাধব আচার্যের চণ্ডীমঙ্গল—
মুকুন্দরাম চক্রবর্তী কবিকঙ্কণের চণ্ডীমঙ্গল—মুকুন্দরামের
আত্মকাহিনী—কাব্যের রচনাকাল—বংশীবদন চক্রবর্তীর
মনসামঙ্গল—বংশীবদন ও তাহার কন্যা চন্দ্রাবতীর কাহিনী
—নারায়ণ দেবের মনসামঙ্গল ও কালিকাপুরাণ।

৪৬—৫৬

চতুর্থ পরিচ্ছেদ

সপ্তদশ শতাব্দী

§ ১০ আদি মোগল শাসন—উপক্রমগিকা: মোগল
শাসনের প্রভাব—বৈষ্ণবধর্মের প্রসার—ত্রিনিবাস
আচার্য—নরোত্তম দত্ত—শ্রীমানন্দ।

৫৭—৬১

§ ১১ বৈষ্ণব পদাবলী, জীবনী ও বিবিধ কাব্য:
গোবিন্দদাস কবিরাজ, গোবিন্দদাস চক্রবর্তী ইত্যাদি—
বীরচন্দ্র, ত্রিনিবাস আচার্য, নরোত্তম দত্ত এবং শ্রীমানন্দের
জীবনী, নিত্যানন্দ দাসের বীরচন্দ্রচরিত ও প্রেমবিলাস,
গুরুচরণ দাসের প্রেমামৃত, যদুনন্দন দাসের কর্ণানন্দ ও
অশ্রান্ত কাব্য, গতিগোবিন্দের বীররত্নাবলী, রাজবল্লভের

বিষয়

পৃষ্ঠা

বংশীবিলাস বা মুরলীবিলাস, গোপীবল্লভ দাসের রসিক-
মঙ্গল—জগদীশচরিত্রবিজয়—মনোহর দাসের অমরাগবলী
—“দুঃখী” শ্রীমদাসের গোবিন্দমঙ্গল—পরশুরাম চক্রবর্তীর
শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল—অভিরাণের গোবিন্দমঙ্গল—“দ্বিজ” হরি-
দাসের মুকুন্দমঙ্গল ও অশ্বমেধ-পর্ব—ভবানন্দের হরিবংশ
—নন্দকিশোর দাসের রসপুষ্পকলিকা বা রসকলিকা, রাম-
গোপাল দাসের রাধাকৃষ্ণরসকল্পবলী বা রসকল্পবলী, পীতাম্বর
দাসের রসমঞ্জরী ও অষ্টরসব্যাখ্যা—মনোহর দাসের দিনমণি-
চন্দ্রোদয়—কাশীরাম দেবের জীবনী—শ্রীকৃষ্ণকিরণের
শ্রীকৃষ্ণবিলাস ও ভক্তিভাবপ্রদীপ—কাশীরামের কাব্য ও
ভাষার রচনাকাল—গদাধরের জগন্নাথমঙ্গল বা জগৎ-
মঙ্গল—ঘনশ্যাম দাসের, কৃষ্ণানন্দ বহুর ও অনন্তমিশ্রের
অশ্বমেধ-পর্ব—বিশারদের বিরাট-পর্ব—নিত্যানন্দ ঘোষের
মহাভারত কাব্য—অদ্ভুত আচার্যের রামায়ণ কাব্য। ৬২—৬৩

§ ১৩ (—১২) বিবিধ শাস্ত্র কাব্য : ক্ষমানন্দ কেতকা-
দাসের মনসামঙ্গল—দ্বিতীয় ক্ষমানন্দের মনসামঙ্গল—
বিষ্ণু পালের মনসামঙ্গল—কালিদাসের মনসামঙ্গল—
জগজ্জীবন ঘোষালের মনসামঙ্গল—“দ্বিজ” জনাৰ্দ্দনের
মঙ্গলচণ্ডী-পাঁচালী—“দ্বিজ” কমললোচনের চণ্ডিকামঙ্গল
বা চণ্ডিকাবিজয়—ভবানীপ্রসাদ রায়ের দুর্গামঙ্গল—
রূপনারায়ণ ঘোষের দুর্গামঙ্গল—গোবিন্দদাসের কালিকা-
মঙ্গল—“দ্বিজ” রত্নদেবের মৃগলুক—কবিচন্দ্রের শিবায়ন
বা শিবমঙ্গল—কৃষ্ণরাম দাসের কালিকামঙ্গল, বঙ্গীমঙ্গল ও
রায়মঙ্গল—রায়মঙ্গল কাহিনী। ৬৩—৭৪

§ ১৪ (—১৩) বাঙ্গালী মুসলমান কবি : নসীর হামুদ,
সৈয়দ মর্ত্তজা, আলি রাজা—আরাকান রাজসভায়
সাহিত্যচর্চা—দৌলৎ কাজীর সতী ময়নামতী বা

বিষয়

পৃষ্ঠা

লোবচছানী—আলাওলেব পদ্মাবতী, মৈতুলমূলক
বদিউজ্জমাল, হস্ত পৈকব ও তোহ্কা—মৈয়দ মূলতানেব
জ্ঞানপ্রদীপ, নবীবাংশ, শবে মেযেরাড বা ওফাং রসুল
বা হজবং মহম্মদ-চরিত—শেখ চাদেব বসুলবিজয়—
শাহ্ মহম্মদ সগীবেব ইউসুফ-জোলেখা—মহম্মদ খানেব
মকতুল-হোসেন—আবদুল নবীব আমীব-হামজ। ৭৫—৭৭

§ ১৫ (—১৪) ধর্মঠাকুরের ছড়া ও ধর্মমঙ্গল কাব্য :

ধর্মপূজাব উদ্ভব—বিভিন্ন কাব্যে ধর্মপূজকদেব সৃষ্টিতত্ত্ব-
কাহিনী—ধর্মপূজাব প্রচলনেব স্থান—ধর্মপূজাব পরিণতি
—ধর্মপূবাণ বা ধর্মপূজাবিধান গ্রন্থ—শূত্রপূরাণ—শূত্র-
পূবাণেব কাল নির্ণয়—ধর্মমঙ্গল কাব্যেব ঐতিহাসিকতা।
বিচাব—ধর্মমঙ্গল কাহিনী—খেলাবামেব ধর্মমঙ্গল—
সীতারাম দাসেব ধর্মমঙ্গল—রূপরামেব ধর্মমঙ্গল—
রূপরামেব আত্মকাহিনী ও কাব্যবচনাব ইতিহাস। ৭৭—৮২

পঞ্চম পরিচ্ছেদ

অষ্টাদশ শতাব্দী

§ ১৬ (—১৫) নবাবী আমল—ভূমিকা : সাহিত্যে
নূতনত্ব—গল্প বচনাব সূত্রপাত, খ্রীষ্টানী পুস্তিকা—দোম
আন্তেনিওর ব্রাহ্মণ-বোমানক্যাথলিক-সংবাদ—মানোএল
দা আদম্প্পাসাও রচিত বাঙ্গালাভাষাব ব্যাকরণ, বাঙ্গালা
পোর্ভুগীজ শব্দকোষ ও রূপার শাস্ত্রেব অর্থভেদ—সাহিত্যে
পূর্বাভ্রবৃতি—মুসলমান কবি—হাযাৎ মামুদেব চিন্তাউত্থান,
মহবম পর্ব, হেতুজ্ঞান ও আশ্রিয়াবাণী। ৯০—৯২

§ ১৭ (—১৬) পদাবলী, পদসংগ্রহ গ্রন্থ, ত্রীকুসুমঙ্গল
ও বিবিধ বৈষ্ণব কাব্য : প্রধান পদকর্তৃগণ—

বিষয়

পৃষ্ঠা

বিষয়মাখ চক্রবর্তীর ক্ষবদা গীতচিন্তামণি—নরহরি চক্রবর্তীর
 গীতচন্দ্রোদয়—রাধামোহন ঠাকুরের পদ্যমৃতলম্ব—
 গৌরসুন্দর দাসের কীর্তনানন্দ, দীনবন্ধু দাসের সতীকর্তনামৃত,
 রাধামুকুন্দ দাসের মুকুন্দানন্দ—কমলাকান্তের পদ্যব্রাহ্মণ,
 নিয়মানন্দ দাসের পদ্যরসসার—“বৈষ্ণবদাস” গোবুলানন্দ
 সেনের পদকল্পতরু—কবিচন্দ্র চক্রবর্তীর গোবিন্দমঙ্গল ও
 বিবিধ কাব্য—গোপালসিংহের শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল—বলরাম
 দাসের কৃষ্ণলীলামৃত—বৈষ্ণবগ্রন্থের অম্বুবাদকারী
 কৃষ্ণদাস—শচীনন্দন বিজ্ঞানিধির উজ্জলচন্দ্রিকা—পূর্ণাঙ্গের
 অম্বুবাদকারিগণ, দ্বারকা দাস, গয়্যারাম দাস, রামলোচন,
 অনন্তরাম দত্ত, রামেশ্বর নন্দী, নন্দকিশোর দাস, মহারাজা
 জয়নারায়ণ ঘোষাল—বিষ্ণুদত্ত দাসের ও “দ্বিজ” মধুকঠোর
 অগম্যামঙ্গল।

২৩—২৬

§ ১৮ (—১৭) বৈষ্ণবজীবনী : “প্রেমদাস” পুরুষোত্তম
 মিশ্র সিদ্ধান্তবাগীশের চৈতন্যচন্দ্রোদয়কৌমুদী এবং
 বংশীশিখা—নরহরি চক্রবর্তীর ভক্তিরত্নাকর, নরোত্তম-
 বিলাস ও অন্তান্ত গ্রন্থ—কৃষ্ণচরণ দাসের ও অগ্র এক
 লেখকের শ্রীমানন্দপ্রকাশ—বনমালী দাসের জয়দেবচরিত্র।

২৬—২৮

§ ১৯ (—১৮) রামায়ণ ও মহাভারত কাব্য :
 বিবিধ রামায়ণ কাব্যের কবি, কবিচন্দ্র চক্রবর্তী,
 “হনুমন্তদাস” রামগোবিন্দ, মহানন্দ চক্রবর্তী, ভবানীশ্বর
 বন্দ্য, “ভিক্ষু” রামচন্দ্র, রামপ্রসাদ বন্দ্য, “দ্বিজ” ভবানীনাথ,
 “দ্বিজ” সীতাপ্রসাদ, কৃষ্ণদাস, কৈলাস বহু, শিবচন্দ্র সেন,
 ক্ষত্রিয়রাম কবিকৃষ্ণ, রামানন্দ ঘোষ—মহাভারত কাব্যের
 ও মহাভারত কাহিনীবিশেষের কবি, কবিচন্দ্র চক্রবর্তী,
 বঙ্গীশ্বর সেন ও তৎপুত্র গঙ্গাদাস, “জ্যোতিষ ব্রাহ্মণ”
 বাহুদেব, ত্রিলোচন চক্রবর্তী, দৈবকীনন্দন, কৃষ্ণরাম,

বিশয়

পৃষ্ঠা

বামচন্দ্র খান, গোপীনাথ পাঠক, বাজীব সেন, গোপীনাথ দত্ত, লোকনাথ দত্ত, বামনাবায়ণ ঘোষ, বাজেন্দ্র দাস। ১৮—১৯০

§ ২০ (—১৯) বিবিধ শাক্ত কাব্য : মনসামঙ্গলের কবি, রামজীবন বিত্তাভূষণ, জীবনকৃষ্ণ মৈত্র, বাজা বাজসিংহ—বামজীবনের আদিত্যচরিত বা সূর্য্যমঙ্গল—রাজা বাজসিংহের বাজমালা ও ভাবভীমঙ্গল—চণ্ডীমঙ্গলের কবি, কৃষ্ণজীবন, মুক্তারাম সেন, ভবানীশঙ্কর দাস, বামানন্দ গোস্বামী—দুর্গাসম্প্রদায়ের কবি, শিবচন্দ্র সেন, হরিশ্চন্দ্র বসু, রামশঙ্কর দেব, জগদ্রাম বন্দ্য ও তৎপুত্র বামপ্রসাদ, হরিনাবায়ণ দাস—দীনদয়ালের দুর্গাভক্তি-চিন্তামণি। ১০০—১০২

§ ২০ (—২১) ধর্ম্মমঙ্গল কাব্য ও ধর্ম্মপুর্বাণ : ঘনবাম ও তাঁহাব ধর্ম্মমঙ্গল—ধর্ম্মমঙ্গলের অপর কবি, বামচন্দ্র বন্দ্য, নবসিংহ বসু, হৃদয়বাম সাউ, বামদাস আদক, গোবিন্দবাম বন্দ্য, “দ্বিজ” ক্ষেত্রনাথ, “দ্বিজ” নিধিরাম—মানিকবাম গাঙ্গুলীর ধর্ম্মমঙ্গল—সহদেব চক্রবর্ত্তীর ধর্ম্মপুর্বাণ। ১০২—১০৪

§ ২২ (—২১) শিবায়ন, সত্যনারায়ণের পাঁচালী এবং বিবিধ কাব্য : বামেশ্বর ভট্টাচার্য্যের শিবায়ন—বামকৃষ্ণ দাস কবিচন্দ্রের ও বামরাম দাসের শিবায়ন—সত্যনাবায়ণ পাঁচালীর উদ্ভব—সত্যনারায়ণ পাঁচালীর কবি, ঘনবাম চক্রবর্ত্তী, বামেশ্বর ভট্টাচার্য্য, ফকিররাম কবিত্বষণ বিকল ভট্ট, “দ্বিজ” বামকৃষ্ণ, ভারতচন্দ্র বায় গুণাকর, কবিরাজ, জয়নারায়ণ সেন—কৃষ্ণহরি দাসের কাব্যের কাহিনী—অত্যান্ত পীরের ও তজ্জাতীয় গান—গঙ্গামঙ্গলের কবি, গোবাক্ষ শর্মা, জয়রাম দাস, “দ্বিজ” কমলাকান্ত, শঙ্কর আচার্য্য, দুর্গাপ্রসাদ মুখুটি—সূর্য্যমঙ্গলের কবি,

বিষয়

পৃষ্ঠা

রামজীবন বিজ্ঞানভূষণ, “দ্বিজ” কালিদাস—সরস্বতীমঞ্জলের
কবি, দয়ারাম, “দ্বিজ” বীরেশ্বর,—“দ্বিজ” ধনঞ্জয়েণ
কমলামঙ্গল—বিবিধ স্থানীয় দেবতাবিষয়ক কবিতা বা
ছড়া।

১০৫-১০৮

§ ২৩ (—২২) বিজ্ঞানসুন্দর কাব্য : ভারতচন্দ্র ও
রামপ্রসাদ : বিজ্ঞানসুন্দর কাহিনীর সমাদরের হেতু—
বিজ্ঞানসুন্দর কাব্যের কবি, বলরাম কবিশেখর, ভারতচন্দ্র
রায় গুণাকর, রামপ্রসাদ সেন কবিরঞ্জন, নিধিরাম আচার্য্য,
প্রাণরাম চক্রবর্তী—সংক্ষেপে বিজ্ঞানসুন্দর কাহিনী—
তাহার মূল—ভারতচন্দ্র ও তাহার কাব্য—রামপ্রসাদ ও
তাহার কাব্য।

১০৯-১১২

§ ২৪ (—২৩) শৈব সিদ্ধাদিগের গাথা : গোবিন্দচন্দ্র-
ময়নামতীর কাহিনী—কাহিনীর ব্যাপক সমাদর—
দ্বিজভ মল্লিক ও অগ্রান্ত কবির পাচালী।

১১৩-১১৪

§ ২৫ (—২৪) অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষার্ধ্বে—
মুগসন্ধি : গল্প রচনার সূত্রপাত—বাঙ্গালা ছাপা হরফের
সৃষ্টি ও প্রথম ব্যবহার—মুদ্রিত পুস্তকের উপযোগিতা—
বাঙ্গালা সাহিত্যের অবস্থা।

১১৪-১১৬

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ

উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমার্ধ্বে—কোম্পানী আমল

§ ২৬ (—২৫) বাঙ্গালা গল্পের আদিযুগ—ফোর্ট
উইলিয়াম কলেজের পাঠ্যপুস্তক : বাঙ্গালা গল্পের
অনুশীলন—ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের শিক্ষকদের
কৃতিত্ব—মৃত্যুঞ্জয় বিজ্ঞানকার—রাজা রামমোহন রায়—
মহারাজা রাধাকান্ত দেব।

১১৭-১১৯

বিষয়

পৃষ্ঠা

§ ২৭ (-২৬) সাময়িক পত্রের আবির্ভাব ও
প্রভাব—ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত : কলেজি গল্পের প্রসারের
অন্তরায়—সাময়িক-পত্রের প্রবর্তন—সাময়িক-পত্রের
উপযোগিতা—ভবানীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়—ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত
—ঈশ্বরচন্দ্রের রচনার মূল্য।

১২৫—১২৪

সপ্তম পরিচ্ছেদ

উনবিংশ শতাব্দীর শেষার্ধ্বে

§ ২৮ (-২৭) ঈশ্বরচন্দ্র বিজ্ঞানাগর ও বাল্লা
গল্পের প্রতিষ্ঠা : উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমভাগের
বাল্লা গল্পের পদ্ধতি—কৃষ্ণমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়—
বাল্লা গল্পের পদ্ধতি মোচনে বিজ্ঞানাগর মহাশয়ের
কৃতিত্ব—বিজ্ঞানাগর মহাশয়ের রচনা—তঁাহার গল্পপদ্ধতি
—অক্ষয়কুমার দত্ত—রাজেন্দ্রলাল মিত্র—তারানাথ
তর্করত্ন—রামগতি জায়রত্ন—দ্বারকানাথ বিজ্ঞানভূষণ—
কালীপ্রসন্ন সিংহ—ভূদেব মুখোপাধ্যায়—রাজনারায়ণ বসু
—কৃষ্ণকমল ভট্টাচার্য্য।

১২৫—১৩৩

§ ২৯ (-২৮) বাল্লা কাব্যের অভ্যুদয় : প্রাচীন
পন্থার কবি, রঘুনন্দন গোস্বামী, মদনমোহন তর্কালঙ্কার—
উভয় পন্থার কবি, ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত—আধুনিক পন্থার কবি,
রত্নলাল বন্দ্যোপাধ্যায়, দীনবন্ধু মিত্র, কৃষ্ণচন্দ্র মজুমদার। ১৩৩—১৩৬

§ ৩০ (-২৯) বাল্লা নাটকের উদ্ভব ও বিকাশ :
প্রাচীন কালের নাট্যগীত—যাত্রার উদ্ভব—বাল্লা
নাটকের উৎপত্তি—বাল্লা নাটকের প্রথম অভিনয়—
প্রথম যুগের বাল্লা নাট্যকার, নীলমণি পাল, হরচন্দ্র
মোষ, কালীপ্রসন্ন সিংহ, নন্দকুমার রায়, রাজনারায়ণ তর্ক-
রত্ন—মধুসূদন দত্ত—দীনবন্ধু মিত্র—মনোমোহন বসু। ১৩৬—১৪৩

§ ৩১ (= ৩০) কোতুক ও ব্যঙ্গরচনা : 'টেকচাঁদ
ঠাকুর'—কালীপ্রসন্ন সিংহ।

১৪৩—১৪৫

§ ৩২ (= ৩১) মধুসূদন ও তাঁহার পরবর্তী বাঙ্গালা

কাব্য : মধুসূদনের সাহিত্যসাধনার কাহিনী—

মধুসূদনের কৃতিত্ব—বিহারীলাল চক্রবর্তী—সুরেন্দ্রনাথ

মজুমদার—হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়—নবীনচন্দ্র সেন। ১৪৫—১৫৫

§ ৩৩ (= ৩২) বঙ্কিমচন্দ্র ও তাঁহার যুগ : বঙ্কিম-

চন্দ্রের সাহিত্যজীবনের কাহিনী—বঙ্কিমচন্দ্রের কৃতিত্ব—

রাজকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়—অক্ষয়চন্দ্র সরকার—সঞ্জীবচন্দ্র

চট্টোপাধ্যায়—রমেশচন্দ্র দত্ত—তারকনাথ গঙ্গোপাধ্যায়—

ইন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়—যোগেন্দ্রচন্দ্র বসু—কালীপ্রসন্ন

ঘোষ—হরপ্রসাদ শাস্ত্রী—রজনীকান্ত গুপ্ত—জ্যোতিরিন্দ্র-

নাথ ঠাকুর—জোড়াসাঁকোর ঠাকুর-বাড়ী। ১৫৫—১৬৩

§ ৩৪ (= ৩৩) বাঙ্গালা নাটকের মধ্যযুগ, গিরিশচন্দ্র ও

তাঁহার সহকর্মীগণ : গিরিশচন্দ্র ঘোষের কৃতিত্ব—অযুত-

লাল বসু—কীর্ত্তিপ্রসাদ বিদ্যাবিনোদ—দ্বিজেন্দ্রলাল রায়। ১৬৩—১৬৫

§ ৩৫ (= ৩৪) রবীন্দ্রনাথ : রবীন্দ্রনাথের সাহিত্য-

সাধনার ইতিহাস—রবীন্দ্রনাথের কৃতিত্ব।

১৬৬—১৭৪

§ ৩৬ (= ৩৫) রবীন্দ্র-সমনাময়িক আধুনিক যুগ :

শরৎচন্দ্র : রবীন্দ্রনাথের প্রভাবের ব্যাপকতা—অক্ষয়-

কুমার বড়াল—দেবেন্দ্রনাথ সেন—সত্যেন্দ্রনাথ দত্ত—

দ্বিজেন্দ্রলাল রায়—রামেন্দ্রসুন্দর ত্রিবেদী—শ্রীশচন্দ্র

মজুমদার—রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়—প্রভাতকুমার

মুখোপাধ্যায়—জৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায়—শরৎচন্দ্র

মুখোপাধ্যায় ও তাঁহার কৃতিত্ব।

১৭৪—১৭৮

প্রধান প্রধান প্রাচীন বাঙ্গালা কাব্যের কালানুক্রমিক নির্ধারক

১৮১—১৮৩

ভূমিকা

বাংলা সাহিত্যের ইতিহাস সম্বন্ধীয় গ্রন্থের অভাব নাই। কিন্তু স্বল্পপরিসরের মধ্যে সর্বজনপাঠ্য প্রামাণ্য ধারাবাহিক ইতিহাসের বিশেষ অভাব আছে। সেই অভাব নিরাকরণের জন্যই “বাংলা সাহিত্যের কথা” লিখিত হইল। ইহাতে যতদূর সম্ভব খুঁটিনাটি বাদ দিয়া সকল প্রয়োজনীয় তথ্য ও তত্ত্ব বর্ণনা করিতে প্রয়াস পাইয়াছি। মল্লিনাথের কথায়—নামূলং লিখাতে কিঞ্চিৎ নানপেক্ষিতম্ উচ্যতে।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পোস্ট-গ্রাজুয়েট বিভাগের প্রেসিডেন্ট ডাক্তার শ্রীযুক্ত আমাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের উৎসাহ এবং সেক্রেটারী শ্রীযুক্ত শৈলেন্দ্রনাথ মিত্র মহাশয়ের আগ্রহ না থাকিলে বইটি এত শীঘ্র প্রকাশিত হইত না। তজ্জন্ত ইহাদিগকে আমি আন্তরিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করিতেছি।

শ্রীসুকুমার সেন

প্রথম পরিচ্ছেদ

দশম হইতে ত্রয়োদশ শতাব্দী

১

বাঙ্গালা সাহিত্যের আদি যুগ

বাঙ্গালা দেশে আর্য্যদিগের আগমনের পূর্বে যাহারা বাঙ্গালায় বাস করিত তাহাদের সভ্যতা আদৌ উচ্চাঙ্গের ছিল না, এবং সাহিত্য বলিতে যাহা বুঝায় এমন কিছুও তাহাদের ছিল না। খ্রীষ্টপূর্ব তৃতীয় শতাব্দীতে মৌর্য্য সম্রাটদিগের সময় হইতেই এদেশে আর্য্যদিগের বসতি আরম্ভ হয়, এবং খ্রীষ্টীয় পঞ্চদশ শতাব্দীর মধ্যেই বাঙ্গালাদেশের প্রায় সর্বত্র ইহাদের দ্বারা অধ্যুষিত হয়। আর্য্যোবা উত্তম-পশ্চিম অঞ্চল হইতে আসিয়াছিলেন। ইহাদের পোষাকী অর্থাৎ শিক্কা, বিজ্ঞাচর্চা ও সামাজিক ব্যাপারের ভাষা ছিল সংস্কৃত; আর আটপহরিয়া অর্থাৎ বরোয়া ভাষা ছিল সংস্কৃত হইতে উদ্ভূত প্রাকৃত ভাষা।

এদেশে সাহিত্যের চর্চার পত্তন হয় এই সব উপনিষদ আর্য্যদিগের দ্বারা। প্রথম কয় শত বৎসর তাহারা বাঙ্গালায় কিছু লিখিতেন সবই সংস্কৃতে, দৈবাৎ প্রাকৃতে। এই সব লেখার নমুনা পাই তাম্রপটে লিখিত অম্মশাসনে বা ভূমিদাকপত্রে এবং ছই একটি মহাকাব্যে আর কতকগুলি সংস্কৃত শ্লোকে। বাঙ্গালা দেশে রচিত সর্বপ্রথম পুস্তক কাব্য

হইতেছে রামচরিত। এটি রামায়ণ-কাহিনী অবলম্বনে লেখা। কাব্যটির রচয়িতার নাম অভিনন্দ। অনুমান হয় যে, ইমি সম্রাট দেবপাল দেবের অনুচর ছিলেন। তাহা হইলে ইনি খ্রীষ্টীয় অষ্টম শতাব্দীর শেষ ভাগে বর্তমান ছিলেন, ধরিতে হইবে। পাল সম্রাটদিগের রাজত্বকালে আরও একটি কাব্য রচিত হইয়াছিল দশম শতাব্দীর শেষ ভাগে। এই কাব্যটিরও নাম রামচরিত। ইহাতে রামায়ণ-কাহিনী এবং সম্রাট রামপাল দেবের জীবনী একই সঙ্গে দ্ব্যর্থের সাহায্যে বর্ণিত হইয়াছে। কবি সঙ্ক্যাকর নন্দী রামপাল দেবের পুত্র মদনপাল দেবের অনুচর ছিলেন।

পাল রাজারা বিদ্বাৎসাহী ছিলেন। তাহাব পর বর্ষ ও সেন বংশের রাজত্ব। ইহারা আরও বিদ্বাৎসাহী এবং সাহিত্য্যামোদী ছিলেন। সেকালের প্রায় সকল বড় পণ্ডিত ও কবি সেনরাজদিগের সভা অলঙ্কৃত করিয়া গিয়াছেন। দ্বাদশ শতাব্দীর শেষ ভাগে লক্ষ্মণসেন দেবের সভায় উমাপতি ধর, শরণ, ধোয়ী এবং জয়দেব এই চারি জন বিখ্যাত কবির সম্মেলন হইয়াছিল।

সে যুগের শ্রেষ্ঠ কবি ছিলেন জয়দেব। ইহার গীতগোবিন্দ-কাব্য ক্রীষ্ণের বৃন্দাবনলীলা বিষয়ে রচিত। গীতগোবিন্দে চব্বিশটি গান বা পদ আছে। এগুলি সংস্কৃতে রচিত হইলেও ইহাদের প্রতিমধুরতা শিক্ষিত ও অশিক্ষিত সকলেরই মনোহরণ করে। প্রকৃতপক্ষে, এই পদগুলি লইয়াই বাংলা সাহিত্যের সূত্রপাত। পরবর্তী কালের বৈষ্ণব কবির প্রায় সকলেই কিছু না কিছু পরিমাণে জয়দেবের নিকট দৃষ্টি। জয়দেবের নিবাস ছিল অজয় নদের ধারে কেন্দুবিশ্ব গ্রামে।

এই গ্রাম এখন কেঁদুলী বা জয়দেব-কেঁদুলী নামে বিখ্যাত। জয়দেবের স্মৃতি-পূজা উপলক্ষে এই স্থানে আবহমান কাল ধরিয়া প্রতি বৎসর পৌষ সংক্রান্তির সময়ে বিরাট মেলা বসিয়া থাকে। বাঙ্গলা দেশের দূরতম অঞ্চল হইতেও সাধু-বৈষ্ণব আসিয়া এই মেলায় যোগ দিয়া থাকেন। জয়দেব ও তাঁহার পত্নী পদ্মাবতীর সম্বন্ধে নানা গল্প-কাহিনী প্রচলিত আছে। তবে তিনি যে কিছুকাল পুরীতে জগন্নাথদেবের সেবক বা ভক্তরূপে অবস্থান করিয়াছিলেন, তাহাতে সন্দেহ নাই। জয়দেবের সময় হইতে জগন্নাথদেবের নিকট প্রত্যহ গীতগোবিন্দের পদ গীত হইয়া আসিতেছে।

সংস্কৃত ভাষা লোকের মুখে মুখে কালক্রমে রূপান্তরিত হইয়া প্রাকৃত ভাষায় পরিণত হয়। এই প্রাকৃত ভাষা ভাঙ্গিয়া আবার বিভিন্ন আধুনিক ভাষা—যেমন বাঙ্গলা, আসামী, উড়িয়া, মৈথিল, হিন্দী, উর্দু, গুজরাটী, মারাঠী ইত্যাদি—উৎপন্ন হইয়াছে। আধুনিক ভাষায় পরিণত হইবার ঠিক পূর্বে প্রাকৃতির যে রূপ ছিল, তাহাকে বলা হয় অপভ্রংশ। সেন রাজাদের সময়ে অপভ্রংশ ভাষারও কিছু কিছু চর্চা হইত, তাহা অবশ্য রাজসভায় বা বিদ্বদ্-গোষ্ঠীতে নহে, সাধারণ লোকের মধ্যে, বিশেষ করিয়া বৌদ্ধধর্মাবলম্বী সিদ্ধাচার্য্য এবং সাধকদিগের মধ্যে। এই বৌদ্ধ সিদ্ধাচার্য্যেরা বাঙ্গালাতেও পদ লিখিতেন। যতদূর জানা গিয়াছে, ইহাদের পূর্বে বাঙ্গলা ভাষায় আর কেহ কিছু রচনা করেন নাই। তাহা করিবারও কথা নয়। কেননা, এই সময়েই—অর্থাৎ খ্রীষ্টীয় দশম-একাদশ শতাব্দীতেই—বাঙ্গালা ভাষা অপভ্রংশ হইতে পৃথক্ হইয়া স্বতন্ত্র ভাষারূপে মূর্তি লাভ করে।

বৌদ্ধ সিদ্ধাচার্যাদিগের লেখা একটি গানের বইয়ের পুঁথি মহামহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় নেপাল দরবারের পুস্তকালয় ঘাঁটিয়া আবিষ্কার করেন এবং ১৩২৩ সালে, আরও কয়েকটি পুঁথির সঙ্গে “হাজাব বছরের পুরাণ বাঙ্গালা ভাষায় বৌদ্ধ গান ও দোহা” নামে বঙ্গীয় সাহিত্য পরিষদের সাহায্যে প্রকাশিত করেন। মূল বইটিতে একানটি পদ ছিল, তাহার মধ্যে একটি পদ পুঁথি-লেখক বাদ দিয়াছেন, এবং পুঁথির কয়েকটি পাতা হারাইয়া গিয়াছে। ইহার কলে মোটমাট সাড়ে ছেচল্লিশটি পদ আমাদের হস্তগত হইয়াছে। পদগুলিতে পদকর্তার নাম ভণিতা হিসাবে দেওয়া হইয়াছে। পদগুলি যে যে স্থরে গাহিতে হইবে তাহাবও নির্দেশ দেওয়া আছে। পুঁথিটিতে অধিকন্তু আছে গানগুলির একটি বিস্তৃত সংস্কৃত টীকা।

গানগুলিতে বৌদ্ধ সিদ্ধাচার্যাদিগের সাধনার সঙ্কেত নিহিত আছে। সে সঙ্কেত আমাদের কাছে এখন প্রায় অবোধ্য। তবে গানগুলির বাহ্যিক যে অর্থ আছে, তাহা জানা বিশেষ দুঃস্থ নয়। ভাষা কিছু কঠিন বটে, কারণ বাঙ্গালা ভাষা তখন সবেমাত্র প্রাকৃতের খোলস ছাড়িয়া বাহির হইয়াছে।

জয়দেবের কাব্যে এবং বৌদ্ধ গানগুলিতে যে গীতি-কবিতা বা পদাবলীর ধারা শুরু হইল এই ধারা পরবর্তী কালে বৈষ্ণব কবিদের কাব্যে অশেষ রস ও শক্তি প্রদান করিয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের প্রধান ধারারূপে পরিণত হইয়াছিল। আধুনিক সাহিত্যের মধ্যেও গীতি-কাব্যরূপে এই ধারাই নিরন্তর প্রবাহিত হইয়াছে অসংখ্য গীতিতে চলিয়াছে।

বাংলা সাহিত্যের কথা

বাংলা ভাষার জন্ম-মূহূর্তেই যে তাহার সাহিত্য নিজের মূল ধারা, মূল জ্বর, অর্থাৎ গীতি-কাব্য, খুঁজিয়া পাইয়াছিল, ইহা পরম সৌভাগ্যের বিষয়। তাহা না হইলে বোধ হয় আজ বাংলা সাহিত্য জগতের প্রথম শ্রেণীর সাহিত্যের মধ্যে স্থান গ্রহণ করিতে পারিত কিনা সন্দেহ।

২

তুর্কী অভিযানের পরে

দ্বাদশ ও ত্রয়োদশ শতাব্দীর সন্ধিক্ষেপে বাংলা দেশে তুর্কী আক্রমণ শুরুর হয়। বাংলা দেশ চিরদিনই আর্ঘ্যাবর্তের বাস্তব সংঘাতের বাহিবে থাকিয়া নিজের স্বতন্ত্র পথে চলিয়া আসিতেছিল। সেই কারণে, আর্ঘ্যাবর্তে যখন শক হুণ প্রভৃতি বিদেশী আক্রমণকাবিগণ প্রচণ্ড বিক্ষোভ তুলিয়াছিল, তখন তাহার ডেউ বাংলা দেশের সীমানায় পৌছিয়া বাংলার পল্লীজীবনের সুখশান্তির বিন্দুমাত্রও ব্যাঘাত ঘটাইতে পারে নাই। অনেক কাল পরে যখন তুর্কী ও পাঠান সৈন্য পশ্চিম ও উত্তর ভারতে একে একে দেশের পর দেশ গ্রাস করিয়া পূর্বদিকে অগ্রসর হইতেছিল, তখনও এই ব্যাপারের গুরুত্ব বাংলার বোধগম্য হয় নাই। অতএব যখন মুহম্মদ-বিন বখতিয়ার মগধদেশ জয় ও লুণ্ঠন করিয়া অকস্মাৎ পূর্বদিকে প্রধাবিত হইল, তখন বাংলা দেশের রাজশক্তি অধরা প্রজাবর্গ কেহই এই বিদেশী আক্রমণকারীদেরকে উপযুক্ত বাধা দিবার জন্য এতটুকুমাত্রও প্রস্তুত ছিল না। সুতরাং মুষ্টিমেয় তুর্কী-পাঠান সৈন্যকে বাংলা দেশে বিশেষ কোন বৃদ্ধ অথবা অন্ত প্রকার বাধার সন্মুখীন হইতে হয় নাই।

তুর্কী আক্রমণের ফলে বাঙ্গালীর বিজ্ঞা ও সাহিত্যচর্চার মূলে কুঠারাঘাত পড়িল। প্রায় আড়াই শত বৎসরের মত দেশ সকল দিকেই পিছাইয়া পড়িল। দেশে শাস্তি নাই, সুতরাং সাহিত্যচর্চা ত হইতেই পারে না। প্রধানতঃ এই কারণেই ত্রয়োদশ ও চতুর্দশ এই দুই শতাব্দীতে কোন সাহিত্যিক রচনা পাওয়া যায় নাই।

চতুর্দশ শতাব্দীর মধ্যভাগে শমসু-দ্-দীন ইলিয়াস শাহ দিল্লীর সম্রাটের অধীনতা-পাশ ছেদ কবিয়া বাঙ্গালায় স্বাধীন সুলতান রাজ্য প্রতিষ্ঠা করিলেন। তখন হইতেই দেশে শাস্তি প্রতিষ্ঠিত হইবার মত অনুকূল অবস্থার সৃষ্টি হইল। দেশে পুনরায় জ্ঞানচর্চা শুরু হইল, এবং সঙ্গে সঙ্গে সাহিত্য-সৃষ্টির প্রচেষ্টাও দেখা দিল। পাল এবং সেন বংশীয় নরপতিদিগের মত এবারেও মুখ্যতানে বাজশক্তিই জ্ঞান ও সাহিত্যচর্চার পৃষ্ঠপোষকতা করিতে লাগিল।

পঞ্চদশ শতাব্দীতে অন্ততঃ তিন জন সুলতান এবং ষোড়শ শতাব্দীতে অন্ততঃ এক জন সুলতান এবং দুই জন উচ্চপদস্থ মুসলমান রাজকর্মচারী যে নিজেদের সভাকবিদিগের দ্বারা অনেকগুলি উৎকৃষ্ট কাব্য রচনা করাইয়া ছিলেন, তাহার প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে। এ বিষয়ে পরে আলোচনা করা যাইতেছে। তুর্কী অভিযানের পর, পঞ্চদশ শতাব্দী হইতে ইংরাজ অধিকারের পূর্বকাল অষ্টাদশ শতাব্দীর মধ্যভাগ পর্যন্ত, বাঙ্গালা সাহিত্য প্রধানতঃ গীতিমূলক ছিল। অর্থাৎ বাঙ্গালা কাব্য সাধারণতঃ পড়া বা আবৃত্তি করা হইত না,—মন্দিরা, মৃদঙ্গ ও চামর সংযোগে একাকী বা দলবদ্ধ ভাবে গীত হইত। অতি পূর্বকালে বোধ হয় পঞ্চালিকা বা পুতুল-নাচের সঙ্গে

এই ধরনের কাব্য গীত হইত বলিয়া পরে বাঙ্গালী কাব্যের সাধারণ নাম হইয়াছিল “পাঁচালী”। আর, কাব্যগুলিতে কোন না কোন দেবতার অথবা দেবকল্প মানুষের মহিমা কীৰ্ত্তিত হইত। এই জন্ত কাব্যের নামে প্রায় “মঙ্গল” বা “বিজয়” শব্দ যুক্ত থাকিত।

অনেকে ধাবণা করিয়া থাকেন যে, প্রাচীন বাঙ্গালী সাহিত্যে “মঙ্গল” ও “বিজয়” কাব্য বলিয়া দুই স্বতন্ত্র প্রকারের কাব্যধারা বর্তমান ছিল। এই ধাবণা নিতান্তই ভুল। একই কাব্যের বিভিন্ন পুঁথিতে কখনও “মঙ্গল” কখনও বা “বিজয়” নাম পাইতেছি। যেমন, মালাধব বসুর কাব্য শ্রীকৃষ্ণবিজয়, শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল এবং গোবিন্দমঙ্গল এই তিন নামেই সমান ভাবে সুপবিচিত ছিল।

পঞ্চদশ শতাব্দীর শেষভাগে পশ্চিমবঙ্গে জনসাধারণের সাহিত্যিক রুচির চমৎকার ছবি পাওয়া যায় বৃন্দাবন-দাসের চৈতন্যভাগবত গ্রন্থে। বৃন্দাবন-দাস লিখিয়াছেন যে, তখন গায়কেরা শ্রীকৃষ্ণের বাল্যলীলা ও শিবের গৃহস্থালীর গান গাহিয়া ভিক্ষা করিত, পূজা উপলক্ষে সাধাবণ লোকে ‘আগ্রহ করিয়া মঙ্গলচণ্ডীর ও বিষহরি অর্থাৎ মনসার পাঁচালী শুনিত, এবং রামায়ণ-গানে আব ঐতিহাসিক-গাথায় সাধারণ লোকের, এমন কি বিদেশী মুসলমানেরও চিত্ত বিগলিত হইত। পঞ্চদশ শতাব্দীতে রচিত এই সব কাব্যের দুই একখানি মাত্র পাওয়া গিয়াছে। কিন্তু ঐতিহাসিক-গাথাগুলি—বৃন্দাবন-দাসের কথায় “যোগীপাল ভোগীপাল মহীপালের গীত”— একেবারেই লুপ্ত হইয়া গিয়াছে বলিয়া বোধ হয়।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ

পঞ্চদশ শতাব্দী

৩

কৃত্তিবাস ওঝা ও মালাধর বসু

পঞ্চদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগেই আমরা একজন বড় কবিকে পাইতেছি। ইনি কৃত্তিবাস ওঝা। কৃত্তিবাসের রামায়ণ বাঙ্গালা সাহিত্যের একটি প্রধান কাব্য। কাব্যটি রচিত হওয়ার পর হইতেই যেরূপ অভূতপূর্ব সমাদর লাভ করিয়া আসিয়াছে তাহা এক কাশীরাম-দাসেব মহাভারত কাব্য ছাড়া আর তৃতীয় কোন বাঙ্গালা কাব্যেব অদৃষ্টে ঘটে নাই। কৃত্তিবাসের রামায়ণ শুধু কাব্যরস যোগাইয়া বাঙ্গালীর আবেগ রক্ত তৃপ্ত করিয়াই ক্ষান্ত হয় নাই, এই অনবদ্য কাব্যের মধ্য দিয়া সমগ্র বাঙ্গালা দেশেব তাবৎ নরনারী এই ছয় শত বৎসর ধরিয়া নৈতিক শিক্ষা ও আধ্যাত্মিক পরিভূষণ লাভ করিয়া আসিতেছে। রামায়ণের শাস্ত্র-করণ কাহিনী শুনিলে এমন কঠিনহৃদয় ব্যক্তি নাই যাহার চিত্ত তৎক্ষণাৎ আর্জ হইবে না। একরূপ কাব্য আহার এবং ঔষধ দুইই; একাধারে জনসাধারণের চিত্তবিনোদন করে এবং সঙ্গে সঙ্গে অজ্ঞাতসারে জ্ঞানোন্মেষ পাঠকের চরিত্রগঠনে সহায়তা করিয়া থাকে। কৃত্তিবাসের রামায়ণ বাঙ্গালীর জাতীয় কাব্য। সেকালে শুধু হিন্দুদিগের মিকট নহে, মুসলমানদিগের নিকটেও যে এই কাব্যের

বিশেষভাবে সমাদর লাভ করিয়াছিল, একথা বৃন্দাবন-দাস একাধিকবার উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

কুন্তিবাস স্বীয় কাব্যে যে আত্মবিবরণ দিয়াছেন তাহা হইতে যাহা জানা যায়, তাহা সংক্ষেপে এই। কুন্তিবাসের এক পূর্বপুরুষ নরসিংহ ওঝা পূর্ববঙ্গ হইতে আসিয়া গঙ্গাতীরে ফুলিয়া গ্রামে বসতি করেন। ইহাব এক পৌত্র মুরারি ওঝা। মুরারির সাত পুত্র, তাহার মধ্যে একজন বনমালী। এই বনমালীই কুন্তিবাসের পিতা। কুন্তিবাসের মাতার নাম মালিনী। ইহাবা ছয় ভাই ছিলেন, আব এক বৈমাত্র ভগিনী ছিল। কুন্তিবাসের জন্ম হয় মাঘ মাসের ত্রীপঞ্চমীর দিন ববিবারে। বার বৎসর বয়সের সময় কুন্তিবাস উত্তরদেশে পদ্মাপারে পড়িতে যান। সেখানে নানা শাস্ত্র অধ্যয়ন করিয়া গেলেন বাঙ্গালা দেশেব রাজধানী গৌড়ে। রাজার খাতিব না পাঠিলে তখন যত বড় পণ্ডিত হউক না কেন, তেমন সমাদর হইত না। সুতরাং কুন্তিবাস রাজবাড়ীতে গিয়া পাঁচটি শ্লোক রচনা করিয়া দ্বাবীর হস্তে রাজার নিকট পাঠাইয়া দিলেন। তখন মাঘ মাস, গৌড়েশ্বর পাত্রমিত্র লইয়া প্রাসাদের ভিতরে প্রাক্গণে বোজ পোহাইতেছেন। রাজা শ্লোক পড়িয়া চমৎকৃত হইলেন এবং কুন্তিবাসকে নিকটে আনাইলেন। রাজসমীপে উপস্থিত হইয়া কুন্তিবাস তৎক্ষণাৎ মুখে মুখে সাতটি শ্লোক রচনা করিয়া রাজাকে অভিবাদন ও আশীর্বাদ করিলেন। কুন্তিবাসের পাণ্ডিত্য ও কবিত্বে মুগ্ধ হইয়া গৌড়েশ্বর তাঁহাকে বিধিমতে সংবর্দ্ধিত করিলেন। সভাসদেরা কুন্তিবাসকে অমুরোধ করিলেন রাজার নিকট মোটা রকম কিছু পুরস্কার চাহিতে। কুন্তিবাস ব্রাহ্মণ পণ্ডিত,

তিনি সহজে দান গ্রহণ করিবেন কেন ? তিনি সগর্বে উত্তর করিলেন যে, তিনি কাহারও দান গ্রহণ করেন না, কেবল গৌরবটুকু গ্রহণ করিয়াই সন্তুষ্ট থাকেন। কৃতিবাসের লোভ-হীনতায় রাজা অধিকতর সন্তুষ্ট হইয়া তাঁহাকে বাঙ্গালা ভাষায় রামায়ণ-কাব্য রচনা করিতে অনুরোধ করিলেন। গোড়েশ্বরের আদেশ পাইয়া কৃতিবাস সাতকাণ্ড রামায়ণ-পাঁচালী রচনা করেন।

কৃতিবাস গোড়েশ্বরের নাম উল্লেখ করেন নাই, কিন্তু রাজসভার যে বর্ণনা দিয়াছেন তাহা, এবং সভাসদগণের নাম হইতে বোঝা যায় যে, গোড়ের সিংহাসনে তখন কোন হিন্দু রাজা উপবিষ্ট ছিলেন। পঞ্চদশ শতাব্দীতে কংস বা গণেশ ছাড়া অন্য কোন হিন্দু রাজা গোড়েশ্বর হন নাই। সুতরাং কৃতিবাস রাজা গণেশের দ্বারাই আদিষ্ট হইয়া রামায়ণ-কাব্য রচনা করিয়াছিলেন, এই অনুমান অসঙ্গত নহে।

পঞ্চদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগে কৃতিবাস তাঁহার কাব্য রচনা করিয়াছিলেন, সুতরাং এই কাব্যের ভাষা পুরানো হইবার কথা। কিন্তু কাব্যটি অত্যন্ত জনপ্রিয় হওয়াতে লোকের মুখে মুখে ভাষা পরিবর্তিত হইয়া একেবারে আধুনিক হইয়া পড়িয়াছে। অস্বাভাবিক ভেজালও যে কিছু কিছু না চুকিয়াছে, এমন নহে।

রাজা কংস বা গণেশের পুত্র যছ বিশেষ কোন কারণে ধর্মাস্তর গ্রহণ করিয়া জলালু-দ্-দীন মুহম্মদ শাহ নাম ধারণ করেন। গোড়ের সিংহাসনে আরোহণ করিয়া তিনিও হিন্দু কবি ও পণ্ডিতদিগের পৃষ্ঠপোষকতায় পরাজুখ হন নাই। যছর অন্তর্গত পণ্ডিতদিগের মধ্যে সর্বাপেক্ষা বিখ্যাত ছিলেন

বৃহস্পতি মহিস্তা। ইনি বলিয়াছেন যে, “গৌড়াবনীবাসব” জলালু-দ্-দীনের নিকট হইতে তিনি পর পর এই সাতটি উপাধি পাইয়াছিলেন—আচার্য্য, কবিচক্রবর্তী, পণ্ডিত-সার্বভৌম, কবিপণ্ডিতচূড়ামণি, মহাচার্য্য, রাজপণ্ডিত, রায়-মুকুটমণি। শেষের উপাধি দিবার সময় রাজা খুব ধুমধাম করিয়াছিলেন, তাঁহাকে হাতী, ঘোড়া, ছাতা ও বহু রত্নালঙ্কার দেওয়া হইয়াছিল।

জলালু-দ্-দীনের পর কিছু কাল পর্য্যন্ত গোড়ের সুলতান-দিগের বিতোৎসাহিতার পরিচয় বড় কিছু মেলে না। সে যুগে রাজকার্য্য প্রধানতঃ উচ্চপদস্থ হিন্দু কর্মচারিগণের হস্তে স্থিত ছিল। রাজা ও সুলতানদিগের মত দরবারের উচ্চপদস্থ কর্মচারীরাও সাহিত্য ও শাস্ত্র-চর্চার পোষকতা করিতেন। ইহারা কবি-পণ্ডিতগণের উৎসাহদাতাও ছিলেনই, উপরন্তু নিজেরাও সুযোগ ও যোগ্যতা-মত কাব্য রচনা করিতেন। পঞ্চদশ শতাব্দীর মধ্যভাগের শেষের দিকে এক রাজকর্মচারী কবি গোড়েশ্বরের সংবর্দ্ধনা লাভ করিয়াছিলেন। ইনি বর্দ্ধমান জেলার কুলীনগ্রাম-নিবাসী মালাধর বসু। ইনি সুলতান রুক্নু-দ্-দীন বারবক শাহের নিকট “গুণরাজ খান” উপাধি পাইয়াছিলেন। রুক্নু-দ্-দীন বারবক শাহের রাজ্যকাল ১৪৬০ হইতে ১৪৭৪ খ্রীষ্টাব্দ পর্য্যন্ত। ১৩৯৫ শকাব্দে অর্থাৎ ১৪৭৩ বা ১৪৭৪ খ্রীষ্টাব্দে মালাধর এক কুঙ্কলীলা-কাব্য রচনা করিতে আরম্ভ করেন। দীর্ঘ সাত বৎসর পরে ১৪০২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৪৮০ বা ১৪৮১ খ্রীষ্টাব্দে এই কাব্য, শ্রীকৃষ্ণবিজয়, সমাপ্ত হয়। যতদূর জানা গিয়াছে, শ্রীকৃষ্ণবিজয় কুঙ্কলীলা-বিষয়ক প্রথম

অঙ্গল কাব্যেই হোসেন শাহের সপ্রশংস উল্লেখ বহিরাছে। কাব্য, ছইটির পবিচয় দিবাব পূর্বে মনসামঙ্গল কাহিনীর কিছু পবিচয় দিতেছি।

বাঙ্গালা দেশে সর্পদেবতা মনসাব পূজা বহুদিন হইতেই চলিয়া আসিতেছে। তবে মনসা-পূজাব সমাদব নিম্নশ্রেণীর লোকেব মধ্যেই বেশী ছিল। সে যুগে উচ্চবর্ণের লোকেবা মনসাদেবীকে বিশেষ আমল দিতেন বলিয়া বোধ হয় না। মনসা-পূজাব সময় মনসাদেবীর মাহাত্ম্যখাপক গীত বা পাঁচালী গাওয়া হইত। এই পাঁচালীর কাহিনী কোন পুবাণে নাই, ইহা বাঙ্গালাদেশেব নিজস্ব গল্প। এই গল্প সব মনসামঙ্গল কাব্যে একই ভাবে বর্ণিত হইয়াছে। গল্পটি মোটামুটি এই।

শিবের কন্যা মনসা অস্থানে ভূমিষ্ঠ হইবাব অল্পক্ষণ মধ্যেই দৈহিক বুদ্ধিলাভ কবিয়া পূর্ণবয়স্কা নাবী হইয়া উঠিলেন এবং সর্পদিগের আধিপত্য লাভ কবিলেন। শিব তাঁহাকে গৃহে লইয়া আসিলে শিবগৃহিণী চণ্ডী ঈর্ষান্বিতা হন। ফলে মনসা ও চণ্ডীর মধ্যে দাকণ বিবাদ উপস্থিত হইল, এবং পরস্পর হাতাহাতিব ফলে মনসাব একটি চক্ষু নষ্ট হইয়া গেল। চক্ষুর উপব নিদাকণ ক্রোধ লইয়া মনসা পিতৃগৃহ পবিত্যাগ কবিলেন। কিছুকাল পবে জবৎকাক মুনিব সহিত মনসার বিবাহ হইল। জবৎকাকব ঔবসে মনসাব গর্ভে আন্তীকেব জন্ম হইল।

জনমেজযেব পিতা সযাট পবীক্ষিৎ সর্পদংশনে দেহত্যাগ করেন। পিতৃহত্যাব প্রতিশোধ লইবাব জন্ম জনমেজয় সর্পসঙ্কর বজ্জের ক্ষতুষ্ঠান কবিলেন, কেব না এই বজ্জ সমাধানে

হইলে জগতের সমস্ত সর্প বিনষ্ট হইবে। সর্পেরা বিপদে বুঝিয়া মনসার শরণ লইল। মনসা আন্তরিকের জনমেজয়ের যজ্ঞস্থানে পাঠাইয়া দিলেন। আন্তরিক বুঝাইয়া শুভাইয়া জনমেজয়কে যজ্ঞ হইতে নিবৃত্ত কবিলেন। কতক সাপ রক্ষা পাইয়া গেল। এই আখ্যায়িকাটুকু হইতেছে পুবাণের কথা।

এদিকে চণ্ডীব নিকট মনসা যে অপমান পাইয়াছিলেন তাহা তিনি ভুলিতে পারিতেছেন না। উপযুক্ত প্রতিশোধ লইবার একমাত্র পন্থা হইতেছে শিব ও চণ্ডীব ভক্তদিগের নিকট হইতে পূজা আদায়। তাহাব পূর্বে আবশ্যক লোক-সমাজে মনসাব পূজা প্রচাৰ কবা। মনসা প্রথমে এই কাজে মন দিলেন। ঈহাতে তাঁহার পরম সহায় হইল সহচরী নেত্রবতী বা নেতা। অগ্ন আয়াসেই মনসা ক্রমে ক্রমে রাখাল বালক, জালিয়া এবং দবিদ্র মুসলমানদিগের নিকট পূজা আদায় কবিত্তে সমর্থ হইলেন। তখন তাঁহার মন হইল যাহাতে সমাজের উচ্চস্তরে তাঁহার পূজা প্রচলিত হয়। সে সময়ে গন্ধবণিকেরা সমাজে বেশ প্রতিপত্তিশালী ব্যক্তি ছিল। এই সমাজের শীর্ষস্থানীয় ছিল বণিক চন্দ্রধব বা চাঁদ বেহে। নেতা ছদ্মবেশে আসিয়া চাঁদের পত্নী সনকাকে মনসার পূজা শিক্ষাইয়া দিল। একদিন স্ত্রীকে মনসা-পূজা করিতে দেখিয়া চাঁদ ক্রুদ্ধ হইল এবং পূজার দ্রব্য ইত্যাদি সব লাথি মারিয়া ফেলিয়া দিল। কিছুতেই চাঁদ বাগ মানিতেছে না দেখিয়া মনসা তাহাকে শাস্তি দিয়া বেশে আনাহিতে সজ্জা করিলেন। চাঁদের ^{পুত্র} পুত্র মূল্যবান পণ্যদ্রব্য লইয়া বাণিজ্য হইতে ফিরিতেছিল। মনসার কোপে সেই সাত পুত্র পণ্যদ্রব্য

সমেক্ত সমুদ্রে নিমগ্ন হইল। চাঁদ তাহাতেও দমিবার পাত্র নহে। তাহার “মহাজ্ঞান” আছে, তাহার বলে চাঁদ সাত পুত্রকে বাঁচাইল। মনসা তখন হীন ছলনা করিয়া চাঁদের “মহাজ্ঞান” হরণ করিয়া লইলেন। তখন আর চাঁদ তাহার ছয় পুত্র ও ধন সম্পত্তি রক্ষা করিতে পারিল না। নিঃশ্ব, কোপীনমাত্র সম্বল হইয়া চাঁদ বাণিজ্য হইতে ফিরিয়া আসিল। তখন চাঁদের কনিষ্ঠ পুত্র লক্ষ্মীকর বা লক্ষ্মীন্দ্র (“লখিন্দর”) বড় হইয়াছে। খুব ধুমধাম করিয়া বিপুলা বা বেহুলার সহিত লক্ষ্মীকরের বিবাহ হইল। চাঁদ বেনের অশেষ সতর্কতা সত্ত্বেও লৌহনির্মিত অচ্ছিন্ন বাসরঘরে লক্ষ্মীকর সর্পদংশনে প্রাণত্যাগ করিল। চাঁদ বেনের এখন সত্য সত্যই সর্বনাশ হইল।

বিপুলা বয়সে বালিকা হইলেও বুদ্ধি, ধৈর্য্য এবং সতীত্ব গুণে প্রাপ্তবয়স্কা রমণী অপেক্ষাও তেজস্বী ছিল। সে মনে মনে সংকল্প করিল, প্রাণ যায় যাউক, স্বামীকে বাঁচাইতে হইবে। সর্পদষ্ট মৃত ব্যক্তিকে দাহ করিতে নাই, সাধারণতঃ জলে ভাসাইয়া দেওয়া হইত। বিপুলা একটি ছোট ভেলার উপর স্বামীর মৃতদেহ লইয়া উঠিল, এবং বাঁকা নদীর স্রোতের মুখে ভেলা ভাসাইয়া দিল। আত্মপরিজন কাহারও প্রবোধ ও নিষেধ বাক্যে কর্ণপাত করিল না। শাখা নদীর স্রোত বাহিয়া ভেলা গঙ্গার দিকে চলিল। পথে নানা প্রলোভন ও ভীতি বিপুলাকে টলাইতে চেষ্টা করিল, কিন্তু বিপুলার মন অচল অটল রহিল।

. ত্রিবেণীর নিকটে গঙ্গা-সঙ্গমে পড়িয়া বিপুলা একটি অলৌকিক ব্যাপার প্রত্যক্ষ করিল। এক ধোপানী শিশু

সন্তান লইয়া কাপড় কাচিতে আসিয়াছে। সে প্ৰথমে তাহাব ছেলেকে আছড়াইয়া মাৰিয়া ফেলিয়া তাহাব পৰ কাপড় কাচিতে লাগিল। আৰ সন্ধ্যাবেলায় ফিৰিবাব পূৰ্বে ছেলেটিকে পুনৰ্জীবিত কৰিল। এই দৃশ্য দেখিয়া বিপুলা ভাবিল যে, এ মেয়ে ত সামান্য নহে, ইহাব সাহায্যেই হয়ত তাহাব স্বামীৰ পুনৰ্জীবন হইবে। পৰদিন ধোপানী আসিলে বিপুলা বিনীতভাবে তাহাব সহিত আলাপ কৰিয়া তাহাব হইয়া কিছু কাপড় কাচিয়া দিল। পৰিচয়ে জানিতে পাবিল যে, এই ধোপানী স্বৰ্গেৰ দেবতাদিগেৰ কাপড় কাচে, ইহাবই নাম নেত্ৰবতী বা নেতা, ইনি মনসাব সহচৰীও বটেন। নেতা বিপুলাৰ উপৰ খুশী হইয়া তাহাকে সাহায্য কৰিতে বাজী হইল। বিপুলা নেতাৰ সহিত স্বৰ্গে গেল, এবং সেখানে সঙ্গীত ও নৃত্যকলায় দক্ষতা দেখাইয়া দেবতাগণকে পৰম পৰিতুষ্ট কৰিল। দেবতাবা বিপুলাৰ দুঃখেৰ কাহিনী শুনিলেন। কিন্তু তাঁহাদেব ত হাত নাই। অবশেষে তাঁহাদেব সন্ধিক্ষণে অল্পবোধে এবং বিপুলাৰ কাতবোজিতে মনসাব ক্ৰোধ প্ৰশমিত হইল। বিপুলা তাঁহাব নিকট প্ৰতিজ্ঞা কৰিল, যেমন কৰিয়া চউক শ্বশুৰকে দিয়া মনসাব পূজা কৰাইবে। মনসা লক্ষ্মীক্ৰবেৰ অস্থি-অবশিষ্ট দেহে প্ৰাণ সঞ্চাব কৰিয়া দিলেন এবং ওদিকে পণ্যসম্ভাব-সমেত চাঁদেৰ বড় ছয় ছেলেকেও বাঁচাইয়া দিলেন। বিপুলা ও লক্ষ্মীক্ৰব দেশে প্ৰত্যাগমন কৰিল। আনন্দ-উজ্জ্বল মध्ये আত্মীয় পৰিজনেৰ সহিত মৃত্যুকবল হইতে প্ৰত্যাগত লক্ষ্মীক্ৰব এবং নাবীবল্ল বিপুলাৰ মিলন হইল। মনসাব পূজা কৰিতে এখন আৰ চাঁদ বেনেৰ কোনই আপত্তি বহিল না।

মনসার গীত পূর্বাঘি প্রচলিত থাকিলেও, সব চেয়ে পুরানো মনসামঙ্গল যাহা পাওয়া গিয়াছে তাহার রচনা সম্ভবতঃ ১৪২৫ খ্রীষ্টাব্দে লুক হইয়াছিল। সন তারিখের সঙ্গে কবি হোসেন শাহেবও নাম কবিয়াছেন। কবির নাম বিজয় গুপ্ত। ববিশাল জেলাব ফুল্লশ্রী (এখন গৈলা) গ্রামেব এক বৈষ্ণবংশে কবির জন্ম হয়। কবির পিতার নাম সনাতন, মাতার নাম রুক্মিণী। ১৭১৬ শকাব্দেব আশ্বিন মাসে ববিবাব মনসা-পঞ্চমীর দিনে কবি স্বপ্ন দেখেন যে, দেবী মনসা তাঁহাকে মনসামঙ্গল পাঁচালী বচনা কবিত্তে আদেশ করিত্তেছেন। তদনুসাবে কাব্যটি বচিত হয়। বিজয় গুপ্ত তাঁহার পূর্ববর্তী মনসামঙ্গল-বচয়িতা কবি “কাণা” হবিদন্তেব নাম কবিয়াছেন। একটিমাত্র পদ ছাড়া হবিদন্তেব কাব্যেব চিহ্ন এখন লোপ পাইয়াছে।

বিজয় গুপ্তেব কাব্যবচনাব এক বৎসব পরেই, অর্থাৎ ১৪১৭ শকাব্দে বা ১৪৯৬ খ্রীষ্টাব্দে, ব্রাহ্মণ কবি বিপ্রদাস পিপলাই এক মনসামঙ্গল কাব্যেব পদ্বন কবেন। ইনিও হোসেন শাহের নাম কবিয়াছেন,—“নুপতি হোসেন শাহা গোড়ের প্রধান।” বিপ্রদাসেব নিবাস ছিল চব্বিশ পরগণা জেলাব উত্তর-পূর্বাংশে বসিবহাট মহকুমায নাহুড়া-বটগ্রাম। কবির পিতার নাম মুকুন্দ পণ্ডিত। কবিবা তিন চাবি ভাই ছিলেন। বিপ্রদাসও স্বপ্নে মনসাকর্তৃক আদিষ্ট হইয়া পাঁচালী রচনা করিয়াছিলেন।

কাব্য হিসাবে বিজয় গুপ্ত এবং বিপ্রদাসেব রচনা উচ্চশ্রেণীব নহে। তবে বিপ্রদাসেব কাব্যে ঐতিহাসিকেব পক্ষে অনেক মূল্যবান তথ্য নিহিত আছে। বিজয় গুপ্তেব কাব্য সম্পূর্ণ

ভাবে পাওয়া যায় নাই, যেটুকু পাওয়া গিয়াছে তাহাতেও অনেক ভেজাল ঢুকিয়াছে।

হোসেন শাহের একজন কর্মচারী যশোরাজ খান একখানি কৃষ্ণমঙ্গল রচনা করিয়াছিলেন, একথা পূর্বে বলিয়াছি। ইনিও স্বীয় কাব্যে সুলতানের নাম করিয়াছেন।

হোসেন শাহের এক সেনাপতি (“লস্কর”) চট্টগ্রাম জয় করিয়া এই অঞ্চল জাগীর রূপে প্রাপ্ত হন এবং তথায় শাসন-কর্তারূপে বসতি করেন। ইহার নাম পরাগল খান। ইনি স্বীয় সভাসদ কবীন্দ্রের দ্বারা বাঙ্গালায় “ভারত-পাঁচালী” অর্থাৎ মহাভারত কাব্য রচনা করাইয়াছিলেন। কাব্যটির নাম পাণ্ডব-বিজয় বা বিজয়পাণ্ডবকথা। লস্কর পরাগল খান মহাভারত-কথায় এতদূর অনুরক্ত ছিলেন যে, কবীন্দ্রের কাব্য তাঁহার সভায় প্রত্যহ পঠিত হইত। এইটিই বাঙ্গালায় রচিত সর্ব-প্রাচীন মহাভারত কাব্য। কবির নাম সত্যসত্যই কবীন্দ্র ছিল, কি ইহা তাঁহার উপাধি ছিল, তাহা ঠিক করিয়া বলিবার উপায় নাই। কেহ কেহ বলেন যে, কবির নাম ছিল পরমেশ্বর। কবীন্দ্রের কাব্য ১৫২৫ খ্রীষ্টাব্দের কাছাকাছি কোন সময়ে রচিত হইয়া থাকিবে। ✓

পরাগল খানের পুত্র—যিনি “ছুটি খান,” অর্থাৎ ছোট খাঁ নামে উল্লিখিত হইয়াছেন—ইনিও বাঙ্গালা সাহিত্যের পৃষ্ঠপোষকতা করিতেন। ছুটি খান কবি শ্রীকর নন্দীকে দিয়া মহাভারতের অশ্বমেধ পর্বের বিস্তৃততর অনুবাদ করাইয়াছিলেন। কবীন্দ্রের কাব্যে সকল পর্বের কথাই খুব সংক্ষেপে দেওয়া আছে। অশ্বমেধ পর্বের গল্প ছুটি খানের খুব ভাল লাগিত বলিয়া তিনি বেশী করিয়া শুনিতে চাহিয়াছিলেন।

ছুটি খান হোসেন শাহের পুত্র নুসরৎ শাহের সেনাপতি ছিলেন। সুতরাং শ্রীকর নন্দীর কাব্যে নুসরৎ শাহের রাজ্য কালে—অর্থাৎ ১৫১৮ হইতে ১৫৩৩ খ্রীষ্টাব্দের মধ্যে কোন সময়ে, সম্ভবতঃ শেষের দিকেই—রচিত হইয়াছিল। কেহ কেহ মনে করেন, কবীন্দ্র ও শ্রীকর নন্দী একই ব্যক্তি।

হোসেন শাহের পুত্র নসীরুদ্-দীন নুসরৎ শাহ ও বাঙ্গালা কাব্যের সমাদর করিতেন। ইহার এক কর্মচারী শ্রীখণ্ড-নিবাসী কবিরঞ্জন তখনকার সময়ের একজন বিখ্যাত কবি ছিলেন। বিজ্ঞাপতির ধরণে ইনি অনেক ভাল ভাল পদ রচনা করিয়াছিলেন বলিয়া লোকে ইহাকে “ছোট বিজ্ঞাপতি” বলিত। কবিরঞ্জন একটি পদে সুলতানের নাম করিয়াছেন।

নসীরুদ্-দীন নুসরৎ শাহের পুত্র ‘অলাউদ্-দীন ফৌজ শাহ’ পিতা এবং পিতামহের পদাঙ্ক অনুসরণ করিয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের পৃষ্ঠপোষকতা করিতেন। কবি শ্রীধর ইহারই আদেশে বিজ্ঞানুন্দর কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। ফৌজ শাহ ১৫৩৩ খ্রীষ্টাব্দে অল্প কয়েক মাসের জন্য সিংহাসনে আরোহণ করিয়াছিলেন। কাব্যটি যখন লেখা হয় তখনও তিনি সুলতান হন নাই। সুতরাং শ্রীধরের কাব্যের রচনা-কাল ১৫৩৩ খ্রীষ্টাব্দের পূর্বেই হইবে।

বাঙ্গালা দেশের ইতিহাসের সর্বাপেক্ষা গুরুত্বপূর্ণ ব্যাপার, শ্রীচৈতন্যের আবির্ভাব, হোসেন শাহী আমলেই ঘটিয়াছিল। সে কথা পরে বিশেষ ভাবে আলোচিত হইবে।

প্র: ৪৪
Ac 22275
২০/০৮/২০২৬

৫

বড়ু চণ্ডীদাস ও তাঁহার কাব্য শ্রীকৃষ্ণকীর্তন

চণ্ডীদাস ভণিতায় বহু বৈষ্ণব পদ অষ্টাদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগ হইতে প্রচলিত আছে। এই পদগুলির মধ্যে অনেকগুলি পুরানো পুঁথিতে অন্ত্র কবির নামে পাওয়া যায়। পদগুলির মূল্যও একবকম নহে। কতকগুলি খুবই উৎকৃষ্ট। আবার কতকগুলি অত্যন্ত নিকৃষ্ট, অতি বাজে কবির বচন। ইহা হইতে সাধারণ ধারণা হইয়াছে যে, চণ্ডীদাসের নামাঙ্কিত পদগুলি এক ব্যক্তির এবং এক সময়ের বচন নহে।

এই ধারণা যে অযথার্থ নহে, তাহার প্রমাণ মিলিল ১৩১৬ সালে। ঐ সময়ে শ্রীযুক্ত বসন্তবজ্র রায় বিদ্যদ্বল্লভ মহাশয় বাঁকুড়া জেলায় পুরানো পুঁথির খোঁজ করিয়া বেড়াইতে ছিলেন। তিনি বনবিষ্ণুপুর্বের নিকটবর্তী কাঁকিল্যা গ্রামে এক ভদ্র গৃহস্থের গোশালার মাচায় কতকগুলি পুঁথি পান, তাহার মধ্যে একটি পুঁথি দেখিয়াই তাঁহার মনে হইল, এত প্রাচীন পুঁথি তিনি ইতিপূর্বে দেখেন নাই। পুঁথি পড়িয়া তিনি দেখিলেন যে, এটি একটি অজ্ঞাতপূর্ব কৃষ্ণলীলায়ক কাব্য। ইহাব বচয়িতা বড়ু চণ্ডীদাস। কাব্যের ভাষা অত্যন্ত পুরানো ধরণের, এবং গল্পেও অনেক নূতনত্ব আছে। কিন্তু ছুৎখের বিষয় এই যে, পুঁথিটি খণ্ডিত; গোড়ার একখানি এবং মধ্যের ও শেষের কয়েকখানি পাতা নাই। প্রথম পাতাখানি না থাকায় কাব্যের নাম কি ছিল তাহাও জানা গেল না।

১৩২৩ সালে বঙ্গীয় সাহিত্য পরিষদ হইতে শ্রীকৃষ্ণকীর্তন নামে কাব্যটি প্রকাশিত হইল। প্রকাশিত হইবামাত্র পণ্ডিত এবং সাহিত্যবসিক সমাজে একটা সাড়া পড়িয়া গেল। এত প্রাচীন ভাষা, বৌদ্ধ গান ও দোহা ছাড়া, অন্যত্র পাওয়া যায় নাই। এত প্রাচীন বাঙ্গালা পুঁথিও ইহাব পূর্বে কেহ দেখে নাই। কাব্যের গল্পাংশে ও বর্ণনাতেও অনেক বৈশিষ্ট্য আছে। এতদিনে চণ্ডীদাসের মূল কাব্য পাওয়া গেল বলিয়া প্রাচীন সাহিত্যমোদিগণ পুলকিত হইলেন; বাঙ্গালা ভাষার উৎপত্তি ও বিকাশের আলোচনা কবির উপাদান মিলিল বলিয়া ভাষাবিজ্ঞানবিদেবা উৎসাহিত হইয়া উঠিলেন।

কিন্তু কিছু বিতণ্ডারও যে সৃষ্টি হইল না, তাহা নহে। এই বিতণ্ডা আজিও সম্পূর্ণরূপে মিটে নাই। ষাঁহারা এখনকার দিনে আধুনিক ভাষায় চণ্ডীদাসের পদ পড়িয়া মুগ্ধ হইয়াছেন তাঁহাবা বলিলেন, এই বিকট ভাষায় লেখা পদ চণ্ডীদাসের হইতেই পারে না। শ্রীকৃষ্ণকীর্তন কাব্য এখনকার বিচারে স্থানে স্থানে রুচিবিরহিত বলিয়া বোধ হয়। এই সূত্র ধরিয়া আবার অনেকে বলিলেন, এ কাব্য নিতান্ত অশ্লীল; শ্রীচৈতন্য চণ্ডীদাসের যে পদ আশ্বাদন কবিতেন সে পদ এ কবির রচনা হইতেই পারে না।

কিন্তু এই চণ্ডীদাসই যে চণ্ডীদাস ভণিতাব শ্রেষ্ঠ পদগুলির রচয়িতা হওয়া সম্ভব, তাহাব একটি অবাস্তব প্রমাণ পাওয়া গেল। শ্রীকৃষ্ণকীর্তনের একটি ভাল পদ রূপান্তরিত ভাষায় প্রচলিত কীর্তন-পদাবলীর মধ্যে ধরা পড়িল। আর শ্রীচৈতন্যের সময়ে যে বড় চণ্ডীদাসের শ্রীকৃষ্ণকীর্তন কাব্য লজ্জাত ছিল না, তাহারও প্রমাণ মিলিতে বিলম্ব হইল না।

শ্রীচৈতন্যের অন্ততম প্রধান পারিষদ সনাতন গোস্বামী তাঁহার রচিত শ্রীমদ্ভাগবতের টীকায় একস্থানে চণ্ডীদাস-বর্ণিত দানখণ্ড ও নৌকাখণ্ড লীলার উল্লেখ করিয়াছেন; এই দুই লীলা শ্রীকৃষ্ণকীর্তনেই মুখ্যভাবে বর্ণিত হইয়াছে।

শ্রীকৃষ্ণকীর্তন হইতে কবির সম্বন্ধে এইটুকু মাত্র জানা যায় যে, কবির নাম অথবা উপাধি ছিল বড়ু চণ্ডীদাস, আর ইনি ছিলেন দেবী বাসলীর সেবক। কয়েকটি পদের শেষে “অনন্ত বড়ু চণ্ডীদাস” এই ভণিতা আছে। এখানে “অনন্ত” এই নামটি লিপিকার অথবা গায়কের প্রক্ষেপ বলিয়াই অনুমান হয়। চণ্ডীদাস সম্বন্ধে অনেক প্রবাদ-কথা ও গালগল্প প্রচলিত আছে। এক প্রবাদের মতে, ইহার জন্মস্থান ছিল বীরভূমের অন্তর্গত নাঙ্গুর গ্রাম; অপর প্রবাদের মতে, ইনি ছিলেন বাঁকুড়ার নিকটবর্তী ছাতনা গ্রামের অধিবাসী। প্রবাদে আরও বলে যে, ইহার এক রজকজাতীয়া সাধনসঙ্গিনী ছিলেন। এই মহিলার নাম সম্বন্ধেও বিভিন্ন প্রবাদের মধ্যে একমত্য নাই;—এক মতে ইহার নাম ছিল তারা, অপর মতে রামতারা এবং তৃতীয় মতে রামী। এই সব প্রবাদ আংশিকভাবেও সত্য কিনা, তাহা যাচাইয়া লইবার মত কোন উপাদান এ যাবৎ পাওয়া যায় নাই।

শ্রীকৃষ্ণকীর্তন কাব্যের রচনাকাল জানা নাই। তবে পুঁথির লেখা দেখিয়া এপিগ্রাফিস্ট অর্থাৎ প্রাচীনলিপিবিশারদেরা বলেন যে, পুঁথিটি আনুমানিক ১৪৫০ হইতে ১৫২৫ খ্রীষ্টাব্দের মধ্যে কোন সময়ে লিখিত হইয়াছিল। পুঁথিটিতে তিন হাতের লেখা আছে এবং ভুলভ্রান্তিও কিছু কিছু আছে। সুতরাং ইহা কবির নিজের লেখা বা মূল পুঁথি নিশ্চয়ই নহে।

পুঁথিটি কবির সময়ে লিখিত হইয়াছিল, ইহা ধরিয়া লইলেও কাব্যের রচনাকাল ১৫২৫ খ্রীষ্টাব্দেব পূর্বে হয়। মনে হয়, কাব্যটি পঞ্চদশ শতাব্দীর শেষ পাদে কিংবা তাহার কিছুকাল পূর্বে রচিত হইয়াছিল।

বড়ু চণ্ডীদাসেব কাব্যে একমাত্র বাধাক্ষেব লীলা-কাহিনীই চিত্রিত হইয়াছে। শ্রীকৃষ্ণ এবং বলবামের জন্ম ও গোকুলে আনয়ন, এবং কালিয়দমন—শুধু এই দুইটি বিষয় প্রচলিত পুবাণ হইতে লওয়া হইয়াছে। অপর লীলাকাহিনী-গুলি শ্রীমদ্ভাগবত, বিষ্ণুপুবাণ বা হবিবংশ ইত্যাদি কোন পুরাণে—যেখানে কৃষ্ণলীলা বর্ণিত হইয়াছে—সেখানে নাই। কাব্যটির মধ্যে কবিহেব উচ্ছ্বাস বা অলঙ্কারবাল্য এসব বড় কিছু নাই। তবুও শ্রীকৃষ্ণকীর্তনেব বচয়িতা যে খুব উচুদরের কবি ছিলেন, তাহা প্রমাণিত হয় বাধাব চবিত্র-বর্ণনা হইতে। বড়ু চণ্ডীদাসেব কাব্যে রাধাব চবিত্র যেরূপ উজ্জল ও জীবন্ত, এমনটি আর কোন প্রাচীন বাঙ্গালা কাব্যে দেখা যায় নাই। কাব্যটিতে কিছু কিছু অশ্লীলতা-দোষ থাকিলেও ইহাব রচয়িতা যে বাঙ্গালার শ্রেষ্ঠ কবিদিগেব অগ্রতম, ইহা স্বীকার করিতেই হয়।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ

ষোড়শ শতাব্দী

৩

চৈতন্যদেব ও তাঁহার প্রভাব

খ্রীষ্টচৈতন্য যখন জগৎগ্রহণ করবেন তখন দেশে বাজনৈতিক অশান্তিব সঙ্গে সঙ্গে সমাজের মধ্যে নিদাক্ষণ বিশৃঙ্খলা উপস্থিত হইয়াছিল। উচ্চবর্ণের শিক্ষিত ব্যক্তিদের অনেকে শাসনকার্য্যের কোন না কোন বিভাগে চাকুবী করিতেন; ইহাদের দ্বারা সমাজে কিছু কিছু স্বচ্ছাচার আমদানী হইতে লাগিল। সাধারণ লোকের মধ্যেও আচার-বিচাবে যথেষ্ট পরিমাণে শিথিলতা দেখা দিল। নিম্নশ্রেণীর লোকেরা অনেকে ভয়ে, ভক্তিতে বা সুবিধামত মুসলমান ধর্ম্ম গ্রহণ করিতে লাগিল। যে শ্রেণীর মধ্যে ধর্ম্ম ও আচারনিষ্ঠা অবিচলিত রহিয়া গেল,—তাহা হইতেছে ব্রাহ্মণপণ্ডিত সম্প্রদায়। ইহারা সাংসারিক হিসাবে দরিদ্র; লাভলোভ ইহাদের বড় কিছু ছিল না; সুতরাং রাজশক্তির আনুকূল্যের কোনই ভরসা ইহারা রাখিতেন না। কিন্তু ইহাদের পৃষ্ঠপোষক ধনী ব্যক্তিরা বিদ্যাচর্চাব বিষয়ে ক্রমশঃ উদাসীন হইয়া পড়াতে, ব্রাহ্মণ-পণ্ডিতের সংখ্যাও কমিয়া আসিতে লাগিল। সেন বংশের

সময়ে বাঙ্গালার রাজধানী ছিল বলিয়াই হউক, অথবা অন্য কোন কারণে হউক, পঞ্চদশ শতাব্দীর শেষের দিকে নবদ্বীপ ব্রাহ্মণপণ্ডিতদিগের প্রধান আশ্রয়স্থান হইয়া দাঁড়াইল এবং জনতিবিলম্বে বাঙ্গালা দেশের প্রধানতম বিদ্যাকেন্দ্র হইয়া উঠিল। বাঙ্গালা দেশের বলি কেন, এক বিষয়ে নবদ্বীপ সারা ভারতবর্ষের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বিদ্যাকেন্দ্র ছিল। তাহা হইতেছে নব্যশাস্ত্রশাস্ত্র। সূক্ষ্ম ন্যায়-দর্শনশাস্ত্রের চরম বিকাশ প্রধানতঃ নবদ্বীপেই হইয়াছিল।

নবদ্বীপ সেকালে ছোট জায়গা ছিল না; বহু গ্রামের সমষ্টি লইয়া ইহা ছিল একটি বিরাট শহরের মত। কিছু দূরে শান্তিপুর, তাহাও পণ্ডিতপ্রধান স্থান ছিল। গঙ্গার উভয়তীর ধরিয়া আরও অনেকগুলি বহুগ্রাম গ্রাম ছিল, সেগুলি নবদ্বীপের অবনতির পর হইতে প্রাধাত্য লাভ করিতে থাকে।

নবদ্বীপের এক দরিদ্র ব্রাহ্মণপণ্ডিতের গৃহে ত্রীচৈতন্যের জন্ম হয় ১৪০৭ শকাব্দে—অর্থাৎ ১৪৮৬ খ্রীষ্টাব্দে—ফাল্গুন মাসে দোলপূর্ণিমার দিন। ইহার পিতা ছিলেন জগন্নাথ মিশ্র, মাতা শচী দেবী। ত্রীচৈতন্যের নামকরণ হয় বিশ্বম্ভর, ডাক নাম ছিল নিমাই। উজ্জল গৌরবর্ণ ছিলেন বলিয়া আখ্যায়-স্বজনে তাঁহাকে গোরা বা গৌরান্ন বলিয়া ডাকিত। ত্রীচৈতন্যের এক জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা ছিলেন, বিশ্বরূপ। তিনি অল্প বয়সেই গৃহ-ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাস গ্রহণ কবেন। বাল্যকালে ত্রীচৈতন্য অতিশয় চপল ও দুর্বিনীত ছিলেন, তথাপি পরিচিত অপরিচিত সকলেই এই তুলনিত সুন্দর শিশুটিকে না ভালবাসিয়া থাকিতে পারিত না। বিশ্বরূপের গৃহত্যাগের কিছুকাল পরেই ত্রীচৈতন্যের পিতৃবিয়োগ হইল। অল্পবয়সেই ত্রীচৈতন্য

ব্যাকরণ ও অঙ্কশাস্ত্রে পারদর্শিতা লাভ করিয়া টোল খুলিলেন। তাহার পর লক্ষ্মীপ্রিয়া দেবীর সহিত বিবাহ হইল। বিবাহের অব্যবহিত পরে তিনি বঙ্গদেশে অর্থাৎ পদ্মাতীরবর্তী অঞ্চলে ভ্রমণ করিয়া যথেষ্ট অর্থ ও প্রচুর প্রতিপত্তি লইয়া প্রত্যাগমন করিলেন। ইতিমধ্যে তাঁহার স্ত্রী-বিয়োগ ঘটিল। দ্বিতীয়বারে শ্রীচৈতন্য বিবাহ করিলেন বিষ্ণু-প্রিয়া দেবীকে।

পিতৃকৃত্য করিতে গয়ায় গিয়া শ্রীচৈতন্য ঈশ্বরপুরীর সহিত সাক্ষাৎ করেন এবং তাঁহার আধ্যাত্মিকতায় মুগ্ধ হইয়া তাঁহার নিকট দীক্ষা গ্রহণ করিলেন। দীক্ষাগ্রহণের পর হইতেই শ্রীচৈতন্যের চরিত্রে অদ্ভুত পরিবর্তন আসিল। তাঁহার উদ্বৃত্ত-স্বভাব, পাণ্ডিত্যের গূঢ় গর্ভ একেবারে দূর হইল। তিনি ভগবৎপ্রেমে বিভোর হইয়া উন্মত্তবৎ হইয়া পড়িলেন। কিছু কাল পরে স্বেচ্ছা লাভ করিয়া তিনি কয়েকজন ভক্তের সঙ্গে শ্রীমদ্ভাগবত-পাঠ, ভগবৎপ্রসঙ্গ ও হরিসঙ্কীৰ্ত্তন করিয়া দিন-রাত্রি যাপন করিতে লাগিলেন। তাঁহার ভক্তিভাব দেখিয়া নবদ্বীপের তাবৎ লোক ভক্তিভাবাপন্ন হইয়া উঠিল। নবদ্বীপের ভক্তিপ্রচার কার্যে তাঁহার ছই প্রধান সহায় হইলেন, নিত্যানন্দ এবং হরিদাস।

শ্রীচৈতন্য দেখিলেন যে, শুধু নবদ্বীপে ভক্তিদর্শন প্রচার করিয়া ক্ষান্ত হইলে চলিবে না, সমগ্র বাঙ্গালা দেশ এবং বাঙ্গালার বাহিরেও এই দর্শন প্রচার করা আবশ্যক, নতুবা বিভিন্ন আচার-ব্যবহার এবং অনাচার-অধর্মের আচ্ছন্ন ঋণ্ডা বিক্ষিপ্ত বাঙ্গালী জনসাধারণ জাতিগত ঐক্যলাভ করিতে কখনই সমর্থ হইবে না; উপরন্তু সমস্ত দেশ য়েচ্ছ হইয়া

যাইবার সম্ভাবনা রহিয়াছে। সন্ন্যাসী না হইলে ধর্মের কথা লোকে অত্নের নিকট সহজে গুনিতে চাহে না; সুতরাং শ্রীচৈতন্য সংসার ত্যাগ করিয়া কাটোয়ায় কেশব ভারতীর নিকট সন্ন্যাস গ্রহণ করিলেন। তখন তাঁহার বয়স চব্বিশ বৎসর মাত্র। সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া তাঁহার নাম হইল শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য, সংক্ষেপে শ্রীচৈতন্য। সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া শ্রীচৈতন্য নবদ্বীপ-শান্তিপুর অঞ্চলের আবাল-বৃদ্ধবনিতা জনসাধারণের মন হরণ করিয়া লইলেন; তাঁহার বিরুদ্ধবাদী দেশে আব কেহ বহিল না।

সন্ন্যাস গ্রহণ করিয়া শ্রীচৈতন্য পূর্বাতে গেলেন। সেখানে কিছুদিন থাকিয়া তিনি দেশপর্যটনে ও তীর্থদর্শনে বাহির হইলেন। প্রথম বারে তিনি সমগ্র দাক্ষিণাত্য, মহারাষ্ট্র ও গুজরাট ভ্রমণ কবিলেন। তাঁহার পব বৃন্দাবন যাইবার উদ্দেশ্যে গঙ্গাপথ ধরিয়া শান্তিপুর হইয়া গোঁড়ে পৌঁছিলেন। সঙ্গে লোকসংঘট্ট হওয়াতে তিনি সেবার গোঁড়ের উপকণ্ঠস্থিত রামকেলী গ্রাম হইতেই প্রত্যাবর্তন করিলেন। রামকেলীতে হোসেন শাহেব মন্ত্রী দবীর-খাস সনাতন ও সাকর-মল্লিক রূপ এই দুই ভাইয়ের সঙ্গে সাক্ষাৎ হইল। চৈতন্যদেবের সংস্পর্শে আসিয়া তাঁহাদের বৈরাগ্য জন্মিল; অল্পকাল পরেই তাঁহারা গৃহত্যাগ করিলেন। তৃতীয় বারে শ্রীচৈতন্য ঝাড়িখণ্ড বা ছোটনাগপুরের অবধ্যাময় পথে মথুরা ও বৃন্দাবন যাত্রা করিলেন। পথে কাশী, প্রয়াগ ইত্যাদি প্রধান প্রধান তীর্থ পড়িল। প্রয়াগে সাকর-মল্লিক রূপের সহিত সাক্ষাৎ হইল। ফিবিবার পথে কাশীতে দবীর-খাস সনাতন তাঁহার সহিত মিলিত হইলেন।

এইরূপে প্রায় সমগ্র ভারতবর্ষ পর্য্যটন করিয়া শ্রীচৈতন্য সর্বজনীন ভক্তিদর্শন প্রচার করিলেন। এই প্রচার তিনি বক্তৃতা বা উপদেশ-বাণীর দ্বারা করেন নাই; তাঁহার অমল লোকোত্তর চবিত্তের প্রভাবেই লোকে তাঁহার আচরিত দর্শন সানন্দে বরণ কবিয়া ধন্য হইয়াছিল।

তীর্থপর্য্যটন ও গমনাগমনে ছয় বৎসর অতীত হইল। জীবনের শেষ অষ্টাদশ বর্ষ শ্রীচৈতন্য পুরী ছাড়িয়া আর কোথাও যান নাই। প্রতি বৎসর রথযাত্রার সময়ে বাঙ্গালা দেশ হইতে অদ্বৈত আচার্য্য, নিত্যানন্দ, শ্রীবাস প্রমুখ ভক্তেরা আসিয়া মহাপ্রভু শ্রীচৈতন্যের সহিত মিলিত হইতেন। এই সময় নীলাচলে আনন্দোচ্ছ্বাস বহিত। দিন দিন শ্রীচৈতন্যের ঈশ্বরপ্রেম উদ্বেলিত হইয়া উঠিতে লাগিল। শেষের কয় বৎসর তিনি একরকম বাহ্যজ্ঞানরহিত হইয়া দিব্যোন্মাদে বিহ্বল হইয়া থাকিতেন। অনুরক্ত অনুচর এবং ভক্তেরা কৃষ্ণলীলাবিষয়ক কবিতা ও গান শুনাইয়া তাঁহাকে কথঞ্চিৎ সান্ত্বনা দিয়া রাখিতেন। অবশেষে ১৪৫৫ শকাব্দে—অর্থাৎ ১৫৩৪ খ্রীষ্টাব্দে—আষাঢ় মাসে আটচল্লিশ বৎসর বয়সে তাঁহার তিরোভাব হয়। বাঙ্গালা ও উড়িষ্যা দেশে তাঁহার প্রভাব এতদূর ব্যাপক ও গভীর হইয়াছিল যে, জীবিতকালেই তিনি ঈশ্বরের অবতাব বলিয়া পূজিত হইয়াছিলেন।

শ্রীচৈতন্য-প্রবর্তিত ভক্তিদর্শনপ্রচারে সহায়ক হইয়াছিলেন তাঁহার অনুচর ও ভক্তেরা। সেকালের নবদ্বীপ অঞ্চলের এবং অন্যান্যস্থানেরও অনেক আধ্যাত্মিকশক্তিসম্পন্ন প্রতিভাশালী মনীষী তাঁহার আনুগত্য স্বীকার করিয়াছিলেন। অল্প সময়

হইলে ইহাদের মধ্যে কেহ কেহ মহাপুরুষ বা অবতার বলিয়া গৃহীত হইতে পারিতেন।

শ্রীচৈতন্যের পারিষদদিগের মধ্যে প্রধান হইতেছেন অদ্বৈত আচার্য্য, মিত্যানন্দ এবং হরিদাস। অদ্বৈত আচার্য্যের পিতা কমলাক্ষ শ্রীহট্টের অন্তর্গত লাউড়ের রাজার সভাপণ্ডিত ছিলেন। অদ্বৈত আচার্য্য মহাপণ্ডিত এবং অসাধারণ প্রভাবশালী ব্যক্তি ছিলেন। শচীদেবী ইহার মন্ত্রশিষ্যা ছিলেন। শ্রীচৈতন্যের জন্মকালে অদ্বৈত আচার্য্যের বয়স পঞ্চাশ পার হইয়া গিয়াছিল।

শ্রীচৈতন্যের তিরোধানের পরও কয়েক বৎসর ইনি জীবিত ছিলেন। শ্রীচৈতন্যপ্রবর্তিত ভক্তিদর্শনের বিস্তারের জন্য ঝাঁহার ক্ষেত্র প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছিলেন তাঁহাদের মুখ্য ছিলেন মাধবেন্দ্র পুরী এবং তাঁহার শিষ্যবর্গ,—ঈশ্বরপুরী, অদ্বৈত আচার্য্য এবং আরও দুই চারি জন। শ্রীচৈতন্য আচার্য্যকে পিতৃবৎ শ্রদ্ধা করিতেন। আচার্য্যের দুই পত্নী, শ্রী দেবী ও সীতা দেবী। সীতা দেবী মহীয়সী মহিলা ছিলেন। অদ্বৈতের জ্যেষ্ঠপুত্র অচ্যুতানন্দ আকুমার বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়া শ্রীচৈতন্যের সঙ্গে নীলাচলে বাস করিয়াছিলেন।

নিত্যানন্দ শ্রীচৈতন্য অপেক্ষা কিছু বয়োজ্যেষ্ঠ ছিলেন। ইহার জন্ম হয় বীরভূমের অন্তর্গত একচাকা গ্রামে। ইহার পিতার নাম হাড়াই পণ্ডিত, মাতার নাম পদ্মাবতী। শৈশব হইতেই নিত্যানন্দের ঈশ্বরানুরক্তির পরিচয় পাওয়া গিয়াছিল। বাল্যাবস্থায় ইনি এক সন্ন্যাসীর সাহচর্য্যে গৃহ ছাড়িয়া চলিয়া যান এবং সন্ন্যাসীর বেশে দেশে দেশে তীর্থে তীর্থে ঘুরিয়া বেড়াইতে থাকেন। একস্থানে মাধবেন্দ্র পুরীর সহিত তাঁহার

সাক্ষাৎ হয়। তিনি পুরীর নিকট দীক্ষা গ্রহণ করেন। পর্যটন-ক্রমে তিনি অবশেষে বাঙ্গালা দেশে ফিরিয়া আসেন এবং শ্রীচৈতন্যের কথা শুনিয়া তাঁহার সহিত মিলিত হইবার জন্ত নবদ্বীপে আগমন করেন। নিত্যানন্দের সহিত মিলিত হইয়া শ্রীচৈতন্য দ্বিগুণ উৎসাহে হবিম ও ভক্তিবর্ষ প্রচারে মন দিলেন। শ্রীচৈতন্যের সন্ন্যাসের সময় নিত্যানন্দ সঙ্গে ছিলেন এবং তাঁহার সঙ্গে পুরীতেও আসিয়া কিছুকাল ছিলেন। তাহার পর শ্রীচৈতন্যের অনুবোধে তিনি বাঙ্গালা দেশে ফিরিয়া বিবাহ করিয়া সংসাবাশ্রমী হইলেন এবং জনসাধারণের মধ্যে হরিনাম প্রচার কবিতা লাগিলেন। সূর্য্যদাস পণ্ডিতের ছই কন্যা বসুধা দেবী ও জাহ্নবী দেবীর সহিত নিত্যানন্দের পবিণয় হয়। বসুধা দেবীর গর্ভে এক কন্যা গঙ্গা দেবী ও এক পুত্র বীরচন্দ্র জন্মগ্রহণ করেন। শ্রীচৈতন্যের তিরোধানের কিছুকাল পবে নিত্যানন্দের তিরোধান হয়। তাহার পর তাঁহার কনিষ্ঠা ভাৰ্য্যা জাহ্নবী দেবী এবং পুত্র বীরচন্দ্র বাঙ্গালী বৈষ্ণবসমাজের নেতা হন।

হরিদাস অদ্বৈত আচার্য্যের প্রায় সমবয়স্ক ছিলেন। কেহ কেহ বলেন যে, ইনি মুসলমান পিতামাতার সন্তান; আবার কেহ কেহ বলেন যে, ইনি হিন্দুর সন্তান, তবে মাতাপিতৃহীন হইয়া মুসলমানের গৃহে প্রতিপালিত হইয়াছিলেন বলিয়া মুসলমান বলিয়া পরিচিত হন। যৌবনকালেই ইনি ভক্তিবর্ষের প্রতি আকৃষ্ট হন এবং সংসার ছাড়িয়া নিঃসঙ্গ উদাসীন হইয়া দিবাবাত্র হরিনাম জপ করিয়া কাল কাটাইতে থাকেন। মুসলমান হইয়া হিন্দুর আচার করিতে দেখিয়া মুসলমান সম্প্রদায়ের অভিযোগক্রমে কাজী তাঁহাকে হিন্দুয়ানী

ছাড়িতে আদেশ করে। হরিদাস তাহা গ্রাহ্য করেন নাই। তখন তাঁহার উপর অকথ্য নির্যাতন চলিল; কিন্তু তাহাতেও হরিদাসের ক্রক্ষেপ নাই। অবশেষে হার মানিয়া কাজী তাঁহাকে ছাড়িয়া দিল। হরিদাস ফুলিয়ায় আসিয়া কুটীর বাঁধিলেন। এদিকে মহাপুরুষ বলিয়া তাঁহার নাম জাহির হইয়াছে; স্মৃতরাং তাঁহার কুটীবে ভিড় জমিতে লাগিল। অগত্যা হরিদাস সেখান হইতে পলাইয়া শান্তিপুরে গেলেন। সেখানে অদ্বৈত আচার্য্য তাঁহাকে পাইয়া পরম সমাদর করিয়া রাখিলেন। পরে শ্রীচৈতন্যের সহিত হবিদাসেব মিলন হইল। হরিদাস এবং নিত্যানন্দকে মহাপ্রভু নামপ্রচারের ভার দিলেন। ইহারা হার মানায়, শ্রীচৈতন্য নিজে প্রভাব বিস্তার করিয়া নবদ্বীপেব কোটাল উচ্ছ্বল ভ্রাতৃত্বয় জগাই মাধাইকে উদ্ধার করেন। হবিদাসকে শ্রীচৈতন্য যারপরনাই শ্রদ্ধা ও শ্রীতি কবিতেন, সেই কারণে সন্ন্যাসের পর তিনি হরিদাসকে সঙ্গে করিয়া আনিয়া নীলাচলে রাখিলেন। পুরীতে হরিদাসের দেহত্যাগ হইলে তিনি স্বহস্তে মৃতদেহ সমুদ্রতীরে সমাধিস্থ করিয়াছিলেন এবং নিজে ভিক্ষা করিয়া হরিদাসের নির্বাণ মহোৎসব অনুষ্ঠান করিয়াছিলেন।

নবদ্বীপে থাকার সময় শ্রীচৈতন্যের অপরাপর প্রধান অনুচর ছিলেন শ্রীবাস পণ্ডিত ও তাঁহার তিন ভাই, মুরারি গুপ্ত, মুকুন্দ দত্ত, পুণ্ডরীক বিদ্যানিধি, বাসুদেব ঘোষ ও তাঁহার দুই ভাই, গদাধর পণ্ডিত, জগদানন্দ পণ্ডিত এবং আরও অনেকে।

নীলাচলে অবস্থানকালে তাঁহার প্রধান অনুচর ছিলেন স্বরূপ দামোদর, রামানন্দ রায়—ইনি পূর্বে উড়িষ্যার রাজার

তরফে প্রাদেশিক শাসনকর্তা ছিলেন, গদাধর পণ্ডিত, হরিদাস, জগদানন্দ পণ্ডিত, কাশী মিশ্র, সার্বভৌম ভট্টাচার্য্য, পরমানন্দ পুরী এবং রঘুনাথ দাস।

✓ রঘুনাথ দাস ছিলেন সপ্তগ্রামের ধনী জমিদার গোবর্দন দাসের একমাত্র পুত্র এবং বংশের একমাত্র সম্ভান। ইনি বাল্যে হরিদাসের সংস্পর্শে আসিয়া ভক্তিধর্মের দিকে আকৃষ্ট ও বৈরাগ্যভাবাপন্ন হন। ইহা দেখিয়া তাঁহার পিতা ও জ্যেষ্ঠতাত সুন্দরী কন্যা দেখিয়া তাঁহার বিবাহ দিলেন। তাহাতে হিতে বিপরীত হইল। গৃহ হইতে পলাইবার জন্য রঘুনাথ উদ্গ্রীব হইয়া উঠিলেন। তখন তাঁহাকে নজরবন্দী করিয়া রাখা ছাড়া উপায় রহিল না। কিন্তু তিনি “চৈতন্যের বাতুল”, তাঁহাকে ঘরে ধরিয়া রাখিবে কে? এক রাত্রিতে প্রহরীর অলক্ষিতে তিনি পলাইলেন। ক্রীচৈতন্য তখন পুরীতে, এ সংবাদ তিনি অবগত ছিলেন। সপ্তগ্রাম হইতে তিনি পুরী পৌছিলেন বার দিনে, পথে তিন দিন মাত্র ভোজন করিয়াছিলেন। পিতা ও জ্যেষ্ঠতাত সংবাদ পাইয়া গৃহে আর ফিরিবেন না জানিয়া পুরীতে ভৃত্য, পাচক ও উপযুক্ত অর্থ পাঠাইয়া দিলেন। রঘুনাথ সে সৎ কিছুই নিজের জন্য লইলেন না; আহারবিহারে কঠোর কুচ্ছতা অবলম্বন করিলেন। রঘুনাথের বৈরাগ্য দেখিয়া ক্রীচৈতন্য অত্যন্ত প্রীত হইলেন, তাঁহাকে নিজে কিছু উপদেশ দিয়া স্বরূপ দামোদরের হস্তে তাঁহার শিক্ষা ও সাধনার ভার অর্পণ করিলেন। ক্রীচৈতন্যের ও স্বরূপ দামোদরের অন্তর্দ্বানের পর রঘুনাথ বৃন্দাবনে রূপ-সনাতনের আশ্রয়ে আসিয়া রাখা-

কুণ্ডলীরে কুটীর বাঁধিয়া বাস করিতে লাগিলেন। এইখানেই ইহার দেহত্যাগ হয়।

সনাতন ও রূপ গোস্বামী বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়া শ্রীচৈতন্যের উপদেশ মত বৃন্দাবনে বাস করিলেন। এখানে ইহার বৈষ্ণব শাস্ত্র রচনা করিয়া বৈষ্ণব ধর্মের প্রচারে জীবন উৎসর্গ করিলেন। ইহাদেব প্রভাবে চৈতন্যপ্রবর্তিত ধর্ম মথুরা অঞ্চলে, পঞ্জাবে, রাজপুতনায় এমন কি সিন্ধুদেশ পর্যন্ত বিস্তৃত হইল। পাণ্ডিত্যে এবং প্রতিভায় সনাতন গোস্বামীর সমকক্ষ তখন কেহই ছিল না বলিলে অত্যাুক্তি হয় না। ইনিই আবার কনিষ্ঠ রূপ গোস্বামীর দীক্ষাগুরু। সনাতন অত্যন্ত বৈরাগ্যপরায়ণ ছিলেন, ইহার কুটীর ত ছিলই না, উপরন্তু এক বৃক্ষতলে একাধিক রাত্রি যাপন করিতেন না। অথচ পাণ্ডিত্য বা আধ্যাত্মিকতার গর্বের লেশমাত্র ইহার ছিল না। রূপ গোস্বামী পাণ্ডিত্যে এবং কবিত্বশক্তিতে অদ্বিতীয় ছিলেন বলা চলে। গোড়ো থাকার সময়েই ইনি কৃষ্ণলীলাবিষয়ক অনেক সংস্কৃত কবিতা রচনা করিয়াছিলেন। বৈরাগ্য গ্রহণ করিবার পর ইনি কৃষ্ণলীলাবিষয়ক তিনখানি নাটক ও অনেকগুলি কাব্য রচনা করিলেন এবং বৈষ্ণব শাস্ত্র ও বহু প্রামাণ্য সিদ্ধান্তের পুস্তক বচনা করিলেন। ইহার লেখা সবই সংস্কৃতে। রূপের ভক্তিরসাগৃতসিদ্ধু এবং উজ্জলনীলমণি বই দুইখানি বৈষ্ণব রসশাস্ত্রের শ্রেষ্ঠ গ্রন্থ।

সনাতন ও রূপের এক কনিষ্ঠ ভ্রাতা ছিল। ইহার নাম ছিল অনুরূপ বা বল্লভ। ইনি অল্প বয়সেই গতাস্থ হন। ইহার পুত্র জীব খুল্লতাত রূপ গোস্বামীর শিষ্য ছিলেন। ইনিও ছিলেন প্রগাঢ় পণ্ডিত। বৈষ্ণব ধর্মের বহু দার্শনিক গ্রন্থ ইনি

প্রণয়ন করেন। সনাতন ও কপ গোস্বামীর তিরোধানের পর ইনিই বৃন্দাবনস্থ বৈষ্ণবসমাজের নেতা হন।

✓সনাতন, কপ এবং জীবের কথা বাদ দিলে বৃন্দাবনের বৈষ্ণব মহাস্তুদিগের মধ্যে শীর্ষস্থানীয় ছিলেন রঘুনাথ ভট্ট, গোপাল ভট্ট এবং রঘুনাথ দাস। ইহারা ষট্ গোস্বামী নামে প্রাথিত ছিলেন। ইহাদের সঙ্গে লোকনাথ গোস্বামীরও নাম কবা উচিত। এই গোস্বামীবাই প্রধানতঃ বৃন্দাবনের তীর্থ সকল প্রকটিত করেন ও প্রধান প্রধান বিগ্রহ প্রতিষ্ঠিত কবিতা সেবা প্রচলিত করেন। সকলেই শ্রীচৈতন্যের অনুগ্রহ লাভ কবিয়াছিলেন।

হিন্দু অহিন্দু, পণ্ডিত মূর্খ, উচ্চ নীচ নির্বিশেষে শ্রীচৈতন্য তাঁহার ধর্ম প্রচার কবিয়াছিলেন। ইহাকে ইংরেজি মতে ‘বিলিজিয়ন’ বা “ধর্ম” বলা বোধ হয় খুব সঙ্গত হয় না, নৈতিক ও আধ্যাত্মিক শিক্ষা বলাই ঠিক হয়। জনসাধারণের জন্ত শ্রীচৈতন্য যে শিক্ষা দিয়াছিলেন তাহা সর্বজনীন চিরন্তন আদর্শের অন্তর্গত ; জীবে দয়া, ঈশ্বরে ভক্তি এবং ভক্তি-উদ্দীপনের জন্য নামসংকীর্ণন—ইহাবই উপর শ্রীচৈতন্যের প্রবর্তিত ধর্ম প্রতিষ্ঠিত। জাতিবর্ণ-নির্বিশেষে সকল মানুষই যে সমান আধ্যাত্মিক শক্তির অধিকারী হইতে পারে, ইহা তিনি স্বীকার করিতেন। তখনকার দিনের হিন্দুধর্মের সঙ্কীর্ণতা ঘুচাইয়া সমাজে একতা আনিয়া অথবা বাঙ্গালী জাতি গড়িয়া উঠিবার পক্ষে শ্রীচৈতন্যের উপদেশ ও প্রভাব অসামান্য সহায়তা করিয়াছিল। অপূর্ব প্রেরণায় উদ্বোধিত হইয়া বাঙ্গালীর প্রতিভা কি ধর্ম, কি দার্শনিক চিন্তায়, কি সাহিত্যে, কি সঙ্গীতকলায় সর্বত্রই বিচিত্র ভাবে ফুট হইতে লাগিল। ইহাই বাঙ্গালী জাতির প্রথম জাগরণ।

বৈষ্ণব গীতিকাব্য

বাজা ও বাজকশ্রমচারিদিগেব সাহায্য ও পৃষ্ঠপোষকতায় বাঙ্গালা সাহিত্যেব উন্মেষ হইয়াছিল, একথাব আলোচনা পূর্বে কবিয়াছি। ষোড়শ শতাব্দীতে শ্রীচৈতন্যেব প্রভাবে বাঙ্গালা সাহিত্যেব পবিপূর্ণ উন্মেষ হইল। তাহাব পব আড়াই শত তিন শত বৎসব ধবিয়া বাঙ্গালা সাহিত্যে বৈষ্ণবতাব ছাপ অক্ষুণ্ণ বহিয়া গেল। ষোড়শ শতাব্দীব বাঙ্গালী কবি প্রায় সকলেই বৈষ্ণবসম্প্রদায়-ভূক্ত ছিলেন, এবং যাহাবা তাঁহাদেব মধ্যে প্রধান তাঁহাবা প্রায় সকলেই শ্রীচৈতন্যেব সাক্ষাৎ পবিকব অথবা পবিকবেব শিষ্য বা অনুশিষ্য ছিলেন।

বাঙ্গালা সাহিত্যেব যাহা চিবন্তন ধাবা সেই গীতিকাব্য বৈষ্ণব কবিদিগেব দ্বাবা বিশেষরূপে অনুশীলিত হইতে লাগিল। ষোড়শ শতাব্দীব বৈষ্ণবগীতি-কাব্যেই প্রাচীন বাঙ্গালা সাহিত্যেব চবম উৎকর্ষ প্রকাশ পাইল। এই গীতি-কাব্য শুধু বাঙ্গালা ভাষাতেই বচিত হয় নাই, কিছু কিছু সংস্কৃতে, জয়দেবেব অনুকবণে, রচিত হইয়াছিল। কিন্তু বেশীৰ ভাগই লেখা হইত এক নূতন-সৃষ্ট মিশ্রভাষা ব্রজবুলিতে। মৈথিলাব কবি বিজ্ঞাপতি পঞ্চদশ শতাব্দীতে বর্তমান ছিলেন। মৈথিল ভাবায় লিখিত "ইহার রাধাকৃষ্ণবিষয়ক গীতিকবিতা বাঙ্গালা দেশে শিক্ষিত বৈষ্ণব সমাজে বিশেষ সমাদর লাভ করিয়াছিল। শ্রীচৈতন্য

বিজ্ঞাপতির গান শুনিয়া পরম শ্রীতিলাভ করিতেন। বাঙ্গালী কবিরা বিজ্ঞাপতির কবিতার স্বরূপ ও অলঙ্কারে আকৃষ্ট হইয়া ঐ ভাষায় কবিতা বচনা কবিত্তে লাগিলেন। মৈথিল ভাষা তাঁহাদের মাতৃভাষা নহে। সুতরাং তাঁহাদের লেখার মধ্যে বাঙ্গালা ভাষার প্রভাব কিছু না কিছু বহিয়া গেল। মৈথিল এবং বাঙ্গালা মিশ্রিত এই কৃত্রিম ভাষা ষোড়শ, সপ্তদশ এবং অষ্টাদশ শতাব্দীতে বৈষ্ণব গীতিকবিতার মূখ্য ভাষা হইয়া দাঁড়াইল। সাধারণ লোকে মনে করিল যে, দ্বাপর যুগে বাধাকৃষ্ণ সম্ভবতঃ এই ভাষাতেই কথা বলিতেন, ইহাই ছিল ব্রজের বুলি। সুতরাং এই ভাষার নাম হইল ব্রজবুলি, ব্রজের অর্থাৎ বৃন্দাবনের ভাষা। বৃন্দাবনের আধুনিক কথ্যভাষার নাম ব্রজভাষা। ইহা হিন্দীবই উপভাষা বিশেষ, ব্রজবুলির সতিত ইহা কোনই সম্পর্ক নাই। ঊনবিংশ শতাব্দীর শেষে, এমন কি বিংশ শতাব্দীতেও কোন কোন বাঙ্গালী কবি ব্রজবুলিতে কবিতা বচনা করিয়াছেন। ববীন্দ্রনাথের কৈশোবেব শ্রেষ্ঠ বচনা ভানুসিংহ ঠাকুরের পদাবলীর ভাষা ব্রজবুলি।

বাঙ্গালা এবং ব্রজবুলিতে শুধু বাধাকৃষ্ণের লীলা লইয়াই পদ বচনা হইল না। শ্রীচৈতন্যের জীবনকাহিনী এবং তাঁহার প্রধান প্রধান পাবিদগণের মাহাত্ম্য বিষয়েও প্রচুর গীতিকবিতা রচিত হইতে লাগিল। দেবতার বিষয় ছাড়া অল্প বিষয়ে, বিশেষ কবিতা জীবিত মানুষের উপর, কবিতা বচনা করা বাঙ্গালা সাহিত্যে কেন সমগ্র ভাবতীয় সাহিত্যে নূতন যুগের অবতারণা করিল। বাঙ্গালা সাহিত্য এতদিন ছড়াগান, ব্রতকথা ও দেবতার পাঁচালী, বড় জোর রামায়ণ ও

মহাভারতের কাহিনী লইয়াই ব্যাপৃত ছিল : এ ছিল একেবারে “লোক সাহিত্য,” ইংরেজিতে যাকে বলে ‘ফোক-লিটারেচার।’ এখন ইহা প্রকৃত সাহিত্যেব মর্যাদা লাভ করিল। সে যুগের পক্ষে এ অসামান্য ঘটনা। শ্রীচৈতন্যেব বিষয়ে ষাহাবা সর্বপ্রথম কবিতা লিখেন তাহাবা মহাপ্রভুরই পাবিষদ ছিলেন। ইহাবা হইতেছেন—নরহরি সরকার, বংশীবদন চট্ট, বামুদেব ঘোষ এবং পবমানন্দ গুপ্ত। শ্রীচৈতন্যের অনুচরদিগের মধ্যে আবও অনেকে কবি ছিলেন, তন্মধ্যে বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য হইতেছেন—মুরাবি গুপ্ত, গোবিন্দ আচার্য, বামানন্দ বসু এবং মাধব আচার্য। ✓

নরহরি সরকারেব বাস ছিল বর্দ্ধমান জেলায় শ্রীখণ্ডে। শ্রীখণ্ডের বহু ব্যক্তি গোড়ে বাজদববারে চাকুরি করিতেন, সেই সূত্রে পঞ্চদশ শতাব্দী হইতেই শ্রীখণ্ড সাহিত্যচর্চার একটি বিশিষ্ট কেন্দ্র হইয়া দাড়ায়। নরহরি স্বয়ং, তাহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা মুকুন্দ, এবং ভ্রাতৃপুত্র রঘুনন্দন শ্রীচৈতন্যেব বিশিষ্ট ভক্ত ছিলেন। ইহাদের, বিশেষ কবিষা নরহরি এবং রঘুনন্দনেব, প্রভাবে শ্রীখণ্ড বৈষ্ণবদিগেব একটি তীর্থস্থান হইয়া পড়ে। নরহরি শ্রীচৈতন্যেব পূজা প্রচাবেব অত্যন্ত প্রবর্তক। নরহরি এবং রঘুনন্দনের শিষ্যদিগেব মধ্য বহু প্রথমশ্রেণীর কবি ছিলেন, যেমন—লোচন দাস, কবিরঞ্জন এবং কবিশেখর বায় উপাধিক দেবকীনন্দন সিংহ।

নিত্যানন্দ এবং তাহার কনিষ্ঠা ভাৰ্য্যা জাহ্নবা দেবীর শিষ্যগণের মধ্যে সে যুগের তিনজন শ্রেষ্ঠ কবি ছিলেন—বৃন্দাবনদাস, বলরামদাস এবং জ্ঞানদাস। অত্যাশ্র শ্রীচৈতন্য-পারিষদের শিষ্যগণের মধ্যেও বহু কবি পাই—নয়নানন্দ মিশ্র,

শিবানন্দ চক্রবর্তী, যতনন্দন চক্রবর্তী, উদ্ধব দাস, দেবকৌন্দন, অনন্তদাস, চৈতন্যদাস, ইত্যাদি।

বৈষ্ণব গীতিকবিবা সচবাচব “পদকর্তা” বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকেন। ষোড়শ শতাব্দীর প্রথম ভাগেব পদকর্তাদেব মধ্যে কৃষ্ণলীলা বর্ণনায মুবাবি গুপ্ত, লোচন দাস, জ্ঞানদাস এবং বলবামদাস অতুলনীয়। লোচন দাস হালকা ছন্দেব বান্ধালা কবিতায বিশেষ গুণপনা দেখাইয়াছেন। বাংসল্য বাসেব বর্ণনায বলবামদাসেব জুড়ি নাই। জ্ঞানদাস বান্ধালা এবং ব্রজবুলি উভয ভাষাব পদেই অসামান্য নৈপুণ্য দেখাইয়াছেন। বাসুদেব ঘোষেব এবং নগনানন্দ মিশ্রেব বচিত শ্রীচৈতন্য-বিষয়ক পদগুলি ভক্তি ও ভাববসে ভবপূব।

গীতিকায ছাড়া কযখানি শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল কাব্যও এই সময়ে বচিত হয়। মাধব আচার্যেব কাব্য শ্রীচৈতন্য বর্তমান থাকা কালেই বচিত হইয়াছিল বলিয়া অনুমান হয়। দেবকৌন্দন সিংহেব গোপালবিজয়েব সহিত বড়ু চণ্ডীদাসেব শ্রীকৃষ্ণ-কীর্তনেব অনেকটা মিল আছে। দেবকৌন্দন সংস্কৃতে কৃষ্ণ-লীলায় একখানি কাব্য এবং একটি নাটকও বচনা কবিয়া-ছিলেন। শ্রীচৈতন্যেব অনুগৃহীত ভক্ত বঘুনাথ পণ্ডিত ভাগবতাচার্য্য শ্রীমদ্ভাগবত অবলম্বনে কৃষ্ণপ্রেমভবঙ্গিনী কাব্য বচনা কবিয়াছিলেন। এটি পূবাণুবি বর্ণনায় এক কাব্য।

মাধব আচার্যেব শিষ্য কৃষ্ণদাসও একখানি শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল কাব্য বচনা কবিয়াছিলেন। আকাবে ছোট হইলেও কাব্যটি উৎকৃষ্ট। কৃষ্ণদাসেব পিতাব নাম যাদবানন্দ, মাতাব নাম পদ্মাবতী। ইহাদেব নিবাস ছিল ভাগীবখীর পশ্চিমতীববর্তী কোন গ্রামে।

শ্রীচৈতন্য-জীবনী

পূর্বেই বলিয়াছি যে, সমসাময়িক ব্যক্তির জীবনী-কাব্য লইয়াই বাঙ্গালা সাহিত্যের গতানুগতিকতা ভঙ্গ হইল। শ্রীচৈতন্যের অতিলৌকিক চরিত্র ও ব্যক্তিত্ব শুধু তাহার ভক্ত-দিগেরই নহে, সাধারণ লোকেবও সবিস্ময় শ্রদ্ধা ও ভক্তিব উদ্ভেক করিয়াছিল। তাঁহার তিবোধানেব বহু পূর্বেই তিনি বৈষ্ণব সমাজে অবতাব বলিয়া সম্পূজিত হইয়াছিলেন, এবং শুধু নীতিকবিতায় নহে সুবহু জীবনীকাব্যেও তাঁহার লীলা-কাহিনী পরিকীর্ণিত হইয়াছিল। শ্রীচৈতন্যের বর্তমান কালে যে জীবনীটি রচিত হইয়াছিল তাহা সংস্কৃতে, মহাকাব্যেব আকারে, মুরারি গুপ্তেব লেখনী-প্রসূত। বাঙ্গালা জীবনী-কাব্য কয়খানি তাঁহার তিরোধানের অল্পবিস্তর পরে, ষোড়শ শতাব্দীর মধ্যেই রচিত হইয়াছিল। ষোড়শ শতাব্দীর গোড়ার দিকে আরও দুইখানি সংস্কৃত গ্রন্থে শ্রীচৈতন্যের জীবনী বর্ণিত হইয়াছিল। দুইখানিরই বচয়িতা পরমানন্দ সেন কবিকর্ণপুর। ইনি শ্রীচৈতন্যেব অন্যতম পাবিষদ শিবানন্দ সেনের পুত্র ছিলেন। একখানি হইতেছে মহাকাব্য—চৈতন্যচরিতামৃত, আর অপরখানি নাটক—চৈতন্যচন্দ্রোদয়।

বাঙ্গালায় শ্রীচৈতন্যের প্রথম জীবনী-কাব্য হইতেছে স্বন্দাবনদাসের চৈতন্যভাগবত। বইটি শ্রীচৈতন্যের তিবোধানের অল্প কয়েক বৎসরের মধ্যে নিত্যানন্দের আদেশে রচিত হইয়াছিল। চৈতন্যভাগবতে শ্রীচৈতন্যের প্রথম জীবনের কাহিনী

সুন্দরভাবে বিবৃত হইয়াছে। বইটি অতিশয় সুখপাঠ্য, পড়িলে মনে হয় যেন গ্রন্থকার ভাবে আবিষ্ট হইয়া লেখনী ধাবণ করিয়াছিলেন। সেকালের নবদ্বীপের সুন্দর বর্ণনা পাওয়া যায় চৈতন্যভাগবতে। বৃন্দাবনদাস ছিলেন শ্রীচৈতন্যের মুখ্য পাবিষদগণের অগ্রতম শ্রীবাস পণ্ডিতের এক ভ্রাতার দৌহিত্র এবং নিত্যানন্দ প্রভুর শিষ্য। বর্ণিত বিষয়ের অধিকাংশই তিনি নিত্যানন্দের মুখে শুনিয়াছিলেন। নিত্যানন্দের বাল্যকথা এবং পরবর্ত্তী কীর্ত্তিকলাপও ইহাতে যথাসম্ভব বিস্তৃতভাবে দেওয়া আছে।

লোচন দাসের চৈতন্যমঙ্গল চৈতন্যভাগবতের পরে রচিত হইয়াছিল, কারণ ইহাতে বৃন্দাবনদাসের গ্রন্থের উল্লেখ আছে। স্বীয় গুরু নরহরি সরকাবের আদেশে লোচন কাব্যটি রচনা করেন। লোচনের নিবাস ছিল বর্দ্ধমান জেলায় কোগ্রামে। ইহাব পিতার নাম কমলাকর দাস, মাতার নাম অভয়া দাসী। পিতৃ-বংশের ও মাতৃ-বংশের একমাত্র সন্তান ছিলেন বলিয়া বাল্যকালে লোচন শিক্ষার অপেক্ষা আদবই পাইয়াছিলেন অত্যধিক। একটু বেশী বয়সে ইনি লেখাপড়া শিখিতে আরম্ভ করেন, তাহাও মাতামহ পুরুষোত্তম গুপ্তের নির্বন্ধে।

লোচনের কাব্য মুবারি গুপ্তের শ্রীশ্রীকৃষ্ণচৈতন্যচরিতামৃতের অনুবাদ বলা চলে। জীবনী হিসাবে বিশেষ নূতনত্ব না থাকিলেও লোচনের চৈতন্যমঙ্গল কাব্য হিসাবে অতিশয় উপাদেয়। পাঁচালী গান বলিয়া চৈতন্যমঙ্গল বরাবর সমাদর লাভ করিয়া আসিয়াছে।

শুধু শ্রীচৈতন্যের শ্রেষ্ঠ জীবনী বলিয়াই নহে, উচ্চস্তরের দার্শনিক গ্রন্থ হিসাবেও কৃষ্ণদাস কবিরাজের চৈতন্যচরিতামৃত

বাঙ্গালা সাহিত্যের সর্ব্বশ্রেষ্ঠ গ্রন্থ বলিলে বেশী বলা হয় না। কৃষ্ণদাসের নিবাস ছিল বর্ধমান জেলায় কাটোয়ার নিকটে ঝামটপুর গ্রাম। প্রৌঢ় বয়সে ইনি সংসার ত্যাগ করিয়া বৃন্দাবনে চলিয়া যান এবং রঘুনাথ দাসের শিষ্যত্ব এবং সেবকত্ব গ্রহণ করেন। সনাতন এবং রূপ গোস্বামীর নিকট ইনি আধ্যাত্মিক শিক্ষা লাভ করেন। কৃষ্ণদাস ছিলেন যেমন বিদ্বান্ তেমনি রসবেত্তা এবং কবিত্বপ্রতিভাসম্পন্ন। ইঁহার রচিত সংস্কৃত মহাকাব্য গোবিন্দলীলামৃত অতি উপাদেয় গ্রন্থ।

পাছে বৃন্দাবনদাসের চৈতন্যভাগবত তুলনায় হীন প্রতিপন্ন হইয়া অনাদৃত হয় এই আশঙ্কায় কৃষ্ণদাস তাঁহার চৈতন্যচরিত গ্রন্থে শ্রীচৈতন্যের বালালীলা সূত্রাকারে লিপিবদ্ধ করিয়া বৃন্দাবনদাসের গ্রন্থের উপর বরাত দিয়া সারিয়াছেন। শ্রীচৈতন্যের মধ্য জীবনের অনেক কথা এবং শেষ জীবনের কাহিনী যাহা অন্যত্র কোথাও লিখিত হয় নাই তাহা, কৃষ্ণদাস যথাযথভাবে অথচ বিশেষ দক্ষতা ও কবিত্বের সহিত বর্ণনা করিয়াছেন। শ্রীচৈতন্যের শেষ কয় বৎসরের জীবনকথা জানিবার তাঁহার যে সুযোগ ছিল তাহা অল্প কাহারও ছিল না। রঘুনাথ দাস শ্রীচৈতন্যের বর্ত্তমান কালে নীলাচলে বাস করিতেন, তিনি স্বচক্ষে অনেক লীলা প্রত্যক্ষ করিয়াছিলেন এবং পূর্ববর্ত্তী অনেক লীলা তিনি স্বীয় গুরু, শ্রীচৈতন্যের অভিল্লহদয় মর্শ্বসহচর স্বরূপ দামোদরের নিকট অবগত হইয়াছিলেন। এই সকল তথ্য কৃষ্ণদাস রঘুনাথের কাছে পাইয়াছিলেন। কৃষ্ণদাসের ঐতিহাসিক দৃষ্টি এবং তথ্যনিষ্ঠা অতিশয় বলবতী ছিল; যখনই তিনি শ্রীচৈতন্যের বিষয়ে কোন নূতন কথা বলিয়াছেন, সেইখানেই তিনি প্রমাণ মানিতে

ভুলিয়া যান নাই। বৈষ্ণবধৰ্ম্মেৰ নিগূঢ় সিদ্ধান্ত চৈতন্য-চৰিতামৃততে স্বল্লাক্ষৰে অথচ সহজভাবে বৰ্ণিত থাকায় গ্ৰন্থটি অধ্যাত্মনিষ্ঠ ও দাৰ্শনিক ব্যক্তিদিগেৰ নিকট পবন সমাদৰ লাভ কৰিয়াছে। একাধাৰে ইতিহাস, দৰ্শন ও কাব্যেৰ এমন অপকল্প সমন্বয় কোনও দেশেৰ কোনও সাহিত্যে দেখা গিয়াছে কিনা সন্দেহ।

চৈতন্যচৰিতামৃত ষোড়শ শতাব্দীৰ শেষোদ্ধে কোন সময়ে বৰ্চিত হইয়াছিল, এইকপ অনুমান হয়। তখন কৃষ্ণদাস সুবুদ্ধ। কেহ কেহ মনে কবেন যে, ইহা ১৫৩৭ শকাব্দে অৰ্থাৎ ১৬১৬ খ্ৰীষ্টাব্দে বৰ্চিত হইয়াছিল, কিন্তু নানাকাবণে এ মত সমৰ্থনযোগ্য নহ।

জয়ানন্দ তাহাব চৈতন্যমঙ্গল কাব্য লিখিয়াছিলেন জন-সাধাৰণেৰ জন্ত, শিক্ষিত ভক্ত বৈষ্ণবেৰ জন্ত নহে। কবিত্ব-শক্তিৰ বালাই তাহাব বড় কিছু ছিল না। সুতবাং জয়ানন্দেৰ গ্ৰন্থ কাব্য হিসাবে বিশেষ ভাল নহে। শ্ৰীচৈতন্যেৰ জীবনী জয়ানন্দ সাক্ষাৎভাবে জানিতেন না, দুই তিন বা ততোধিক হাত ক্ষেত্ৰতা সংবাদেৰ অতিবিক্ত তাঁহাব জানা ছিল বলিয়া বোধ হয় না। সুতবাং জয়ানন্দেৰ চৈতন্যমঙ্গলে শ্ৰীচৈতন্যেৰ তিবোধান, তাঁহাব পূৰ্বপুৰুষদিগেৰ নামধাম ইত্যাদি দুই চাৰিটি নূতন কথা থাকিলেও প্ৰামাণিকতা হিসাবে নিতান্তই মূল্যহীন। লোচনেৰ কাব্যেৰ মত জয়ানন্দেৰ কাব্যও পুৰাণেৰ ধাঁচে বৰ্চিত, এবং ইহাও পাঁচালীৰ মত গাওযা হইত। মন্দাৰণ এবং মল্লভূম অঞ্চলেই জয়ানন্দেৰ কাব্যেৰ চলন ছিল।

জয়ানন্দেৰ নিবাস ছিল বৰ্দ্ধমান (মন্দাৰণ ৭) সন্নিকটে আমাই-পুৰা গ্ৰামে। ইহাব পিতা সুবুদ্ধি মিশ্ৰ শ্ৰীচৈতন্যেৰ অন্যতম

প্রধান পারিষদ গদাধর পণ্ডিতের শিষ্য ছিলেন। জয়ানন্দের মাতার নাম রোদনী। জয়ানন্দ বলিয়াছেন যে, তিনি যখন তিন বৎসরের শিশু তখন শ্রীচৈতন্য তাঁহাদের গৃহে একবার অল্প সময়ের জন্য অতিথি হইয়াছিলেন, এবং তাঁহার নামকরণ করিয়াছিলেন। জয়ানন্দের চৈতন্যমঙ্গল ষোড়শ শতাব্দীর শেষার্ধ্বে কোন সময়ে লিখিত হইয়া থাকিবে।

শ্রীচৈতন্যের জীবনীকাব্যের মধ্যে গোবিন্দদাসের কড়চারও উল্লেখ করা কর্তব্য। বইটি ছোট; তবে ইহাতে শ্রীচৈতন্যের দাক্ষিণাত্যভ্রমণ বিষয়ে অনেক নূতন কথা আছে। রচনাভঙ্গি সুন্দর, তবে নিতান্ত আধুনিক। অনেকেই সন্দেহ করেন যে, বইখানি জাল না হইলেও ইহাতে যথেষ্ট ভেজাল আছে।

সপ্তদশ শতাব্দীতে কোন শ্রীচৈতন্যজীবনীকাব্য লিখিত হয় নাই; অষ্টাদশ শতাব্দীতে একখানি হইয়াছিল। এটির চৈতন্যচন্দ্রোদয়কৌমুদী, রচয়িতা প্রেমদাস। কাব্যটি কবিকর্ণপুরের সংস্কৃত নাটক চৈতন্যচন্দ্রোদয়ের ভাবানুবাদ। ✓

ষোড়শ শতাব্দীতে অন্ততঃ তিনখানি অদ্বৈত আচার্য্যের জীবনীকাব্য লিখিত হইয়াছিল। শেষের দুই খানিতে শ্রীচৈতন্যের কথা প্রচুর থাকায় এ দুটিকেও স্বচ্ছন্দে শ্রীচৈতন্য-জীবনীর মধ্যে ধরা চলে। শ্রীহট্ট লাউড়ের রাজা দিব্যসিংহ স্বল্প বয়সে সম্রাটের গ্রহণ করিয়া কৃষ্ণদাস নাম গ্রহণ করেন। বাল্যলীলাসূত্র নামে একটি ছোট সংস্কৃত গ্রন্থে ইনি অদ্বৈত আচার্য্যের বাল্যকথা লিপিবদ্ধ করেন। পরবর্ত্তী জীবনীকারেরা সকলেই এই বই হইতে উপাদান সংগ্রহ করিয়াছেন।

ঈশান নাগরের অদ্বৈতপ্রকাশ লাউড়ে বিখ্যাত হয়

১৪৯০ শকাব্দে অর্থাৎ ১৫৬৯ খ্রীষ্টাব্দে। বইটি ছোট হইলেও অতিশয় সুললিত। শ্রীচৈতন্যের সম্বন্ধেও অনেক প্রয়োজনীয় নূতন কথা ইহাতে আছে। ঈশান নাগব আচার্য্যের জ্যেষ্ঠ পুত্র অচ্যুতানন্দের সঙ্গে একবয়সী। বাল্যকাল হইতেই ইনি শাস্ত্রিপুবে আচার্য্যের গৃহে প্রতিপালিত হন। সেইজন্য* ইনি শ্রীচৈতন্যের অনেক লীলা চাক্ষুষ কবিবাব সৌভাগ্য লাভ করিয়াছিলেন। আচার্য্যের দ্বিতীয়া পত্নী সীতা দেবীর আদেশে ইনি বৃদ্ধ বয়সে লাউড়ে প্রত্যাগমন করেন এবং বিবাহ কবিতা সংসারী হন, আব তাঁহাবই আদেশে অদ্বৈত-প্রকাশ কাব্য বচনা করেন।

হবিচরণ দাসের অদ্বৈতমঙ্গল ঈশান নাগবের গ্রন্থ হইতে অনেক বড়। গ্রন্থকাব অদ্বৈত আচার্য্যের শিষ্য অথবা অন্তর ছিলেন। আচার্য্যের জীবনীর অনেক উপাদান তিনি পাইয়া- ছিলেন আচার্য্যের গ্রাম-সম্পর্কীয় মাতুল, বৃদ্ধ সন্ন্যাসী বিজয় পুর্বীক নিকট। আচার্য্যের জ্যেষ্ঠ পুত্র অচ্যুতানন্দের আদেশে হরিচরণ অদ্বৈতমঙ্গল বচনা করেন।

অদ্বৈত আচার্য্যের জীবনী-কাব্য আরও একখানি পাওয়া গিয়াছে; এটি হইতেছে নবহবি দাস রচিত অদ্বৈতবিলাস। খুব সম্ভব বইটি অষ্টাদশ শতাব্দীর প্রথমার্দ্ধের পূর্বে রচিত হয় নাই।

অদ্বৈত আচার্য্যের দ্বিতীয়া ভার্য্যা সীতাদেবী একজন মহীয়সী নারী ছিলেন। ইহাব জীবনী ষোড়শ শতাব্দীর দুইখানি ক্ষুদ্র কাব্যে বর্ণিত হইয়াছিল। বই দুইখানির নাম যথাক্রমে সীতাপুণকদম্ব এবং সীতাচবিত্র। প্রথমখানির রচয়িতা বিষ্ণুদাস আচার্য্য সীতাদেবীর শিষ্য ছিলেন। দ্বিতীয়-

খানি লোকনাথ দাস বিরচিত। এখানিতে যথেষ্ট ভেজাল আছে; খুব সম্ভব এটি ষোড়শ শতাব্দীর অনেক পবেকার রচনা।

কপ গোস্থামী প্রভৃতি বৈষ্ণব মহাস্তেব বচিত সংস্কৃত গ্রন্থাদিব অনুবাদ ষোড়শ শতাব্দীর শেষ ভাগ হইতেই আবণ্ড হয়। তবে পববর্তী শতাব্দীতেই এই প্রচেষ্টা ব্যাপকভাবে দেখা দেয়।

ষোড়শ শতাব্দীর শেষ ভাগে ছোট বড় বহু বৈষ্ণবসাধনা-ঘটিত পুস্তিকা বচিত হইয়াছিল। লোচন দাস এইকপ কতকগুলি ছোট বই বচনা কবিয়াছিলেন, সেগুলিব মধ্যে সর্বাপেক্ষা মূল্যবান হইতেছে দুর্লভসাব। কবিবল্লভেব বসকদম্ব একখানি চমৎকার বই। এই বইটিতে অনেক নূতনত্ব আছে। কাব্য হিসাবেও রসকদম্ব উৎকৃষ্ট বচনা। বসকদম্বেব বচনা সমাপ্ত হইয়াছিল ১৫২০ শকাব্দে অর্থাৎ ১৫৯৯ খ্রীষ্টাব্দে। কবিব পিতাব নাম বাজবল্লভ, মাতাব নাম বৈষ্ণবী। ইহাদেব নির্বাস ছিল উত্তর বঙ্গে কবতোয়া তীবে মহাস্থানেব সমীপে আরোড়া গ্রাম। কবিব গুরু উদ্ধব দাস গদাধর পণ্ডিতেব শিষ্য ছিলেন।

৯

চণ্ডীমঙ্গল ও অপরাপর শাক্ত কাব্য

চণ্ডীমঙ্গল পাঁচালী পঞ্চদশ শতাব্দীর শেষ ভাগে বিশেষ ভাবে প্রচলিত ছিল, ইহা বৃন্দাবনদাসেব উক্তি হইতে বুঝা যায়। ইহাব পূর্বে এই কাহিনী কাব্যাকাবে না হউক, ঐতিহ্য রূপেও যে প্রচলিত ছিল তাহা অনুমান করা অসম্ভব

নহে। বাহা হউক, যে সব চণ্ডীমঙ্গল কাব্য আমাদের হস্তগত হইয়াছে তাহাদের কোনটিই ষোড়শ শতাব্দীর দ্বিতীয়ার্ধের পূর্বে রচিত হয় নাই। চণ্ডীমঙ্গল কাব্যের কথা বলিবার পূর্বে চণ্ডীমঙ্গল কাহিনীর কিছু পরিচয় দিই।

মঙ্গলচণ্ডীদেবীর মাহাত্ম্য ও পূজা প্রকাশই চণ্ডীমঙ্গল কাহিনীর মূলকথা। এই কাহিনী সংস্কৃত ভাষায় লেখা কোন পুবাণে নাই, তবে অনুমান হয় যে, বাঙ্গালা দেশে এই দেবী মাহাত্ম্য কাহিনী বহুদিন হইতে প্রচলিত ছিল। চণ্ডীমঙ্গলে দুইটি স্বতন্ত্র কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে। প্রথমটি ব্যাধ কালকেতুর কাহিনী, দ্বিতীয়টি বণিক ধনপতির উপাখ্যান। গল্প দুইটি সংক্ষেপে নিয়ে দেওয়া গেল।

কালকেতু সুদরিদ্র ব্যাধের সন্তান, নিজেও ব্যাধবৃদ্ধি কবিয়া কষ্টে-শ্রুটে জীবিকা নির্বাহ করে। পিতামাতার মৃত্যুর পব সংসার বালিতে নিজে এবং স্ত্রী ফুল্লরা। ফুল্লরা যেমন বুদ্ধিমতী তেমনিই গৃহকর্মনিপুণ। স্বামী বনের পশু মারিয়া গৃহে আনে, স্ত্রী মাথায় বহিয়া লোকের ঘবে ঘবে, হাটে বাজারে সেই মাংস বিক্রয় করিয়া আসে। কেহ বা নগদ কড়ি দিয়া কিনে, কেহ বা ধারে। এই দরিদ্র ধার্মিক দম্পতীর উপর দেবীর অনুকম্পা হইল, তিনি স্থির করিলেন ইহাদের দিয়া তিনি পৃথিবীতে আপন মাহাত্ম্য প্রচার করিবেন। একদিন কালকেতু মৃগয়ায় গিয়া কিছুই পাইল না, অনেক কষ্টে একটি স্বর্ণকাস্তি গোধিকা জীবিত অবস্থায় ধরিয়া গৃহে লইয়া আসিল। ফুল্লরাকে ঘরে না দেখিয়া, চালের খুঁটিতে গোসাপটাকে বাঁধিয়া স্ত্রীকে খুঁজিতে বাহির হইল। কালকেতু দরজা পার হইবামাত্র দেবী ষোড়শবর্ষীয়া

মুন্দরী বালিকাব কপ ধরিয়া ঘবেব দাওয়ায় বসিয়া রহিলেন। ফুলবা অন্য পথ দিয়া ঘবে আসিয়া এই দৃশ্য দেখিয়া বিস্ময়ে হতবাক্ হইয়া গেল। বিস্ময় দমন কবিয়া বালিকাব পবিচয় জিজ্ঞাসা কবিয়া জানিল যে, তাঁহাব পতি বৃদ্ধ ও উদাসীন, তাহাব উপব কলহপ্রিয়া সঁতিনীব উপজব, সেইজন্য তিনি গৃহত্যাগ কবিয়া বনে বনে ফিবিতেছিলেন। এমন সময়ে ব্যাধ কালকেতু তাঁহাকে “নিজ গুণে বাঁধিয়া” (এখানে দুইটি অর্থ—দড়ি দিয়া বাঁধিয়া, অথবা নিজেব গুণে বশীভূত কবিয়া) গৃহে লইয়া আসিয়াছে। শুনিয়া ফুলবাব বিস্ময় ঘুচিয়া হতাশাব সঞ্চাব হইল। সে দেবীকে অনেক বুঝাইতে চেষ্টা কবিল যে, স্বামী যতই দুর্বৃত্ত, গৃহ যতট অশান্তিপূর্ণ হউক না কেন স্বামীই স্ত্রীব একমাত্র গতি; স্বামী পরিত্যাগিনী পত্নীব ইহলোকও নাই, পবলোকও নাই। বালিকা তাহাতেও ভিজিল না দেখিয়া ফুলবা অন্য পথ ধবিল। নিজেদেব বারমাসিয়া ছুঁখেব নিখুঁত বর্ণনা কবিয়া দেবীকে বুঝাইতে চেষ্টা কবিল যে, তাহাদেব গৃহে থাকিলে তাঁহাব দুর্গতির পবিসীমা থাকিবে না। এত শুনিয়াও দেবী চলিয়া যাইবার ভাব দেখাইলেন না। তখন স্বামীব উপব ফুলবাব দারুণ অভিমান হইল; সে স্বামীকে খুঁজিয়া আনিতে চলিল। পথে ছুজনেব দেখা হইল। ফুলবাব কথায় কালকেতু বিষম ধাঁধায় পড়িয়া গেল; এ বলে কি? সে ত কোন মুন্দরী বালিকাকে গৃহে আনে নাই! গৃহে ফিবিয়া কালকেতুর চক্ষু-কর্ণের বিবাদ মিটিল। বিস্ময়েব ঘোব কাড়িলে সেও দেবীকে স্বামিগৃহে প্রত্যাবর্তন কবিতে নিব্বন্ধ সহকাবে অন্তবোধ করিতে লাগিল। এতক্ষণে দেবী স্বামী স্ত্রীব সাধুতাব

পৰীক্ষায় সন্তুষ্ট হইলেন। তিনি নিজেৰ স্বৰূপ প্ৰকাশ কৰিয়া কালকেতু ও ফুল্লবাকে আশীৰ্বাদ কৰিলেন এবং একটা মূল্যবান অঙ্গুৰী উপহাৰ দিয়া সশৰীৰে অন্তৰ্হিত হইলেন। অঙ্গুৰী বিক্ৰয় কৰিয়া কালকেতু বহু ধন পাইল, সেই অৰ্থে জঙ্গল কাটাইয়া নূতন বাজ্য ও বাজধানীৰ পত্তন কৰিল। নানা জাতিৰ লোক আসিয়া কালকেতুৰ বাজ্যে বসতি কৰিল। সেই সঙ্গে আসিল ধূৰ্ত্ত প্ৰবঞ্চক ভাঁড়ু দত্ত। বাজ্যৰ নিকট মিথ্যা পৰিচয় দিয়া পসাব জাঁকাইয়া ভাঁড়ু প্ৰজাদিগেৰ উপৰ অত্যাচাৰ কৰিতে আবন্ত কৰিল। কালকেতু সংবাদ পাইয়া ভাঁড়ুকে অপমান কৰিয়া নিজেৰ বাজ্য তহিতে তাড়াইয়া দিল। কালকেতু প্ৰদত্ত অপমানেৰ প্ৰতিশোধ লইবাব বাসনায ভাঁড়ু কালকেতুৰ প্ৰতিবেশী বাজ্যকে উত্তেজিত কৰিয়া কালকেতুৰ বাজ্য আক্ৰমণ কৰাইল। কালকেতু বীৰেৰ মত যুদ্ধ কৰিয়া পৰিশ্ৰান্ত হইয়া একস্থানে লুকাইয়া বহিল। ভাঁড়ু দত্ত ছলনা কৰিয়া ফুল্লবাব নিকট সেই গুপ্ত স্থান জানিয়া লইয়া বাজ্যকে বলিয়া ধিক্ৰ। কালকেতু বন্দী হইয়া কাবাগাবে নিক্ষিপ্ত হইল। কাবাগাবে অশেষ নিৰ্যাতন ভোগ কৰিতে কৰিতে কালকেতু দেবী চণ্ডীকে শ্ৰবণ কৰিতে লাগিল। দেবী বাজ্যকে স্বপ্ন দিলেন; কালকেতুকে দেবীৰ বৰপুত্ৰ জানিয়া বাজ্য অবিলম্বে তাহাকে কাবামুক্ত কৰিল। কালকেতু স্বীয় বাজ্যে প্ৰত্যাগমন কৰিল। বহুদিন বাজ্য কৰিয়া দেহত্যাগেৰ পৰ কালকেতু সস্ত্ৰীক স্বৰ্গে গমন কৰিল। ইহাই চণ্ডীমঙ্গল কাব্যেৰ প্ৰথম উপাখ্যান।

উজানী নগৰে এক ধনবান্ বণিক ছিল, নাম ধনপতি। প্ৰথম পত্নী লহনা নিঃসন্তান বলিয়া ধনপতি ৰূপসী ও গুণবতী

বালিকা খুল্লনাকে বিবাহ করিল। বিবাহের অল্পকাল পরেই তাহাকে বাজার আদেশে বিদেশে যাইয়া কিছুকাল থাকিতে হইল। এই অবসরে দাসী দুর্বলাব কুমন্ত্রণায় ভুলিয়া লহনা সপত্নী খুল্লনাকে অশেষ যত্ন দিতে লাগিল। অল্প-বস্ত্রের কথা দূরে থাক, খুল্লনাকে মাঠে ছাগল চরাইতে যাঁইতে বাঁধা কবা হইল। বনমধ্যে ছাগল চরাইতে চবাইতে খুল্লনা দেখিল যে কতকগুলি স্ত্রীলোকে মঙ্গলচণ্ডীৰ পূজা করিতেছে। ইহাবা বিজ্ঞাধরী। খুল্লনাকে চণ্ডীপূজা শিখাইবাব জন্তই তাহাবা পূজা করিতেছিল। ইহাদেব নিকট খুল্লনা চণ্ডীৰ মাহাত্ম্য অবগত হইয়া চণ্ডীৰ উপব ভক্তিমতী হইল। ধনপতি দেশে প্রত্যাগত হইলে খুল্লনার দুঃখেব বজনী প্রভাত হইল। কিন্তু সুখেব দিনও চিরস্থায়ী হইল না; কিছুদিন পবেই ধনপতিকে বাণিজ্যার্থে সিংহল-যাত্রা কনিতে হইল। খুল্লনা তখন সম্ভানসম্ভবা। অজয় ও গঙ্গা বাতিয়া ধনপতিব বাণিজ্য-তবী সমুদ্রে পড়িল। সিংহলেব যখন কাছাকাছি আসিয়াছে, তখন ধনপতি সমুদ্রগর্ভে এক অপূর্ব দৃশ্য দেখিল - সুরহৎ প্রক্ষুটিত পদ্মেব উপব বসিয়া এক ষোড়শী তরুণী একটি হস্তীকে একবাব গ্রাস করিতেছে, পবক্ষণে উদগীবণ করিয়া ফেলিতেছে! এ অদ্ভুত দৃশ্য কিন্তু ধনপতি ছাড়া আর কাহাবও দৃষ্টিগোচব হইল না। সিংহলে পৌঁছিয়া ধনপতি বাজার সহিত সাক্ষাৎ কবিয়া যথারীতি উপঢৌকন দিয়া তাঁহাকে খুসী করিল এবং পণ্য দ্রব্য ক্রয়বিক্রয় করিতে লাগিল। ছুরদৃষ্টক্রমে ধনপতি কথা-প্রসঙ্গে একদিন রাজাব নিকট সমুদ্র-বক্ষে সেই অপূর্ব দৃশ্যেব কথা বলিয়া ফেলিল। এই প্রকাব অসম্ভাব্য ব্যাপার শুনিয়া রাজা উপহাস করিয়া উড়াইয়া দিল। ধন-

পতির রোখ চাপিয়া গেল ; সে প্রতিজ্ঞা করিল যে, রাজাকে এই দৃশ্য দেখাইবে, আর না দেখাইতে পারিলে যাবজ্জীবন কারাবাস বরণ করিবে। রাজাকে লইয়া ধনপতি সমুদ্র-বক্ষে সেই স্থানে গেল, কিন্তু সে দৃশ্য দেখাইতে পারিল না। ধনপতি চিবিদিনের মত কারাগারে আবদ্ধ হইল। এ সবই দেবীর চক্রান্ত, তিনি ধনপতিকে কষ্ট দিয়া আগন ভক্ত করিতে মনস্থ করিয়াছেন। এদিকে খুলনা এক পুত্রসন্তান প্রসব করিল ; পুত্রের নাম হইল শ্রীপতি (বা শ্রীমন্ত)। পিতৃহীন শিশু মাতাব যত্নে বাড়িয়া উঠিল এবং উপযুক্ত শিক্ষা লাভ কবিতো লাগিল। যৌবনপ্রাপ্ত হইয়া শ্রীপতি নিরুদ্দিষ্ট পিতার সন্ধান কবিতো বাগ্ন হইয়া পড়িল। তাহাব আগ্রহাতিশয্যো মাতা সমুদ্র-যাত্রার সম্মতি না দিয়া থাকিতে পারিল না। শ্রীপতিও পিতাব মত বাণিজ্য-তবী লইয়া সিংহল-উদ্দেশ্যে যাত্রা করিল। সিংহলে উপকূলের নিকটে শ্রীপতিও সেই অপূর্ব “কমলে কামিনী” দৃশ্য দেখিল। সিংহলে পৌছিয়া সে পিতার মতই হঠকারিতা কবিয়া রাজাকে সেই দৃশ্য দেখাইতে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হইল। এবাব কথা রহিল, না দেখাইতে পাবিলে শ্রীপতির প্রাণদণ্ড হইবে। বলা বাহুল্য, শ্রীপতিও রাজাকে দৃশ্যটি দেখাইতে পারিল না। শ্রীপতিব প্রাণদণ্ডের আজ্ঞা হইল। ওদিকে বাড়ীতে বসিয়া খুলনা পুত্রের বিপদ আশঙ্কা করিয়া একান্ত মনে দেবীকে স্মরণ কবিতো লাগিলেন। এইবার দেবী পিতাপুত্রের প্রতি প্রসন্ন হইলেন। শ্রীপতিকে যখন শূলে চড়াইবার জন্ত মশানে লইয়া যাওয়া হইতেছে, তখন দেবী শ্রীপতির অতিবৃদ্ধ-পিতামহী রূপে রাজার নিকট উপস্থিত হইয়া কাতরভাবে বালকের প্রাণ-ভিক্ষা চাহিলেন। রাজা

স্বীকৃত হইল না। দেবী তখন ক্রুদ্ধ হইয়া তাঁহার ভূতপ্রেত-
 পিশাচ সৈন্যকে রাজধানী আক্রমণ করিতে আজ্ঞা দিলেন;
 অল্পকাল মধ্যেই রাজসৈন্য পরাভূত হইয়া গেল। রাজা
 দৈবীশক্তি জানিতে পারিয়া শ্রীপতিকে ছাড়িয়া দিয়া দেবীর
 নিকট ক্ষমা ভিক্ষা করিল। শ্রীপতি প্রথমেই কারাগারে
 গিয়া পিতাকে মুক্ত করিল। অন্ধ কাবাব মধ্যে পিতা পুত্রের
 প্রথম দর্শন হইল। দেবীর আদেশে বাজা তাহার কথা
 শ্রীলার সহিত শ্রীপতির বিবাহ দিল। পুত্র, পুত্রবধূ এবং
 প্রচুর ধনরত্ন ও পণ্যদ্রব্য লইয়া ধনপতি দেশে প্রত্যাগমন
 করিল এবং দেবীর অনুগ্রহে পুত্র পবিবাব লইয়া সুখে দিন
 বাপন করিতে লাগিল। ইহাট চণ্ডীমঙ্গল কাব্যের দ্বিতীয়
 উপাখ্যান।

মাণিক দত্তের চণ্ডীমঙ্গলের বচনা-কাল জানা নাই। তবে
 কাবাটি বিশেষ প্রাচীন বলিয়াই অনুমান হয়। মাণিক দত্ত
 সম্ভবতঃ উক্তবঙ্গের মালদহ অঞ্চলের লোক ছিলেন।

সন-তারিখ হিসাবে মাধব আচার্য্যের চণ্ডীমঙ্গলই প্রাচীন-
 তম। ইহার বচনা কাল হইতেছে ১৫০১ শকাব্দ অর্থাৎ
 ১৫৭৯-৮০ খ্রীষ্টাব্দ। কবির পিতার নাম ছিল পরাশর;
 ইহাদের নিবাস ছিল সপ্তগ্রাম। বাঙ্গালা দেশ তখন
 আকবরের অধীনে আসিয়াছে। মাধব আচার্য্য আকবরকে
 বিক্রমে অর্জুনের সঙ্গে তুলনা করিয়াছেন। মাধব আচার্য্যের
 কাব্য পূর্ববঙ্গেই বিশেষ প্রচলিত ছিল। কেহ কেহ অনুমান
 করেন যে, ইনিও একখানি শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল কাব্য রচনা করিয়া-
 ছিলেন। অনেকে বলেন যে, মাধব আচার্য্য দেশ ত্যাগ
 করিয়া গিয়া পূর্ববঙ্গে বসতি করেন। মাধব আচার্য্য প্রণীত-

একটি গঙ্গার মাহাত্ম্যমূচক গঙ্গামঙ্গল কাব্য পাওয়া গিয়াছে। কাব্যটি ক্ষুদ্র। এই মাধব আচার্য্য এবং চণ্ডীমঙ্গল কাব্যের রচয়িতা একই ব্যক্তি কিনা বলিবার কোন উপায় নাই।

চণ্ডীমঙ্গল-রচয়িতাদিগের মধ্যে অবিসংবাদিতভাবে শ্রেষ্ঠ হইতেছেন কবিকঙ্কণ-উপাধিক মুকুন্দরাম চক্রবর্তী। ইনি বাঙ্গালা সাহিত্যের শ্রেষ্ঠ কবিদিগের মধ্যে অন্যতম। মুকুন্দবামেব কাব্য প্রচারিত হইবার পূর্বে অল্প কয়েক চণ্ডীমঙ্গল কাব্য আর আসব জমাইতে পারে নাই। মুকুন্দরামের অঙ্কিত সব চরিত্রই যেন জীবন্ত।

মুকুন্দরামের পিতাব নাম হৃদয় মিশ্র; জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা কবি-চন্দ্র এবং কনিষ্ঠ রমানাথ (মতান্তরে রামানন্দ)। ইহাদের বহুপুরুষ হইতে নিবাস ছিল বর্ধমান জেলার দক্ষিণ-পূর্ব-সীমান্তে দামুণ্ডা বা দামিণ্ডা গ্রামে। পাঠান রাজত্বের শেষ এবং মোগল আমলের প্রারম্ভে দেশে প্রবল অবিচার-অত্যাচারের বন্যা প্রবাহিত হইল। অত্যাচারী শাসনকর্ত্তা এবং নিম্নপদস্থ কর্ম্মচারীদিগের দৌরাশ্রয়ে পৈতৃক ভিটার বাস কবা মুকুন্দবামেব পক্ষে অসম্ভব হইয়া দাড়াইল। যখন একেবারে অসহ্য হইল তখন শিশুপুত্র, পত্নী, কনিষ্ঠ ভ্রাতা, এবং দুই একজন বিশিষ্ট অনুচর সঙ্গে লইয়া কবি পথে বাহির হইলেন। পথে তিনি প্রবলের অত্যাচার যথেষ্টই অনুভব করিয়াছিলেন, কিন্তু মধ্যে মধ্যে দরিদ্র গৃহস্থের সহায় সামান্য আতিথ্য তাঁহার মানসিক দুঃখের উপর অমৃতপ্রলেপের কার্য্য করিয়াছিল। পথে কোন দিন যদু কুণ্ড নামে এক গৃহস্থ তাঁহাকে তিন দিন রাখিয়া ভিক্ষা দিয়াছিল, পরবর্ত্তী কালে রাজ-সভার আড্ডার মধ্যে বসিয়া

কাব্যরচনার কালেও কবি তাহার কথা বিস্মৃত হন নাই। বহু নদ নদী খাল বিল পাব হইয়া কবি অবশেষে মেদিনীপুর জেলাব আড়া গ্রামে পৌঁছিয়া সেখানকার জমিদার বাঁকুড়া বাঘের দ্বাৰস্থ হইলেন। বাঁকুড়া বাঘ মুকুন্দবামের মত ব্রাহ্মণ পণ্ডিতকে পাঠিয়া সাদরে আশ্রয় দিলেন। মুকুন্দবাম বাঁকুড়া বাঘের পুত্র বঘুনাথ বাঘের শিক্ষকতা কার্যে নিযুক্ত হইলেন। দেশভ্রমণ কবিয়া ভ্রমণ কবিবার কালে মুকুন্দবাম স্বপ্নে দেবী-কর্তৃক চণ্ডীমঙ্গল কাব্য লিখিতে আদিষ্ট হইয়াছিলেন, একথা বঘুনাথ শুনিয়াছিলেন। বঘুনাথ বাজা হইয়া মুকুন্দবামকে দেবীর আদেশের কথা শ্রবণ করাইয়া দেন, তদন্তসাবে মুকুন্দবামের কাব্য রচিত হয়। মুকুন্দবাম সম্ভবতঃ আব দেশে ফিবেন নাই। তাহার পুত্র শিববাম দেশে বাস করিয়াছিলেন। দামুণ্ডা গ্রামে মুকুন্দবামের পৈতৃক দেবতা সিংহবাহিনী এখনও তাঁহাদের বংশধবগণ কর্তৃক পূজিত হইতেছেন।

মুকুন্দবাম মানসিংহকে “গৌড়বঙ্গ-উৎকল-অধীপ” বলিয়া-ছেন। মানসিংহ ১৫৯৫ খ্রীষ্টাব্দে বাঙ্গালার সুবেদার হন, সুতরাং তাঁহার কাব্য ১৫৯৭ সালের কিছু পরেই রচিত হইয়াছিল।

মনসামঙ্গল কাব্যের মধ্যে দুইখানি বোধ হয় যোড়শ শতাব্দীতে রচিত হইয়াছিল। বংশীবদন বা বংশীদাস চক্র-বর্তী কাব্যের কোন কোন পুঁথিতে নাকি বচনা-কাল দেওয়া আছে—“জলধির মাঝেত ভুবন মাঝে দ্বাৰা” ইহা হইতে ১৪২৭ শকাব্দ পাওয়া যায়, ১৪৭২ শকাব্দও হইতে পারে। এই তাবিশ্ব সম্বন্ধে সন্দেহের যথেষ্ট কাৰণ আছে।

বংশীবদনের নিবাস ছিল ময়মনসিংহ জেলায় কিশোরগঞ্জ মহকুমায় পাটুয়াখালী গ্রামে। ইনি দরিদ্র ছিলেন, মনসাব পাঁচালী গাহিয়া অতি কষ্টে জীবিকা নির্বাহ করিতেন। বংশীবদনের পত্নীর নাম সুলোচনা। কবির একমাত্র সন্তান কন্যা চন্দ্রাবতী উদ্ভবাপিকাবশূদ্রে পিতার কবিত্বশক্তি লাভ করিয়াছিলেন। ইহাও বচিত ছড়া কিছু কিছু ময়মনসিংহ-অঞ্চলে এখনও প্রচলিত আছে। কথিত আছে যে, মনসামঙ্গল-বচনায় বংশীবদন চন্দ্রাবতীর সাহায্য পাইয়াছিলেন। চন্দ্রাবতীর মতিও জয়চন্দ্র নামক এক বাক্ষগকুমারের বিবাহ স্থির হয়। জয়চন্দ্র কিন্তু এক মুসলমান বর্মণের প্রেমে আসক্ত হইয়া ব্রাহ্মত্ব গ্রহণ করে। চন্দ্রাবতী আবার বিবাহ করেন নাই। এই কাহিনী ময়মনসিংহ অঞ্চলে প্রচলিত এক পল্লীগাথায় বর্ণিত হইয়াছে।

পূর্ববঙ্গে বচিত বিস্তর মনসামঙ্গল কাব্য পাওয়া গিয়াছে। সে সমস্তের মধ্যে বংশীবদনের কাব্যই শ্রেষ্ঠ। সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিত হইয়াও বংশীবদন দেখাও অথবা পাণ্ডিত্য পদর্শন করিতে চেষ্টা করেন নাই। অপবদনে ইহাও কাব্য গ্রাম্যতা দোষ হইতে একেবারে মুক্ত।

নাট্যায়ণ দেবের মনসামঙ্গল কাব্য বচনাব কাল দেওয়া নাই, তবে কাব্যটি পড়িলে প্রাচীন বলিয়াই মনে হয়। অন্ততঃ পক্ষে ষোড়শ শতাব্দীর শেষ ভাগের বচনা না হইবার বিকল্পে কোন প্রমাণ নাই। ইনিও ময়মনসিংহ জেলায় কিশোরগঞ্জ মহকুমার লোক। ইহাও নিবাস ছিল বোবা গ্রামে। কবির পূবা নাম ছিল বামনাটায়ণ দেব, এবং উপাধি ছিল শ্রুতিবল্লভ। কাব্যহিসাবে নাট্যায়ণ দেবের পদ্মাপুৰাণ নিন্দনীয়

নহে। পূর্ববঙ্গে মনসামঙ্গল সাধারণতঃ পদ্মাপুরাণ নামেই উল্লিখিত হইত।

নারায়ণ দেব আরও একখানি কাব্য লিখিয়াছিলেন। এই কাব্যটির নাম কালিকাপুরাণ। ইহাতে হর-গৌরীর গৃহস্থালীর কথা এবং গৌরীর পিতৃগৃহে আসিয়া শরৎকালীন পূজা গ্রহণ ইত্যাদি বাক্সালদেশ-প্রচলিত পৌরাণিক কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে।

চতুর্থ পরিচ্ছেদ

সপ্তদশ শতাব্দী

১০

আদি মোগল শাসন—ঐতিহাসিক উপক্রমণিকা

মোগল সৈন্যেব দ্বাৰা বিজিত হইয়া বাঙ্গালা দেশ ১৫৭৫-৭৬ খ্রিষ্টাব্দে মোগল সম্রাটের শাসনাধীনে আসে, কিন্তু পাঠান সুলতানদিগেব সেনাপতিবা এবং সামন্ত বাজাবা সহজে মোগল শাসন মানিয়া লয় নাট। শেষ পাঠান সুলতান দাউদ খান কববানীব রাজ্যপ্রাপ্তিব সময় হইতেই দেশে উপদ্রব অশান্তি সুরু হইয়াছিল। স্থানীয় শাসনকর্তারা এবং খাজনা আদায়কারী কর্মচারীবা প্রজাদিগকে উদ্বাস্ত কৰিয়া তুলিয়াছিল। চণ্ডীমঙ্গল কাব্যে মুকুন্দবাম স্বীয় আত্মকাহিনীব মধ্যে এইকপ অত্যাচাবেব একটি উজ্জল চিত্র আবিযাডেন।

মোগল বাজহেব উপদ্রবহীন সুশাসনেব মাঝে আসিয়া লোকে হাঁফ ছাড়িয়া বাঁচিল। ইহাব পূর্বেই খ্রীচৈতন্যেব পভাবে বাঙ্গালী জাতিব জীবনে সর্বাত্মক জাগবণেব উদ্যম হইয়াছিল। এই সুযোগে বৈষ্ণবধর্মের মধ্য দিয়া বাঙ্গালীব জাতিগত বৈশিষ্ট্য আবণ্ড ক্ষুণ্ণতব হইতে লাগিল। বাঙ্গালা সাহিত্য তখন নিজেব পথ খুজিয়া লইয়া স্বাধীন হইয়া দাঁড়াইয়াছে, বাজাব বা বাজ দববাবেব সাহায্য তাহার পক্ষে আব আবশ্যক হইল না। মোগল শাসনের

যোগাযোগে বাঙ্গালাদেশ স্বতন্ত্র রাজ্য না থাকিয়া উত্তরাপথের প্রদেশ বিশেষ হইয়া পড়িল। ইহার পূর্বেই খ্রীচৈতন্য এবং তাঁহার কতিপয় প্রধান পারিষদেব প্রভাবে উত্তরপশ্চিমাঞ্চলের সহিত বাঙ্গালাদেশের সংযোগ নিকটতর হইয়াছিল। এখন রাষ্ট্রীয় এবং বাণিজ্যিক সংযোগও স্থাপিত হইল। ইহাব ফল কিন্তু অবিমিশ্রভাবে মঙ্গলজনক হইল না। বাঙ্গালার যে সংস্কৃতি-গত স্বাভাব্য ছিল, তাহা উত্তরপশ্চিমাঞ্চলেব প্রভাবে পড়িয়া নষ্ট হইবার পথে বসিল। মোগল দবাবাবেব ঐশ্বর্য এবং আড়ম্বর বাঙ্গালী জমিদার এবং ধনীদিগেব চক্ষু ধাঁধাইয়া দিল এবং তাঁহাদিগকে নিরুদ্ধেগ ভোগবিলাসেব পথে নামাইয়া দিয়া ভবিষ্যৎ সর্বনাশেব পথ উন্মুক্ত করিয়া রাখিল।

ষোড়শ এবং সপ্তদশ শতাব্দীর সন্ধিক্ষণে বাঙ্গালায় বৈষ্ণব-ধর্মের আবার এক প্রবল জোয়াব আসিল। ইহার পূর্বে খ্রীচৈতন্যের ভক্ত ও তাঁহাদের শিষ্য এবং প্রশিষ্যদিগের দ্বারা বৈষ্ণবধর্মের যে প্রচার ও প্রসার হইতেছিল, তাহার মধ্যে অস্বাভাবিকতা কিছু ছিল না। বৈষ্ণবধর্মের মূল কথা বৈষ্ণব অবৈষ্ণব সকলেই স্বীকার করিয়া লইয়াছিল; তাহাবা নিজেব নিজেব ধর্মমত অক্ষুণ্ণ রাখিয়া বৈষ্ণবীয়ভাবে জীবনযাপন করার মধ্যে কোনই অসঙ্গতি খুঁজিয়া পায় নাই। কিন্তু এই সময়ে খ্রীনিবাস আচার্য্য, নবোত্তম দত্ত এবং শ্রীমানন্দ দাসের প্রচেষ্টায় বাঙ্গালায় বৈষ্ণব ধর্মের প্রচার কতকটা উগ্ররূপ ধারণ করিল। এই ত্রয়ীর মধ্যে খ্রীনিবাসই মুখ্য। ইনি স্বীয় আধ্যাত্মিকতা ও পাণ্ডিত্যে বিষ্ণুপুরের রাজাকে বৈষ্ণব ধর্মে দীক্ষিত করেন এবং তাহারই ফলে অল্পকালের মধ্যে দক্ষিণ-পশ্চিম বঙ্গ, বিশেষ করিয়া সীমান্ত অঞ্চলগুলি বৈষ্ণবধর্মের

বন্ধায় আপনহারা হইয়া ভাসিয়া গেল। নরোত্তম মুখ্যভাবে প্রচারক ছিলেন না। কিন্তু তাঁহার অনবদ্য চরিত্র এবং শিষ্যগণের প্রভাব বরেন্দ্রভূমিতে বৈষ্ণবধর্মের প্রসারে বিশেষ সহায়তা করিয়াছিল। রসকীর্তন বা পদাবলী কীর্তনের ঠাঁট নরোত্তমেরই অক্ষয় কীর্তি। বাঙ্গালাদেশের এই নিজস্ব সঙ্গীতকলা সমগ্র ভারতবর্ষের গৌরব। শ্রীনিবাস ও নরোত্তমের তুলনায় শ্যামানন্দের ব্যক্তিত্ব বিশেষ স্পষ্ট না হইলেও ইহার ও ইহার প্রধান শিষ্য রসিকানন্দের প্রযত্নেই মেদিনীপুর এবং উড়িষ্যার পত্যন্ত অঞ্চলে বৈষ্ণবধর্ম বিস্তার-লাভ কবিয়াছিল।

শ্রীনিবাসের নিবাস ছিল বদ্ধমান জেলায় কাটোয়ার নিকটে যাজিগ্রাম। ইনি অল্পবয়সে গৃহত্যাগ করিয়া নবদ্বীপ, শান্তিপুর, পুরী ইত্যাদি স্থান পরিভ্রমণ কবিয়া ত্রিচৈতন্যের অনুচর ঘাঁহারা জীবিত ছিলেন, তাঁহাদের দর্শনলাভ করেন। তাহাব পব বৃন্দাবনে গমন করিয়া গোপাল ভট্টের শিষ্য হন এবং জীব গোস্বামীর নিকট বৈষ্ণবসিদ্ধাস্ত শিক্ষা করিয়া ব্যুৎপন্ন হন। বৃন্দাবনেই নরোত্তম এবং শ্যামানন্দের সহিত তাঁহার মিলন হয়। বৃন্দাবন হইতে ফিরিবার সময় জীব গোস্বামী তাঁহাদের সঙ্গে কয়েকটি সিঙ্কুক ভরিয়া বৈষ্ণবশাস্ত্র গ্রন্থ বাঙ্গালা দেশে প্রচারের জন্য পাঠাইয়া দেন। পথে, বিষ্ণুপুরের নিকট জঙ্গলে রাজাব অনুচর দস্যুরা ধনরত্ন আছে মনে করিয়া সেই সিঙ্কুকগুলি লুণ্ঠন কবে। ইহাতে শ্রীনিবাস মনে দারুণ আঘাত পান, এবং যতদিন পুস্তকগুলি পাওয়া না যায়, ততদিন সেই দেশ ত্যাগ করিয়া যাইবেন না স্থির করেন। ইতি মধ্যে বিষ্ণুপুরের যুবরাজ বীর হাঙ্গীরের

সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হয়। বীব হান্সীব তাঁহার পাণ্ডিত্য ও বৈষ্ণবতায় মুগ্ধ হন এবং সপবিবাহ এবং সাধুচর বৈষ্ণবধর্মে দীক্ষিত হন। বীব হান্সীবের প্রযত্নে পুস্তকগুলির উদ্ধাব হইল এবং অনতিকাল মধ্যেই বিষ্ণুপুত্র বাজ্য ও চতুষ্পার্শ্ববর্তী অঞ্চল পুৰাপুরি বৈষ্ণব হইয়া গেল। ক্রমে ক্রমে শ্রীনিবাস আচার্য্যের প্রভাব পশ্চিম-বঙ্গের অন্তান্ত অঞ্চলেও প্রসারিত হইতে লাগিল। শ্রীনিবাসের শিষ্যপ্রশিষ্যগণ দক্ষিণপশ্চিমবঙ্গ ছাড়িয়া ফেলিল। হবিনাম সংকীৰ্ত্তনে, কীওন গানে, মহোৎসবে দেশ মাতিয়া উঠিল। শ্রীনিবাসের দুই বিবাহ, ঈশ্বরী দেবী ও গৌবাঙ্গপ্রিয়া দেবী। ইঁহাব অনেকগুলি সন্তান হইয়াছিল, তন্মধ্যে এক পুত্র এবং দুই তিনটি কন্যা ছাড়া সকলেই শৈশবে মৃত্যুমুখে পতিত হয়।

নরোত্তম পদ্মাতীববর্তী খেতবী গ্রামের কায়স্থবংশীয় জমিদার বাজ্য কৃষ্ণানন্দ দত্তের একমাত্র পুত্র ছিলেন। ইঁহাব মাতার নাম নাবায়ণী। বাল্যকাল হইতেই নরোত্তম ঈশ্বরনিষ্ঠা ও বৈরাগ্যপ্রবণতার পবিচয় দিয়াছিলেন। পিতার মৃত্যুর পব খুল্লতাৎপুত্র সন্তোষ দত্তের উপর বিষয়-কর্ম্মের ভাব চিহ্নদিনেব মত নিক্ষেপ কবিয়া নরোত্তম বৃন্দাবনে যাত্রা কবিলেন। তথায় স্বীয় ভক্তিনিষ্ঠা এবং আন্তরিকতায় লোকনাথ গোস্বামীর চিত্ত জয় কবিয়া তাঁহার শিষ্যত্বলাভ কবিয়া ধন্য হন। ইনি জীব গোস্বামী এবং বৃন্দাবনের অপরাপর বৈষ্ণব মহাস্তুদিগেবও স্নেহভাজন হইয়াছিলেন। এইখানেই শ্রীনিবাস এবং শ্যামানন্দের সহিত তাঁহার পবিচয় হইল। শ্রীনিবাসের সঙ্গে

“নরোত্তম দেশে ফিবিয়া আসেন এবং ভজন সাধনায় মন দেন।

ইহার এবং ইহার শিষ্যগণের প্রচেষ্টার ফলে উত্তরবঙ্গ বৈষ্ণব ধর্মের একটি বিশিষ্ট কেন্দ্র হইয়া পড়ে। বৃন্দাবন হইতে ফিরিবার কিছুকাল পরে নরোত্তম নিজগৃহে শ্রীচৈতন্য নিত্যানন্দ এবং রাধাকৃষ্ণের কয়েকটি বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে বিরাট মহোৎসবের আয়োজন করেন। এই উৎসবে বাঙ্গালা দেশের সকল প্রধান প্রধান বৈষ্ণবই আগমন করেন। তখনও শ্রীচৈতন্যের সাক্ষাৎ অনুচর কেহ কেহ জীবিত ছিলেন, তাঁহাদেরও পরম সমাদরে আনয়ন করা হইয়াছিল। এই উৎসব উপলক্ষেই নরোত্তম এবং মার্কজিক দেবীদাসের চেষ্টায় রসকীর্তন সৃষ্টি হইয়াছিল। নানা দিক দিয়া বাঙ্গালাদেশের ইতিহাসে এই উৎসব একটি বিশেষ স্মরণীয় ঘটনা।

শ্যামানন্দ ছিলেন জাতিতে সদগোপ। ইহার নিবাস ছিল মেদিনীপুর জেলার ধারেন্দা বাহাছুরপুর গ্রামে। ইনি বিশেষ উচ্চশিক্ষিত ছিলেন না বটে, কিন্তু আধ্যাত্মিকতায় শ্রীনিবাস এবং নরোত্তম হইতে হীন ছিলেন না। শ্রীচৈতন্যের অন্ততম আত্ম অনুচর কালনার গৌরীদাস পণ্ডিতের শিষ্য হৃদয়ানন্দ ইহার গুরু ছিলেন। মেদিনীপুর এবং উড়িষ্যার প্রত্যন্ত অঞ্চলে বৈষ্ণবধর্ম প্রচারে শ্যামানন্দ তাঁহার ধনী শিষ্য রসিকানন্দের বিশেষ সাহায্য পাইয়াছিলেন।

বৈষ্ণব পদাবলী, জীবনী ও বিবিধ কাব্য

যে সময়েব কথা বলিতেছি তখন বৈষ্ণব গীতিকাব্যেরই বিশেষ কবিতা চর্চা হইতেছিল। এই সময়ের পদকর্তাবা প্রায় সকলেই হয় শ্রীনিবাস আচার্য্য, নয় নবোত্তম, নতুবা শ্রীধরের নরহবি ও রঘুনন্দনের শিষ্য প্রশিষ্য ছিলেন। শ্রীনিবাস নিজেও একজন পদকর্তা ছিলেন, কিন্তু তিনি বেশী পদ রচনা করেন নাই। নবোত্তম একজন বিশিষ্ট পদাবলী-রচয়িতা ছিলেন। ইনি কয়েকখানি বৈষ্ণবসাধন-বিষয়ক ছোট ছোট গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন, তাহাব মধ্যে প্রেমভক্তি-চন্দ্রিকা সর্বোৎকৃষ্ট। নবোত্তমের প্রার্থনা পদগুলির তুলনা নাই। মনের ব্যাকুলতা ও ভক্তহৃদয়ের গভীর বিশ্বাস এই পদগুলির মধ্যে অপূর্ব ঝঙ্কার তুলিয়াছে। নরোত্তমের শিষ্যদিগের মধ্যে বড় পদকর্তা ছিলেন বসন্ত রায় এবং শিবরাম। শ্রীনিবাসের শিষ্যদিগের মধ্যে কবি-হিসাবে বিশেষ প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন গোবিন্দদাস কবিরাজ, গোবিন্দদাস চক্রবর্তী, মোহনদাস, রাখাবল্লভদাস এবং যত্ননন্দন। গোবিন্দদাস কবিরাজ বৈষ্ণব গীতিকবিদিগের মধ্যে কোন কোন বিষয়ে সর্বোৎকৃষ্ট বলিলে অশ্রায় হয় না। ইনি কেবল ব্রজবুলিতেই পদরচনা করিতেন। ইহার পদগুলি ভাষার ঝঙ্কারে ও অলঙ্কারের ঐশ্বর্য্যে বিদ্যাপতির পদের সঙ্গে তুলনীয়। গোবিন্দদাসের পৌত্র ঘনশ্যাম পিতামহের মত ব্রজবুলিতে পদ রচনা করিয়া খ্যাতিলাভ করিয়াছিলেন। এই সময়ে পদ

রচনা অনেকটা গতানুগতিক হইয়া দাঁড়াইয়াছিল। রূপ গোস্বামীর গ্রন্থে যে ভাবে কৃষ্ণলীলা ব্যাখ্যাত হইয়াছে, সেই ভাবেই সকলে পদ বচনা করিয়া যাইতেন ; নূতন বা স্বাতন্ত্র্য দেখাইবার কোনই চেষ্টা ছিল না। সেই জন্ত ষোড়শ শতাব্দীর প্রথমার্ধে পদগুলির তুলনায় এ যুগের পদগুলি কাব্য-সৌন্দর্য্যে সাধাবগতঃ নিকৃষ্ট ছিল। সপ্তদশ শতাব্দীর শেষ ভাগে রামগোপাল দাস, জগদানন্দ, জয়কৃষ্ণ, মনোহর দাস এবং “হবিবল্লাভ” এই ছদ্মনামধারী বিশ্বনাথ চক্রবর্তী বিশেষ কৃতিত্ব প্রদর্শন করিয়াছিলেন।

সপ্তদশ শতাব্দীতে বৈষ্ণব মহাস্তুতিগেব কয়েকখানি উৎকৃষ্ট জীবনী-কাব্য রচিত হইয়াছিল। দুই একখানি ছাড়া সব-গুলিতেই মুখ্যতঃ শ্রীনিবাস আচার্য্যের এবং গোণতঃ নরোত্তম দত্তের জীবনী ও কার্য্যকলাপ বর্ণিত হইয়াছে।

নিত্যানন্দদাসের প্রেমবিলাস ১৫২২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬০০-০১ খ্রীষ্টাব্দে সম্পূর্ণ হইয়াছিল। বইটিতে শ্রীনিবাস আচার্য্য ও তাঁহার সহকর্ম্মীদের সম্বন্ধে অনেক তথ্য বিবৃত আছে। তবে প্রক্ষিপ্ত অংশের পরিমাণও নিতান্ত অল্প নহে। যাহা হউক বাজালায় বৈষ্ণবধর্ম্ম-প্রচারের ইতিহাস আলোচনা করিতে গেলে প্রেমবিলাসের প্রয়োজন অপরিহার্য্য। নিত্যানন্দদাসের প্রকৃত নাম ছিল বলরাম দাস। ইনি নিত্যানন্দের কনিষ্ঠা পত্নী জাহ্নবী দেবীর শিষ্য এবং নিত্যানন্দের পুত্র বীরচন্দ্রের অনুচর ছিলেন। কেহ কেহ অনুমান করেন যে, ইনিই প্রসিদ্ধ পদকর্ত্তা বলরাম দাস। প্রেমবিলাস রচনা করিবার পূর্বে নিত্যানন্দদাস বীরচন্দ্রেরও একখানি জীবনী রচনা করিয়াছিলেন। বইটির নাম ছিল বীরচন্দ্রচরিত। এই

বইয়ের কোন পুঁথি আজও পাওয়া যায় নাই। প্রেমবিলাসের মধ্যে গ্রন্থকার বীরচন্দ্রচরিতের উল্লেখ করিয়াছেন।

গুরুচরণ দাসের প্রেমামৃত বিরচিত হয় শ্রীনিবাস আচার্য্যের কনিষ্ঠা ভাৰ্যা গৌরাঙ্গপ্রিয়ার আদেশে। কবি গৌরাঙ্গপ্রিয়ার শিষ্য ছিলেন। বইটিতে শ্রীনিবাসের জন্ম হইতে তাঁহার পুত্র গতিগোবিন্দের জন্ম পর্য্যন্ত প্রধান প্রধান ঘটনাগুলি বর্ণিত হইয়াছে। প্রেমামৃত প্রেমবিলাসের পরে রচিত হয়, কেননা ইহাতে নিত্যানন্দদাসের গ্রন্থের উল্লেখ রহিয়াছে।

শ্রীনিবাস আচার্য্যের জ্যেষ্ঠা কন্যা হেমলতা দেবীর শিষ্যদিগের মধ্যে যত্ননন্দন নামধারী ছুইজন ছিলেন, একজন ব্রাহ্মণ এবং অপরজন বৈদ্য। বৈদ্য যত্ননন্দন সপ্তদশ শতাব্দীর প্রথম ভাগের একজন বড় কবি ছিলেন। ইনি অনেক ভাল ভাল পদ রচনা করিয়াছিলেন এবং রূপ গোস্বামীর ছুইখানি নাটক—বিদগ্ধমাধব এবং দানকলিকৌমুদী, বিষ্ণুমঙ্গলের কৃষ্ণকর্ণামৃত কাব্য এবং কৃষ্ণদাস কবিরাজের গোবিন্দলীলামৃত মহাকাব্য বাঙ্গালায় অনুবাদ করেন। ইনি শ্রীনিবাস আচার্য্যের কীর্তিকলাপ লইয়া একখানি অপেক্ষাকৃত ক্ষুদ্র পুস্তক রচনা করেন; বইটির নাম কর্ণানন্দ। কাব্যটি গুরু হেমলতা দেবীর অনুরোধে রচিত হইয়া ১৫২৯ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬০৭-০৮ খ্রীষ্টাব্দ সম্পূর্ণ হয়। এই শ্রেণীর আর একখানি বই বৈষ্ণবায়তন সম্ভবতঃ ব্রাহ্মণ যত্ননন্দনের রচনা।

শ্রীনিবাস আচার্য্যের পুত্র গতিগোবিন্দ বীররত্নাবলী নামক একখানি ক্ষুদ্র গ্রন্থে নিত্যানন্দের পুত্র বীরচন্দ্রের মহিমা বর্ণনা করিয়াছেন। রাজবল্লভ-বিবচিত বংশীবিলাস বা মুরলী-

বিলাস নামক গ্রন্থে কবির প্রপিতামহ শ্রীচৈতন্যের পারিষদ বংশীবদন চট্ট এবং খুল্লভাত ও গুরু রামচন্দ্র গোস্বামীর ক্রিয়া-কলাপ ও ধর্মোপদেশ বিবৃত হইয়াছে। ইহাতে শ্রীচৈতন্য এবং বীরচন্দ্র সম্বন্ধেও কিছু কিছু নূতন সংবাদ আছে। বৈষ্ণব সাধনার ইতিহাসের পক্ষে বইখানি মূল্যবান।

গোপীবল্লভ দাসের রসিকমঞ্জলে শ্যামানন্দের প্রধানতম শিষ্য রসিকানন্দ বা রসিক মুরারির জীবনী বর্ণিত হইয়াছে। বইখানির ঐতিহাসিক মূল্য যথেষ্ট আছে। গ্রন্থকার রসিকানন্দের শিষ্য ছিলেন।

শ্রীচৈতন্যের নবদ্বীপ-সহচরদিগের অগ্র্যতম ছিলেন জগদীশ পণ্ডিত। ইহার জীবনী বর্ণিত হইয়াছে জগদীশচরিত্রবিজয় গ্রন্থে। শিষ্যপরম্পরা হিসাবে গ্রন্থকার জগদীশ পণ্ডিত হইতে পঞ্চমস্থানীয় ছিলেন।

সপ্তদশ শতাব্দীতে রচিত শ্রীনিবাস আচাৰ্য্য সম্বন্ধে সন্দর্শেষ পুস্তক হইতেছে মনোহরদাস-রচিত অন্তরাগবল্লী। বইখানি ক্ষুদ্র বটে। বন্দাবনে ১৬১৮ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৯৬-৯৭ খ্রীষ্টাব্দে বইটি সম্পূর্ণ হয়। মনোহর কবির গুরুদত্ত নাম।

সপ্তদশ শতাব্দীতে অনেকগুলি শ্রীকৃষ্ণমঞ্জল কাব্য রচিত হইয়াছিল। তাহার মধ্যে বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য হইতেছে “দুঃখী” শ্যামদাস-বিরচিত গোবিন্দমঞ্জল। কাব্যটি ষোড়শ শতাব্দীতে রচিত হইয়াছিল, এরূপ অনুমানও অসঙ্গত নহে। শ্যামদাস দেব-উপাধিক কায়স্থ ছিলেন; ইহাব নিবাস ছিল মেদিনীপুৰ জেলায়। পিতার নাম শ্রীমুখ। সন্দেহ হয়, ইনি এবং কাশীরাম উভয়েই একই বংশের সম্ভান ছিলেন। পরশুরাম চক্রবর্তীর কাব্য পশ্চিমবঙ্গে বিশেষ সমাদৃত

হইয়াছিল। অভিরামের গোবিন্দবিজয়, “দ্বিজ” হরিদাসের মুকুন্দমঙ্গল এবং কবিচন্দ্রের গোবিন্দমঙ্গল বিষ্ণুপুর অঞ্চলেই প্রচলিত ছিল। হরিদাস শ্রীনিবাস আচার্য্য সম্প্রদায়ভূক্ত ছিলেন। মহাভারতের অশ্বমেধপর্ব অবলম্বনে ইনি একখানি কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। ভবানন্দের হরিবংশ একটি নূতন ধরণের শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল কাব্য। উহার সহিত সংস্কৃত হরিবংশ পুরাণের কোনই সম্পর্ক নাই। কবি পূর্ববঙ্গের লোক ছিলেন। কাব্যটি মন্দ নহে, তবে ভাবের দিক দিয়া এখনকার পাঠকদিগের রুচিকর নহে।

রূপ গোস্বামীর উজ্জলনীলমণি এবং ভক্তিরসায়তসিদ্ধি অবলম্বনে ছোট ছোট বৈষ্ণব রসতত্ত্বের বই অনেকগুলি রচিত হইয়াছিল। তাহার মধ্যে প্রধান হইতেছে নন্দকিশোর দাসের রসপুষ্পকলিকা বা রসকলিকা, রামগোপাল দাসের রাধাকৃষ্ণরসকল্লবল্লী বা রসকল্লবল্লী, এবং রামগোপালের পুত্র পীতাম্বরের রসমঞ্জরী এবং অষ্টরসবাখ্যা। রসকল্লবল্লী সম্পূর্ণ হয় ১৫৯৫ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৭৪ খ্রীষ্টাব্দে। ইহাতে অনেকগুলি পদ উদ্ধৃত হইয়াছে। পদসংগ্রহ পুস্তকের মধ্যে এইটি প্রাচীনতম বলিয়া ধরা যাইতে পারে।

বৈষ্ণবসাধন-ঘটিত অজস্র ছোট ছোট বইয়ের মধ্যে মনোহরদাস বিরচিত দিনমণিচন্দ্রোদয় একটি বিশিষ্ট স্থান অধিকার করে। মনোহরদাস ছিলেন শ্রীচৈতন্যের নীলাচল-বাসী ভক্ত রামানন্দ রায়ের ভ্রাতা বাণীনাথ পট্টনায়কের প্রপৌত্র। ব্রজমোহন দাসের চৈতন্যভক্তপ্রদীপও একখানি উল্লেখযোগ্য পুস্তক।

প্রাচীন বাঙ্গালার কবিদিগের মধ্যে কাশীরাম কৃষ্ণিবাসের

পৰেই সমধিক পেসিদ্ধ। কাশীবাম ছিলেন জাতিতে কাষস্ত, উপাধি দেব। নিবাস বৰ্দ্ধমান জেলাৰ কাটোয়া মহকুমাৰ অন্তৰ্গত ইন্দ্ৰাবনী বা ইন্দ্ৰানী পৰগণাৰ মध्ये সিদ্ধি গ্রামে। কাশীবামেৰ দুই ভাই ছিল, জ্যেষ্ঠ শ্ৰীকৃষ্ণদাস বা শ্ৰীকৃষ্ণকিষ্কব, বনিষ্ঠ গদাধৰ। তিন ভাই-ই শ্বকবি ছিলেন। ইহাদেব পিতা কমলাকান্ত সপৰিবাৰে দেশত্যাগ কৰিয়া মেদিনীপুৰ অঞ্চলে চলিয়া যান। সম্ভবতঃ সেখানে ইহাদেব আত্মীয়-স্বজন ছিল। কাশীবামেৰ কথা হইতে জানা যায় যে, ইহাদেব গুৰু হৰিহৰ মুখুটি মেদিনীপুৰেৰ অন্তৰ্গত হৰিহৰপুৰেৰ বাসিন্দা ছিলেন। কমলাকান্ত যখন দেশত্যাগ কৰেন তখন কাশীবামেৰ কাব্য খানিকটা বচিত হইয়াছে।

কাশীবামেৰ জ্যেষ্ঠ ভাতা শ্ৰীকৃষ্ণকিষ্কব বাল্যকালেই বৈবাগ্য অবলম্বন কৰিয়া গৃহত্যাগ কৰেন। ইহাৰ লেখা দুইখানি কাব্য পাওয়া গিয়াছে। একখানি শ্ৰীকৃষ্ণবিলাস শ্ৰীমদ্ভাগবত অবলম্বনে বচিত বৰ্ণনামূলক কৃষ্ণলীলা কাব্য। দ্বিতীয়টিৰ নাম ভক্তিভাবপ্ৰদীপ। এখানি হইতেছে তাঁহাৰ গুৰু জয়গোপাল-বচিত ভক্তিভাবপ্ৰদীপ নামক সংস্কৃত গ্ৰন্থেৰ অনুবাদ। জয়গোপালেৰ গুৰু ছিলেন নিত্যানন্দ প্ৰভুৰ অন্ততম পাৰিষদ সুন্দৰানন্দ।

কাশীবামেৰ পাণ্ডুৰবিজয় বা ভাবত-পাঁচালী বাঙ্গালায় লেখা মহাভাৰত কাব্যসকলেৰ মध्ये অবিসংবাদিতৰূপে শ্ৰেষ্ঠ। বচনাকাল হইতে আবস্ত কৰিয়া বৰ্ত্তমান সময় অবধি ইহা সমান সমাদৰ ও মৰ্যাদা পাইয়া আসিতেছে। বাঙ্গালীৰ নৈতিক শিক্ষাৰ অন্ততম প্ৰধান উৎস কাশীবামেৰ কাব্য।

কাশীবামেৰ ভাবত-পাঁচালীৰ আদিপৰ্ব সম্পূৰ্ণ হয় ১৫২৪

শকাব্দে অর্থাৎ ১৬০২-০৩ খ্রীষ্টাব্দে। ইহার দুই বৎসর পবে বিরাট পর্ব সম্পূর্ণ হয়। কেহ কেহ বলেন যে বিরাট পর্ব রচনার পর কাশীবামেব মৃত্যু হয় এবং তাহার পুত্র কাব্যটি সমাপ্ত করেন। এই অনুমানের স্বপক্ষে কোন তথ্য বা যুক্তি নাই।

গদাধরের রচিত কাব্যের নাম জগন্নাথমঙ্গল, সংক্ষেপে জগৎমঙ্গল। এই বইতে পুর্বীর জগন্নাথদেবের মাহাত্ম্যমূচক পৌরাণিক কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে। জগন্নাথমঙ্গল সমাপ্ত হয় ১৫৬৪ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৪২-৪৩ খ্রীষ্টাব্দে।

কাশীবাম ছাড়াও দুই চারি জন কাবি সপ্তদশ শতকে বাঙ্গালায় মহাভাবত কাব্য বচনা করিয়াছিলেন। “দ্বিজ” হরিদাসের অশ্বমেধপর্বের কথা পূর্বের উল্লেখ করিয়াছি। ঘনশ্যামদাস, কৃষ্ণানন্দ বসু এবং অনন্ত মিশ্র—ইহাবাও শুধু অশ্বমেধপর্বই রচনা করিয়াছিলেন। বিশাবদেব শুধু বিরাট-পর্ব পাওয়া গিয়াছে। এটি সম্পূর্ণ হয় ১৫৩৩ বা ১৫৩৫ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬১২ বা ১৬১৩ খ্রীষ্টাব্দে। নিত্যানন্দ ঘোষের মহাভারত কাব্য পশ্চিমবঙ্গে প্রচলিত ছিল। শ্রীনাথ ব্রাহ্মণের কাব্যের প্রচার কোচবিহার অঞ্চলেই সীমাবদ্ধ ছিল।

সপ্তদশ শতাব্দীতে যে দুই একখানি বামায়ণ কাব্য রচিত হইয়াছিল, তাহাব মধ্যে অদ্ভুত-আচার্য্যের কাব্য ছাড়া আর কোনটিই বিশেষ জনপ্রিয় হইয়াছিল বলিয়া মনে হয় না। অদ্ভুত-আচার্য্যের বই সমগ্র উত্তরবঙ্গে বিশেষ সমাদর লাভ করিয়াছিল। এমন কি, কৃষ্ণিবাসের প্রচলিত সকল সংস্করণেই অদ্ভুত-আচার্য্যের কাব্যের কোন কোন অংশ ঢুকিয়া গিয়াছে

কবিব প্রকৃত নাম ছিল নিত্যানন্দ। ইহাব নিবাস ছিল পাবনা জেলায় অমৃতকুণ্ড গ্রামে।

১৩

বিবিধ শাক্ত কাব্য

পূর্ববঙ্গে এই সময়ে মনসামঙ্গল কাব্যের আবাদ চলিতে থাকে। পশ্চিমবঙ্গে কিন্তু তিন চাবিখানি মাত্র মনসামঙ্গল কাব্য বচিত হয়, এবং তাব মধ্যে একখানি হইতেছে এগুজাতীয় সমুদায় কাব্যের মধ্যে শ্রেষ্ঠ। পশ্চিমবঙ্গে এইটিই এখন পর্য্যন্ত একাধিপত্য করিয়া আসিতেছে। কাব্যটিব বচয়িতা ক্ষমানন্দ বা ক্ষেমানন্দ কায়স্থবংশীয় ছিলেন। অনেক স্থলে ভণিতায় ইনি নিজেকে কেতকাদাস— অর্থাৎ কেতকা বা মনসাব সেবক—বলিয়াছেন। ক্ষমানন্দের নিবাস ছিল দক্ষিণ বাঢ়ে, দামোদরের দক্ষিণ বা পশ্চিম-তীরে কোন গ্রামে। ১৬৪১ খ্রীষ্টাব্দে বাবা খানের যুত্বের অল্প কিছু কাল পবে কাব্যটি বচিত হয়। অল্প এক ক্ষমানন্দ বচিত একটি নিতান্ত ক্ষুদ্র মনসামঙ্গল কাব্য মানভূমের পুন্ডলিয়া অঞ্চল হইতে পাওয়া গিয়াছে। কাব্য হিসাবে এটিও নিন্দনীয় নহে। বিষ্ণু পালের মনসামঙ্গলের পুঁথি বীবভূম অঞ্চলে পাওয়া গিয়াছে। এই কাব্যটিতে নানা বিশেষত্ব আছে। এটি ষোড়শ শতাব্দীর বচনা হওয়াও বিচিত্র নয়। কালিদাসের মনসামঙ্গল ১৬১৯ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৯৭-৯৮ খ্রীষ্টাব্দে বচিত হয়। ইনি বর্দ্ধমান-বীরভূম সীমান্তের অধিবাসী ছিলেন। দিনাজপুর অঞ্চলের অধিবাসী জগজ্জীবন ঘোষালের মনসামঙ্গলে কিছু কিছু নূতনত্ব আছে।

“দ্বিজ” জনার্দন বিবচিত্র ব্রতকথা-জাতীয় নিতান্ত ক্ষুদ্র কাব্য মঙ্গলচণ্ডী-পাঁচালী ছাড়া আর কোনও চণ্ডীমঙ্গল কাব্য সপ্তদশ শতাব্দীতে বিচিত্র হয় নাই। এই কাব্যটিতেও শুধু ধনপতির উপাখ্যান আছে, কালকেতুর উপাখ্যান নাই। এই সময়ে বিচিত্র দেবীমাহাত্ম্যমূচক সকল কাব্যই মার্কণ্ডেয় পুঁবাণের অন্তর্গত দুর্গাস্তোত্র বা চণ্ডী অবলম্বনে লিখিত হইয়াছিল। “দ্বিজ” কমললোচনের চণ্ডীকামঙ্গল বা চণ্ডিকা-বিজয়, অন্ধ কবি ভবানীপ্রসাদ বায়েব দুর্গামঙ্গল এবং কপনাবাষণ ষোষেব দুর্গামঙ্গল এই জাতীয় কাব্য। কমললোচনের নিবাস ছিল বঙ্গপুত্র জেলার ঘোড়াঘাট পৰগণায়। ভবানীপ্রসাদ এবং কপনাবাষণ দুইজনেই মথুরানগরেই অধিবাসী ছিলেন। গোবিন্দদাসেব কালিকামঙ্গলও এই-জাতীয় কাব্য। উপবন্ত ইহাতে বিক্রমাদিত্যের উপাখ্যান, মীননাথের কাহিনী এবং বিদ্যাসুন্দরের গল্প দেওয়া আছে। কাহাবও কাহাবও মতে গোবিন্দদাসেব কাব্য ১৫৩৪ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬১২-১৩ খ্রীষ্টাব্দে বিচিত্র হইয়াছিল। ✓

শিবেব গৃহস্থালীবিষয়ক অথবা শিবমাহাত্ম্যমূচক ছোটখাট কাব্যও দুই একখানি পাওয়া গিয়াছে। দ্বিজ বতিদেবেব ক্ষুদ্র কাব্য মৃগলুক ১৫৯৬ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৭৪-৭৫ খ্রীষ্টাব্দে বিচিত্র হয়। ইনি চট্টগ্রাম অঞ্চলের লোক ছিলেন বলিয়া অনুমান হয়। কবিচন্দ্রের শিবায়ন বা শিবমঙ্গল বিষ্ণুপুঁবেব রাজা বীরসিংহের রাজ্যকালে—অর্থাৎ ১৬৫৬-৮২ খ্রীষ্টাব্দেব মধ্যে—বিচিত্র হয়।

সপ্তদশ শতাব্দীর শেষ পাদের এক কবি উক্ত কবিত্ব-শক্তি সম্পন্ন না হইলেও কাব্যেব বিষয়বস্তু নির্বাচনে অসামান্যতা

দেখাইয়াছিলেন। ইনি কৃষ্ণরাম দাস, জাতিতে কায়স্থ, বাসস্থান কলিকাতার উত্তরে বেলঘরিয়ার নিকটে নিমিতা বা নিমতা গ্রাম। ইহার পিতার নাম ভগবতী দাস, এবং পুত্রের নাম নীলকণ্ঠ। কৃষ্ণরামের রচিত তিনখানি কাব্য পাওয়া গিয়াছে। প্রথম কাব্য কালিকামঙ্গল; ইহাতে দেবীর মাহাত্ম্যপ্রচার ব্যপদেশে বিড়াসুন্দর-কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে। কাব্যটি সায়িন্তা খানের সুবেদারির সময়ে (১৬৬৯-৭০ বা ১৬৭৯-৮০ খ্রীষ্টাব্দে), সম্ভবতঃ প্রথম দফাতেই, রচিত হইয়াছিল। কবির বয়স তখন বিশ বৎসর। দ্বিতীয় রচনা ষষ্ঠীমঙ্গল ব্রতকথা-জাতীয় ক্ষুদ্রকাব্য। ইহা রচিত হয় ১৬০১ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৭৯-৮০ খ্রীষ্টাব্দে। তৃতীয় কাব্য রায়মঙ্গল একেবারে নূতন জিনিষ। ইহাতে সুন্দরবন অঞ্চলে উপাসিত ব্যাঘ্র-দেবতা দক্ষিণরায়ের মাহাত্ম্যকাহিনী বিবৃত হইয়াছে। আলুঘঙ্গিক-ভাবে ঐ অঞ্চলের কুম্ভীর-দেবতা কালুরায়ের এবং পীর বড় খাঁ গাজীর কাহিনীও দেওয়া আছে। দক্ষিণরায়ের পূজা সুন্দরবন অঞ্চলে অর্থাৎ চব্বিশ পরগণা জেলার দক্ষিণ অংশে ও তৎসম্বন্ধিত অঞ্চলে এখনও প্রচলিত আছে, এবং এই প্রদেশে বড় খাঁ গাজীর গান এখনও উৎসব উপলক্ষে গীত হয়। গাজী সাহেবের এবং কালুরায়ের গান ময়মনসিংহ অঞ্চলেও অতাপি প্রচলিত আছে।

রায়মঙ্গল কাব্য ১৬০৮ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৮৬-৮৭ খ্রীষ্টাব্দে রচিত হয়। কিন্তু দক্ষিণরায়ের বিষয়ে এইটি প্রথম কাব্য নহে। কৃষ্ণরাম তাঁহার পূর্ববর্তী এক কবি মাধব-আচার্য্যের কাব্যের উল্লেখ করিয়াছেন। রায়মঙ্গলের মূল আখ্যায়িকা সংক্ষেপে নিম্নে দেওয়া গেল।

বড়দেহের বণিক দেবদত্ত জলপথে সিংহল হইতেও দূরবর্তী তুরঙ্গ সহরে বাণিজ্যযাত্রা করিয়াছিল। চণ্ডীমঙ্গল কাহিনীর ধনপতি যেমন সমুদ্রবক্ষে “কমলে কামিনী” দৃশ্য দেখিয়াছিল, পথে দেবদত্তও তদনুরূপ আশ্চর্য্য ব্যাপার দেখিয়াছিল—সাগর-মধ্যে সুন্দরবনের প্রতিচ্ছবি। কথায় কথায় এই দৃশ্যের ব্যাপার দেবদত্ত তুবঙ্গের রাজা শ্রুতকে জানাইল এবং তাঁহাকেও দেখাইতে প্রতীক্ষিত হইল। কিন্তু দেবদত্ত রাজাকে প্রতিজ্ঞামত সেই দৃশ্য দেখাইতে পারিল না। ফলে জীবনের মত কারারুদ্ধ হইল। এদিকে বহুদিন কাটিয়া গেল; দেবদত্তের পুত্র পুষ্পদত্ত পিতার কোন বার্তা না পাইয়া নিজেই তুরঙ্গ সহরে যাইতে প্রস্তুত হইল। জাহাজ গড়িনার জগ্না রতাই নামক “বাউল্যা” বা কাঠরিয়াকে বন হইতে কাঠ কাটিয়া আনিতে লুক্কান করিল। সেই বনে দক্ষিণরায়ের অধ্যুষিত একটি বড় গাছ ছিল। সে গাছটি কাটাতে দক্ষিণরায়ের এক অনুচর রায়ের নিকট গিয়া অভিযোগ করিল। ক্রুদ্ধ হইয়া রায় বড় বড় ছয় বাঘকে পাঠাইলেন; তাহারা রতাইয়ের ছয় ভাইকে মারিয়া ফেলিল। রতাই ভ্রাতৃশোকে আত্মহত্যা করিতে উত্তত হইলে দক্ষিণরায় দৈববাণী দিলেন যে, তাহার প্রিয় তরু ছেদন করিয়া অপরাধ করিয়াছে বলিয়া তিনি তাহার ছয় ভাইকে বধ করিয়াছেন; রতাই যদি পুত্রবলি দিয়া দক্ষিণ-রায়কে পূজা করে তবে তাহার ছয় সহোদর পুনর্জীবিত হইবে। রতাই শুনিয়া তদগুণেই দক্ষিণরায়কে পূজা করিয়া পুত্রকে বলিদান দিল। তখন দক্ষিণরায় আবির্ভূত হইয়া রতাইয়ের পুত্র ও ছয় ভাইকে বাঁচাইয়া দিলেন।

রতাই কাঠ লইয়া আসিল। হনুমান এবং বিশ্বকর্মা

আসিয়া নৌকা গড়িয়া দিল। পুষ্পদন্ত সাত ডিঙ্গা ভাসাইয়া সমুদ্রযাত্রা করিল। মাতা সুশীলার স্তবস্তুতিতে প্রসন্ন হইয়া দক্ষিণরায় পুষ্পদন্তকে সঙ্কটে রক্ষা করিতে প্রতিশ্রুত হইলেন। পথে পুষ্পদন্ত গীর বড় খাঁ গাজীর মোকাম এবং দক্ষিণরায়ের পূজাস্থান দেখিলেন। এ বিষয়ে পুষ্পদন্ত কিছুই জানেন না বলিয়া জানিতে কৌতূহল প্রকাশ করিলে কর্ণধার গীর ও দক্ষিণবায়ের কাহিনী, তাঁহাদের বিরোধ ও মিলনের ইতিহাস, এইরূপে বর্ণনা করিতে আরম্ভ করিলেন।

সেনাপতি নামে পূর্বে এক সদাগর ছিল। সে বাণিজ্যে যাইবাব পথে এই স্থানে নামিয়া দক্ষিণরায়ের পূজা করিল। গীরের পূজা না কবায় অনেক ফকীর আসিয়া তাহাকে গীরের পূজা করিতে বলিল। বণিক কুবুদ্ধির বশবর্তী হইয়া ফকিরদিগকে মারিয়া তাড়াইয়া দিল। তাহারা গাজীর নিকট গিয়া নালিশ করিল যে দক্ষিণরায় আর তাতার ব্যাঘ্র-অনুচরদিগের প্রতাপে আব কেহ গীরের সমাদর কবিতেছে না ; তাহারা অশেষ দুর্দশাগ্রস্ত হইয়াছে। গাজী ক্রুদ্ধ হইয়া আদেশ দিলেন, “দক্ষিণরায়কে বাঁধিয়া আন।” গাজীর আদেশে কালানল বাঘ ও ফকীরেরা গিয়া দক্ষিণবায়ের প্রতিমা ও পূজাস্থানের ঘর দ্বার ভাঙ্গিয়া ফেলিয়া দিল এবং পুরোহিত ব্রাহ্মণকে মারধর করিয়া তাড়াইয়া দিল। এদিকে বটে বেনে আসিয়া দক্ষিণরায়কে এই কথা জানাইল। দক্ষিণরায় তাঁহার ব্যাঘ্র সৈন্য লইয়া গাজীর বিরুদ্ধে যুদ্ধযাত্রা করিলেন। গাজীরও সৈন্য সব বাঘ। রায়ের সেনাপতি বাঘ হীরা, গাজীর সেনাপতি বাঘ দাউদ খান। উভয় দলে যুদ্ধ বাধিল, গাজীর দল হারিয়া পলাইয়া গেল। গাজী তখন স্বয়ং

রায়ের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে আসিলেন ; উভয়ের মধ্যে ঘোর লড়াই চলিল। পরাজিতপ্রায় হইয়া গাজী কথিয়া দাঁড়াইলেন এবং সাত হাজার বাঘ মারিয়া অবশেষে রায়ের গলায় কোপ বসাইলেন। দক্ষিণরায়ের মুণ্ড দেহ হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া পড়িল বটে কিন্তু তৎক্ষণাৎ ধড়ে লাগিয়া যেমন ছিল তেমনই হইল। পুনরায় যুদ্ধ চলিল। যুদ্ধেব প্রকোপে পৃথিবী বসাতলে যায় দেখিয়া ঈশ্বর অর্দ্ধ-ত্রীকৃষ্ণ অর্দ্ধ-পয়গম্বর বেশে আবির্ভূত হইয়া দুইজনকে ক্ষান্ত কবিলেন এবং উভয়ের মধ্যে সৌহার্দ্য সংস্থাপন কবিয়া দিলেন। মিটমাটের সর্ত্ত হইল যে পীরের মোকামে তাঁহাব পূজা নির্বিঘ্নে চলিবে এবং দক্ষিণ-রায়ের মুণ্ডের প্রতিমা দক্ষিণ দেশে পূজিত হইবে, আব কালুরায়ের অধিকার হইবে হিজলী অঞ্চলে।

এই কাহিনী শুনিয়া পুষ্পদম্ভ সে স্থান হইতে নৌকা ছাড়িয়া দিল। সমুদ্রে পড়িয়া রামেশ্বর ছাড়িয়া কিছু দূরে সমুদ্রবক্ষে পিতার মত সেই আশ্চর্য্য দৃশ্য দেখিল।

ইহাব পর পুঁথি খণ্ডিত হইয়াছে বটে, কিন্তু গল্পের পরিণতি সহজেই অনুমান করা যাইতে পারে। পুষ্পদম্ভও প্রতিজ্ঞায় হারিয়া গিয়া কারাগারে যাইবে অথবা প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত হইবে, কিন্তু দক্ষিণরায়ের স্মরণ করায় তিনি আসিয়া পিতাপুত্রকে উদ্ধার করিবেন। তাহাব পব যথারীতি রাজকণ্ঠকে বিবাহ কবিয়া পিতার সতি পুষ্পদম্ভের স্বদেশে প্রত্যাবর্ত্তন ঘটাবে।

বাঙ্গালী মুসলমান কবি

সপ্তদশ শতাব্দীতে বাঙ্গালাদেশে বৈষ্ণব পদাবলী রচনার বহুশ্রোত প্রবাহিত হইয়াছিল। বৈষ্ণব ভাবধারায় সমগ্র দেশেব চিত্তভূমি পরিষিক্ত হইয়া সরস ও স্নিগ্ধ হইয়া উঠিয়াছিল, এবং তাহাতেই গীতিকাব্য একপ প্রাচুর্য লইয়া পুষ্পিত ও বিকশিত হইতে পারিয়াছিল। বাঙ্গালার মুসলমানগণ পূর্ব হইতেই মনে প্রাণে বাঙ্গালী হইয়া গিয়াছেন। সুতরাং মুসলমান কবিবাণ্ড যে বাঙ্গালায় ও ব্রজবলিতে বাধাকৃষ্ণবিষয়ক গীতিকাব্য বচনা করিবেন তাহাতে আশ্চর্যের বিষয় কিছুই নাই। সপ্তদশ শতাব্দীর মুসলমান পদকর্তাদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ হইতেছেন—নসীর মামুদ, সৈয়দ শুলতান, সৈয়দ মর্ত্তুজা, আলি বাজা এবং আলাওল।

পাঠান বাজগণের এবং তাঁহাদের পদস্থ কন্মচারীদিগের অঙ্কবর্ণে আরাকান রাজসভা সপ্তদশ শতাব্দীতেব বাঙ্গালা সাহিত্যের সমাদর ও পৃষ্ঠপোষকতা জাগাইয়া রাখিয়াছিল। আরাকান রাজসভার মারফৎ ভারতবর্ষের উত্তরপশ্চিম অঞ্চলে প্রচলিত আরব্য-উপজাতিসজাতীয় গল্প বা লৌকিক কাহিনী বাঙ্গালা সাহিত্যে আমদানী হইয়াছিল। আরাকান রাজসভায় সংবদ্ধিত সব কবিই মুসলমান ছিলেন। ইহাদের মধ্যে প্রাচীনতম হইতেছেন দৌলৎ কাজী। আরাকান-রাজ ক্রীশ্ণধর্ম্মার (রাজ্যকাল ১৬২২-৩৮ খ্রীষ্টাব্দে) কন্মচারী আশ্রফ খানের আদেশে ইনি সতী ময়নামতী বা

লোরচন্দ্রানী কাব্যের পণ্ডন করেন, কিন্তু শেষ করিবার পূর্বেই তাঁহার দেহত্যাগ হয়। বহুকাল পরে ১৬৫৯ খ্রীষ্টাব্দে আলাওল বাকি অংশ রচনা করিয়া দিয়া কাব্যটি সম্পূর্ণ করেন।

আরাকানের এবং সপ্তদশ শতাব্দীতে বাঙ্গালা সাহিত্যের অগ্রতম শ্রেষ্ঠ কবি ছিলেন সৈয়দ আলাওল। ইহার রচিত পদ্মাবতী অতি উপাদেয় কাব্য। কাব্যটি মালিক মুহম্মদ জৈসীর হিন্দী কাব্য পদ্মাবৎ অবলম্বনে রচিত। আবাকানের রাজা খদো মিন্তারের (রাজ্যকাল ১৬৪৫-৫২) উজীর মাগন ঠাকুরের অনুরোধে আলাওল পদ্মাবতী রচনা করেন। আলাওল আরও অনেকগুলি কাব্য রচনা করিয়াছিলেন— সৈফুল-মূলক বদিউ-জ্-জমাল, হপ্ত পৈকর, তোহফা, এবং সিকন্দর-নামা। কিন্তু এই কাব্যগুলি পদ্মাবতীর মত অত উৎকৃষ্ট নহে এবং সেরূপ জনপ্রিয়ও হয় নাই। দৌলৎ কাজীর মত আলাওলও অনেকগুলি চমৎকার বৈষ্ণবপদ রচনা করিয়াছিলেন। আলাওলের রচনাভঙ্গি সুন্দর, আরবী-ফারসী শব্দের প্রয়োগের বাহুল্য একেবারেই নাই।

সৈয়দ শুলতান চট্টগ্রামের অন্তর্গত পরাগলপুৰ গ্রামের অধিবাসী ছিলেন। হোসেন শাহের সেনাপতি পরাগল খানের নামেই এই গ্রামের নাম। কবিও পরাগলের বংশধর ছিলেন। বৈষ্ণব পদাবলী ছাড়া সৈয়দ শুলতানের লেখা তিনখানি কাব্য পাওয়া গিয়াছে—জ্ঞানপ্রদীপ, নবীবংশ এবং শবে মেয়েরাজ বা ওফাত রসুল বা হজরৎ মহম্মদ-চবিত। জ্ঞানপ্রদীপ যোগসাধনার বই। নবীবংশ বিরাট কাব্য। ইহাতে বারজন নবী অর্থাৎ অবতার বা মহাপুরুষের কাহিনী বর্ণিত হইয়াছে। নবীদিগের মধ্যে ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব এবং

শ্রীকৃষ্ণও আছেন। পুরাণের অনুকরণে রচিত এই কাব্যটিতে কবি বিশেষ সৃষ্টিদর্শিতা সহকারে হিন্দু এবং ইসলাম ধর্মের সমন্বয় সাধনের চেষ্টা করিয়াছেন। তৃতীয় কাব্যখানি বোধ হয় স্বতন্ত্র গ্রন্থ নহে, নবীবাংশেরই শেষ ভাগ।

শেখচাঁদের রসুলবিজয় কাব্যও হজরৎ মহম্মদের জীবনী লইয়া বিরচিত। কাব্যটি বিশেষত্বহীন নহে। শাহ্ মহম্মদ সগীরের ইউসুফ-জোলেখাও সুন্দর কাব্য। মহম্মদ খানের মকতুল-হোসেন (হিজিরা ১০৫৬ সাল) কাব্যে কারবালার কাহিনী বিবৃত হইয়াছে। আবদুল নবীর আমীর হামজা উল্লেখযোগ্য কাব্য।

১৫

ধর্মঠাকুরের ছড়া ও ধর্মমঙ্গল কাব্য

ধর্মঠাকুরের পূজা বাঙ্গালাদেশে বহুকাল হইতেই প্রচলিত আছে। বাঙ্গালাদেশে যে মহাযান বৌদ্ধধর্ম প্রচলিত ছিল তাহা পরে তান্ত্রিক সহজযানে রূপান্তরিত হয়। এই সহজযানের সাধকদিগের রচিত গীত বাঙ্গালা সাহিত্যের সর্বাপেক্ষা পুরাতন নিদর্শন। বৌদ্ধ গানগুলি সম্বন্ধে প্রথমেই আলোচনা করিয়াছি। তান্ত্রিক সহজযানের সঙ্গে নাথপন্থী শৈব যোগীদিগের ধর্মমত এবং অনার্য্য ধর্মবিশ্বাসও কিছু কিছু মিশ্রিত হইয়া ধর্মপূজার উদ্ভব হইয়াছিল। ধর্মপূজকদিগের নিজস্ব সৃষ্টিতত্ত্ব এবং অত্যাশ্চর্য্য পৌরাণিক কাহিনী দেশে বরাবরই প্রচলিত ছিল। বিপ্রদাসের মনসামঙ্গলে, মাণিক দত্তের

চণ্ডীমঙ্গলে, বিষ্ণু পালের মনসামঙ্গলে এবং অন্যান্য প্রাচীনতব
 বাঙ্গালা কাব্যে আমরা ধর্মপূজকদিগেব নিজস্ব পৌরাণিক
 কাহিনীর কিছু কিছু পবিচয় পাই। ধর্মঠাকুরেব পূজা সমাজের
 নিম্নস্তরের জাতিদিগেব মধ্যেই নিবদ্ধ ছিল। ব্রাহ্মণাদি
 উচ্চবর্ণেব মধ্যে ধর্মপূজা নিতান্ত গর্হিত ছিল। অষ্টাদশ
 শতাব্দীতে মাণিক গাঙ্গুলী বলিয়াছেন, “জাতি যায় তবে প্রভু
 যদি করি গান।” এককালে অর্থাৎ পঞ্চদশ-ষোড়শ শতাব্দীতে
 এবং তাহাবও পূর্বে ধর্মপূজা সমগ্র পশ্চিম ও উত্তর বঙ্গে প্রচলিত
 ছিল। কিন্তু সপ্তদশ শতাব্দী হইতে ইহা কেবল রাঢ় দেশে,
 বিশেষ করিয়া দামোদরেব দক্ষিণ এবং পশ্চিমতীববর্তী ভূভাগে,
 সীমাবদ্ধ হইয়া যায়। এখনকার দিনেব বড় বড় ধর্মঠাকুরেব
 স্থান সবই এই অঞ্চলে। সম্ভবতঃ এই স্থানেই ধর্মপূজাব
 উৎপত্তি হয়। ধর্মপূজকদিগের পূবাণেব মতে সর্বাপেক্ষা
 পবিত্র নদী, যাহার তীবে ধর্মের আদিস্থান “হাকন্দ” অবস্থিত,
 তাহা দামোদরেব প্রাচীন উপনদী বাঁকাব শাখানদী ছিল।
 এই নদীব গুহ্য খাত বর্দ্ধমান জেলার পূর্বাংশে মেমারীব
 নিকটবর্তী স্থানে এখনও স্পষ্ট লক্ষিত হয়। যাহা হউক,
 সপ্তদশ শতাব্দী হইতেই ধর্মঠাকুর শিব অথবা বিষ্ণু অথবা
 উভয়ের সহিত একীভূত হইতে আবিস্ত করেন, এবং ধীরে ধীরে
 ধর্মপূজা ব্রাহ্মণ্যধর্মের মধ্যে গুপ্তভাবে আপন স্থান অধিকার
 করিয়া লইতে থাকে। ধর্মঠাকুরের কোন প্রতিমা নাই,
 কুম্ভাকৃতি প্রস্তরখণ্ডই ধর্মঠাকুরের প্রতীক। এখন যে সকল
 স্থানে ধর্মঠাকুর আছেন তাহারা প্রায়ই শিবরূপে পূজিত
 হইতেছেন; এই সব স্থানে ধর্মের গাজন শিবের গাঁজনরূপে
 অঙ্কুষ্ঠিত হইয়া থাকে। কিন্তু ইহারা যে মূলে শিব ঠাকুর

ছিলেন না তাহার প্রমাণ পাওয়া যায় একটি অন্তষ্ঠানে—শিবের গাজনে পাঠা বলি হয় না, কিন্তু ধর্মের গাজনে এখনও হয়।

ধর্মপূজাঘটিত যে সকল গ্রন্থ পাওয়া যায় সেগুলি দুই শ্রেণীতে পড়ে। এক শ্রেণীর গ্রন্থে ধর্মপূজার বিধান এবং তদনুযায়ী মন্ত্র ও ছড়া ইত্যাদি আছে ; এগুলিকে ধর্মপূজকের কড়চা বা সাধুভাষায় ধর্মপুরাণ অথবা ধর্মপূজাবিধান বলা যাইতে পারে। অপব শ্রেণীর গ্রন্থ হইতেছে ধর্মমঙ্গল কাব্য ; ইহাতে ধর্মঠাকুরের মাহাত্ম্যজ্ঞাপক পৌরাণিক ও লৌকিক কাহিনী বিবৃত হইয়াছে। এগুলি ধর্মপূজার সময় অথবা অস্ত্র সময়েও বামায়েণ, চণ্ডীমঙ্গল ইত্যাদি মত নিষ্ঠাসহকায়ে গাওয়া হইত, এবং এখনও স্থানে স্থানে হইয়া থাকে।

সাহিত্য হিসাবে ধর্মপূজাবিধানগুলির বিশেষ কোনই মূল্য নাই। নানাকাবণে এই শ্রেণীর গ্রন্থগুলির মধ্যে তথাকথিত শৃংখপুরাণ বিশেষ প্রসিদ্ধিলাভ করিয়াছে। তিনটি বিভিন্ন ধর্মপূজাবিধান পুঁথি নগেন্দ্রনাথ বসু মহাশয় কর্তৃক সম্পাদিত হইয়া শৃংখপুবাণ নামে বঙ্গীয় সাহিত্য পবিষদ হইতে ১৩১৪ সালে প্রকাশিত হয়। বইটির বানান একটু অদ্ভুত বকমের, তাহা হইতে এবং বিষয় বস্তু হইতে অনেকের ধারণা হইয়া গেল যে বইটি খুবই প্রাচীন। কেহ বলিলেন, একাদশ শতাব্দী ; কেহ বলিলেন, ত্রয়োদশ শতাব্দী ; অপবে বলিলেন, পঞ্চদশ শতাব্দীর পবে নহে। কিন্তু শৃংখপুবাণ একখানি বই নয়। ইহাতে কতকগুলি মন্ত্র, কতকগুলি ছড়া এবং কতকগুলি কাহিনীর টুকরামাত্র সঙ্কলিত আছে। এগুলি বিভিন্নকালে বিভিন্ন ব্যক্তি কর্তৃক বচিত হইয়াছিল। উদাহরণস্বরূপ বলা যায়—নিবন্ধনের উদ্ভা কবিতাটি সহদেব

চক্ৰবৰ্তীৰ অনিলপুৰাণ হঠাতে গৃহীত। এই কাব্য অষ্টাদশ শতাব্দীৰ মধ্যভাগে বচিত হৈয়াছিল। শূন্তপুৰাণে কিছু কিছু প্ৰাচীন অংশ থাকিতে পাবে, কিন্তু তাহাৰ কোনটিকেই ভাষাৰ খাতিৰে ষোড়শ শতাব্দীৰ পূৰ্বে ফেলা যায় না। নিবৰ্জনেৰ উত্থা ব্যতীত শিবেৰ চাব ও সূৰ্য্যেৰ ছড়া অংশ দুইটিও মূল্যবান। ধৰ্ম্মপূজাবিধানগুলি ধৰ্ম্মেৰ আদি পুৰোহিত বামাই পণ্ডিতেৰ নামে চলে।

ধৰ্ম্মমঙ্গলগুলি যথার্থই কান্য। সকল ধৰ্ম্মমঙ্গলগুলিতেই একটো উপাখ্যানেৰ সাহায্যে “আদিদেব” ধৰ্ম্মেৰ মাহাত্ম্য বৰ্ণিত হৈয়াছে। এই উপাখ্যানেৰ মূলে আছে কতকগুলি উপকথা বা গল্প এবং হযত অল্পস্বল্প ঐতিহাসিক ঘটনাৰ আভাস। অনেকে ধৰ্ম্মমঙ্গলেৰ পাদপাত্ৰী এবং ঘটনাগুলিকে সম্পূৰ্ণৰূপে ঐতিহাসিক বলিয়া অনুমান কৰেন। এ অনুমানেৰ বিশেষ কোন ভিত্তি নাই। ধৰ্ম্মমঙ্গলগুলি সবই দক্ষিণ বাঢ়েব কবিৰ বচনা, এবং সম্ভবতঃ দুইখানি ছাড়া সবগুলিই লেখা হৈয়াছিল দামোদৰেৰ দক্ষিণ-পশ্চিম অঞ্চলে, বৰ্দ্ধমান জেলায় এবং বদ্ধমান-ভুগলী-বাঁকুড়াৰ সীমান্ত প্ৰদেশে। দক্ষিণ বাঢ়েব কবিদিগেৰ একটা বড় বিশেষত্ব আছে; ইহাদেৰ প্ৰায় সকলেই আত্মবিবৰণেৰ সঙ্গত কাব্যবচনাৰ ইতিহাস বা “ঐশ্বৰ্য্যপ্ৰাপ্তিৰ বিবৰণ” কিছ না কিছু দিয়াছেন। প্ৰায় কোন ধৰ্ম্মমঙ্গল-ৰচয়িতাই ইহাৰ ব্যতিক্ৰম কৰেন নাই।

ধৰ্ম্মমঙ্গল কাব্যেৰ উপাখ্যান সংক্ষেপে দেওয়া যাইতেছে।

গৌড়েশ্বৰেৰ অধীন ময়নাৰ সামন্তবাজ কৰ্ণসেনেৰ ছয় পুত্ৰ ঢেকুৰ গড়েৰ ইডাই ঘোষকে দমন কৰিতে গিয়া তাহাৰ সহিত যুদ্ধে নিহত হইলে বুদ্ধ বয়সে কৰ্ণসেন গৌড়েশ্বৰেৰ

শ্ৰালিকা বজাবতীৰ পাণিগ্রহণ কৰেন। এই বিবাহে গৌড়েশ্বৰেৰ মন্ত্ৰী মহামদ বা মাহুছাব সম্পূৰ্ণ অমত ছিল। বজাবতী ছিলেন ধৰ্ম্মঠাকুৰেৰ ভক্তিমতী উপাসিকা। তিনি পিতৃগৃহে বয়স্কা সহচৰী সাফুলা বা সামুলাৰ নিকট ধৰ্ম্মপূজা শিক্ষা কৰিযাছিলেন। ধৰ্ম্মেৰ অনুগ্ৰেহে বজাবতীৰ গৰ্ভে বৃদ্ধ কৰ্ণসেনেৰ পুত্ৰ জন্মিল—লাউসেন। বজাবতীৰ পুত্ৰ হইয়াছে শুনিয়া মহামদেৰ ঈৰ্ষ্যানল প্রজ্জ্বলিত হইয়া উঠিল; তাহাব চেষ্টা হইল, কি কৰিয়া শিশুকে নষ্ট কৰা যায়। লাউসেন দেবতাদেব অনুগ্ৰহ পাঠিয়া মহামদেৰ সকল চক্ৰাস্ত বিফল কৰিয়া ধীবে ধীবে নাড়িয়া উঠিয়া যোঁবন লাভ কৰিল। লেখা-পড়া এবং যুদ্ধ-বিদ্যায় তিনি অসাধাৰণ পাবদৰ্শিতা লাভ কৰিলেন। এখন গোঁড়ে গিয়া বাজাব নিকট নিজেৰ বাহুবল কোশল প্রদৰ্শন কৰিয়া উপযুক্ত সম্মান ও পুৰস্কাৰ লাভ কৰিতে তাহাব বাসনা হইল। পুত্ৰেৰ নিৰ্ব্বন্ধাতিশয়ো কৰ্ণসেন ও বজাবতী লাউসেনকে গোঁড়ে গমন কৰিতে অনুমতি দিলেন। পোণ্ড-ভাতা কৰ্পূৰধবলকে সঙ্গে লইয়া লাউসেন গোঁড়েৰ উদ্দেশে বাহিৰু হইলেন। পথে প্ৰথমেই পড়িল জালন্দাব গড়। এখানে কামদল বা কামদ (অৰ্থাৎ “কেঁদো”) বাঘ স্থানীয় বাজা-প্ৰজাকে হত্যা কৰিয়া নিৰ্ব্বিল্পে বাস কৰিতেছিল। লাউসেন তাহাকে দমন কৰিলেন। তাহাব পৰ তাৰাদীঘিতে কুন্তীৰকে পবাজিত কৰিয়া জামতিতে এক অসতী নাৰীৰ কোপে এবং গোলাহাটে এক গণিকাব হস্তে পড়িয়া ধৰ্ম্মেৰ কুপায় হনুমানেৰ সহায়তায় নিস্তাবলাভ কৰিলেন। তাহাব পৰ লাউসেন গোঁড়ে পৌঁছিলেন। মহামদেৰ চক্ৰাস্ত সত্ত্বেও তিনি বাজসমীপে উপস্থিত হইয়া নিজেৰ বাহুবল দেখাইয়া

রাজার নিকট উপযুক্ত পুৰস্কার লাভ কবিলেন। দেশে প্রত্যাগমনের পথে কালু ডোমের ও তাহার স্ত্রী লখ্যাব সৌহার্দ্য ও আনুগত্য লাভ কবিলেন। কালু ডোম সপবিবারে তাঁহার সঙ্গে চলিয়া আসিয়া ময়না রাজ্যে বাস করিল।

এদিকে মহামদেব একমাত্র চিন্তা হইয়াছে, কি কনিয়া লাউসেনকে বিনষ্ট করা যায়। অনেক ভাবিয়া চিন্তিয়া সে রাজাকে বলিয়া লাউসেনকে পাঠাইল কামরূপবাজকে দমন করিতে। লাউসেন কামরূপে গিয়া সেখানকাব বাজাকে পরাজিত করিলেন এবং তাঁহার কণ্ঠা কলিঙ্গাকে বিবাহ করিয়া দেশে প্রত্যাগমন কবিলেন। পথে তাহার আর দুইটি ভাৰ্য্যা লাভ হইল—মঙ্গলকোটের রাজকন্যা অমলা এবং বৰ্দ্ধমানের রাজকন্যা বিমলা।

পুনরায় লাউসেনকে দ্বিতীয় এক অভিযানে প্রেরণ করা হইল। সিমুলের রাজা হরিপালেব কানড়া নায়ী অশেষ রূপগুণসম্পন্ন এক হুহিতা ছিল। বহুকাল হইতেই কানড়াকে বিবাহ করিতে গৌড়েশ্বরের বাসনা ছিল। কিন্তু এক কারণে এই বাসনা তিনি কার্য্যে পরিণত করিতে পারেন নাই। কানড়া ছিল দেবীর অনুগ্রহীতা; যাহাতে যে-সে লোক তাঁহাকে বিবাহ করিতে না পাবে এইজন্য দেবী একটি লৌহনিশ্চিত গুণ্ডার দিয়া বলিয়াছিলেন, যে খজাঘাতে গুণ্ডারের মাথা কাটিয়া ফেলিতে পারিবে সেই কানড়ার পাণিগ্রহণ করিবে। রাজা বা মহামদের সাধ্য ছিল না যে এ কাৰ্য্য করে। দেবীর অনুগ্রহে লাউসেন লৌহ-গুণ্ডাবের শিরশ্ছেদ করিয়া কানড়াকে বিবাহ করিলেন এবং নববিবাহিত স্ত্রী এবং তাঁহার পরিচারিকা

ধুমসীকে লইয়া স্বগৃহে প্রত্যাগমন করিলেন। কিছুকাল পরে লাউসেনের পুত্র-সন্তান জন্মিল। তাহার নাম হইল চিত্রসেন।

তাহার পর লাউসেনের তৃতীয় অভিযান। অজয়তীরবর্তী ঢেকুর গড়ের সামন্ত ইছাই ঘোষ দেবীর বরলাভ করিয়া বিশেষ স্পর্দ্ধিত হইয়া উঠিয়াছিল। গোড়েশ্বরের অধীনতা অস্বীকার করায় পূর্ব্ব কর্ণসেনের ছয় পুত্র তাহাকে দমন করিতে প্রেরিত হয় এবং তাহার সহিত যুদ্ধে পরাজিত ও নিহত হয়। এখন লাউসেনকে ইছাই ঘোষের বিরুদ্ধে প্রেরণ করা হইল। অজয় নদের তীরে দুই বীরে ভীষণ যুদ্ধ হইল। উভয় পক্ষেই একাধিকবার জয়পবাজয়ের পর শেষে বিষ্ণুব কৃপায় লাউসেনই বিজয়ী হইলেন; ইছাইয়ের পিতা সোম ঘোষ গোড়েশ্বরের বশ্যতা স্বীকার কবিল।

পুনবায় লাউসেনেব ডাক পড়িল। গোড়ে ভীষণ বৃষ্টি ও জলপ্লাবন উপস্থিত, লাউসেনকে এই দৈবদুর্যোগ কাটাটয়া দিতে হইবে। ধর্ম্মের কৃপায় লাউসেন বৃষ্টি ও জলপ্লাবন প্রশমিত করিলেন।

ইহাতেও লাউসেনেব নিস্তার নাই। এইবার তাহাকে যে সঙ্কটে ফেলা হইল তাহা যেমন উৎকট তেমনি অসম্ভব। লাউসেনকে বলা হইল, পশ্চিমদিকে সূর্য্যোদয় দেখাইতে হইবে নতুবা তাহার পিতামাতাকে হত্যা করা হইবে। কি কবেন, পিতামাতাকে গোড়েশ্বরের হস্তে বন্ধক হিসাবে সমর্পণ করিয়া লাউসেন মাতার পুরাতন সহচরী ধর্ম্মের উপাসিকা সাংক্কা বা সামুলাকে লইয়া ধর্ম্মের পীঠস্থান হাকন্দে গমন করিলেন। সেখানে তীব্র তপশ্চর্যা করিয়া অবশেষে

তিনি ধর্মকে সম্ভ্রষ্ট করিলেন। ধর্মঠাকুর তাঁহাকে পশ্চিম-দিকে সূর্য্যোদয় দেখাইলেন। এই অসম্ভব অতিপ্রাকৃত দৃশ্যের সাক্ষী রহিল হরিহর বাইতি।

ইতিমধ্যে লাউসেনের অনুপস্থিতির সুযোগে মহামদ ময়নাগড় আক্রমণ করিয়াছে। লাউসেনের প্রাসাদরক্ষী-দিগের নেতা কালু ডোম উৎকোচে বশীভূত হইয়াছিল কিন্তু জীবন কথায় প্রবুদ্ধ হইয়া যুদ্ধ করিল এবং সপুত্র নিহত হইল। তখন কালুর জীব অস্ত্র-পুর রক্ষা করিবার জন্য একাই যুদ্ধ করিতে লাগিল, কিন্তু অচিরে নিহত হইল। কলিঙ্গাও যুদ্ধ করিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সব যায় যায় হইল, এমন সময় কানড়া এবং তাঁহার সহচরী ধূমসী অস্ত্রধারণ করিলেন। মহামদ পরাজিত হইয়া বেত্রাহত কুক্কুরের মত পলাইল।

লাউসেন গোড়ে ফিরিলেন। মহামদ হবিহর বাইতিকে অশেষ প্রলোভন দেখাইয়া মিথ্যা সাক্ষ্য দিতে প্রবোচিত করিতে লাগিল। কিন্তু সত্যনিষ্ঠ হরিহর সাক্ষ্য দিলেন যে তিনি পশ্চিমে সূর্য্যোদয় দেখিয়াছেন। লাউসেনের জয়জয়কার হইল। ক্রোধে ক্ষোভে মহামদ হরিহরের নামে মিথ্যা অভিযোগ আনিয়া তাহাকে শূলে চড়াইল; হবিহর নির্ভীকচিত্তে ঈশ্বরের নাম স্মরণ করিয়া মৃত্যুবরণ করিলেন।

পিতামাতা সহকারে লাউসেন দেশে ফিনিয়া আসিয়া দেখিলেন, কালু, লখ্যা এবং অন্যান্য সকলে যুদ্ধে মরিয়া গিয়াছে। তিনি ধর্মের স্তব করিতে লাগিলেন; ধর্মের অনুগ্রহে যাহারা তাঁহার প্রাসাদ-রক্ষায় প্রাণ দিয়াছিল তাহারা সকলে বাঁচিয়া উঠিল। লাউসেন নিরুদ্ধে ময়নাগড়

রাজহ কবিত্তে লাগিলেন। যথাকালে পুত্র চিত্রসেনের হস্তে রাজ্যভাব সমর্পণ কবিয়া তিনি স্বর্গাবোহণ করিলেন।

প্রধানতঃ উপকথাব সমষ্টি হইলেও এবং কৃষ্ণলীলার প্রচ্ছন্ন ইঙ্গিত থাকিলেও ধর্ম্মঙ্গল-আখ্যায়িকার মধ্যে মহাকাব্যোচিত ঐক্য আছে। কাব্যের প্রধান চরিত্রগুলিও বেশ সুপরিষ্কৃত। খেলারাম ধর্ম্মঙ্গলকে “গৌড়কাব্য” বলিয়াছেন ; আমরা বলি, ইহা রাঢ়ের জাতীয় কাব্য।

যতদূর জানা যায়, খেলারামের কাব্য ধর্ম্মঙ্গলগুলির মধ্যে সুপ্রাচীন। কাব্যটি পাওয়া যায় নাই। ইহার রচনা-কাল সম্বন্ধেও স্থিরতা নাই। সকল ধর্ম্মঙ্গল কাব্যেই ময়ূর-ভট্টকে এই বিষয়ের আদি কবি বলা হইয়াছে। ময়ূরভট্টের কাব্য পাওয়া যায় নাই, সুতরাং কবিব ৬ তাঁহার কাব্যের সম্বন্ধে কোন কথা বলিবাব উপায় নাই।

ধর্ম্মঙ্গল কাব্যের মধ্যে দুইখানি নিশ্চিতভাবে এবং একখানি সম্ভবতঃ সপ্তদশ শতাব্দীর শেষ ভাগে রচিত হইয়াছিল। বাকিগুলি সমস্তই পববত্তী শতাব্দীতে বচিত হয়। সীতাবাম দাসেব কাব্য (মল্লাব্দ ১০০৪ সাল) এবং শ্রাম পণ্ডিতের কাব্য সপ্তদশ শতাব্দীর শেষ ভাগে রচিত হইয়াছিল। শ্রাম পণ্ডিত বীরভূমেব অধিবাসী ছিলেন বলিয়া অনুমান হয়।

কপরামের ধর্ম্মঙ্গল কবে যে বচিত হইয়াছিল তাহা সমস্তার বিষয়। পুঁথিতে কাব্যের যে বচনাকাল পাওয়া যায় তাহা একটি মস্ত হেঁয়ালী। তবে কাব্যটি যে খনরামের কাব্যরচনার (১৭১২-১৩ খ্রীষ্টাব্দ) পূর্বেই লেখা হইয়াছিল তাহাতে বিশেষ সন্দেহের অবকাশ নাই।

আত্মপরিচয় এবং কাব্যরচনার ইতিহাস রূপরাম যাহা দিয়াছেন তাহা যেমন সরল তেমনি হৃদয়গ্রাহী। বিবরণটি এখানে সংক্ষিপ্তভাবে উদ্ধৃত করিবার লোভ সংবরণ করা গেল না।

বহুকাল হইতে রূপরামের পূর্বপুরুষ বর্দ্ধমান জেলার পূর্বদক্ষিণ সীমান্তে কাইতি গ্রামের সন্নিকটে শ্রীরামপুর গ্রামের অধিবাসী ছিলেন। তাঁহার পিতা ছিলেন পরম পণ্ডিত; তাঁহার টোলে “বিশাশয়” অর্থাৎ একশত বিশ পড়ুয়া পড়িত। পিতার মৃত্যুর পর কবিরী চারি ভাই বড় কষ্টে পড়িলেন। বড় দাদা বহুশ্রম বড় নিষ্ঠুবভাবী ছিল, তাহার “খাইতে শুইতে বাক্যবাণ জলন্ত আগুন।” জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার কটু কথায় রূপরামের ধিকার জন্মিল; তিনি দেশান্তরে পড়িতে যাইবেন স্থির করিয়া। একদিন “খুজি পুঁথি” পাঁধিয়া লইলেন। রূপরামের সঙ্কল্প জানিয়া গ্রামস্থ গণিবাম রায় পরিবার জন্য ধুতি একখানি এবং পাথেয় স্বরূপ ছই আনা কড়ি দিলেন। নিকটবর্তী গ্রাম পাসণ্ডায় কবিচন্দ্রের পুত্র রঘুরাম ভট্টাচার্য্যের নিকট তিনি পড়িতে গেলেন। পিতৃহীন নিরাশ্রয় বালককে দেখিয়া ভট্টাচার্য্যের মায়া হইল, তিনি “বেটা বলি বাসা দিল নিজ নিকেতনে।” অল্প দিনেই রূপরাম জুমরনন্দীর টীকা সমেত সংক্ষিপ্তসাব ব্যাকরণ, অমরকোষ, বেদ (!), কালিদাসের রঘুবংশ, শ্রীহর্ষের নৈষধচরিত, মাঘের শিশুপালবধ, এবং মহাভাবত পাঠ সাক্ষ করিলেন। একদিন কারক-ব্যাখ্যায় গুরুশিষ্যে বিষম বিতর্ক উপস্থিত হইল। রূপরাম “তিনবার পূর্বপক্ষ করিল সঞ্চার,” তাহাতে “সহিতে নারিল গুরু পাবক আকার।” ক্রুদ্ধ ভট্টাচার্য্য রূপরামকে “এমনি পুঁথির বাড়ি বসাইল গায়।”

এবং বলিলেন,

“পড়াতে নারিল বেটা এখনি বিদায় ॥

বিদ্যানিধি ভট্টাচার্য্য নবদ্বীপে আছে ।

ভারতী পড়িতে বেটা চল তার কাছে ॥

নহে জউগ্রাম চল কনাতের ঠাঞি ।

তার সম ভট্টাচার্য্য শান্তিপুরে নাঞি ॥”

রূপরাম বলিতেছেন, “সূর্য্যের সমান গুরু পবন সুন্দর,” তাহার উপর মুখে বসন্তের দাগ—“চিটঙ্গ মুখেব শোভা বসন্তের চিনা,” সেই মুখে “বলিতে বলিতে বাক্য পাবকের কণা।” রূপরামের ভয় হইল, দুঃখও হইল। তিনি খুজি পুঁথি বাঁধিয়া নবদ্বীপে পড়িতে যাইবেন উদ্যোগ করিতেছেন, এমন সময় অকস্মাৎ “হেনকালে জননী পড়িয়া গেল মনে,” সুতরাং তিনি “পুনর্ব্বার ফির্যা আইলা শ্রীরামপুরের গনে।” আড়ুয়া গ্রাম পশ্চাতে করিয়া তিনি ডাহিন দিকে ফিরিলেন। পুরাতন জাঙ্গালে ঢুকিয়া তিনি পথ হারাইলেন এবং দিক্‌ভ্রান্ত হইয়া পলাশনের বিলের চতুর্দিকে ঘুরিতে লাগিলেন। হঠাৎ তাহার নজর হইল, আকাশে দুইটা শব্দ চলি উড়িতেছে, এবং ভূমিতে কিছু দূরে সামনে দুইটা বাঘ বসিয়া লেজ নাড়িতেছে। দেখিয়াই তিনি ভয়ে দৌড় দিলেন, গোপালদীঘির পাড়ে “গোটা তিন কাছাড়” খাইলেন, তাহার পুঁথিপত্র চতুর্দিকে ছড়াইয়া পড়িল। পুঁথিপত্র কুড়াইয়া দেখেন সুবস্তুটীকার পুঁথিটি নাই, এমন সময় ধর্ম্মঠাকুর ব্রাহ্মণের রূপ ধরিয়া— “সুবর্ণ পইতা গলে পতঙ্গ-সুন্দর, কলধৌত-কাঞ্চনকুণ্ডল বলমল” বেশে আসিয়া আপনি সুবস্তুটীকার পুঁথি কুড়াইয়া রূপরামকে দিলেন, এবং নিজের স্বরূপ প্রকাশ করিয়া তাঁহাকে

ধর্মমঙ্গল রচনা করিতে আদেশ করিলেন। ধর্মঠাকুর অন্তর্হিত হইলে রূপরাম অধিকতর ভয়ে দিগ্‌বিদিক্-জ্ঞানশূন্য হইয়া সেখান হইতে পলায়ন কবিলেন। বেলা তখন অনেক হইয়াছে; নিজের গ্রামেব প্রাস্তে আসিয়া তৃষ্ণায় বিকল রূপরাম “শাঁখারী পুকুরে খাইল পরিপূর্ণ জল।” জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার ভয়ে ঘরে আসিবার জো নাই। স্মৃতাং বেলা কাটাইয়া সন্ধ্যা হইলে রূপরাম চুপিচুপি গৃহে উপস্থিত হইয়া “প্রণাম করিল গিয়া মায়ের চরণ।” সে সময় “সোনা রূপা ছুটি বোন ছুয়ারে বসিয়া;” তাঁহাকে দেখিয়া তাহারা আনন্দে চোঁচাইয়া উঠিল—“রূপরাম দাদা আটল খুজি পুঁথি লইয়া।” যেখানে বাঘের ভয় সেইখানেই সন্ধ্যা হয়! এমন সময় রত্নেশ্বর আসিয়া পড়িল। রূপরামেব “দাদাকে দেখিয়া বড গায়ে আইল জর;” “তরাসে কাঁপিল তল্ল তালপাত পারা, পালাবার পথ নাঞি বুদ্ধি হইল হারা।” কঠিনহৃদয় জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা শ্রান্ত ক্লান্ত ক্ষুধার্ত বালক রূপরামকে প্রচণ্ড তিরস্কার করিয়া বলিল, “কালি গিয়াছ পাঠ পড়িতে আজি আটলা ঘরে!” ভাইয়ের হাত হইতে খুজি পুঁথি কাড়িয়া লইয়া রত্নেশ্বর ছুঁড়িয়া ফেলিয়া দিল। রূপরাম মনে নিদারুণ তাপ পাইয়া পুঁথি পত্র কুড়াইয়া লইলেন এবং তখনি মায়ের চরণে বিদায় লইয়া গৃহত্যাগ করিলেন। পরদিন শানিঘাট গ্রামে গিয়া জিজ্ঞাসা করিয়া তিনি এক গৃহস্থের বাড়ী গেলেন,— “ঠাকুরদাস পাল তারা বড় ভাগ্যবান, না বলিতে ভিক্ষা দেন আড়াই সের ধান।” আড়াই সের ধান দিয়া চিঁড়া ভাজা কিনিয়া লইয়া রূপরাম দামোদরে গিয়া স্নান পূজা সারিলেন, তাহার পর জল খাইতে বসিলেন। কিন্তু এখনও

দুইদেব সঙ্গ ছাড়ে নাই,—“হেন বেলা চিঁড়া ভাজা উড়াইল বাতাসে।” প্রায় দুইদিন উপবাস, কি করেন? কবি বলিতেছেন, “চিঁড়া ভাজা উড়া গেল শুধু খাই জল, খুজি পুঁথি বয়্যা যাতে অঙ্গে নাঞি বল।” অনেক কষ্টে তিনি দীঘলনগর গ্রামে গেলেন। শুনিলেন যে, সেখানে তাঁতীরা বেশ ধার্মিক গৃহস্থ, সুতরাং ভিক্ষা সহজেই মিলিবে। অমনি তাঁতীঘরে চলিলেন; সেখানে “চিঁড়া দধির ঘটা দেখি আনন্দিত মন।” ইহার সঙ্গে খই হইলে ফলারেব আরও জুত হইত, কিন্তু “তাঁতীঘরে ধর্ম ঠাকুর নাঞি দিল খই।” অগত্যা খই ব্যতিরেকেই কবি উদর ভরিয়া ভোজন করিলেন; গৃহস্থ “দক্ষিণা আনিয়া দিল দশ গণ্ডা কড়ি, দৈবের ঘটনে তার কানা দেড় বুড়ি।” অতঃপর সেখান হইতে কবি রওনা হইলেন, এবং পথে পাঁচ দিন উপবাসের পর তিনি এড়ান-বাহাদুরপুর গ্রামে পৌঁছিলেন। সে স্থান গোপভূমের অন্তর্গত। সেখানের রাজা গণেশ; রূপরাম তাঁহার আশ্রয় পাইলেন। ধর্মঠাকুরের দ্বারা স্বপ্নে আদিষ্ট হইয়া রাজা গণেশ কবিকে ধর্মমঙ্গল রচনা করিতে আদেশ করিলেন। কবিও কাব্য রচনা করিয়া ধর্মের আসরে তাহা গাহিয়া অশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিলেন।

রূপরাম দেশে ফিরিয়া আসিয়াছিলেন নিশ্চয়ই, কারণ তাঁহার বংশধরগণ এখনও শ্রীবামপুবে বাস করিতেছে।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ

অষ্টাদশ শতাব্দী

১৬

নবাবী আমল—ভূমিকা

আওবজ্জেরেব মৃত্যুর পর হইতেই বাঙ্গালার সুবেদার বা নবাবগণের উপর দিল্লীর দরবারের শাসন শিথিল হইয়া পড়িতে থাকে। দিল্লীতে খাজানা পাঠাইয়া দিলেই একবকম সম্পর্ক চুকিয়া যাইত। কাগজে কলমে না তটুক কার্য্যত। বাঙ্গালার সুবেদার ১৭০৭ খ্রীষ্টাব্দের পর হইতে স্বাধীন নবাব হইলেন। এই সময়ে বাঙ্গালা দেশে বিদ্যা ও সাহিত্যচর্চা পূর্ব্বকার শতাব্দীর অনুযায়ীই চলিতে থাকিল। বৈষ্ণব ধর্ম্মের প্রসারও বাড়িয়া চলিল। সাহিত্যে নূতনত্বের মধ্যে প্রথমে সত্যনাথায়ণের পাঁচালী এবং পরে ওজা ও কবিগানের সৃষ্টি হইল। ১৭৫৭ খ্রীষ্টাব্দে পলাশীর যুদ্ধে নবাব সির্দাজ-দৌলার পরাজয় ঘটিলে এই যুগের অবসান সূচিত হইল। এবং ১৭৭৮ খ্রীষ্টাব্দে বাঙ্গালা মুদ্রায়ত্নের আবির্ভাবের সঙ্গে সঙ্গে নূতন যুগের সাদা পড়িয়া গেল। সে স্বতন্ত্র কাহিনী।

সপ্তদশ শতাব্দীতে বাঙ্গালা গদ্য বচনের সূত্রপাত হয়। দক্ষিণ বঙ্গে পোর্তুগীজ মিশনারী পাদ্রীবা তাঁহাদের ধর্ম্মের প্রচারের জন্য বাঙ্গালা ভাষায় খ্রীষ্টানী ধর্ম্মগ্রন্থের অনুবাদ কবিতে আশঙ্ক কবিলেন এবং সঙ্গে সঙ্গে বৈষ্ণব কড়চা গ্রন্থের মত গ্রন্থোত্তরময় ছোট ছোট পুস্তিকাও বচনা কবিতে

লাগিলেন। এই কার্য্য পোর্তুগীজ পাদ্রীরা অষ্টাদশ শতাব্দীর মধ্যভাগ পর্য্যন্ত করিতে থাকেন। তাহার পর ইংরেজের অভ্যুদয় ঘটিলে ইংল্যাণ্ড ও স্কটল্যাণ্ড দেশের পাদ্রীরা সেই কার্য্য চালাইতে লাগিলেন।

সপ্তদশ শতাব্দীতে বচিত একখানি মাত্র খ্রীষ্টানী বাঙ্গালা গদ্যগ্রন্থ এপর্য্যন্ত পাওয়া গিয়াছে। বইটির লেখক ছিলেন একজন বাঙ্গালী খ্রীষ্টান মিশনারী, নাম দোম্ আস্তোনিও। ইনি ছিলেন ভূষণার রাজপুত্র। ১৬৬৩ খ্রীষ্টাব্দেব কাছাকাছি সময়ে মগ জলদস্যুরা দেশ লুণ্ঠ করিতে আসিয়া ইহাকে হরণ করিয়া আরাকানে লইয়া যায়। সেখানে জনৈক পোর্তুগীজ পাদ্রী টাকা দিয়া ইহাকে দস্যুহস্ত হইতে মুক্ত করেন এবং উপযুক্ত শিক্ষা দান, কবিতা ইহাকে বোমান ক্যাথলিক মতে খ্রীষ্টান ধর্মে দীক্ষিত করেন। দোম্ আস্তোনিও বিরচিত পুস্তকেব নাম ব্রাহ্মণ-রোমানক্যাথলিক-সংবাদ। ইহাতে এক ব্রাহ্মণ পণ্ডিত এবং এক খ্রীষ্টান পাদ্রীর মধ্যে বিচার বিতর্কের ব্যপদেশে খ্রীষ্টানধর্মের সারবত্তা ও হিন্দুধর্মের অসারতা প্রতিপন্ন করিবাব চেষ্টা করা হইয়াছে।

বাঙ্গালা ভাষার প্রথম ব্যাকরণ বচিত হয় পোর্তুগীজ ভাষায় মানোএল্ দা আস্‌মুপ্‌সাওঁ নামক পোর্তুগীজ পাদ্রীর দ্বারা। ১৭৩৪ খ্রীষ্টাব্দে ব্যাকরণখানি রচিত হয়, এবং ১৭৪৩ খ্রীষ্টাব্দে পোর্তুগালের রাজধানী লিস্বন হইতে মুদ্রিত ও প্রকাশিত হয়। ব্যাকরণের সঙ্গে আস্‌মুপ্‌সাওঁ বাঙ্গালা-পোর্তুগীজ এবং পোর্তুগীজ-বাঙ্গালা শব্দকোষও ছাপাইয়া-ছিল। ইনি একটি খ্রীষ্টানী গ্রন্থও বাঙ্গালা ভাষায় অনুবাদ করিয়াছিলেন। বইটির নাম “কুপার শাস্ত্রের অর্থভেদ”

(Crepar Xaxtrre Orthblid) । রোমান হরফে মুদ্রিত হইয়া এই গ্রন্থটি লিস্বন হইতে ১৭৪৩ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয় ।

অষ্টাদশ শতাব্দীর প্রথমার্ধে বাঙ্গালা সাহিত্যের মূলধারা-গুলি অক্ষুণ্ণভাবে প্রবাহিত ছিল,— সেই বৈষ্ণবপদাবলী, জীবনী-কাব্য, শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল, রামায়ণ মহাভারত, মনসামঙ্গল, ধর্ম্মমঙ্গল এবং সংস্কৃতে রচিত পুরাণজাতীয় এবং অপরাপর বৈষ্ণব ধর্ম্মগ্রন্থের অনুবাদ । এই সময়ে বিদ্যাসুন্দর কাহিনীর আদর খুবই বাড়িয়া যায় । সত্যনারায়ণের পাঁচালী অষ্টাদশ শতাব্দীর একেবারে প্রথমেই উদ্ভূত হয়, এবং রাঢ় অঞ্চলে বিশেষ সমাদর লাভ করে । ধর্ম্ম এবং প্রণয়সঙ্গীতও লোকপ্রিয় হইয়া ওঠে । এই শতাব্দীর মধ্যভাগে কবিগান ও তজ্জার উদ্ভব হয়, এবং শেষ ভাগে ইহা পরিণতি লাভ করে ।

এই সময়ে কয়েকজন মুসলমান কবিরও সন্ধান পাইতেছি । ইহাদের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছেন উত্তরবঙ্গ-নিবাসী হায়াৎ মামুদ । ইহার চিন্তা-উত্থান কাব্য রচিত হয় ১১৩৯ সালে অর্থাৎ ১৭৩৩ খ্রীষ্টাব্দে । এটি হিতোপদেশের ফারসী অনুবাদ অবলম্বনে রচিত । হায়াৎ মামুদের অন্যান্য গ্রন্থ হইতেছে— মহরমপর্ব (১১৫০ সাল), হেতুজ্ঞান (১১৬০ সাল) এবং আশ্বিয়াবাণী (১১৬৪ সাল) ।

১৭

পদাবলী, পদসংগ্রহ গ্রন্থ, শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল ও বিবিধ বৈষ্ণব কাব্য

অষ্টাদশ শতাব্দীতে অসংখ্য কবি বৈষ্ণব পদ রচনায় হস্তক্ষেপ করেন, কিন্তু দুই চারি জন ছাড়া তাঁহাদের কাহারও কবিত্বশক্তির বালাই বড় ছিল না। এই সময়ের শ্রেষ্ঠ পদকর্তা বলিতে চন্দ্রশেখর এবং তাঁহার ভ্রাতা শশিশেখর, দুইজন রাধামোহন ঠাকুর, নরহরি (ওরফে ঘনশ্যাম) চক্রবর্তী এবং দীনবন্ধু দাস। চন্দ্রশেখর ও শশিশেখরের গীতি কবিতায় অসাধারণ পদমাধুর্য লক্ষিত হয়।

পদসংগ্রহ গ্রন্থগুলি এই যুগের বৈষ্ণব সাহিত্যিকদিগের শ্রেষ্ঠ কীর্তি। এইজাতীয় গ্রন্থের মধ্যে প্রাচীনতম হইতেছে বিখ্যাত বৈষ্ণব পণ্ডিত ও সাধক বিশ্বনাথ চক্রবর্তীর ঋণদাগীত-চিন্তামণি। চক্রবর্তী মহাশয় ১৭০৫ খ্রীষ্টাব্দে দেহত্যাগ করেন; ইহার অনতিকাল পূর্বেই গ্রন্থটি সংকলিত হয়। “হরিবল্লভ” ভণিতায় বিশ্বনাথ অনেক ব্রজবুলি পদ রচনা করিয়াছিলেন, সেগুলিও ইহার মধ্যে সংকলিত আছে।

তাঁহার পর নরহরি চক্রবর্তীর গীতচন্দ্রোদয়। এটি বড় গ্রন্থ ছিল বলিয়া মনে হয়। ইহার অতি অল্প অংশই পাওয়া গিয়াছে। শ্রীনিবাস আচার্যের বংশধর, মহারাজা নন্দকুমারের গুরু, অষ্টাদশ শতাব্দীর একজন শ্রেষ্ঠ পদকর্তা ও পণ্ডিত রাধামোহন ঠাকুর একটি সংকলন করিয়াছিলেন। সে বইটির নাম পদামৃতসমুদ্র। রাধামোহন ইহার একটি সংস্কৃত টীকাও রচনা করিয়াছিলেন। অন্যান্য পদসংগ্রহ-

গ্রন্থগুলির মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছে গৌরমুন্দের দাসের কীর্ত্তনানন্দ, দীনবন্ধু দাসের সংকীর্ত্তনামৃত এবং রাধামুকুন্দ দাসের মুকুন্দানন্দ। কমলাকান্তের পদরত্নাকর এবং নিমানন্দ দাসের পদরসসার ঊনবিংশ শতাব্দীর একেবারে প্রথমে সঙ্কলিত হইয়াছিল।

* কিন্তু এ সকলেবই উপরে হইতেছে গোকুলানন্দ সেন—ওরফে “বৈষ্ণবদাস”—সঙ্কলিত গীতকল্পতরু বা পদকল্পতরু। পদকল্পতরু বৈষ্ণবপদাবলীর ঋগ্বেদ-সংহিতা বলিলে অত্যাঙ্কি হয় না। ইহাতে প্রায় দেড়শত কবি রচিত তিন হাজ্জাবেরও অধিক পদ বৈষ্ণব অলঙ্কার শাস্ত্রে বাখ্যাত বস-পর্য্যায় সজ্জিত হইয়া সংগৃহীত হইয়াছে। গোকুলানন্দের গুরু ছিলেন দ্বিতীয় রাধামোহন ঠাকুর। ইনি শ্রীনিবাস আচার্য্যের বংশধর, পদামৃতসমুদ্রের সঙ্কলয়িতা নহেন; ইনি ছিলেন “দ্বিজ” হরিদাসের বংশধর। ইনিও একজন ভাল পদকর্ত্তা ছিলেন। কাটোয়ার কাছে টেঞা-বৈদ্যপুৰ গ্রামে গোকুলানন্দের নিবাস ছিল। পদসংগ্রহ কার্য্যে ইনি স্বগ্রামবাসী কৃষ্ণকান্ত মজুমদার—ওরফে “উদ্ধবদাস”—মহাশয়ের সাহায্য পাইয়াছিলেন। “বৈষ্ণবদাস” ও “উদ্ধবদাস” ভণিতায় হুই বন্ধুর রচিত অনেকগুলি পদ পদকল্পতরুতে উদ্ধৃত হইয়াছে।

যতগুলি শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল এই শতাব্দীতে রচিত হইয়াছিল সেগুলির মধ্যে কবিচন্দ্র চক্রবর্ত্তীর কাব্যই সর্বাধিক প্রসার লাভ করিয়াছিল। কবিচন্দ্রের নিবাস ছিল মল্লভূমে পানুয়া গ্রামে। কাব্যটি সম্ভবতঃ মল্লাবনীনীধ ভূজ্জনসিংহের রাজ্যকালে (১৬৮২-১৭০২ খ্রীষ্টাব্দ) রচিত হইয়াছিল। ইহার অপর তিন কাব্য শিবায়ন বা শিবমঙ্গল, রামায়ণ এবং

মহাভারত যথাক্রমে বীরসিংহ (১৬৫৬-৮২ খ্রীষ্টাব্দ), রঘুনাথ সিংহ (১৭০২-১২ খ্রীষ্টাব্দ), এবং গোপাল সিংহ (১৭১২-৪৮ খ্রীষ্টাব্দ) এই তিন মল্লরাজের রাজ্যকালে লিখিত হইয়াছিল। কবিচন্দ্র বিবচিত ধর্মমঙ্গল এবং মনসামঙ্গলও পাওয়া গিয়াছে। এইসব কাব্যগুলি এক কবির বচনা না হওয়াই সম্ভব। গোপাল সিংহের ভণিতায় পুবাণের ছাঁদে বিচিত একটি ত্রিকুষ্মমঙ্গল পাওয়া গিয়াছে; এটি রাজার কোন সভাসদেব বচনা হইবে। বলবামদাসের কুঞ্চলীলামৃতও পুরাণের ধরণে বিচিত; ইহাব বচনাকালে ১৬২৪ শকাব্দ ১১০৮ সাল অর্থাৎ ১৭০২ খ্রীষ্টাব্দ। বিষয়বস্তুর দিক দিয়া কাব্যটি মূল্যবান।

বৈষ্ণব গ্রন্থের অনুবাদকাবিগণের মধ্যে বিশ্বনাথ চক্রবর্তীর শিষ্য কৃষ্ণদাসই প্রধান। ইনি স্বীয় গুরুর অনেকগুলি গ্রন্থ বাঙ্গালা কাব্যে রূপান্তরিত করিয়াছিলেন। গীতগোবিন্দ কাব্যের অন্ততঃ চাবিখানি অনুবাদ এই সময়ে করা হইয়াছিল। বর্দ্ধমানের নিকটবর্তী চাণক গ্রামনিবাসী শচীনন্দন বিজ্ঞানিধি ১৭০৭ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৮৬ খ্রীষ্টাব্দে রূপ গোস্বামীকে উজ্জল-নৌলমণিও একটি সংক্ষিপ্ত অনুবাদ করেন। বইটির নাম উজ্জলচন্দ্রিকা। এই শতাব্দীর শেষের দিকে দ্বারকাদাস শ্রীমদ্ভাগবতের অনুবাদ করিয়াছিলেন।

ব্রহ্মবৈবর্তপুরাণের অনুবাদ করিয়াছিলেন গয়ারাম দাস এবং রামলোচন। অনন্তবাম দত্ত এবং বামেশ্বর নন্দী এই দুইজনে স্বতন্ত্রভাবে পদ্মপুরাণের ক্রিয়াযোগসার অংশের অনুবাদ করিয়াছিলেন। নন্দকিশোর দাসের বৃন্দাবন-লীলামৃতকে বরাহপুরাণের ভাবানুবাদ বলা যাইতে পারে। ভূকৈলাসের মহারাজা জয়নারায়ণ ঘোষাল ১৭১৪ শকাব্দে

অর্থাৎ ১৭৯২-৯৩ খ্রীষ্টাব্দে পদ্মপুরাণাস্তর্গত কাশীখণ্ডের অনুবাদ করান।

পুরীর জগন্নাথদেবের মাহাত্ম্যখ্যাপক দুইখানি জগন্নাথ-মঙ্গল কাব্য অষ্টাদশ শতাব্দীতে রচিত হইয়াছিল। কবি দুইজনের নাম বিশ্বম্ভব দাস এবং “দ্বিজ” মধুকণ্ঠ। বিশ্বম্ভব দাসের কাব্যে কলিকাতার মদনমোহনদেবের উল্লেখ আছে। সুতরাং ইহা অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষ পাদের পূর্বে রচিত হয় নাই।

১৮

বৈষ্ণবজীবনী

ষোড়শ শতাব্দীর পরবর্ত্তী কালে খ্রীচৈতন্যের একখানিমাত্র জীবনীকাব্য রচিত হইয়াছিল। পুরুষোত্তম মিশ্র সিদ্ধাস্তবাগীশ (ওরফে প্রেমদাস) ১৬৩৪ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭১৩ খ্রীষ্টাব্দে কবিকর্ণপুরের সংস্কৃত নাটক চৈতন্যচন্দ্রোদয় অবলম্বনে চৈতন্যচন্দ্রোদয়কৌমুদী রচনা করেন। প্রেমদাস আব একখানি জীবনীজাতীয় গ্রন্থ রচনা করেন—বংশীশিক্ষা। ইহাতে কবির গুরুর পূর্বপুরুষ বংশীবদন চট্ট এবং তাঁহার পৌত্র রামচন্দ্র গোস্বামী সম্বন্ধে অনেক কথা আছে। খ্রীচৈতন্য এবং ষোড়শ শতাব্দীর অন্যান্য বৈষ্ণব মহাস্ত সম্বন্ধেও কিছু কিছু নূতন কথা আছে। বংশীশিক্ষা ১৬৩৮ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭১৬-১৭ খ্রীষ্টাব্দে রচিত হয়। পুরুষোত্তম মিশ্রের গুরুদত্ত নাম প্রেমদাস। এই নামেই তিনি গ্রন্থ দুইটি বচনা করিয়াছেন।

অষ্টাদশ শতাব্দীর শ্রেষ্ঠ জীবনীকার ছিলেন নরহরি (ওরফে ঘনশ্যাম) চক্রবর্তী। ইহার পিতা জগন্নাথ বিশ্বনাথ চক্রবর্তীর শিষ্য ছিলেন। ইহাদের নিবাস ছিল মুর্শিদাবাদের সন্নিকটে সৈয়দাবাদ গ্রামে। নরহরি বিশেষ পণ্ডিত ব্যক্তি ছিলেন। ইহার যথেষ্ট কবিত্বশক্তিও ছিল; ইহার রচিত পদগুলি হইতে ইহার অসাধারণ ছন্দোন্নৈপুণ্য প্রকাশ পাইতেছে। ছন্দঃসমুদ্র নামে ইনি বাঙ্গালা এবং ব্রজবুলি ছন্দের উপর একটি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন। নরহরির সঙ্কলিত পদসংগ্রহ গীতচন্দ্রোদয়ের কথা পূর্বে বলিয়াছি। নরহরি তিনচারিখানি জীবনীকাব্য রচনা করিয়াছিলেন। পূর্বে যে অদ্বৈতবিলাসের কথা বলিয়াছি, তাহা ইহার রচনা হওয়াই সম্ভব।

নরহরির ভক্তিরত্নাকর গ্রন্থটিকে বৈষ্ণব-ইতিহাসের মহাকোষ বলা যাইতে পারে। অবিসংবাদিতভাবে এটি হইতেছে অষ্টাদশ শতাব্দীর শ্রেষ্ঠ গ্রন্থ। প্রেমবিলাসের মত ইহাতে মুখ্যতঃ শ্রীনিবাস আচার্য্যের কীর্তিকলাপ বর্ণিত হইলেও অন্যান্য বহু বিষয় সন্নিবিষ্ট হইয়াছে। নরোত্তম, শ্যামানন্দ এবং বৃন্দাবনস্থ গোস্বামীদিগের বিষয়ে অনেক সংবাদ ইহাতে পাওয়া যায়।

নরোত্তমবিলাসকে ভক্তিরত্নাকরের পরিশিষ্ট বলা যাইতে পারে। ইহাতে নরহরি প্রধানভাবে নরোত্তমের জীবনী ও কার্যকলাপ বিবৃত করিয়াছেন। নরোত্তমবিলাস এবং অধুনালুপ্ত শ্রীনিবাসচরিত্র এই দুইখানি গ্রন্থ ভক্তিরত্নাকরের মধ্যে একাধিকবার উল্লিখিত হইয়াছে, সুতরাং এ দুটি পূর্বকার রচনা।

শ্রামানন্দের জীবনী বিষয়ে দুইখানি ছোট ছোট কাব্য পাওয়া গিয়াছে; দুইখানিরই নাম শ্রামানন্দপ্রকাশ। একখানির লেখকের ঞ্জরুদত্ত নাম “কৃষ্ণচরণ দাস।”

বনমালী দাসের জয়দেবচরিত্র জয়দেব ও তাঁহার পত্নী পদ্মাবতীর বিষয়ে প্রচলিত কিংবদন্তী অবলম্বনে রচিত। কবি সম্ভবতঃ শ্রীনিবাস আচার্য্য-সম্প্রদায়ের শিষ্য ছিলেন। জয়দেবচরিত্রে কেন্দুবিশে বর্জমানরাজ-প্রতিষ্ঠিত মন্দিরের উল্লেখ আছে। এই মন্দির নির্মিত হয় ১৬১৪ শকাব্দে অর্থাৎ ১৬৯৩ খ্রীষ্টাব্দে। সুতরাং বনমালী দাসের কাব্য ১৬৯৩ খ্রীষ্টাব্দের পরে রচিত হইয়াছিল; কিন্তু যে কত পবে তাহা বলিবার উপায় নাই।

১৯

রামায়ণ ও মহাভারত কাব্য

অষ্টাদশ শতাব্দীতে যে কয়খানি রামায়ণ কাব্য রচিত হইয়াছিল তাহার মধ্যে কবিচন্দ্রের কাব্যের উল্লেখ পূর্বে করা হইয়াছে। অপর কবিগণের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছেন—রামগোবিন্দ (ওরফে হনুমন্তদাস), মহানন্দ চক্রবর্তী, ভবানী-শঙ্কর বন্দ্য, “ভিক্ষু” রামচন্দ্র বা রামচন্দ্র যতি, রামপ্রসাদ বন্দ্য, “দ্বিজ” ভবানীনাথ এবং “দ্বিজ” সীতামৃত। রামপ্রসাদ বন্দ্যের রামায়ণ রচনা সম্পূর্ণ হয় ১৭১২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৯০-৯১ খ্রীষ্টাব্দে। ইনি আরও দুইখানি কাব্য রচনা করিয়াছিলেন, একখানি কৃষ্ণলীলাবিষয়ক—কৃষ্ণলীলামৃতরস, অপরটি শক্তিবিশয়ক—দুর্গাপঞ্চরাত্রি। শেষোক্ত কাব্যখানি

সম্পূর্ণ হয় ১৬৯২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৭০-৭১ খ্রীষ্টাব্দে ; তখন কবির বয়স বাইশ বৎসর। কবির পিতা জগদ্রামের ভণিতাও এই কাব্যটিতে দেখা যায়। সম্ভবতঃ জগদ্রাম কাব্য-রচনা আরম্ভ করেন, এবং পুত্র রামপ্রসাদ তাহা সম্পূর্ণ করেন। ইহাদের বাসস্থান ছিল দামোদর তীরে, বাণীগঞ্জের অপর পারে ভুলুই গ্রামে। “দ্বিজ” সীতাসুতের কাব্যে মল্লরাজ গোপাল-সিংহের নাম আছে। ইনি দ্বিতীয় গোপাল সিংহ হইলে কাব্যটি ঊনবিংশ শতাব্দীর প্রথমে রচিত হইয়াছিল।

কয়েকজন কবি সংক্ষিপ্ত রামায়ণ অথবা রামায়ণের কাহিনীবিশেষ রচনা করিয়াছিলেন। ইহাদের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছেন—কৃষ্ণদাস, কৈলাস বসু এবং শিবচন্দ্র সেন। ফকিররাম কবিভূষণ অঙ্গদ-রায়বার রচনা করিয়া প্রসিদ্ধি লাভ করেন। মল্লাব্দ ১০০৮ সালে অর্থাৎ ১৭০৩ খ্রীষ্টাব্দে লেখা এই কাব্যের পুঁথি পাওয়া গিয়াছে। ফকিররাম একখানি সত্যনারায়ণের পাঁচালীও রচনা করিয়াছিলেন। এই কাব্যের রচনাকাল মল্লাব্দ ১০১৭ সাল অর্থাৎ ১৭১২ খ্রীষ্টাব্দ।

অষ্টাদশ শতাব্দীতে লেখা রামচরিত গ্রন্থের মধ্যে সর্বাপেক্ষা অদ্ভুত হইতেছে রামানন্দ ঘোষের কাব্য। রামানন্দ ঘোষ ছিলেন নীলাচলের জগন্নাথদেবের উপাসক, আবার তান্ত্রিক মতে কালীপূজাও কবিতেন এবং নিজেকে বুদ্ধের অবতার বলিয়াও প্রচার করিতেন। অষ্টাদশ শতাব্দী পর্য্যন্ত বাঙ্গালা দেশের স্থানে স্থানে যে বিকৃত তান্ত্রিক বৌদ্ধধর্ম প্রচলিত ছিল, রামানন্দ বোধ হয় সেই মতাবলম্বী ছিলেন।

এই যুগে সম্পূর্ণ মহাভারত রচনা করিয়াছিলেন এই কয় জন—কবিচন্দ্র চক্রবর্তী (ইহার কাব্যের কথা পূর্বে বলিয়াছি), ষষ্ঠীবর সেন ও তৎপুত্র গঙ্গাদাস, “জ্যোতিষ ব্রাহ্মণ” বাসুদেব (ইনি কোচবিহার অঞ্চলের লোক ছিলেন) এবং ত্রিলোচন চক্রবর্তী। পিতা ষষ্ঠীবরের সহযোগিতায় গঙ্গাদাস একটি মনসামঙ্গল কাব্যও রচনা করিয়াছিলেন।

ইহা ছাড়া দৈবকীনন্দন, কৃষ্ণরাম, রামচন্দ্র খান, গোপীনাথ পাঠক, রাজীব সেন, গোপীনাথ দত্ত এবং আরও কয়েকজন কবি রচিত এক একটি পর্ব পাওয়া গিয়াছে। ইহাদের মধ্যে কেহ কেহ হয়ত সম্পূর্ণ মহাভারত কাব্য রচনা করিয়া থাকিবেন। লোকনাথ দত্ত এবং রামনারায়ণ ঘোষ মহাভারতীয় নলদময়ন্তী কাহিনী লইয়া কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। রাজেন্দ্র দাসের কাব্যের বিষয় হইতেছে শকুন্তলার উপাখ্যান।

২০

বিবিধ শাক্ত কাব্য

অষ্টাদশ শতাব্দীতে উত্তর ও পূর্ব বঙ্গে মনসামঙ্গল কাহিনীর বিশেষ সমাদর ছিল। এই দুই অঞ্চলের বহু কবি মনসামঙ্গল কাব্য অথবা কাহিনীবিশেষ রচনা করিয়াছিলেন, তাঁহাদের সকলের নাম করার প্রয়োজন নাই। তবে প্রধান দুইতিনজন মনসামঙ্গল-কবির উল্লেখ করা যাইতেছে।

চট্টগ্রাম অঞ্চলের কবি রামজীবন বিদ্যাভূষণের মনসামঙ্গল

বিরচিত হয় ১৬২৫ শকাদে অর্থাৎ ১৭০৩-০৪ খ্রীষ্টাব্দে। ইনি একখানি ছোট ব্রতকথাজাতীয় কাব্যও রচনা করিয়াছিলেন; কাব্যটির নাম আদিত্যচরিত বা সূর্য্যমঙ্গল। এই কাব্যটি ১৬৩১ শকাদে বা ১৭০৯-১০ খ্রীষ্টাব্দে রচিত হয়। উত্তরবঙ্গের কবি জীবনকৃষ্ণ মৈত্র ১৬৬৬ শকাদে ১১৫১ সনে অর্থাৎ ১৭৪৪-৪৫ খ্রীষ্টাব্দে মনসার পাঁচালী রচনা করেন। অনেক অংশে ইনি পূর্ববর্তী কবি জগজীবন ঘোষালের মনসামঙ্গলের অনুসরণ করিয়াছেন। শতাব্দীর একেবারে শেষের দিকে সুসঙ্গের রাজা রাজসিংহও একখানি মনসামঙ্গল রচনা করিয়াছিলেন। ইনি আরও দুইখানি গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন—রাজমালা এবং ভারতীমঙ্গল।

কতকগুলি ছোট ছোট ব্রতকথাজাতীয় কাব্য ছাড়াও তিনচারিখানি বড় চণ্ডীমঙ্গল কাব্য অষ্টাদশ শতাব্দীতে উত্তর ও পূর্ব বঙ্গে রচিত হইয়াছিল। যথা—কৃষ্ণজীবনের অভয়ামঙ্গল বা অশ্বিকামঙ্গল, মুক্তারাম সেনের সারদামঙ্গল, ভবানীশঙ্কর দাসের মঙ্গলচণ্ডীপাঞ্চালিকা এবং রামানন্দ গোস্বামীর চণ্ডীর গীত। মুক্তারাম সেনের কাব্য রচিত হয় ১৬৬৯ শকাদে অর্থাৎ ১৭৪৭-৪৮ খ্রীষ্টাব্দে।

চণ্ডীমঙ্গল অপেক্ষা মার্কণ্ডেয়-পুরাণান্তর্গত দুর্গাসপ্তশতী বা চণ্ডী অবলম্বনে রচিত কাব্যের সমাদর এই সময়ে আরও বেশী ছিল। এই শ্রেণীর কাব্যের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছে শিবচন্দ্র সেনের গৌরীমঙ্গল বা সারদামঙ্গল, হরিশচন্দ্র (বা হরিচন্দ্র) বসুর চণ্ডীবিজয় বা দেবীমঙ্গল বা কালিকামঙ্গল, রামশঙ্কর দেবের অভয়ামঙ্গল, জগদ্রাম ও রামপ্রসাদ বন্দ্য রচিত দুর্গাভক্তিচিন্তামণি এবং হরিনারায়ণ দাসের চণ্ডিকা-মঙ্গল।

দীনদয়ালের দুর্গাভক্তিচিন্তামণি দেবীভাগবত-পুরাণ অবলম্বনে রচিত।

কালিকামঙ্গল নামে খ্যাত বিভাসুন্দর-উপাখ্যানকাব্য-গুলি বাহ্যতঃ দেবীমাহাত্ম্য খ্যাপন করিলেও ঠিক ভক্তিকাব্যের পর্যায়ে পড়ে না। সেইজন্য এই কাব্যগুলি পরে স্বতন্ত্র ভাবে আলোচিত হইতেছে।

২১

ধর্মমঙ্গল কাব্য ও ধর্মপুরাণ

দুইতিনখানি ছাড়া সব ধর্মমঙ্গল কাব্যই অষ্টাদশ শতাব্দীতে রচিত। ঊনবিংশ শতাব্দীতে লেখা কোন ধর্মমঙ্গল পাওয়া যায় নাই। অষ্টাদশ শতাব্দীর ধর্মমঙ্গলগুলির রচয়িতারা প্রায় সকলেই দামোদর নদেব দক্ষিণ ও পশ্চিম এবং দ্বারকেশ্বর নদের উত্তর এবং পূর্ব এই সীমার মধ্যে বাস করিতেন। তাবৎ ধর্মমঙ্গল কাব্যের মধ্যে ঘনরামের কাব্যই সর্বাপেক্ষা অধিক সমাদর লাভ করিয়াছিল। ঘনরাম চক্রবর্তী কবিরত্নের নিবাস ছিল বর্ধমানের তিন ক্রোশ দক্ষিণে দামোদরের অপর পারে কৃষ্ণপুর গ্রামে। ইহার পিতার নাম গৌরীকান্ত, মাতার নাম সীতা। ঘনরাম বর্ধমানের মহারাজা কীর্ত্তিচন্দ্রের আশ্রিত ছিলেন, এ কথা কাব্যের মধ্যে পুনঃ পুনঃ বলিয়া গিয়াছেন। ১৬৩৩ শকাব্দের (অর্থাৎ ১৭১১ খ্রীষ্টাব্দের) ৮ই অগ্রহায়ণ তারিখে ঘনরাম তাঁহার কাব্যরচনা সমাপন করেন। কবি একটি সত্যনারায়ণের পাঁচালীও রচনা

করিয়াছিলেন। ঘনরামের ধর্মমঙ্গল বৃহৎ কাব্য। রচনা বেশ প্রাঞ্জল, তবে অনুপ্রাসের প্রয়োগ অত্যধিক।

মল্লভূমের অন্তর্গত চামোট গ্রাম নিবাসী রামচন্দ্র বন্দ্য তাঁহার ধর্মমঙ্গল কাব্যের রচনা সমাপ্ত করেন মল্লাব্দ ১০৩৮ সালে অর্থাৎ ১৭৩২ খ্রীষ্টাব্দে। বর্দ্ধমান জেলার শাখারী গ্রামনিবাসী নরসিংহ বসুর কাব্যরচনা আরম্ভ হয় ১৬৬৯ শকাব্দের (অর্থাৎ ১৭৩৮ খ্রীষ্টাব্দের) ১০ই শ্রাবণ তারিখে। হৃদয়রাম সাউ রচিত ধর্মমঙ্গল সমাপ্ত হয় ১১৫৬ সালের (অর্থাৎ ১৭৪৯ খ্রীষ্টাব্দের) ২রা আশ্বিন তারিখে। ইনি বর্দ্ধমান-বীরভূম সীমান্তের অধিবাসী ছিলেন। রামদাস আদকের কাব্যের রচনাকাল লইয়া গোলযোগ আছে। গোবিন্দরাম বন্দ্যের ধর্মমঙ্গলের একটি পুঁথি মল্লাব্দ ১৭০১ সালে অর্থাৎ ১৭৯৬ খ্রীষ্টাব্দে লিখিত হইয়াছিল, সুতরাং কাব্যটির রচনাকাল ১৭৯৬ খ্রীষ্টাব্দের পূর্বে। “দ্বিজ” ক্ষেত্রনাথের এবং “দ্বিজ” নিধিরামের কাব্যের অতি অল্প অংশই পাওয়া গিয়াছে, সুতরাং সে সম্বন্ধে বিশেষ কিছু বলিবার উপায় নাই।

মাণিকরাম গাঙ্গুলীর ধর্মমঙ্গলের অনেক বিশেষত্ব আছে। কবির নিবাস ছিল বর্দ্ধমান-বাঁকুড়া সীমান্তে বেলডিহা গ্রামে। ইহার পিতার নাম গদাধর, মাতার নাম কাত্যায়নী। মাণিকরাম কাব্যরচনার যে ইতিহাস দিয়াছেন তাহা অনেকটা রূপরামের আত্মকাহিনীকে স্মরণ করাইয়া দেয়। মাণিকরামের কাব্যের পুঁথিতে যে রচনাকাল দেওয়া আছে তাহা একটি বিষম সমস্তা। তাহা হইতে অনেকে অনেক রকম তারিখ বাহির করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত যোগেশ চন্দ্র রায়

মহাশয়ের গণনায় পাওয়া যায় ১৭০৩ শকাব্দ অর্থাৎ ১৭৮১ খ্রীষ্টাব্দ। এই তারিখই যে মোটামুটি ঠিক তাহা অনেক দিক হইতে সমর্থিত হয়।

মাণিকরামের রচনা মন্দ নহে, তবে ঘনরামের অপেক্ষা নিকৃষ্ট। কিন্তু হাঙ্গুরসের সৃষ্টিতে মাণিকরাম বিশেষ কৃতিত্ব প্রদর্শন করিয়াছেন।

সহদেব চক্রবর্তীর ধর্মপুবাণ বা অনিলপুবাণ বা ধর্মমঙ্গল পুরাণজাতীয় গ্রন্থ। ইহা ধর্মমঙ্গল কাব্য নহে, ইহাতে লাউসেনের কাহিনী নাই। সহদেবের কাব্য কতক অংশে শিবায়ন, কতক অংশে নাথ-যোগীদের পুবাণ-কাব্য, আর কতক অংশে ধর্মপুবাণ। শেষের অংশে রামাই পণ্ডিতের কাহিনী এবং ধর্মপূজার শ্রেষ্ঠত্ব সপ্তদ্বীপ অপব তুইচারিটি কাহিনী আছে। শূন্যপুবাণে উদ্ধৃত নিবন্ধনের উদ্ভা (‘‘কদ্দা’’) ছড়াটি এই অংশেই আছে। ধর্মপূজকদিগের ও বৌদ্ধ নিম্নশ্রেণীর লোকদিগের সাতাষ্যে ধর্ম্যাক্ত ফকিরেরা কিরূপে দক্ষিণ রাঢ়ের কোন কোন গ্রাম বিধ্বস্ত করিয়াছিল তাহারই একটি কাহিনী এই ছড়াটির মধ্যে প্রতিধ্বনিত হইতেছে। সহদেব চক্রবর্তীর কাব্য ১৭৩৫ খ্রীষ্টাব্দের অল্পকাল পরেই রচিত হইয়াছিল। সহদেবের পিতার নাম বিশ্বনাথ। ইহাদের নিবাস ছিল হুগলী জেলায় দ্বারহাটাব নিকটে রাখানগর গ্রামে।

শিবায়ন, সত্যনারায়ণের পাঁচালী এবং বিবিধ কাব্য

পঞ্চদশ এবং ষোড়শ শতাব্দীতে শিবের গৃহস্থালীর সম্বন্ধে প্রচলিত কাহিনীগুলি মনসামঙ্গল এবং চণ্ডীমঙ্গলগুলির অন্তর্ভুক্ত ছিল বটে, কিন্তু শিবের বিষয়ে স্বতন্ত্র গানও অপ্রচলিত ছিল না। শিবের বিষয়ে স্বতন্ত্র কাব্য যাহা পাওয়া গিয়াছে তাহাব কোনটিই সপ্তদশ শতাব্দীর শেষ ভাগের পূর্বে নহে।

শিবের বিষয়ে শ্রেষ্ঠ বাঙ্গালা কাব্য হইতেছে রামেশ্বর ভট্টাচার্য্যের শিবায়ন বা শিবসংকীৰ্ত্তন। রামেশ্বরের আদি নিবাস ছিল ঘাটাল মহকুমায় ববদাবাটী পরগণায় যছপুর গ্রামে। পরে কবি কর্ণগড়েব রাজা যশোমন্ত সিংহের আশ্রয়ে মেদিনীপুরের নিকটে অষোধ্যানগরে আসিয়া বাস করেন। রামেশ্বরের শিবায়ন-রচনা সমাপ্ত হয় ১৬৩২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭১০-১১ খ্রীষ্টাব্দে।

রামেশ্বরের শিবায়ন অষ্টাদশ শতাব্দীর শ্রেষ্ঠকাব্যগুলির অন্ততম। রচনাভঙ্গী ভারতচন্দ্রের মত অত সুন্দর না হইলেও ইহার কাব্য সাধারণ মানুষের ঘরগৃহস্থালীর ব্যাপার অত্যন্ত সুন্দরতার সহিত বর্ণিত হইয়াছে বলিয়া অধিকতর হৃদয়গ্রাসী হইয়াছে। তাহা ছাড়া কাব্যটিতে বিকৃতরুচির বিন্দুমাত্র পরিচয় নাই। কবি যথার্থই লিখিয়াছেন, “ভবভাবা ভদ্র-কাব্য ভণে রামেশ্বর।”

রামেশ্বর একখানি সত্যনারায়ণের পাঁচালী রচনা করিয়াছিলেন। এই কাব্যটি শিবায়নের পূর্ব্বেই রচিত হইয়াছিল; কবি তখনও যত্নপূর্ব পরিত্যাগ করেন নাই। এই শ্রেণীর কাব্যের মধ্যে এইটিই শ্রেষ্ঠ, এবং সেই কাব্যে ইহার সমাদরও অত্যধিক।

অষ্টাদশ শতাব্দীতে অন্ততঃ আরও দুইজন কবি শিবায়ন কাব্য রচনা করিয়াছিলেন—বামকৃষ্ণ দাস কবিচন্দ্র এবং বামবাম দাস।

ধর্ম্মমঙ্গল কাব্যের মত সত্যনারায়ণের পাঁচালীরও উদ্ভব হয় দক্ষিণ রাঢ় অঞ্চলে। তবে ধর্ম্মমঙ্গলের মত ইহা প্রসার ঐ স্থানেই সীমাবদ্ধ ছিল না, অল্পকাল মধ্যে ইহা পশ্চিম-বঙ্গের অস্থত্র এবং পূর্ব ও উত্তর বঙ্গেও প্রসার লাভ করে। হিন্দুদিগের তরফ হইতে হিন্দু ও মুসলমান এই দুই জাতির সংস্কৃতিগত মিলন প্রচেষ্টার ফলেই এই কাব্যের উৎপত্তি হইয়াছিল। পীর এবং ফকীরের সাধারণতঃ হিন্দু এবং মুসলমান উভয় সম্প্রদায়ের লোকেবই শ্রদ্ধাভক্তি পাইতেন, এই কারণে পীরের উপাসনা দুই ধর্ম্মের মিলনের সেতুস্বরূপ হইয়াছিল। সত্যনারায়ণ বা সত্যপীর, পীরের দেবসংস্করণমাত্র, ফলে অতি সহজেই বিষ্ণুর সহিত ইহার একীকরণ হইয়া যায়।

সত্যনারায়ণের পাঁচালী ব্রতকথার মত। প্রাচীন বাঙ্গালার সকল দেবমঙ্গল কাব্যের মধ্যে শুধু এইটিই এখনও পূজার অঙ্গ হিসাবে ব্রতকথার মত পাঠিত ও শ্রুত হইয়া থাকে। কাহিনীটি সর্বজনজ্ঞাত বলিয়া এখানে দেওয়া গেল না।

সত্যনারায়ণ কাব্যের প্রাচীনতম কবি হইতেছেন, ধনবাম চক্রবর্তী, রামেশ্বর ভট্টাচার্য্য, ফকিরবাম কবিভূষণ এবং বিকল চট্ট। তাহার পর “দ্বিজ” বামকৃষ্ণ, ভাবতচন্দ্র রায় গুণাকর (ইনি ভূইখানি সত্যনারায়ণের পাঁচালী লিখিয়াছিলেন, একখানির বচনাকাল ১১৪৭ সাল অর্থাৎ ১৭৩৮ খ্রীষ্টাব্দ), কবিবল্লভ, জয়নারায়ণ সেন (ইহার কাব্যের নাম হরিলীলা, রচনাকাল ১৬৯৪ শকাব্দ অর্থাৎ ১৭৭৩ খ্রীষ্টাব্দ), ইত্যাদি। রঙ্গপুর জেলার অন্তর্গত মহীপুৰ গ্রামনিবাসী বৈষ্ণব কৃষ্ণহরি দাসের কাব্যের বিষয় সম্পূর্ণ অভিনব। এই কাব্যে সত্যপীর দেবতা নহেন, তিনি মানুষ, মালঞ্চের বাজা মহীদানবের কন্যার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। অনঢ়া কন্যার গর্ভজাত শিশুকে পবিত্যাগ করা হইয়াছিল। মহীদানবের পুরোহিত কুশল ঠাকুর শিশুটিকে কড়াইয়া পাইয়া মানুষ করেন। একদিন বালক সত্যপীষ মালঞ্চ নগরীষ পশ্চিমে নূব নদীর তীরে একটি পুঁথি ব্ড়াইয়া পান। কুশল ঠাকুরের নিকট আনিলে তিনি দেখিলেন যে পুঁথিটি কোরান। ব্রাহ্মণের পক্ষে কোরান পাঠ নিষিদ্ধ বলিয়া কুশল বালককে, যেখানে পুঁথিটি পাইয়াছিলেন সেখানে রাখিয়া আসিতে বলিলেন। কুশলের আদেশ শুনিয়া সত্যপীষ তর্ক জুড়িয়া দিল এবং তর্কের ফলে প্রতিপন্ন হইল যে কোবানে পুরাণে ভেদ নাই, হিন্দু ও মুসলমান ধর্ম পরস্পর বিরোধী নহে।

চট্টগ্রাম অঞ্চলে সত্যপীষের মত ত্রৈলোক্যপীষের গানও প্রচলিত আছে। মুসলমানদিগের মধ্যে ময়মনসিংহ ও চব্বিশ পরগণা অঞ্চলে গাজী সাহেবের গান এবং পশ্চিম বঙ্গ ও মধ্য বঙ্গের প্রায় সর্বত্র মাণিকপীরের গান এখনও চলিত

আছে। কিন্তু সাহিত্য হিসাবে এই গানগুলিব বিশেষ কিছু মূল্য নাই।

অষ্টাদশ শতাব্দীৰ অনেক কবি গঙ্গাব মাহাত্ম্য বিষয়ে গঙ্গামঙ্গল কাব্য বচনা কৰিয়াছিলে। এই কাব্যেৰ মূল কাহিনী হইতেছে পৌৰাণিক আখ্যায়িকা, ভগীৰথ কন্তৰ গঙ্গাবতাবণ। এই সকল কবিৰ গঙ্গামাহাত্ম্যবিষয়ক কাব্য পাওয়া গিয়াছে—গেৰাঙ্গ শৰ্ম্মা, জয়বাম দাস, “দ্বিজ” কমলাকান্ত, শঙ্কৰ আচাৰ্য্য এবং দুৰ্গাপ্ৰসাদ মুখুটি। দুৰ্গাপ্ৰসাদেৰ কাব্য অষ্টাদশ শতাব্দীৰ একেবাবে শেষে বচিত হইয়াছিল।

সূৰ্য্যেৰ সম্বন্ধে দুইখানি ব্ৰতকথাজাতীয় কাব্য পাওয়া গিয়াছে। ৰামজীবনেৰ সূৰ্য্যমঙ্গলেৰ উল্লেখ পূৰ্বে কৰিয়াছি। এই কাব্য ১৭০৯-১০ খ্ৰীষ্টাব্দে বচিত হইয়াছিল। অপৰ কবি হইতেছেন “দ্বিজ” কালিদাস।

সবস্বতীৰ মাহাত্ম্য বিষয়ে দুইখানি মাত্ৰ কাব্য পাওয়া গিয়াছে। একটি হইতেছে দয়াবাম বচিত সাবদাৰ্চবিত্ত, অপৰটি “দ্বিজ” বীবেশ্বৰ বচিত সবস্বতীমঙ্গল।

লক্ষ্মীমাহাত্ম্যবিষয়ক কাব্যেৰ মধ্যে “দ্বিজ” ধনঞ্জয়েৰ কমলামঙ্গল উল্লেখযোগ্য।

পশ্চিমবঙ্গেৰ যে সকল স্থানীয় দেবতাৰ বিষয়ে একাধিক কবিতা, ছড়া বা গান প্রচলিত আছে তাহাদেৰ মধ্যে প্রধান হইতেছেন—বৈষ্ণনাথ, তাবকনাথ, মদনমোহন, যোগাঙ্গা এবং কিবীটেশ্বৰী। উক্তৰ ও পূৰ্ব বঙ্গেও এইজাতীয় কবিতা বিৰল নহে।

বিজ্ঞানসুন্দর কাব্য : ভারতচন্দ্র ও রামপ্রসাদ

অষ্টাদশ শতাব্দীতে বিজ্ঞানসুন্দর কাহিনীর সমাদর হইয়াছিল পশ্চিমবঙ্গে ভাগীরথীর তীরবর্তী অঞ্চলে। ইহার কারণ আর কিছুই নহে, পতনশীল মুসলমান সম্রাট ও নবাব-দিগের দরবারের আড়ম্বর এই অঞ্চলের শিক্ষিত সমাজের মনকে ধীরে ধীরে প্রভাবিত ও বিযাক্ত করিয়া তুলিতেছিল। সমাজও তখন অবনতিপ্রবণ, সুতরাং এ সময়ের বিজ্ঞানসুন্দর-প্রণয়কাহিনীতে এবং বিকৃতকচি তরঙ্গ ও কবিগানে তখনকার দিনের শিক্ষিত ও ধনী সম্প্রদায়ের সাহিত্যিক রুচির পরিচয় মিলিতেছে।

এই সময়ের বিজ্ঞানসুন্দরকাব্য-রচয়িতা পাঁচজন কবির সন্ধান পাওয়া যাইতেছে—বলরাম কবিশেখর, ভারতচন্দ্র রায় গুণাকর, রামপ্রসাদ সেন কবিরঞ্জন, নিধিরাম আচার্য্য কবিরত্ন এবং প্রাণরাম চক্রবর্তী। বলরাম কবিশেখরের কাব্যের রচনাকাল জানা নাই ; প্রাণরাম চক্রবর্তীর নাম মাত্র জানা আছে। নিধিরাম আচার্য্যের বিজ্ঞানসুন্দর কাব্য রচিত হয় ১৬৭৮ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৫৭ খ্রীষ্টাব্দে। ভারতচন্দ্র ও রামপ্রসাদ দুইজনেই বড় কবি ছিলেন। ইহাদের কাব্য আলোচনার পূর্বে বিজ্ঞানসুন্দর-কাহিনীর সংক্ষেপে কিছু বলিতেছি।

সুন্দর নামে এক বিদেশী রাজপুত্র এক মালিনীকে দূতী করিয়া রাজকন্যা বিজ্ঞার সহিত গোপনে প্রণয় করে। বিজ্ঞার

মাতা কন্ঠার গোপন প্রণয়কাহিনী জানিতে পারিয়া স্বামীকে বলিয়া দেন। রাজা কোটালের সাহায্যে সুন্দরকে ধরিয়া ফেলেন এবং প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত করেন। সুন্দর দেবী কালিকার বরপুত্র, সুতরাং দেবী যথাসময়ে আবির্ভূত হইয়া সুন্দরকে উদ্ধার করেন। সুন্দরের পরিচয় পাইয়া রাজা তাহার সহিত কন্ঠার বিবাহ দেন। ইহাই সংক্ষেপে বিজ্ঞানুন্দরের গল্প।

এই গল্পের মূল পাওয়া যায় বিহ্লণের চৌরপঞ্চাশিকা নামক সংস্কৃত কবিতায়। পরবর্ত্তী কালে ইহা সংস্কৃত নাটকে পরিবর্তিত করা হইয়াছিল বলিয়া অনুমান হয়। বরকচির নামিত যে বিজ্ঞানুন্দর নাটক পাওয়া গিয়াছে, তাহা অৰ্ধাচীন গ্রন্থ বলিয়া মনে হয়। মূল উপাখ্যানে দেবতার সম্পর্ক ছিল না। পরবর্ত্তী কালে সুন্দরকে দেবী ব ভক্ত উপাসক বা বরপুত্র দাঁড় করাষ্টয়া ধর্ম্মের ছাপ দিয়া কাহিনীকে সাধারণের গ্রহণযোগ্য করা হইয়াছে। সেকালে দেবদেবীর কথা না থাকিলে তাহা সাহিত্যে হইত না। ধর্ম্মের রাঙতা-মোড়া হইলেও ইহা যে মূলে লৌকিক কাহিনী ছিল তাহা বুঝিতে কিছুমাত্র বিলম্ব হয় না।

বিজ্ঞানুন্দর-কাহিনীর শ্রেষ্ঠ কবি ভারতচন্দ্র। ইনি অষ্টাদশ শতাব্দীর সর্বশ্রেষ্ঠ কবি, এবং ইহার অনন্যদামজ্ঞ এই শতাব্দীর শ্রেষ্ঠ কাব্য। ভাবতচন্দ্রের কাব্য অষ্টাদশ শতাব্দীর শেষের এবং ঊনবিংশ শতাব্দীর প্রথমভাগের কবিদিগের উপর বিশেষ প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল। ভারতচন্দ্রের জন্মস্থান হইতেছে হুগলী জেলায় আধুনিক ভূরগুট, প্রাচীন ভূরিশ্রেষ্ঠি পরগণায় পেঁড়ো-বসন্তপুর গ্রাম। ইহার পিতা নরেন্দ্রনারায়ণ রায় সম্পন্ন জমিদার ছিলেন, পরে ইহার অবস্থা খারাপ হইয়া

যায়। ভাবতচন্দ্রের জীবন অশেষ বৈচিত্র্যপূর্ণ ছিল। নানা ছুঃখ কষ্টের পব ইনি মহারাজা কৃষ্ণচন্দ্রের আশ্রয় পান এবং মূল্যজোড়ে বসতি করেন। তথায় ভারতচন্দ্র ১৬৮২ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৬০-৬১ খ্রীষ্টাব্দে অটচল্লিশ বৎসব বয়সে দেহত্যাগ করেন।

ভাবতচন্দ্রের কালিকামঙ্গল বা অন্নদামঙ্গলকে “মঙ্গল” জাতীয় মহাকাব্য বলা যাইতে পারে। ঠিকমত বিচার করিলে অবশ্য ইহাকে মঙ্গলকাব্য বলা যায় না, যেহেতু মুখ্যতঃ দেবীৰ পূজা প্রচারের জন্য লিখিত হয় নাই। এবং পূজা বা ব্রতের আনুষ্ঠানিক হিসাবে ইহা পঠিত বা গীত হইবার জন্তও বচিত হয় নাই। কালিকামঙ্গল তিনটি স্তব্ধ কাব্যের সমষ্টি; এই তিনটি কাব্য (অন্নদামঙ্গল, বিদ্যাসুন্দর এবং মানসিংহ) অতি ক্ষণভাবে একসূত্রে গাঁথা হইয়াছে। ভাবতচন্দ্রের কালিকামঙ্গল লেখা সম্পূর্ণ হয় ১৬৭৪ শকাব্দে অর্থাৎ ১৭৫২-৫৩ খ্রীষ্টাব্দে। ভারতচন্দ্র আরও কয়েকখানি ছোট ছোট কাব্য এবং কবিতা রচনা করিয়াছিলেন, তাহাব মধ্যে দুইখানি হইতেছে সত্যনারায়ণের পাঁচালী (একখানির রচনাকাল “সনে কদ্র চৌগুণা” অর্থাৎ ১১৪৪ সাল)। ভাবতচন্দ্রের শ্রেষ্ঠত্বের বিশেষ পরিচয় পাওয়া যায় তাঁহার রচনাভঙ্গীতে। খাঁটি বাঙ্গালা শব্দের সঙ্গে সংস্কৃত এবং আরবী-ফারসী শব্দের এমন সুসমঞ্জস প্রয়োগ আব কাহারও রচনায় দেখা যায় নাই। নানারকম সংস্কৃত ছন্দে বাঙ্গালা কবিতা রচনা করিয়া কবি অসাধারণ ছন্দোন্নৈপুণ্য দেখাইয়াছেন। কালিকামঙ্গলের মধ্যে মধ্যে যে গান আছে সেগুলিই বোধ হয় কবিতা হিসাবে ভারতচন্দ্রের শ্রেষ্ঠ রচনা।

সুবিখ্যাত শাস্ত্রসাধক ভক্তপ্ৰবৰ বামপ্ৰসাদ সেনেৰ নিবাস ছিল হালিসহবেৰ নিকট কুমাৰহট্ট গ্ৰামে। ইহাৰ জীবনী সম্বন্ধে নানাবকম কাহিনী প্ৰচলিত আছে। বাম-প্ৰসাদেৰ পিতাৰ নাম বামবাম। মহাবাজা কৃষ্ণচন্দ্ৰেৰ নিকট ভাবতচন্দ্ৰ যেমন গুণাকৰ উপাধি পাইয়াছিলেৰ বামপ্ৰসাদও তেমনি কবিবঞ্জন আখ্যা লাভ কৰেৰ। বামপ্ৰসাদও একথানি কালিকামঙ্গল বা বিজ্ঞানসুন্দৰ কাব্য বচনা কৰেৰ। ইহা ভাবতচন্দ্ৰেৰ কাব্যেৰ পৰে বচিত হয়। ভাবতচন্দ্ৰেৰ কাব্যেৰ সতিত বামপ্ৰসাদেৰ কাব্যেৰ তুলনা কৰিলে দেখা যায় যে, শিল্পচাতুৰ্য্যে এবং ভাষাৰ মনোহাৰিহে ভাবতচন্দ্ৰেৰ কাব্য শ্ৰেষ্ঠ হইলেও চবিত্ৰচিত্ৰণে বামপ্ৰসাদেৰ কাব্য হইতে অপকৃষ্ট। বামপ্ৰসাদ অঙ্কিত চবিত্ৰগুলি প্ৰায়ই স্বাভাৱিক এবং যথাযথ।

বামপ্ৰসাদেৰ কৃতিত্বেৰ শ্ৰেষ্ঠ নিদৰ্শন কালিকামঙ্গল কাব্য দুইটো, তাহাৰ ভক্তিবিশয়ক সঙ্গীতগুলি। বামপ্ৰসাদেৰ শ্ৰামাবিশয়ক গানগুলিৰ বচনাৰ এবং সেগুলিৰ বিশেষ সুবেৰ মধ্য দিয়া কবিৰ ভক্ত হৃদয়েৰ সাম্যবোধ, দৃঢ় বিশ্বাস এবং আধ্যাত্মিক ব্যাকুলতা এমন মৰ্ম্মস্পৰ্শী ভাবে প্ৰকাশিত হইয়াছে যে, আজ প্ৰায় দুই শত বৎসৰ পৰেও গানগুলিৰ সমাদৰ ও মৰ্যাদা এতটুকুও কমে নাই।

শৈব সিদ্ধাদিগের গাথা

প্রাচীন কাল হইতেই বাঙ্গালা দেশে শিব-উপাসক এক যোগি-সম্প্রদায় ছিলেন, যাহাদের আদি চারি সিদ্ধা ছিলেন মৎশেন্দ্রনাথ বা মীননাথ, গোরক্ষনাথ, হাড়িপা এবং কামুপা । এই চারি সিদ্ধার মাহাত্ম্যমূচক অলৌকিক কাহিনী বা গালগল্প বাঙ্গালা দেশে বহুকাল হইতেই প্রচলিত আছে । এই কাহিনীগুলি দুই ভাগে পড়ে—(১) মীননাথ-গোরক্ষনাথের কাহিনী এবং (২) গোবিন্দচন্দ্র-ময়নামতীর কাহিনী । প্রথম কাহিনীতে দেবীর ছলনায় মীননাথের মোহপ্রাপ্তি এবং পরে তাঁহার শিষ্য গোরক্ষনাথ কর্তৃক তাঁহার উদ্ধার বিবৃত হইয়াছে । দ্বিতীয় কাহিনীর সারমর্ম এই—

রাজা মাণিকচন্দ্রের বিধবা পত্নী ময়নামতী সিদ্ধা হাড়িপার মাহাত্ম্যে মুগ্ধ হইয়া তাঁহার শিষ্য হন এবং পুত্র গোবিন্দচন্দ্র বা গোপীচন্দ্রকেও তাঁহার শিষ্য হইতে অনুরোধ করেন । পুত্র অনেক ওজর আপত্তি করিয়া শেষে হাড়িপার কেরামতি দেখিয়া রাজ্যী হইলেন । হাড়িপা গোবিন্দচন্দ্রকে শিষ্য করিয়া যোগী সন্ন্যাসী করিয়া দিলেন । নানাদেশ ঘুরিয়া অশেষ কষ্ট পাইয়া পরে রাজ্য দেশে ফিরিয়া আসিলেন এবং গুরুর আদেশে সন্ন্যাস ত্যাগ করিয়া পুনরায় গৃহস্থ ধর্ম অবলম্বন করিলেন ।

এই কাহিনীর মূলে হয়ত কিছু ঐতিহাসিক ঘটনা ছিল । কিন্তু এখন গল্প হইতে ইতিহাস অংশ বাহির করা অসাধ্য

হইয়া পড়িয়াছে। বাঙ্গালাদেশের নিজস্ব কথাবস্তু গোবিন্দ-চন্দ্রের সন্ন্যাসের করুণ কাহিনী বাঙ্গালাদেশের সীমানা ছাড়িয়া বহুদূর চলিয়া গিয়াছে। সুদূর পঞ্জাব, সিন্ধু, মহাবাহু, রাজপুতনা প্রভৃতি প্রদেশে এই গাথা গাহিয়া এখনও যোগী সন্ন্যাসীরা ভিক্ষা কবিয়া বেড়ায়। বাঙ্গালা দেশে কিন্তু উদ্ভব বঙ্গ ছাড়া অন্য অঞ্চল হইতে গোবিন্দচন্দ্রের কাহিনী লুপ্ত হইয়া গিয়াছে। প্রাপ্ত গাথাগুলির মধ্যে যেটি সর্বপ্রাচীন সেটি পশ্চিমবঙ্গের কবি ছল্লভ মল্লিকের বচনা। সহদেব চক্রবর্তীর অনিলপুবাণে মীননাথ গোবক্ষনাথের কাহিনী আছে। ভবানীদাস ও সুকুব মামুদেব পাচালী উদ্ভববঙ্গে পাওয়া গিয়াছে। এছটির বচনাকাল উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমভাগ হওয়া অসম্ভব নহে।

২৫

ঊষ্টাদশ শতাব্দীর শেষার্ধ্ব—যুগসন্ধি

১৭৫৭ খ্রীষ্টাব্দে পলাশীর যুদ্ধের পর ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানী বাঙ্গালার দেওয়ানী অর্থাৎ রাজস্ব আদায়ের ভাব পাইল এবং কয়েক বৎসরের মধ্যেই দেশের শাসনভাব সম্পূর্ণরূপে গ্রহণ করিয়া দেশের রাজশক্তি করতলগত করিল। ইহাতে বাঙ্গালা-দেশে তথা ভাবতবর্ষে নূতন যুগের আবির্ভাব-সম্ভাবনা ঘটিল। এই সময়ের কিছু পূর্বে হইতেই বাঙ্গলায় গল্প রচনা আরম্ভ হইয়া গিয়াছিল। শুধু খ্রীষ্টান মিশনারীদের প্রচেষ্টায় নহে, ব্রাহ্মণ, পণ্ডিতদিগের চেষ্টাও এবিষয়ে যথেষ্ট পরিমাণে কার্যকরী হইয়াছিল। প্রথম শিক্ষার্থীদিগের জ্ঞান স্মৃতি ও ত্রায় শাস্ত্রের

কোন কোন গ্রন্থের বান্জালা গদ্যে অনুবাদ কার্য্য অষ্টাদশ শতাব্দীর মধ্যভাগ হইতে আরম্ভ হইয়াছিল। বৈদ্যেরা দুই-একটি কবিরাজী বইও বান্জালা গদ্যে লিখিয়াছিলেন। কিন্তু ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর অভ্যুদয় না ঘটিলে এই প্রচেষ্টা যে কতদূর অগ্রসর হইত তাহা বলা শক্ত।

ইংবেজ কোম্পানী রাজ্য পাইয়া দেশের আইনকানুন প্রণয়ন করিতে লাগিয়া গেলেন। ইহাই হইল বান্জালা গদ্যের প্রথম কার্য্যকর ও ব্যাপক ব্যবহার। তাহার পর বান্জালীকে ইংরেজী এবং ইংরেজকে বান্জালা শিখাইবার আবশ্যকতা অনুভূত হইলে ব্যাকরণ ও অভিধান গ্রন্থ রচিত হইতে লাগিল। হাতে লেখায় এই কার্য্য নিতান্ত দুষ্কর, সুতবাং অনতিবিলম্বে মুদ্রায়ন্ত্র ও বান্জালা টাইপের প্রয়োজন অনুভূত হইল। বান্জালা টাইপের ছেনী কাটেন সর্বপ্রথম একজন ইংরেজ। ইনি ছিলেন ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর একজন কর্মচারী, নাম চার্লস্ উইল্কিন্স্; পরে ইনি স্মার চার্লস্ উইল্কিন্স্ নামে বিখ্যাত হন। উইল্কিন্স্ সাহেব শ্রীরামপুরের পঞ্চানন কর্মকাবকে ছেনী কাটা শিখাইয়া দেন। এইরূপে বান্জালা টাইপের প্রবর্তন হইল। বান্জালা টাইপের প্রথম ব্যবহার হয় হ্যালহেড সাহেব রচিত বান্জালা ব্যাকরণে। বইটি ইংরেজীতে লেখা, প্রকাশিত হয় ১৭৭৮ খ্রীষ্টাব্দে ভগলী হইতে। মুদ্রায়ন্ত্রের জন্ম বান্জালা অক্ষরের সৃষ্টি হইতেই বান্জালা সাহিত্যে নূতন যুগের আবির্ভাব হইল এ কথা বলা যাইতে পারে। মুদ্রায়ন্ত্রের সাহায্যে পুস্তক প্রকাশ অনায়াস-সাধ্য ব্যাপার। পূর্বে হাতে-লেখা পুঁথির চলন ছিল : একখানি পুঁথি লিখিতে যথেষ্ট সময় এবং প্রচুর অর্থ ব্যা

হইত। মুদ্রিত পুস্তক সহজলভ্য, স্মৃতির মুদ্রায়স্ত্রের দৌলতে সাহিত্যভাণ্ডার ধনী দবিদ্র সকলেবই নিকট উন্মুক্ত হইল। নির্দিষ্ট গণ্ডীর মধ্যে আবদ্ধ না থাকিয়া সাহিত্য তখন হইতে সকলেবই সকল সময়ের জন্য উপভোগের সামগ্রী হইয়া দাঁড়াইল।

বাংলা গল্পের প্রতিষ্ঠা হইবার পৰে ঊনবিংশ শতাব্দীর প্রথম ভাগে পূর্বের মত বৈষ্ণব পদ, বামাঙ্গ, মহাভারত, মনসামঙ্গল ইত্যাদি ধর্মকাব্য যথেষ্ট বচিত হইয়াছিল। শ্রীমদ্ভাগবত ও অশ্বমেধ পুৰাণের অনুবাদও অনেকগুলি হইয়াছিল। বিক্রমাদিত্যের উপাখ্যান এবং বিজ্ঞানসুন্দরবেব অনুকরণে প্রণয়কাহিনী-কাব্য শহর অঞ্চলে জনপ্রিয় ছিল। এই সকল কাব্যের সাহিত্যিক মূল্য নিতাস্তই অকিঞ্চিৎকর। উক্ত এবং পূর্ব বঙ্গে ঐতিহাসিক এবং অনৈতিহাসিক কাহিনী অবলম্বনে বচিত পল্লীগাথা বর্তমান বিংশ শতাব্দীতেও প্রচলিত রহিয়াছে। অনেকগুলি চমৎকার গাথার সংগ্রহ ময়মনসিংহ-গীতিকা এবং পূর্ববঙ্গগীতিকা নামে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।

ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ

উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমার্ধ—
কোম্পানী আমল

২৬

বাঙ্গালা গদ্যের আদি যুগ—ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের
পাঠ্যপুস্তক

অষ্টাদশ শতাব্দীর একেবাবে শেষভাগে ছুই একখানি আটনেব বই বাঙ্গালায় লেখা হইয়াছিল। এইসব বই সাহিত্যের কোঠায় পড়ে না, যথার্থ বাঙ্গালা গদ্যের কোঠাতেও পড়ে কিনা সন্দেহ। বাঙ্গালা গদ্য সাহিত্যের প্রকৃত আরম্ভ হইল উনবিংশ শতাব্দীর একেবাবে প্রথম হইতে। বিলাত হইতে সঙ্গ-আগত ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর কর্মচারী, যাহাদের সচরাচর সিভিলিয়ান বলা হইত, তাহাদের শিক্ষার জ্ঞান কলিকাতায় ১৮০০ খ্রীষ্টাব্দে ফোর্ট উইলিয়াম কলেজ প্রতিষ্ঠিত হইল। কলেজে প্রাচ্যভাষা বিভাগের অধ্যক্ষ নিযুক্ত হইলেন জীরামপুত্রের মিশনারী পাদ্রী উইলিয়াম কেবী। পরবর্তী সালের মে মাসে এই বিভাগে কেরীর সহকাৰী পণ্ডিত ও মুন্সী কয়েকজন নিযুক্ত হন। তখন হইতেই কলেজের প্রকৃত কার্য্যারম্ভ হইল।

সিভিলিয়ানদিগকে বাঙ্গালা পড়াইতে গিয়া দেখা গেল যে, বাঙ্গালা গ্রন্থ সবই কাব্য। সাহেবদের প্রয়োজন কথ্য বাঙ্গালা

শেখা, সুতরাং গল্প পুস্তকই পাঠ্য হিসাবে উপযুক্ত হইবে। এই ভাবিয়া কেবী তাঁহার সহকারী পণ্ডিত ও মুন্শীদিগকে দিয়া বাঙ্গালা গল্প পাঠ্যপুস্তক লেখাইতে লাগিলেন এবং নিজেও একটি ব্যাকরণ, একখানি অভিধান, একখানি কথোপকথনের বই, এবং আর ছুট একখানি গল্পগ্রন্থ রচনা করিলেন। যে বৎসর কলেজের কার্যাবস্তু হটল সেই বৎসরেই কেরীর ব্যাকরণ ও কথোপকথন, বামবাম বন্সুর প্রতাপাদিত্যচরিত্র এবং গোলক শর্ম্মার তিতোপদেশ প্রকাশিত হয়। রামবাম বন্সুর প্রতাপাদিত্যচরিত্রই বঙ্গাঙ্গবে মুদ্রিত প্রথম বাঙ্গালা গদ্য গ্রন্থ। ইহার পূর্বে যে সকল গল্প গ্রন্থ বাহির হইয়াছিল সে সবই ইংবেজী অর্থাৎ বোমান হবক্ষে মুদ্রিত। রামরাম বন্সুর অপব গল্প গ্রন্থ লিপিমাল্য বাহির হয় পর বৎসরে, ১৮০২ খ্রীষ্টাব্দে। ১৮০৫ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয় চণ্ডীচরণ মুন্শীর তোতা ইতিহাস, রাজীবলোচন মুখোপাধ্যায়েব মহাবাজ কৃষ্ণচন্দ্র বায়স্ত চরিত্রম, এবং মৃত্যুঞ্জয় বিদ্যালঙ্কারেব বত্রিশ সিংহাসন।

ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের শিক্ষকদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ গল্প লেখক ছিলেন মৃত্যুঞ্জয় বিদ্যালঙ্কার। ইনি সংস্কৃতে বিশেষ ব্যুৎপন্ন ছিলেন। কেবী সাহেবেব ইনি দক্ষিণ হস্ত ছিলেন বলিলে অত্যাুক্তি হয় না। মৃত্যুঞ্জয়ের নিবাস ছিল মেদিনীপুর জেলায়, তখন এই অঞ্চল উড়িষ্যার অন্তর্গত ছিল। মৃত্যুঞ্জয় কয়েকখানি বাঙ্গালা গল্প গ্রন্থ রচনা কবিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে শ্রেষ্ঠ হইতেছে রাজাবলী এবং প্রবোধচন্দ্রিকা। দেশী লোকের লেখা প্রথম ভারতবর্ষেব ইতিহাস হইতেছে রাজাবলী। ১৮১৯ খ্রীষ্টাব্দে মৃত্যুঞ্জয়ের মৃত্যু হয়। তাঁহার

মৃত্যুর অনেক কাল পরে, ১৮৩৩ খ্রীষ্টাব্দে, প্রবোধচন্দ্রিক প্রকাশিত হয়।

কেরী, মার্শম্যান এবং অগ্ন্যাত্ত ইউরোপীয় শিক্ষাপ্রচারকগণ নিজেরা লিখিয়া অথবা পণ্ডিতদিগকে দিয়া লেখাইয়া লইয়া প্রচুর পরিমাণে বাঙ্গালা পাঠ্যপুস্তক প্রকাশ করিতে লাগিলেন। এই কার্যে বাঙ্গালী সম্ভ্রান্ত লোকেরাও অনতিবিলম্বে যোগ দিলেন; ইহাদের মধ্যে সর্বপ্রধান হইতেছেন রাজা রামমোহন রায় এবং মহারাজা রাধাকান্ত দেব। রামমোহন রায় পণ্ডিতদিগের সহিত বিতর্কে যোগ দিয়া বেদান্তদর্শন এবং শাস্ত্রবিচার বিষয়ে কয়েকখানি উৎকৃষ্ট গদ্য গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন, এবং একটি বাঙ্গালা ব্যাকরণও লিখিয়াছিলেন। রাধাকান্ত দেব নান্যভাবে বাঙ্গালা দেশে শিক্ষা, বাঙ্গালা ভাষার বিস্তার ও বাঙ্গালা সাহিত্যের পোষকতা কল্পে অসামান্য সহায়তা করিয়াছিলেন। বিরাট সংস্কৃত অভিধান শব্দকল্পদ্রুম মহারাজার অক্ষয়কীর্তি রূপে বহুকাল বিরাজ করিবে।

এই যুগের গদ্য গ্রন্থ প্রায় সবই হয় সংস্কৃতের নয় ফারসীর নতুবা ইংরেজীর অনুবাদ। জুই একটিমাত্র মৌলিক রচনা। এই সময়ের বাঙ্গালা গদ্যের রূপ ছিল নিতান্তই অমার্জিত। একমাত্র মৃত্যুঞ্জয়ের রচনা ছাড়া আর কোন লেখার কিছু সাহিত্যিক মূল্য নাই। এগুলির মূল্য এইটুকুমাত্র যে, ইহার মধ্যে বাঙ্গালা গদ্যের শৈশবের অপরিণত রূপ পরিলক্ষিত হইতেছে।

সাময়িক-পত্রের আবির্ভাব ও প্রভাব : ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত

ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের পাঠ্যপুস্তক-রচয়িতাদের দ্বারা বাঙ্গালা গল্পের একপ্রকার অনুশীলন হইতে লাগিল বটে, কিন্তু ভাষাব উন্নতি বা পরিপুষ্টির কোনই লক্ষণ দেখা গেল না। নিদিষ্ট কয়েকটি ব্যক্তির জন্য লিখিত পাঠ্যপুস্তক বলিয়া জনসমাজে এই গল্প গ্রন্থগুলির প্রসার হওয়া ত দূরের কথা, সংবাদ পর্য্যন্ত পৌঁছিল না। যাহারা সংবাদ পাইল তাহারাও “খ্রীষ্টানী ব্যাপার” বলিয়া নাক সিঁটকাইয়া জাতি বাঁচাইয়া দূরে দূরে থাকিতে লাগিল। কিন্তু এই খ্রীষ্টান পাঞ্জীদের দ্বারাই শীঘ্র এমন এক নূতন বস্তুর প্রবর্তন হইল যাহাতে পঠনক্ষম জনসাধারণ নূতন গল্প সাহিত্যের প্রতি আর উদাসীন বা বীতরাগ হইয়া থাকিতে পারিল না।

কেরীর উদ্যোগে শ্রীরামপুরের মিশনারী-সম্প্রদায় ১৮১৮ খ্রীষ্টাব্দে বাঙ্গালা সাময়িক-পত্রের প্রবর্তন করিলেন। প্রথমে, এপ্রিল মাসে দিগ্‌দর্শন নামে মাসিক পত্র বাহির হইল, কিন্তু এটি অল্পদিনের মধ্যেই বন্ধ হইয়া যায়। তাহার পর, ২৩শে মে তারিখে প্রথম বাঙ্গালা সংবাদপত্র সমাচারদর্পণ প্রকাশিত হইল। পত্রিকাখানি সাপ্তাহিক। সম্পাদক ছিলেন জন আশুমান্য নামে মাত্র, দেশীয় পণ্ডিতেরাই সমাচারদর্পণের প্রকৃত সম্পাদকতা করিতেন। সমাচারদর্পণ প্রকাশের সঙ্গে সঙ্গে (বা অল্প কিছু দিন পূর্ব্বে বা পরে) গঙ্গাকিশোর

ভট্টাচার্য্য বাঙ্গালা গেজেট অর্থাৎ বেঙ্গল গেজেট বাহির করেন। ইহাই বাঙ্গালীর উদ্যোগে প্রকাশিত প্রথম সাময়িক-পত্র।

সাময়িক-পত্রের মধ্য দিয়াই শিক্ষিত বাঙ্গালী সর্বপ্রথম গদ্য সাহিত্যের রস গ্রহণ করিতে শিখে। পূর্ববর্তী সাহিত্য সবই পদ্যে রচিত এবং তাহার বিষয়বস্তুও ধর্ম্মসম্বন্ধীয় অথবা সর্বজনবিদিত কাহিনীবিশয়ক। নূতন তথ্য বা নূতন গল্পের রস সে সাহিত্যে পাঠবার কোনই উপায় ছিল না। এখন সেই নূতন খবরের বা গল্পের রস বাঙ্গালী পাঠক পাইল সাময়িক-পত্রের সাহায্যে। ফলে নূতন নূতন বাঙ্গালা সাময়িক-পত্রের সাহায্যে। ফলে নূতন নূতন বাঙ্গালা সাময়িক-পত্রের চাহিদা অসম্ভব রকম বাড়িয়া গেল, এবং বাঙ্গালা গদ্য সাহিত্যের ভবিষ্যৎ উন্নতির দ্বার মুক্ত হইল। আধুনিক বাঙ্গালা সাহিত্যের যথার্থ উদ্ভব ফোর্ট উইলিয়ম কলেজের অধ্যাপক-দিগের রচিত পাঠ্যপুস্তকে নহে, ইহার ইতিহাস খুঁজিতে হইবে প্রাচীনতম বাঙ্গালা সাময়িক-পত্রিকাগুলির মধ্যে।

সমাচারদর্পণের জনপ্রিয়তার ফলে অচিরে যে সকল সাময়িক ও সংবাদ-পত্রের সৃষ্টি হইল সেগুলির মধ্যে মুখ্যতম হইতেছে সমাচারচন্দ্রিকা। এই সাপ্তাহিক পত্রিকাখানির প্রথম সংখ্যা বাহির হয় ১৮২২ খ্রিষ্টাব্দের ৫ই মার্চ তারিখে।

সমাচারচন্দ্রিকার সম্পাদক ভবানীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় (১৭৮৭-১৮৪৮) ছিলেন সেকালে বাঙ্গালা সাহিত্য ক্ষেত্রের একজন দিকৃপাল। একদিক দিয়া ভবানীচরণ যেমন তাঁহার হস্তরসপূর্ণ ব্যঙ্গরচনার দ্বারা হিন্দু সমাজের ধনিব্যক্তিদিগের কদাচারকে দিকৃষ্ট করিতে কুষ্ঠিত হন নাই, অপর দিকে তেমনি বিবিধ শাস্ত্রগ্রন্থ মুদ্রিত করিয়া এবং রামমোহন রায়

প্রমুখ প্রতিপক্ষের সহিত শাস্ত্রবিচারে নির্ভীকতা ও যুক্তিযুক্ততা দেখাইয়া হিন্দুধর্ম ও হিন্দুসমাজের বক্ষাকল্পে অশেষ পরিশ্রম করিতে বিন্দুমাত্র কাতবতা প্রদর্শন করেন নাই।

ভবানীচরণ পদ্য ও গদ্য উভয়বক্ষেই পুস্তক বচনা কবিয়াছিলেন, সুতবাং তাঁহার মধ্যে বাঙ্গালা সাহিত্যের দুই ধাঁচ, প্রাচীন পদ্যবন্ধ এবং আধুনিক গদ্যবন্ধ, উভয়েরই সম্মিশ্রণ ঘটিয়াছিল। বাঙ্গালা সাহিত্যের উৎকৃষ্ট ব্যঙ্গ-রচনাগুলির মধ্যে ভবানীচরণের নববাবুবিলাস উল্লেখযোগ্য স্থান অধিকার কবিয়াছে। 'টেকচাঁদ ঠাকুর', দীনবন্ধু মিত্র প্রভৃতি পূর্ববর্তী কালের তাস্তবসিক লেখকগণ সকলেই প্রায় কোন না কোন ভাবে ভবানীচরণের নিকট ঋণী।

ভবানীচরণ যেমন দুই পথে চলিয়াছিলেন, ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত আরও অগ্রসর হইয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের দুই যুগের মধ্যে সেতুসংযোগ করিলেন। সে যুগের ইনি ছিলেন সর্বশ্রেষ্ঠ সংবাদপত্রসেবী সাহিত্যিক। ১১১৮ সালে অর্থাৎ ১৮১১ খ্রীষ্টাব্দে ফাল্গুন মাসে নৈহাটিব নিকটে কাচড়াপাড়া গ্রামে ঈশ্বরচন্দ্রের জন্ম হয়। বিদ্যালয়ের শিক্ষা পাওয়া বেশী দিন ইতার অদৃষ্টে ঘটে নাই; নিজেব চেষ্টাতেই ইনি বাঙ্গালা ও সংস্কৃত উত্তমরূপে এবং ইংরেজীও কিছু কিছু শিখিয়াছিলেন। ১২৩৭ সালের মাঘ মাস হইতে ঈশ্বরচন্দ্র সংবাদপ্রভাকর নামক সাপ্তাহিক পত্রিকা প্রকাশ করেন। পরে ইনি আরও অনেক সাময়িক-পত্রিকা সম্পাদন কবিয়াছিলেন বটে কিন্তু সেগুলির কোনটিই সংবাদপ্রভাকরের মত দীর্ঘজীবী হয় নাই। ১২৬৫ সালে অর্থাৎ ১৮৫৯ খ্রীষ্টাব্দে মাঘ মাসে ইতার পরলোকপ্রাপ্তি হয়।

সংবাদপ্রভাকরে ঈশ্বরচন্দ্রের নিজের লেখা ছাড়া তাঁহার ছাত্রস্থানীয় অল্পবয়স্ক লেখকদিগের রচনা প্রকাশিত হইত। পববর্ষ কালের অনেক বিশিষ্ট কবি ও গ্রন্থকার সংবাদ-প্রভাকরের পৃষ্ঠাতেই সাহিত্যসৃষ্টি কার্যে শিক্ষানবীশী করিয়াছিলেন। ঈশ্বরচন্দ্র যে ইহাদের সাহিত্যগুরু ছিলেন, একথা ইঁহা বা সর্গোববে স্বীকার করিয়া গিয়াছেন।

ঈশ্বরচন্দ্রের কবিকশক্তি শৈশবেই অভিব্যক্ত হইয়াছিল। বালক বয়সে তিনি কবিদলেব জন্ত গান রচনা করিয়া দিতেন। পবে তাঁহার কবিতা সবই সংবাদপ্রভাকর ও অন্যান্য সাময়িক-পত্রিকায় প্রকাশিত হইত। অনেক কবিতা সংস্কৃতের অনুবাদ, দুই চাৰিটি ইংবেজী হইতে অনুদিত। ঈশ্বরচন্দ্রের কবিতাগুলি ছয় শ্রেণীতে পড়ে, যথা—(১) ধর্ম ও নীতিশিক্ষা বিষয়ক, (২) সমাজ বিষয়ক (হাস্যরস ও ব্যঙ্গপ্রধান), (৩) সমসাময়িক ঘটনা বিষয়ক, (৪) প্রেমমূলক, (৫) ঋতু ও অন্যান্য বর্ণনা-বিষয়ক, এবং (৬) গীতি কবিতা অর্থাৎ গান।

ঈশ্বরচন্দ্রের বচনাভঙ্গী ছিল, সংবাদপত্রসেবীর যেমন হইয়া থাকে, ব্যঙ্গ ও হাস্যরসপ্রধান, লঘু, এবং সময়ে সময়ে একটু অশ্লীলতা-ঘেঁষা। সেট জনা স্থায়ী সাহিত্য হিসাবে তাঁহার কবিতার মূল্য নিতান্তই কম। কবিতার ছন্দে বিশেষ করিয়া ছড়াজাতীয় কবিতার ছন্দে ঈশ্বরচন্দ্র বিশেষ নৈপুণ্য দেখাইয়াছিলেন। অনুপ্রাসের অযথা প্রয়োগ তখনকার দিনের কবিতার অপরিহার্য অঙ্গ ছিল, ঈশ্বরচন্দ্রের লেখায়ও ইহার ব্যতিক্রম নাই। কবিতা বিচার করিলে দেখি ঈশ্বরচন্দ্র প্রাচীন পন্থারই করি; ভারতচন্দ্র তাঁহার কাছে আদর্শ। কিন্তু ভাবের দিক দেখিলে বুঝি ঈশ্বরচন্দ্র আধুনিক পন্থার

প্রথম কবি; সুতবাং এ বিষয়ে তিনিই পথিকৃৎ। বাঙ্গালা সাহিত্যের ভাণ্ডারে ঈশ্ববচন্দ্রেব শ্রেষ্ঠ দান হইতেছে স্ব-সমাজ ও স্ব-দেশ প্রীতিব প্রবর্তন। বাঙ্গালা দেশেব এবং বাঙ্গালী সমাজের যাহা কিছু প্রাচীন ও প্রচলিত প্রথা, তাহা যতই নিকৃষ্ট বা কদর্যা হউক না কেন, সবই তাঁহাব নিকট সুন্দর ঠেকিত; গল্প-পত্নের মধ্য দিয়া ঈশ্ববচন্দ্র তাহাই প্রচার করিয়া গিয়াছেন। তাঁহাব সামাজিক বাঙ্গলকবিতাব মূলেও এই প্রীতি, এবং প্রাচীন কবিদিগেব কাব্য ও জীবনী সংগ্রহেও সেই প্রীতি। প্রধানতঃ এই স্বদেশ ও সমাজ প্রীতিব জন্যই তাঁহাব ছাত্র শিষ্যগণ তাঁহাকে সাহিত্য-গুরু বলিয়া স্বীকার কবিতে কুণ্ঠা বোধ করেন নাই, যদিচ তাঁহাব বচনাব বিকৃতকচি অনেক সময়ই এইসব কলেজে-পড়া উদীয়মান কবিদিগেব নিকট আদর্শীয় ছিল না।

ঈশ্ববচন্দ্রেব জীবিতকালে তাঁহাব একখানি মাত্র বচনা-সংগ্রহ প্রকাশিত হয়। বহুটিব নাম প্রবোধপ্রভাকব। হিতপ্রভাকব এবং বোধেন্দুবিকাশ তাঁহার মৃত্যুব পব প্রকাশিত হয়। শেষেব বইটি প্রবোধচন্দ্রোদয় নামক সংস্কৃত নাটকেব প্রথম তিন অঙ্কেব কাব্যানুবাদ।

সপ্তম পরিচ্ছেদ

উনবিংশ শতাব্দীর শেষার্ধ্বে

২৮

ঈশ্বরচন্দ্র বিজ্ঞানাগর ও বাঙ্গালা গদ্যের প্রতিষ্ঠা

ফোর্ট উইলিয়াম কলেজের অধ্যাপকেরা পাঠ্যপুস্তকের মধ্য দিয়া যে গদ্য বীতির প্রবর্তন করিলেন তাহা মোটামুটি একই ভাবে পরবর্তী কালের ইংরেজ ও বাঙ্গালী পাঠ্যপুস্তক বচয়িতাদেব লেখার ভিতর দিয়া উনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগ অবধি চলিয়া আসিয়াছিল। একে এই আদিম গদ্যে শ্রী বা ছন্দ কিছুই ছিল না, তাহার উপর চলিত ভাষার শব্দের সঙ্গে অভিধানিক সংস্কৃত শব্দের উৎকট প্রয়োগের আতিশয্য, সম্বোধনারি সংস্কৃত কিংবা ইংরেজী ছাঁচে বাক্যগঠন প্রণালী। প্রথম যুগে পণ্ডিতেরা সংস্কৃতের অনুকরণে বাক্যবিন্যাস করিতেন; তাহা যদিও বা বোঝা যাইত, কিন্তু অধিকাংশ—বিশেষ করিয়া পরবর্তীকালে এই শ্রেণীর সব লেখক—ইংরেজী হইতে অনুবাদ করিতেন বলিয়া তাঁহারা বাক্য রচনায় ভবছ ইংরেজী রীতি অনুসরণ করিতে ইতস্ততঃ করিতেন না, এই হেতু এই গদ্যভঙ্গী ইংরেজী অনভিজ্ঞ পাঠকের নিকট একান্ত অবোধ্য ঠেকিত। বাইবেলের বাঙ্গালা অনুবাদের মধ্যে এই রীতি এখনও বজায় আছে, কিন্তু বাঙ্গালা সাহিত্যের আসর হইতে এই রীতি বহুকাল হইল অস্তহিত হইয়াছে। এই

শ্রেণীর শ্রেষ্ঠ লেখক মনীষী পাদ্রী কৃষ্ণমোহন বন্দ্যোপাধ্যায় (১৮১৩-১৮৮৫)। বিদ্যাকল্পদ্রুম নামক গ্রন্থমালায় ইনি ইংরেজী গ্রন্থের অনুবাদ প্রকাশিত করেন। ১৮৪৬ খ্রীষ্টাব্দে বিদ্যাকল্প-
 দ্রুমের প্রথম খণ্ড বাহিব হয়। সাময়িক পত্রিকার মধ্য দিয়া
 সাধারণ লোকের বোধগম্য গল্প প্রবর্তিত হইল বটে, তবে এই
 বীতিব অনেক দোষ ছিল। বাঙ্গালা চলিত শব্দের ও সংস্কৃত
 শব্দের প্রয়োগের কোন সুনির্দিষ্ট বীতি ছিল না; বাক্যের
 বহর অযথা দীর্ঘ হইত, তাহাতে বাক্য সমাপ্তব সময়ে
 বাক্যের আবস্তের কথা মনে থাকিত না; বাক্যে ছন্দ বা তাল
 না থাকায় প্রতিমাধুর্য্য একেবাবেই ছিল না; বাক্যরচনায়
 সংস্কৃত ব্যাকরণের বীতিই প্রধানভাবে অবলম্বন করা হইত;
 এবং ছন্দচিহ্নের যথোপযুক্ত প্রয়োগ না থাকায় অর্থগ্রহণে
 ব্যাঘাত ঘটিত। এই সকল দোষ ঊনবিংশ শতাব্দীর প্রথমার্ধে
 বাঙ্গালা সাধুভাষার গড়কে নিতান্ত পঙ্গু করিয়া রাখিয়াছিল।
 এই অকেজো, বিস্তীর্ণ গড়ভঙ্গীর সাহায্যে উচ্চশ্রেণীর সাহিত্য
 সৃষ্টি একেবাবেই অসম্ভব ছিল।

বাঙ্গালা গড়ের এই সকল দোষ দূরীকৃত করিয়া যিনি
 ইহার পঙ্গু হইয়া মোচন করিয়া ইহাকে উচ্চশ্রেণীর সাহিত্যের
 বাহন করিয়া তুলিয়া অসাধ্য সাধন করিয়াছিলেন তিনি
 আধুনিক বাঙ্গালার শ্রেষ্ঠ সন্তান পুরুষসিংহ প্রাচ্যঃস্বরগীয়
 ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর। পূর্বের জুগলী জেলার অধুনা
 মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত বীরসিংহ গ্রামে এক দরিদ্র
 তেজস্বী ব্রাহ্মণ পণ্ডিতের ঘরে ১২২৭ সালে অর্থাৎ ১৮২০
 খ্রীষ্টাব্দে ১২ই আশ্বিন তারিখে ঈশ্বরচন্দ্র জন্মগ্রহণ করেন,
 এবং পরিণত বয়সে ১২৯৮ সালে অর্থাৎ ১৮৯১ খ্রীষ্টাব্দে

১৩ই আশ্বিন তারিখে ইহার তিরোধান ঘটে। ইহার জীবন-কাহিনী সুপরিচিত। । ^

সংস্কৃত কলেজের শিক্ষা সমাপ্ত কবিয়া ফোর্ট উইলিয়াম কলেজে চাকুরীতে ঢুকিয়া বিদ্যাসাগর বাঙ্গালা গদ্যের পাঠ্য-পুস্তক রচনায় প্রবৃত্ত হন। ইহাব প্রথম গ্রন্থ বাসুদেবচরিত কলেজ কর্তৃপক্ষের অীষ্টানী মনোভাবের অনুকূল না হওয়ায় প্রকাশিত হয় নাই। ১৮৪৭ খ্রীষ্টাব্দে তাহার দ্বিতীয় গ্রন্থ বেতালপঞ্চবিংশতিব প্রকাশের সঙ্গে সঙ্গে বাঙ্গালা গদ্যে নূতন যুগ প্রবর্তন হইল, আমরা যে গদ্য এখন লিখিয়া থাকি সেই গদ্য ভূমিষ্ঠ হইল। তাহাব পবে বাঙ্গালাব ইতিহাস (১৮৪৮), জীবনচরিত (১৮৪৯), শিশুশিক্ষা চতুর্থভাগ বা বোধোদয় (১৮৫১), শকুন্তলা (১৮৫৪), কথামালা (১৮৫৬), চরিতাবলী (১৮৫৬), মহাভারতের উপক্রমণিকা পর্ব (১৮৬০), সীতার বনবাস (১৮৬০), আখ্যানমঞ্জরী (১৮৬৩, ১৮৬৮) এবং ভ্রান্তি-বিলাস (১৮৬৯) এই কয়খানি পাঠ্যপুস্তক রচিত হয়। এই বইগুলি সবই হয় হিন্দী, নয় সংস্কৃত, নতুবা ইংরেজী গ্রন্থ অবলম্বনে লিখিত বটে কিন্তু সেগুলি বিষয়বস্তু ছাড়া সর্ব্বাংশেই নূতন সৃষ্টি, অনুবাদ বলিলে যাহা বুঝি তাহা নহে। অনেকের ধারণা বিদ্যাসাগর পাঠ্যপুস্তক-রচয়িতা মাত্র। এ ধারণা নিতান্তই ভুল; ইহার স্বাধীন রচনা—সংস্কৃতভাষা ও সংস্কৃত সাহিত্য শাস্ত্রবিষয়ক প্রস্তাব, বিধবাবিবাহ প্রচলিত হওয়া উচিত কি না এতদ্বিষয়ক প্রস্তাব (দুইখণ্ড), বহুবিবাহ রহিত হওয়া উচিত কিনা এতদ্বিষয়ক বিচার (দুইখণ্ড), বিদ্যাসাগর রচিত (স্বরচিত), প্রভাবতীসম্ভাষণ—সাহিত্য হিসাবে পরম উপাদেয়। শুধু যে সাধুভাষায় গুরুগম্ভীর ছাঁদে লিখিতেই ইনি

দক্ষতা দেখাইয়াছিলেন, তাহাও নহে। বেনামীতে বিদ্যাসাগর মহাশয় কয়েকখানি বিতণ্ডামূলক বই লিখিয়াছিলেন, যেমন ব্রজবিলাস, রত্নপরীক্ষা ইত্যাদি। কথা ভাষায় লেখা এই বই-গুলির রচনাভঙ্গী ও রসিকতার তুলনা মিলে না। এই সব বই ছাড়া তিনি উপক্রমণিকা ও ব্যাকরণকৌমুদী এই দুইখানি সংস্কৃত ব্যাকরণের বই বাঙ্গালায় লিখিয়া বাঙ্গালী ছাত্রদিগের সহজে সংস্কৃত শিক্ষার পথ সুগম করিয়া দিয়াছেন। বহু সংস্কৃত গ্রন্থের বিশুদ্ধ সংস্করণও তিনি প্রকাশ করিয়াছিলেন।

বাঙ্গালা সাধুভাষার গদ্যের জনক বিদ্যাসাগর—এ কথাটা একেবারেই অতু্যক্তি নহে। পূর্ববর্তী বাঙ্গালা গদ্যের বিকৃত কঙ্কালে মেদ মাংস রক্ত সংযোজন এবং স্ত্রাণ সঞ্চারণ করিয়া বিদ্যাসাগর মহাশয়ই ইহাকে সাধারণ ব্যবহার্য্য জীবন্ত ভাষা রূপে দাঁড় করাইয়া দেন। গদ্যের যেমন ছন্দ ও যতি আছে, গদ্যেরও তেমনি একটা তাল আছে। বিদ্যাসাগর মহাশয়ই সর্বপ্রথম বাঙ্গালা গদ্যের তাল লক্ষ্য করেন এবং তদনুযায়ী বাক্য গঠন করিয়া স্থূললিত গদ্য ভঙ্গীর প্রবর্তন করেন। পূর্বেকার গদ্যে হয় শুদ্ধ দাঁতভাঙ্গা সংস্কৃত অথবা চলিত ইতর শব্দের অযথা বাহুল্য থাকিত। বিদ্যাসাগর মহাশয় এই দুই-^১ জাতীয় শব্দের প্রয়োগের মধ্যে একটা সামঞ্জস্য স্থাপন করিলেন, তাহাতে ভাষার ওজস্বিতা নষ্ট হইল না অথচ রচনার লালিত্য বজায় রহিল। মোটামুটি বলিতে গেলে বাঙ্গালা গদ্যের প্রবর্তনে ইহাই বিদ্যাসাগরের কৃতিত্ব, ইহারই অভাবে ১৮৫৭ সালের পূর্বেকার বাঙ্গালা গদ্য সাহিত্যের বা সাধারণ কাজ কন্মের ভাষা হইবার যোগ্যতা লাভ করিতে পারে নাই।

✓ বাজালা গদ্যেব প্রবর্তনে বিদ্যাসাগর মহাশয়ের প্রধান সহযোগী ছিলেন অক্ষয়কুমার দত্ত (১৮২০-১৮৮৬)। নবদ্বীপের নিকটে বর্দ্ধমান জেলায় চুপী নামক গ্রামে অক্ষয়কুমার জন্মগ্রহণ করেন। ইঁহার পিতার নাম পীতাম্বর এবং মাতার নাম দয়াময়ী। বাল্যকালেই অক্ষয়কুমার কলিকাতায় আসেন এবং ওবিয়েন্টাল সেমিনারীতে কয়েক বৎসর অধ্যয়ন করেন। অবস্থাগতিকে তাঁহাকে স্কুল ছাড়িতে হয়, তবে নিজের চেষ্টায় গৃহে অধ্যয়ন কবিয়া গণিত, ভূগোল, পদার্থবিদ্যা প্রভৃতি নানা বিষয়ে ব্যুৎপত্তি লাভ করেন। ব্রাহ্মসমাজ কর্তৃক ১৮৪৩ খ্রীষ্টাব্দে তত্ত্ববোধিনী পত্রিকা প্রকাশিত হয়। অক্ষয়কুমার ইহার প্রথম সম্পাদক নিযুক্ত হন এবং বাব বৎসব ধরিয়া পত্রিকাটি সম্পাদন করেন। তত্ত্ববোধিনী পত্রিকায় অক্ষয়কুমারের বিবিধ প্রদ্বন্ধ প্রকাশিত হইত। এই সকল প্রবন্ধ একত্র কবিয়া তিনি পবে পাঠ্য পুস্তক প্রণয়ন করেন। ইঁহার প্রথম পুস্তক বাহ্যবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির সম্বন্ধ বিচার প্রথম ভাগ প্রকাশিত হয় ১৭৭৩ শকাদে অর্থাৎ ১৮৫১-৫২ খ্রীষ্টাব্দে। তাহার পবে এই গ্রন্থের দ্বিতীয় ভাগ, চাকপাঠ তিন ভাগ, ধর্মনীতি, ভাবতবর্ষীয় উপাসক সম্প্রদায় দুই ভাগ ইত্যাদি পুস্তক প্রকাশিত হয়।

অক্ষয়কুমারের অধিকাংশ বচনা ইংরেজী হইতে সংকলিত। ভাবতবর্ষীয় উপাসক সম্প্রদায় দ্বিতীয় ভাগে ইঁহার নিজস্ব কথা অনেক আছে। অক্ষয়কুমারের রচনাভঙ্গী বিদ্যাসাগর মহাশয়ের লেখার তুলনায় যথেষ্ট নীবস ও লালিত্যহীন হইলেও বৈজ্ঞানিক বিষয় বর্ণনাব পক্ষে অনুপযোগী নহে। সাহিত্যিক হিসাবে অক্ষয়কুমারের কৃতিত্ব হয়ত খুব বেশী

নহে ; কিন্তু আমাদের দেশে বিজ্ঞান আলোচনার পথপ্রদর্শক হিসাবে তাঁহার স্থান বিশেষ উচ্চে ।

বিদ্যাসাগর মহাশয়ের পন্থা অবলম্বন করিয়া ঊনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগে ষাঁহার বাংলা গদ্যের প্রতিষ্ঠায় বিশেষ সহায়তা করিয়াছিলেন তাঁহাদের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছেন রাজা রাজেন্দ্রলাল মিত্র, তারশঙ্কর তর্করত্ন, রামগতি শ্রায়রত্ন, রাজকৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায়, কালীপ্রসন্ন সিংহ, ভূদেব মুখোপাধ্যায়, এবং কৃষ্ণকমল ভট্টাচার্য্য ।

রাজেন্দ্রলাল মিত্রের (১৮২২-১৮৯১) পিতার নাম জ্ঞানেন্দ্র মিত্র । ইনি অনেকগুলি বৈষ্ণবপদ বচনা করিয়াছিলেন । রাজেন্দ্রলালের প্রপিতামহ বাজা পীতাম্বর মিত্র বাহাদুরও ভক্ত বৈষ্ণব ও কবি ছিলেন । এইকপ সাহিত্যিক বংশে রাজেন্দ্রলালের আবির্ভাব হইয়াছিল । ইংবেঙ্গী স্কুলে কিছুকাল পড়িয়া রাজেন্দ্রলাল ডাক্তারী পড়িতে আরম্ভ করেন । ডাক্তারী পরীক্ষায় ইঁহার উত্তরপত্র হারাইয়া যাওয়ায় ইনি পরীক্ষায় সাফল্য লাভ করিতে পারেন নাই । তাহার পর এসিয়াটিক সোসাইটির অ্যাসিস্ট্যান্ট সেক্রেটারী ও লাইব্রেরিয়ানেব পদে নিযুক্ত হন । এইখানে থাকিয়া তিনি বহু ভাষায় ব্যুৎপত্তি লাভ করেন এবং প্রত্নতত্ত্ব ও প্রাচীন ইতিহাস বিষয়ে অনেক গ্রন্থ রচনা ও সম্পাদন করিয়া দেশে-বিদেশে অভূতপূর্ব সম্মান লাভ করেন । কিন্তু প্রত্নতত্ত্বের গবেষণায় আকণ্ঠ নিমগ্ন থাকিয়াও রাজেন্দ্রলাল বাংলা সাহিত্যের চর্চায় অবহেলা করেন নাই । কয়েকখানি পাঠ্যপুস্তক ছাড়া ইনি দুইখানি মাসিক পত্র প্রকাশ করেন । এই পত্রিকা দুইটি সেকালে বিশেষ সমাদর লাভ করিয়াছিল ।

১২৫৮ সালের অর্থাৎ ১৮৫১ খ্রীষ্টাব্দের কার্তিক মাসে বিবিধার্থসংগ্রহের প্রথম সংখ্যা প্রকাশিত হয়। এইটিই বোধ হয় প্রথম সচিত্র বাঙ্গালা মাসিক পত্রিকা। বিবিধার্থ-সংগ্রহে রাজেন্দ্রলাল বিজ্ঞান, ইতিহাস, রহস্যকাহিনী ইত্যাদি বিবিধ বিষয়ে সাধারণ লোকের পাঠযোগ্য প্রবন্ধ প্রকাশ করিতেন। কয়েক বৎসর অনিয়মিত ভাবে প্রকাশিত হইবার পর বিবিধার্থসংগ্রহ ১৭৮১ শকাব্দে অর্থাৎ ১৮৫৯ খ্রীষ্টাব্দে উঠিয়া যায়। পর বৎসর হইতে কালীপ্রসন্ন সিংহের সম্পাদকতায় ইহার নব পর্য্যায় প্রকাশিত হয়। ইহাও বেশী দিন টিকে নাই। ইহার দুই তিন বৎসর পরে রাজেন্দ্রলাল রহস্যসন্দর্ভ নামক পত্রিকা বাহির করেন। রহস্যসন্দর্ভের ছয় খণ্ড রাজেন্দ্রলাল সম্পাদন করিয়াছিলেন।

তারারশঙ্কর তর্করত্নের কাদম্বরী সেযুগের একটি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ। ইহা বাণভট্টের সংস্কৃত গদ্য কাব্য কাদম্বরী অবলম্বনে রচিত। তারারশঙ্করের অপর পুস্তক রাসেলাসের মূল হইতেছে জনসন সাহেবের রচিত ইংরেজী উপন্যাসখানি।

তারারশঙ্কর তর্করত্নের মত রামগতি জ্ঞায়রত্নও সংস্কৃত কলেজের ছাত্র। ইনি অনেকগুলি পাঠ্যপুস্তক এবং রোমাবতী নামক আখ্যায়িকা রচনা করেন। ইহার রচিত বাঙ্গালা ভাষা ও বাঙ্গালা সাহিত্য বিষয়ক প্রস্তাব নামক বাঙ্গালা সাহিত্যের ইতিহাস ১৮৭৩ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয়।

সংস্কৃত কলেজের অপর এক সুবিখ্যাত ছাত্র দ্বারকানাথ বিদ্যাভূষণ সেকালের একজন শক্তিশালী লেখক ছিলেন। ইহার সম্পাদিত সোমপ্রকাশ তখনকার দিনে বিশেষ প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছিল।

কালীপ্রসন্ন সিংহ ছিলেন অদ্বৈতকর্মা মনীষী। ইনি কয়েকটি মাসিক পত্র পরিচালনা করিয়াছিলেন এবং বহু বাঙ্গালা গ্রন্থ রচনা করিয়া বাঙ্গালা সাহিত্যের শ্রীবৃদ্ধি করিয়া গিয়াছেন। মহাভারতের বাঙ্গালা অনুবাদ ইহার কীর্তি। কালীপ্রসন্নের কথা পরে বিস্তৃতভাবে বলা হইতেছে।

ভূদেব মুখোপাধ্যায় (১৮২৫-১৮৯৪) নির্ভাবান্ ত্রাঙ্কণ পণ্ডিত বংশে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। ইংরেজী শিক্ষায় উচ্চশিক্ষিত হইয়াও তিনি স্বদেশে ও স্বসমাজের আচারব্যবহারে আস্থা কখনও হারান নাই। সেই অনাচার ও অবিধ্বাসেব যুগে পরিবর্দ্ধিত হইয়াও যে তিনি অবিচলিত থাকিতে পারিয়াছিলেন ইহা কম দৃঢ়চিত্ততার পরিচায়ক নহে। ১৮৬৮ সাল হইতে এডুকেশন গেজেট ও সাপ্তাহিক বাণীবহ পত্রিকার ভার ভূদেবের হস্তে শাস্ত হয়। তাঁহার বহু প্রবন্ধ ও পুস্তক এই পত্রিকার পৃষ্ঠাতেই প্রথম প্রকাশিত হয়। পুষ্পাঞ্জলি, আচার প্রবন্ধ, পারিবারিক প্রবন্ধ, সামাজিক প্রবন্ধ ইত্যাদি পুস্তকের মধ্য দিয়া দেশহিতৈষণা, স্বদেশনিষ্ঠা, চরিত্রগঠন ইত্যাদির শিক্ষা অতি সুন্দর ও সহজ ভাবে প্রদত্ত হইয়াছে। এই হিসাবে এই গ্রন্থগুলির আদর চিরকালই থাকিবে। স্বপ্নলব্ধ ভারতবর্ষের ইতিহাস ভূদেবের অপূর্ব সৃষ্টি।

ভূদেব এবং মধুসূদনের সহপাঠী রাজনারায়ণ বসু (১৮২৬-১৯০০) সাহিত্যিক বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিলেন না। কিন্তু ইহার ক্ষুদ্র পুস্তক সেকাল আর একাল বাঙ্গালা ভাষার একটা উপাদেয় বই। বইটির ভাষা লঘু এবং মনোজ্ঞ।

কৃষ্ণকমল ভট্টাচার্য্য সেকালের একজন বিখ্যাত বিদ্বান্ মনীষী ছিলেন। সংস্কৃতজ্ঞ ও আইনবেত্তা বলিয়া ইহার খুব

খ্যাতি ছিল। বিদেশী ভাষা হইতে মনোজ্ঞ কাহিনী অবলম্বন করিয়া ইনি দুই একটি বই লিখিয়াছিলেন। ইহার লিখিত এই কাহিনীগুলি সাধারণ পাঠকের চিত্তাকর্ষক হইয়াছিল, এবং বঙ্কিমচন্দ্রের প্রবর্তিত বাঙ্গালা উপন্যাসের পথ পবিষ্কার করিয়াছিল। কৃষ্ণকমলেব ছুরাকাঙ্ক্ষের বৃথা ভ্রমণ সিপাহী-যুদ্ধের সময়ে ১৮৫৭ কিংবা ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয়। ইনি বিচারক নামে পত্রিকা প্রকাশ করিয়াছিলেন। বিভিন্ন পত্রিকায় ইহার মৌলিক রচনা ও অনুবাদ প্রকাশিত হইত। ফরাসী হইতে অনূদিত পল-বর্জিনিয়া কাহিনী অবোধবন্ধু পত্রিকায় প্রকাশিত হইয়াছিল। বাংলাকালে এই কাহিনী ববীন্দ্রনাথকে মুগ্ধ করিয়াছিল।

২৯

বাঙ্গালা কাব্যের অভ্যুদয়

উনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগ অবধি বাঙ্গালা সাহিত্যের দুই ধারা সমানে চলিয়া আসিতেছিল। এই দুই ধারা হইতেছে বৈষ্ণব পদাবলী ও পৌরাণিক কাব্য, এবং ভারতচন্দ্রের অন্নদামঙ্গলের রীতির লৌকিক কাহিনী কাব্য। ইহার উপর বৈঠকী সঙ্গীত ও তর্জী এবং কবি গান এই দুই তিন রকমের রচনার সমাদর যথেষ্টই ছিল। বৈষ্ণব পদাবলী ও পৌরাণিক কাব্যপদ্ধতির কবিদিগেব মধ্যে একমাত্র উল্লেখযোগ্য ব্যক্তি হইতেছেন রঘুনন্দন গোস্বামী (জন্ম ১১৯৩ সাল)। ইহার রচিত তিনখানি কাব্য প্রকাশিত হইয়াছে। রামরসায়নে রামায়ণকাহিনী, গীতমালায় কৃষ্ণলীলাবিষয়ক গীত, এবং

রাধামাধবোদয়ে বিবিধ ছন্দে রাধাকৃষ্ণের লীলা বর্ণিত আছে। রামরসায়ন অতি সুললিত কাব্য; ইহা প্রচলিত বাঙ্গালা রামায়ণ কাব্যের সকলগুলি হইতে বৃহৎ। এইটিই কবির প্রথম রচনা বলিয়া অনুমান হয়। রাধামাধবোদয় ১৭৭১ শকাব্দে অর্থাৎ ১৮৪৯ খ্রীষ্টাব্দে সম্পূর্ণ হইয়াছিল। ভারতচন্দ্রের পদ্ধতিব কবিদিগের মধ্যে সর্বপ্রধান ছিলেন মদনমোহন তর্কালঙ্কার এবং ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত। মদনমোহন সংস্কৃত কলেজে বিভাগাগর মহাশয়ের সহপাঠী ছিলেন। পাঠ্যাবস্থাতেই ইনি দুইখানি কাব্য রচনা করেন, রসতরঙ্গিনী ও বাসবদত্তা। শেষের বইটি সুবন্ধু রচিত সংস্কৃত বাসবদত্তা অবলম্বনে রচিত। ইহাতে মদনমোহন বিশেষ ছন্দঃ-চাতুর্য্য দেখাইয়াছেন। ইহার রচিত শিশুশিক্ষা নামক প্রাথমিক তিন খণ্ড পাঠ্যপুস্তকও তখন খুব চলিত। কবিত্ব শক্তিতে ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত মদনমোহন হইতে অনেক বড়। ঈশ্বরচন্দ্র এক হিসাবে পূর্বপদ্ধতির শেষ কবি এবং নূতন পদ্ধতির আদি কবি। দেশপ্ৰীতি ইহার কাব্যে নূতন বঙ্গের তুলিল, তাহাতে তখনকার দিনের উদীয়মান কবি ও শিক্ষিত যুবকেরা ইহার প্রতি আকৃষ্ট হইল। ঈশ্বরচন্দ্র এবং তাঁহার এই শিষ্যগণের দ্বারাই বাঙ্গালা কাব্যের অভ্যুদয়বার্তা বিবোধিত হইল।

ঈশ্বরচন্দ্রের শিষ্যেরা তাঁহার সম্পাদিত সংবাদপ্রভাকর ও সংবাদসামুদ্রজ্ঞান পত্রিকায় নিজেদের রচনা প্রকাশ করিতেন। উত্তরকালে অনেকেই কেহ বা কবি কেহ বা নাট্যকার ও ঔপন্যাসিক হিসাবে যশোলাভ করিয়া গিয়াছেন। ইহাদের মধ্যে প্রধান ছিলেন দ্বারকানাথ অধিকারী, রঙ্গলাল বন্দ্যোপাধ্যায়, দীনবন্ধু মিত্র এবং বঙ্কিমচন্দ্র চট্টো-

পাধ্যায়। হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়ও কিছু পবিমাণে ঈশ্বর-
চন্দ্রের পস্থার অনুসরণ করিয়াছিলেন।

ঈশ্বরচন্দ্র বাঙ্গালা কাব্যে যে আধুনিকতার সূত্রপাত
করিলেন তাহা তাঁহার শ্রেষ্ঠ শিষ্য বঙ্গলালের কবিতায়
বিস্তারিত হইয়া উঠিল।^১ 'রঙ্গলাল বন্দ্যোপাধ্যায়ের জন্ম হয়
কালনার নিকটে বাকুলিয়া গ্রামে ১৮২৭ খ্রীষ্টাব্দে।^২ ১৮৮৭
খ্রীষ্টাব্দে ইনি দেহত্যাগ করিলেন।' রঙ্গলালের জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা
গণেশচন্দ্রও কবিতা রচনা করিতেন। রঙ্গলাল ইংরেজী ও
সংস্কৃতে সমান ব্যুৎপত্তি লাভ করিয়াছিলেন। গুরুত্ব মত
ইনিও প্রথমে কবিতা গান রচনা করিতেন। তখনকার বিবিধ
সাময়িক-পত্রিকায় ইহার কবিতা ও প্রবন্ধ প্রকাশিত হইত।
ছোট ছোট মৌখিক কবিতা এবং সংস্কৃত ও ইংরেজী হইতে
অনূদিত কবিতা ও কাব্য ছাড়া ইনি চারিখানি মৌলিক কাব্য
রচনা করিয়াছিলেন—পদ্মিনী উপাখ্যান, কৰ্ম্মদেবী, শুব্রমুন্দরী
এবং কাঞ্চীকাবেবী। পদ্মিনী কাব্য প্রকাশিত হয় ১৮৫৮
খ্রীষ্টাব্দে ; কাব্যটির বিষয়বস্তু হইতেছে মেওয়ারের বাগী পদ্মিনী
ও সত্ৰাট অলাউ-দ-দীনেব কাহিনী। কৰ্ম্মদেবী ও শুব্রমুন্দরীর
বিষয়বস্তুও রাজপুত-ইতিহাস হইতে গৃহীত। কাঞ্চীকাবেবীর
মূলে আছে উড়িষ্যার এক রাজকন্যার প্রাচীন ঐতিহাসিক
কাহিনী।

রঙ্গলালের কাব্যের মূল সূত্র হইতেছে দেশপ্ৰীতি ও
স্বাধীনতাপ্রিয়তা। তাঁহার গুরুত্ব কাব্যে দেশপ্ৰীতি
ফুটিয়াছিল বটে, কিন্তু সে প্রীতি আত্মসচেতন ছিল না।
তাহা ছাড়া, ঈশ্বরচন্দ্র স্বাধীনতাপ্রিয়তা অবধি পৌছাইতে
পারেন নাই। রঙ্গলাল গুরুত্ব অপেক্ষা এক ধাপ

আগাইয়া গিয়াছেন। রঙ্গলালের ভাষাও ঈশ্বরচন্দ্রের ভাষা অপেক্ষা অধিকতর মার্জিত। রঙ্গলাল অনেক ভাব ইংবেজ কবি স্কট, মুর এবং বায়রনের লেখা হইতে লইয়া আত্মসাৎ করিয়াছেন; ঈশ্বরচন্দ্রের ততদূর ক্ষমতা ছিল না। সর্বশেষে, ঈশ্বরচন্দ্র সংবাদপত্রসেবী ছিলেন, সুতরাং সাধারণ লোকের মনস্তপ্তির জন্য তাঁহাকে ভাঁড়ামিও কবিতা হইত। রঙ্গলালের সে ছুঁড়াগ্য হয় নাই। রঙ্গলাল যথার্থই আধুনিক বাঙ্গালা সাহিত্যের প্রথম কবি। তবে পূর্বের দ্বারা তিনি একেবারে কাটাইয়া উঠিতে পারেন নাই; পূর্ববর্তী সাহিত্যের প্রথামত তাঁহার কাব্যোপাখ্যান এবং বর্ণনাটাটী মুখ্য।

দীনবন্ধু মিত্র প্রথমে কবিতা লিখিতেন বটে, কিন্তু পরে তিনি নাটক ও প্রহসন রচনা করিয়া যশস্বী হন এবং কাব্য-রচনা ছাড়িয়া দেন। দীনবন্ধুর কবিতায় কোনই বিশেষত্ব নাই। তাঁহার নাটক সম্বন্ধে পরে আলোচনা করা যাইতেছে।

এই প্রসঙ্গে কৃষ্ণচন্দ্র মজুমদারের (১২৪৪-১৩১৩) নাম করিতে হয়। ইহার কাব্য প্রধানত ধর্ম ও নীতি-বিষয়ক। কৃষ্ণচন্দ্রের লেখায় সংস্কৃত এবং ফারসীর ছায়া আছে। ইহার প্রথম ও শ্রেষ্ঠ কাব্য সম্ভাবশতক ১২৬৭ সালে প্রকাশিত হয়। কতকগুলি উৎকৃষ্ট গানও ইনি রচনা করিয়াছিলেন। ✓

৩০

বাঙ্গালা নাটকের উদ্ভব ও বিকাশ

প্রাচীনকালে বাঙ্গালাদেশে যাত্রার ধরণে নৃত্যগীতের অভিনয় হইত। তিন চারিটি পাত্রপাত্রী গীতের সাহায্যে অনুরূপ অঙ্গভঙ্গি করিয়া পৌরাণিক ঘটনাবিশেষের অভিনয় করিত।

যে নট বৃদ্ধ বা বৃদ্ধার চরিত্র সাজিত (সেকালের ভাষায় “কাচ কাচিত”) তাহারই উপর হস্তরসস্থষ্টির ভার ছিল। এইরূপ অভিনয়ের সর্বপ্রথম উল্লেখ পাই ষোড়শ শতাব্দীর প্রথমে; খ্রীষ্টচৈতন্য তাঁহার মেসোচন্দ্রশেখর আচার্য্যের গৃহে কৃষ্ণিনীহরণ অভিনয় করিয়াছিলেন। পাঁচালীর গানে গায়ক চামর ঢুলাইত ও অঙ্গভঙ্গি করিত বটে, কিন্তু তাহা নাটকের অভিনয় নহে, কারণ দ্বিতীয় অভিনেতা ছিল না। কথকতার সম্বন্ধেও এই কথা বলা চলে।

পূর্বকালে যাত্রার কোন বাঁধা পালা ছিল না। শুধু পালার গানগুলি নির্দিষ্ট ছিল, আর কথা অভিনেতারাই নিজেরাই যোগাইত। প্রধানতঃ কৃষ্ণলীলাবিষয়ক পদ লইয়াই সেকালে যাত্রা বা নাটগীত হইত। আর কৃষ্ণলীলার মধ্যে কালিয়দমন কাহিনীই অধিক জনপ্রিয় ছিল, এবং ইহা লইয়া কৃষ্ণযাত্রা আরম্ভ হয় বলিয়া যাত্রা বা কৃষ্ণযাত্রার নামান্তর ছিল কালিয়দমন। ঊনবিংশ শতাব্দীর প্রথম হইতে যাত্রা বিশেষভাবে সমাদৃত হইতে থাকে। জীদাম ও সুবল এই দুই ভাই এবং পরমানন্দ অধিকারী কৃষ্ণযাত্রার অভিনয়ে অতিশয় কৃতিত্ব প্রদর্শন করেন। ইহাদের অব্যবহিত পর হইতে বাঁধা যাত্রাপালার সৃষ্টি হয়। এই সময়ের শ্রেষ্ঠ যাত্রাওয়ালা হইতেছেন গোবিন্দ অধিকারী ও কৃষ্ণকমল গোস্বামী। ঊনবিংশ শতাব্দীর দ্বিতীয় দশক হইতে কলিকাতা অঞ্চলে বিজ্ঞানমুন্দর যাত্রার প্রচলন হইল। এই অঞ্চলের লোকের রুচি তখন অতিশয় বিকৃত হইয়া গিয়াছিল।

যাহা হউক, একথা ঠিক যে প্রাচীন যাত্রা হইতে বাঙ্গালা নাটকের উৎপত্তি হয় নাই। বাঙ্গালা নাটকের উৎপত্তি হইয়াছে

ইংরেজী ষ্টেজ বা নাটমঞ্চ প্রবর্তনের পব হইতে। বাঙ্গালা নাটকের গঠনে ইংরেজী নাটক এবং সংস্কৃত নাটকের প্রভাব তুল্যরূপেই আছে। বাঙ্গালা কথাবার্তা ও গান-যুক্ত নাটক-পালা লইয়া প্রথম অভিনয় হয় অষ্টাদশ শতাব্দীর একেবারে শেষে। হেবাসিম লেবেডেফ নামে একজন কণ ১৭৯৫ খ্রীষ্টাব্দে কলিকাতায় একটি নাট্যশালা স্থাপিত কবিয়া তথায় দুইখানি ইংবেজী নাটকের বাঙ্গালা অনুবাদ বাঙ্গালী নট ও নটাদিগের দ্বারা অভিনয় কবাইয়াছিলেন। নাটক দুইটিতে ভারতচন্দ্রের গান সংযোজিত হইয়াছিল। প্রথম অভিনয় হয় ১৭৯৫ খ্রীষ্টাব্দের ২৭শে নভেম্বর তাবিখে এবং শেষ অভিনয় হয় ১৭৯৬ খ্রীষ্টাব্দের ২১শে মার্চ তাবিখে। ইহান পব বহুকাল আর বাঙ্গালা নাট্যশালা অথবা বাঙ্গালা নাটকের অভিনয় সম্বন্ধে কোন কথা জানা যায় না। ১৮৩১ খ্রীষ্টাব্দে প্রসন্নকুমার ঠাকুর এক নাট্যশালা স্থাপিত করেন। দেশীয় ব্যক্তি প্রতিষ্ঠিত ইহাই প্রথম নাট্যশালা। ইহাতে যে কয়খানি নাটক অভিনীত হইয়াছিল সেগুলি সবই ইংবেজী। তাহাব পর ১৮৩৫ খ্রীষ্টাব্দে কলিকাতা শ্যামবাজারে নবীনচন্দ্র বসু বাড়ীতে একটি নাট্যশালা স্থাপিত হয়; এখানে বিভাসুন্দর কাহিনী নাটকাকারে গ্রথিত হইয়া অভিনীত হইয়াছিল। এই থিয়েটার সম্বন্ধে আর কিছু জানা যায় নাই।

বাঙ্গালা নাটকের অভাবেই সেযুগে বাঙ্গালা নাট্যশালা সুপ্রতিষ্ঠিত হইতে পারে নাই; এই অভাব তখন অনেকেই বোধ কবিয়াছিলেন। ইহার মোচনের চেষ্টায় ঊনবিংশ শতাব্দীর পঞ্চম দশকে বাঙ্গালা নাটক রচনার নৃত্রপাত হইল। ইহার পূর্বে যে দুই একটি সংস্কৃত নাটক বা গ্রহসনের অনুবাদ

বাহির হইয়াছিল, সেগুলিকে কাব্যানুবাদ বলাই সম্ভব ; কোন কোনটিতে কথোপকথন অল্পস্বল্প থাকিলেও তাহা অভিনয়ের জন্য রচিত হয় নাই । ১৮শতদূর জানা গিয়াছে তাহাতে বোধ হয় ১৮৪৯ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত নীলমণি পালের রত্নাবলী নাটিকাই প্রথম মুদ্রিত বাঙ্গালা নাটক । তাহার পর ১৮৫২ খ্রীষ্টাব্দে হইতে বাঙ্গালা নাটক রচনা অবিচ্ছিন্নভাবে চলিয়াছে । প্রথম যুগের বাঙ্গালা নাটক অধিকাংশই সংস্কৃত নাটকের গল্প অনুসরণে লিখিত । মৌলিক নাটকগুলির বিষয়বস্তু সব সামাজিক, যেমন বিধবাবিবাহ, বহুবিবাহ ইত্যাদি । ১৮৫৩ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হরচন্দ্র ঘোষের ভ্রানুমতী-চিন্তাবিলাস শেক্সপীয়ারের মার্চেন্ট অব ভিনিস্ অবলম্বনে লেখা । কালীপ্রসন্ন সিংহ যে চাবিখানি নাটক রচনা করিয়াছিলেন, তাহাব মধ্যে প্রথম বাবু নাটক ১৮৫৩ কিংবা ১৮৫৪ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয় । নন্দকুমার রায়ের অভিজ্ঞান শকুন্তল ১৮৫৫ সালে প্রকাশিত হয় এবং ১৮৫৭ সালের ৩০শে জানুয়ারী আশুতোষ দেবের বাড়ীতে অভিনীত হয় । ১৮শতাব্দীর বাঙ্গালা নাটকের ইহাই প্রথম অভিনয় ।

বাঙ্গালা নাটকের আদিযুগের প্রধান নাট্যকার ছিলেন বামনাবায়ণ তর্করত্ন (১৮২২-১৮৮৬) । ইনি সংস্কৃত কলেজের ছাত্র ছিলেন এবং পরে অধ্যাপকও হইয়াছিলেন । নাটক হিসাবে খুব উৎকৃষ্ট না হইলেও রামনারায়ণের নাটকগুলি অভিনয়ে ভালই উৎরাইত ; নাট্যকার “নাটকে রামনারায়ণ” নামে প্রখ্যাত হইয়াছিলেন । ইহার প্রথম নাটক কুলীনকুল-সর্বস্ব ১৮৫৪ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয় । এইটি এবং ১৮৬৬ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত নবনাটক ছাড়া রামনারায়ণের আর সকল

নাটকই পৌরাণিক বিষয় অথবা সংস্কৃত নাটক কাহিনী অবলম্বনে রচিত। ইনি কয়েকখানি প্রহসনও রচনা করিয়াছিলেন।

নাটক এবং প্রহসন লইয়াই অদ্বিতীয়প্রতিভাসম্পন্ন কবি মাইকেল মধুসূদন দত্ত ইংবেজী সাহিত্যেব চর্চা ছাড়িয়া বাঙ্গালা সাহিত্য-ক্ষেত্রে অবতীর্ণ হন। বাঙ্গালা সাহিত্যের বোধ করি সেইটিই সর্বাপেক্ষা শুভ দিন। ১২৬৫ সালে অর্থাৎ ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দে শর্মিষ্ঠা নাটক প্রকাশিত হয়। ইহাটি বাঙ্গালায় প্রথম উৎকৃষ্ট নাটক। তাহাব পব বৎসব যথাক্রমে নব্য এবং প্রাচীনপন্থীদের বিদ্রূপ কবিতা একেই কি বলে সভ্যতা? এবং বুড় সালিকের ঘাড়ে রোঁ নামক দুইখানি প্রহসন রচিত হয়। এই প্রহসন দুইটি সম্বন্ধে এই কথা বলিলেই যথেষ্ট হইবে যে, পরবর্তী কালের প্রায় সব প্রহসন এই ছাঁচে ঢালা এবং এই দুইটি এখনও অপবাজিত রহিয়াছে। ১২৬৬ সালেই মধুসূদনেব অপব দুইখানি নাটক—কৃষ্ণকুমারী নাটক ও পদ্মাবতী নাটক—প্রকাশিত হয়। মধুসূদনের কাব্যপ্রতিভার আলোচনা পরে করিব।

মধুসূদন নাটক রচনা পবিত্যাগ করিলে বাঙ্গালার শ্রেষ্ঠ নাটক রচয়িতার আবির্ভাব ঘটিল। দীনবন্ধু মিত্রের নীলদর্পণ ঢাকা হইতে ১৮৬০ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হইয়া শুধু বাঙ্গালা সাহিত্য-ক্ষেত্রে নহে সমাজে এবং বাহ্যে আলোড়ন উপস্থিত করিল।

কাঁচড়াপাড়ার কয়েক ক্রোশ উত্তরপূর্বের, নদীয়া জেলায় চৌবেড়িয়া গ্রামে ১২৩৬ সালে অর্থাৎ ১৮৩০ খ্রীষ্টাব্দে দীনবন্ধু মিত্রের জন্ম হয়। বাল্যকালে কলিকাতায় ইকুশে

পরে হিন্দুকলেজে শিক্ষা লাভ করেন। ছাত্রাবস্থাতেই তিনি ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্তের অনুকরণে কবিতা রচনা করিতে থাকেন। প্রথম বয়সে রচিত তাঁহার বহু কবিতা ঈশ্বরচন্দ্রের সম্পাদিত পত্রিকায় প্রকাশিত হইয়াছিল। কলেজ পরিত্যাগ করিয়া দীনবন্ধু ডাকবিভাগে কৰ্ম গ্রহণ করেন। চাকুরী হইতে অবসর লইবার বহুপূর্বেই ১৯৮০ সালে অর্থাৎ ১৮৭৩-৭৪ খ্রীষ্টাব্দে তাঁহার অকালমৃত্যু ঘটে। বঙ্কিমচন্দ্রের সহিত দীনবন্ধুর পরম সৌহার্দ্য ছিল।

সেকালে বাঙ্গালা দেশে নীলের খুব চাষ হইত। নীল-করেরা সকলেই ছিল ইংবেজ। তাহারা অধিকাংশ ক্ষেত্রে চাষীদের উপর অযথা অত্যাচার করিত। নীলদর্পণ নাটকে দীনবন্ধু নীলকরদিগের অমানুষিক অত্যাচারের কিছু কিছু চিত্র অঙ্কিত করিয়াছিলেন। নাটকখানি একপ যথাযথভাবে এবং সঙ্গদয়তার সহিত লিখিত যে, ১৮৬০ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হওয়া মাত্রই দেশে নীলকরদিগের বিরুদ্ধে আন্দোলন উপস্থিত হইল। প্রকাশিত পুস্তকে দীনবন্ধু নাম ছিল না, থাকিলে তাঁহার হয় ত চাকুরী যাইত; কারণ সে সময়ে শাসনকর্তৃ-পক্ষের নিকট নীলকর সাহেবদের প্রচণ্ড প্রতিপত্তি ছিল। মধুসূদন নীলদর্পণ ইংরাজীতে অনুবাদ কবেন, ইহাতেও তাঁহার নাম ছিল না। প্রকাশক বলিয়া পাজী লঙ্ সাহেবের নাম ছিল। নীলকরেবা লঙের বিরুদ্ধে ফোজদারী মামলা আনিল। বিচারে লঙ্ সাহেবের একমাস কারাবাস ও হাজার টাকা জরিমানা হইল। জরিমানার টাকা কালীপ্রসন্ন সিংহ তৎক্ষণাৎ দিয়া দিলেন। কিন্তু এত করিয়াও নীলকরদের বিরুদ্ধে আন্দোলন রোধ করা গেল না;

নীলদর্পণের অমুবাদ বিলাতে পৌঁছিল, সেখানেও আন্দোলন উপস্থিত হইল। এবং অল্পকাল মধ্যেই নীলকরদিগের অত্যাচার প্রশমিত হইল।

নীলদর্পণের পর দীনবন্ধুর এই নাটকগুলি প্রকাশিত হইয়াছিল—নবীনতপস্বিনী (১৮৬৩), বিয়েপাগলা বুড়ো (১৮৬৬), সধবার একাদশী (১৮৬৬), লীলাবতী (১৮৬৭), জামাইবারিক (১৮৭২), কমলে কামিনী নাটক (১৮৭৩)।

নীলদর্পণ ছাড়া দীনবন্ধুর অপব সব নাট্য-রচনা হান্তরস-প্রধান নাটিকা অথবা প্রহসন। নবীনতপস্বিনীর মধ্যে শেকস্পীয়রের মেরি ওয়াইভ্‌স্ অব উইণ্ড্‌স্ নাটকের প্রভাব আছে। বাংলায় প্রথম শ্রেণীর নাটক এখনও সৃষ্ট হয় নাই, তবে যাহা হইয়াছে তাহার মধ্যে দীনবন্ধুর নীলদর্পণ ও সধবার একাদশী অবিসংবাদিতভাবে শ্রেষ্ঠ। বাংলার শ্রেষ্ঠ নাট্যকার দীনবন্ধু। সত্য বটে তাঁহার রচনায় শ্রীলতাব গুণী অনেক সময় উল্লঙ্ঘিত হইয়াছে, কিন্তু ইহাতে দোষ তাঁহার অপেক্ষা সে সময়ের রুচিরই বেশী। সেকালে পাঠক ও শ্রোতা এইরূপ ভাঁড়ামি পছন্দ করিত। কিন্তু ভাঁড়ামি সত্বেও দীনবন্ধুর পাত্রপাত্রী কোথাও খেলো হইয়া পড়ে নাই। নাট্যকারের সহানুভূতি তুচ্ছতম চরিত্রের মধ্যেও ফুটিয়া উঠিয়া তাহাকে কতকটা রক্তমাংসের মানুষ করিয়া তুলিয়াছে। পরবর্তী নাট্যকারেরা সুযোগ পাইলে বাড়াবাড়ি করিতে ছাড়েন নাই। দীনবন্ধুও কিছু কিছু বাড়াবাড়ি করিয়াছেন বটে, কিন্তু তাহা সত্বেও তাঁহার সৃষ্ট চরিত্রগুলি ক্যারিকেচারে পরিণত হয় নাই, জীবন্ত মানুষ হইয়া উঠিয়াছে এবং তাহাদের দোষগুণ লইয়া আমাদের হৃদয় স্পর্শ করিতে পারিয়াছে।

নাট্যকারের পক্ষে ইহাই ত প্রধান গুণ। এই গুণ দীনবন্ধুর যে পরিমাণে ছিল তাহা বাঙ্গালায় আর কোন নাট্যকারের ছিল না।

১৮৬০ খ্রীষ্টাব্দের পব হইতে অজস্র বাঙ্গালা নাটক বাহির হইতে থাকে। এই সময়ের নাট্যকাবদিগের মধ্যে মনোমোহন বসুর নাম সমধিক উল্লেখযোগ্য। ইহার প্রথম নাটক রামাভিষেক ১৮৬৭ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয়। তাহার পর প্রণয়পরীক্ষা (১৮৬৯), সতী নাটক (১৮৭৩) ইত্যাদি প্রকাশিত হইতে থাকে।

৩১

কৌতুক ও ব্যঙ্গরচনা

উনবিংশ শতাব্দীর প্রথম হইতেই বাঙ্গালা সাহিত্যে ব্যঙ্গরচনার প্রাচুর্য্য দেখা গিয়াছিল। ভবানীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের বাবুবিলাস ইত্যাদি এই শ্রেণীরই বই। এই ধরনের ছোট ছোট রচনা সেকালের সাময়িক-পত্রিকায় কিছু কিছু প্রকাশিত হইত। ‘টেকচাদ ঠাকুর’ এই ছদ্মনামধারী প্যারীচাঁদ মিত্র (১৮১৪-১৮৮৩) ১৮৫৭ খ্রীষ্টাব্দে কলিকাতা অঞ্চলের ধনি-গৃহের চিত্র লইয়া একটি উৎকৃষ্ট নকশা বা ব্যঙ্গগল্প প্রকাশ করেন। বইটির নাম আনালের ঘরের ছালা। পুস্তকাকারে প্রকাশিত হইবার পূর্বে ইহা মাসিক পত্রিকা নামক সাময়িক-পত্রে প্রকাশিত হইয়াছিল। এই পত্রিকাটি স্ত্রীলোকদিগের সুশিক্ষা দিবার উদ্দেশ্যে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। সুশিক্ষার অভাবে ধনীর সন্তান কি করিয়া উৎসন্ন যায় ইহাই

আলালের ঘরের দুলালে দেখান হইয়াছে। গল্পের অপেক্ষা বইটির ভাষা বিশেষ লক্ষণীয়। প্যারীচাঁদ এই গ্রন্থে প্রধানতঃ কথ্যভাষা ব্যবহার করিয়াছেন, তাহার সঙ্গে কিছু কিছু সাধুভাষাব শব্দও আছে। বিজ্ঞানাগরের যুগে এইরূপ ভাষা ব্যবহার করিয়া প্যারীচাঁদ যথেষ্ট সাহস দেখাইয়াছিলেন। শিক্ষিত অশিক্ষিত সকলেরই সহজবোধ্য হইলেও এই ভাষার দোষ ছিল যথেষ্ট। ইহা মুখেব ভাষাও নহে, লেখার ভাষাও নহে। তবে পরবর্ত্তীকালে বঙ্কিমচন্দ্র-প্রমুখ নবাতন্ত্রেব লেখকদিগের উপর ইহাব যথেষ্ট প্রভাব পড়িয়াছিল। আলালের ঘরের দুলালে বাঙ্গালা উপন্যাসেব হয়ত কিছু পূর্বাভাস আছে, কিন্তু ইহার আদর্শ যে ভবানীচরণেব নবাবুবিলাস তাহাতে সন্দেহ নাই। প্যারীচাঁদের অপব উল্লেখযোগ্য রচনা অভেদীব ভাষা অনেকটা সাধুভাষা-ঘেঁষা। এটিকে ধর্ম্মমূলক আখ্যায়িকা বলা যাউতে পাবে।

ইতিপূর্বে একাধিক প্রসঙ্গে কালীপ্রসন্ন সিংহের (১৮৪০-১৮৭০) নাম করিয়াছি। ইনি একজন অদ্ভুতকন্মা বহুমুখী-প্রতিভাসম্পন্ন পুরুষ ছিলেন। ত্রিশ বৎসর বাগ্পী স্বল্পপরিমিত জীবনের মধ্যে ইনি সাহিত্য, সমাজ ও দেশের হিতকর এত কাজ করিয়া গিয়াছেন যাহা ভাবিলেও বিস্ময় বোধ হয়। তের বৎসর বয়সে, ১৮৫৩ খ্রীষ্টাব্দে, ইনি বঙ্গভাষাব অনুশীলনের জন্ত বিজ্ঞানসাহিনী সভা প্রতিষ্ঠা করেন। এই সভার তরফে বাঙ্গালায় কাব্য রচনার জন্ত মধুসূদন দত্তকে এবং নীলদর্পণের অনুবাদ প্রকাশ করিবার জন্ত লঙ্ সাহেবকে সংবন্ধিত করা হয়। সভার মুখপত্র বিজ্ঞানসাহিনী

পত্রিকা ছাড়া আরও কয়েকটি পত্রিকা তিনি সম্পাদন করিয়াছিলেন। পাঁচখানি নাটক প্রকাশের পর কালীপ্রসন্ন ছতোমপাঁচার নকশা রচনা করেন। ইহাব প্রথম ভাগ ১৮৬২ খ্রীষ্টাব্দে এবং দ্বিতীয় ভাগ তাহার অল্পকাল পরে প্রকাশিত হয়। সেকালেব কলিকাতার আচার-ব্যবহার পালপার্বণ, সভাসমিতি ইত্যাদি যাহা কিছুতে ভণ্ডামি ও বীভৎসতা দেখিয়াছিলেন তাহা তিনি ছতোমপাঁচার নকশায় উজ্জলভাবে চিত্রিত কবিয়া বিদ্রূপের নিদাক্ষণ কথাত কবিয়াছেন। ছতোমের ভাষা যথার্থই কথ্যভাষার উপর প্রতিষ্ঠিত; ইহা আলালের ঘরেব ছুলালেব ভাষার মত মিশ্র ভাষা নহে।

কালীপ্রসন্নের অক্ষয় কীৰ্ত্তি অষ্টাদশ পর্ব মহাভারতের গল্প অনুবাদ প্রকাশ। এই কার্যে তিনি বিদ্যাসাগর মহাশয়-প্রমুখ অনেক বড় বড় পণ্ডিতেব সাহায্য পাইয়াছিলেন। মহাভারত প্রকাশ করিতে আট নয় বৎসব লাগিয়াছিল; ইহাব প্রথম খণ্ড ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দে এবং শেষ খণ্ড ১৮৬৬ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয়।

৩২

মধুসূদন ও তাঁহার পরবর্তী বাঙ্গালা কাব্য

বাঙ্গালা সাহিত্যের প্রথম যুগপ্রবর্তক মহাকবি মধুসূদন দত্ত ১৮২৪ খ্রীষ্টাব্দের ২৫শে জানুয়ারী তারিখে যশোর জেলায় কপোতাক্ষ তীরে সাগরদাঁড়ি গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। ইহার পিতার নাম রাজনারায়ণ দত্ত, মাতার নাম জাহ্নবী। পিতা-

মাতার একমাত্র জীবিত পুত্র বলিয়া মধুসূদনের শৈশব ও বাল্যকাল অত্যধিক আদরে যাপিত হয়। গ্রামের পাঠশালায় কিছুদিন পড়িয়া মধুসূদন কলিকাতায় আসিয়া হিন্দু কলেজে অধ্যয়ন করিতে থাকেন। রাজনারায়ণ কলিকাতার সদর দেওয়ানী আদালতে ওকালতী করিতেন, থাকিতেন খিদিরপুরে। ভূদেব মুখোপাধ্যায় ও রাজনারায়ণ বসু প্রভৃতি হিন্দু কলেজে মধুসূদনের সহপাঠী ছিলেন। এখানে মধুসূদন অসাধারণ প্রতিভার পরিচয় দিয়াছিলেন। কিন্তু ভিতরে যে অসামান্য তেজ এবং তীব্র উচ্চাভিলাষ ছিল তাহা অথবা প্রশ্রয় পাইয়া ইহার ভবিষ্যৎ হৃৎকর্দশার সূচনা করিল। ইংরেজী সাহিত্যের রস এবং ইংরেজ অধ্যাপকদিগের সাহচর্য পাইয়া স্ব-সমাজ ও স্বধর্মে মধুসূদনের আস্থা কমিয়া গেল। খ্রীষ্টান হইলে মনেপ্রাণে সাহেব হইতে পারিব এই ছরাশার ছলনায় মধুসূদন ১৮৪৩ খ্রীষ্টাব্দে উনিশ বৎসর বয়সে খ্রীষ্টীয় ধর্মে দীক্ষিত হইলেন। এখন তাঁহার নাম হইল মাইকেল মধুসূদন দত্ত। তাহার পর পাঁচ বৎসর কাল খ্রীষ্টান পাদ্রীদের শিক্ষায়তন বিশপ্‌স্ কলেজে হিব্রু, গ্রীক, লাতিন এবং সংস্কৃত ভাষা উত্তমরূপে শিক্ষা করেন। তাহার পর মাদ্রাজে গিয়া বিদ্যালয়ে শিক্ষকতা করিয়া ও সংবাদপত্রে লিখিয়া জীবিকা উপার্জন করিতে থাকেন। কবিজীবনের সূত্রপাতও সেইখানেই। মাদ্রাজে থাকিয়া ক্যাপ্‌টিভ্‌ লেডী ও ভিজন্‌স্ অব্‌ দি পাস্ট্‌ নামে দুইখানি ইংরেজী কাব্য রচনা করেন। প্রথমে যে ইংরেজ মহিলার পাণিগ্রহণ করেন তাঁহার সহিত মনোমালিঙ্গ হওয়ায় মধুসূদন আবার একটি ইংরেজ মহিলাকে বিবাহ করেন। কিছুকাল পরে পিতামাতার পরলোকগমনের

সংবাদ পাইয়া মধুসূদন দেশে প্রত্যাবর্তন করিলেন। ইতি-
মধ্যে তাঁহার অধিকাংশ পৈতৃক সম্পত্তি হস্তচ্যুত হইয়া
গিয়াছে। মধুসূদন পুলিশ কোর্টে চাকুবী করিতে লাগিলেন,
এবং ইংরেজীতে কাব্যরচনার প্রয়াস বার্থ জানিয়া মাতৃভাষার
অল্পশীলনে মনোনিবেশ কবিলেন। বাঙ্গালায় ভাল নাটকের
অভাব জানিয়া তিনি প্রথমে নাটক ও প্রহসন রচনায় মন
দিলেন; শশ্মিষ্ঠা নাটক (১৮৫৮), একেই বলে সভ্যতা (১৮৬০),
বুড় সালিকের ঘাড়ে বোঁ (১৮৬০) এবং পদ্মাবতী নাটক (১৮৬০)
প্রকাশিত হইল। নাটক রচনা করিতে কবিত্তে তাঁহার এমন
এক নূতন প্রেরণা আসিল যাহাতে বাঙ্গালা কাব্য-সাহিত্যের
বাহ্যরূপ একেবারে বদলাইয়া গেল,—তিনি অমিতাক্ষর বা
অমিত্রাক্ষর ছন্দেব সৃষ্টি করিলেন। এই ছন্দে রচিত
তিলোৎকাসম্ভব কাব্য ১৮৫৯ সালে বিবিধাখ-সংগ্রহে প্রকাশিত
হইতে থাকে এবং ১৮৬০ খ্রিষ্টাব্দে পুস্তকাকাবে বাহির হয়।
তাঁহার পব এই ছন্দে মেঘনাদবধ কাব্য প্রথম (১৮৬১) ও দ্বিতীয়
ভাগ (১৮৬২), বীবাঙ্গনা কাব্য (১৮৬২), এবং বিচিত্র সমিল
ছন্দে ব্রজাঙ্গনা কাব্য (১৮৬১) প্রকাশিত হইল। কাব্যসৃষ্টির
উদ্ভাদনার কালেও তিনি নাটক রচনা একেবারে পরিত্যাগ
করেন নাই; ১২৬৬ সালে কৃষ্ণকুমারী নাটক প্রকাশিত
হয়। বাঙ্গালা ভাষায় ইহাই বোধ হয় প্রথম বিয়োগান্ত
নাটক বা ট্র্যাগেডি। মৃত্যুর পূর্ব্বে আর দুইখানি নাটক
রচনায় হাত দিয়াছিলেন; একখানি সমাপ্ত করিয়া যাইতে
পারেন নাই, অপরাধিনি—মায়াবানন—সম্পূর্ণ করিয়াছিলেন
বটে, কিন্তু প্রকারী ত হইবার পূর্ব্বেই তাঁহার তিরোভাব
হয়। বিলাত হইবার বাসনা মধুসূদনের বরাবরই ছিল,

সুযোগ অভাবে যাইতে পাবেন নাই। অবশেষে ১৮৬২ খ্রীষ্টাব্দের জুন মাসে তিনি ব্যাবিষ্টাবী পড়িতে বিলাত যাত্রা করিলেন। সেখানে পাঁচ বৎসর থাকিয়া ফরাসী, ইতালীয় প্রভৃতি বিবিধ ইউরোপীয় ভাষা শিক্ষা করেন। অর্থাভাবে পড়িয়া বিলাতে যখন তিনি নিদাক্ষণ কষ্ট পাইতেছিলেন তখন বিভাসাগর মহাশয় তাঁহাকে অর্থসাহায্য করিয়া উদ্ধার করেন। তাহার সহায়তা ব্যতিবেকে কবির ব্যাবিষ্টাবী পাশ ত দুবের কথা, প্রাণ বাঁচিত কিনা সন্দেহ। দেশে ফিবিয়া আসিলে বিভাসাগরের নিকট তিনি পিতার মত অভ্যর্থনা ও সহায়তা পাইয়াছিলেন। ফরাসী দেশে থাকিবার সময়ে ১৮৬৫ খ্রীষ্টাব্দে কবি চতুর্দশপদী কবিতাবলী রচনা করেন। বাঙ্গালা সাহিত্যে ইহাই প্রথম সনেট বা চতুর্দশপদী কবিতা। মধুসূদনের পূর্বে অনেক কবি সনেট লিখিয়াছেন বটে, কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কেহই, এমন কি ববীন্দ্রনাথও, মধুসূদনের মত কৃতকার্য হইতে পাবেন নাই। ১৮৬৭ খ্রীষ্টাব্দে দেশে ফিবিয়া মধুসূদন ব্যাবিষ্টাবী আবস্ত করিলেন, কিন্তু তাহাতে মোটেই সুবিধা কবিতে পাবিলেন না। তাঁহার আর্থিক ও মানসিক অবস্থা দিন দিন শোচনীয় হইয়া পড়িতে লাগিল। ইহার পূর্বে তিনি দুইখানি মাত্র গ্রন্থ রচনা করিয়া ছিলেন—হেক্টব-বধ (১৮৭১) এবং মায়াকানন। হেক্টব-বধে কবি বাঙ্গালা গল্পে প্রাচীন গ্রীসের মহাকবি হোমরের ইলিয়াড্ মহাকাব্যের উপাখ্যানভাগ সংকলন করিয়াছেন। এই দুইখানি পুস্তকে কবির সে প্র ও প্রতিভাব গুণু ভস্মাবশেষের পরিচয় পাওয়া যায়। আশ ভঙ্গজনিত নিদাক্ষণ মনোবেদনা এবং অত্যাচার-উচ্ছ্বলভাঙ্গন নত দেহযন্ত্রণা ও

দারিদ্র্যদুঃখভোগ কবিতা মধুসূদন ১৮৭৩ খ্রীষ্টাব্দে ২৯শে জুন তারিখে স্বর্গারোহণ করেন। বাঙ্গালার অদ্বিতীয় কবিপ্রতিভা আপনার অন্তর্দীপ্তে আপনি দক্ষীভূত হইয়া নির্বাণ লাভ করিল, সম্পূর্ণভাবে স্ফূর্তি পাইবাব সুযোগ ও অবকাশ পাইল না। ইহা অপেক্ষা বাঙ্গালী জাতির দুর্ভাগ্য আর কি হইতে পারে ?

হোমাব, ভার্জিল, দান্তে, মিল্টন প্রভৃতি ইউরোপীয় কবিগণের মহাকাব্যের অনুসরণে মধুসূদন বাঙ্গালায় মহাকাব্য রচনায় প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, ইহা সত্য কথা। কিন্তু মধুসূদনের মহাকাব্য অনুকরণ নহে, ইহা তাঁহার নিজস্ব সৃষ্টি। বহু ভাষা ও সাহিত্যের বসবেত্তা কবির লেখার মধ্যে প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য ভাবের যে সমন্বয় ঘটিয়াছে তাহা অপর কোন বাঙ্গালী সাহিত্যিকের রচনায় এতাবৎ দেখা যায় নাই। বাল্যকাল হইতেই মধুসূদন রামায়ণ মহাভারতের রসে ওতপ্রোত ছিলেন। ফরাসীদেশে ভের্সাই শহরে বসিয়া তিনি যখন সনেট রচনা করিতেছেন, তখনও কাব্যের বিষয় বলিয়া তাঁহার মনে পড়িতেছে কাশীবাম দাস, বিজয়া দশমী, শ্রীমন্তের টোপন, অল্পপূর্ণার ঝাঁপি ! রামায়ণ কাব্যের অপরূপ মাধুর্য্যে কবির চিত্ত সারাজীবন ভরিয়া ছিল। ভারতবর্ষীয় শাস্ত্রতত্ত্ব কবিচিন্তকের কমলবিহারিণী সীতাদেবীর কথা কবির মানসে সর্বদাই জাগরুক ছিল ; একথা তিনি পুনঃ পুনঃ বলিয়াও তৃপ্তি লাভ করিতে পারেন নাই,—“অনুক্ষণ মনে মোর পড়ে তব কথা, বৈদেহি !” “কে সে মূঢ় ভূভারতে, বৈদেহি। স্মন্দরি, নাহি আর্দ্রে মন যার তব কথা স্মরি, নিত্যকাস্তি কমলিনী তুমি ভঙ্জি-জলে !” তাই বাঙ্গালা সাহিত্যে বীররসের

অভাব দেখিয়া তিনি যখন বীরবসন্ত্রিত মহাকাব্য প্রণয়ন করিতে সংকল্প করিলেন, তখন স্বভাবতঃই রামায়ণকাহিনীর প্রতি তাঁহার মন আকৃষ্ট হইল। মেঘনাদবধ বাঙ্গালায় প্রথম এবং একমাত্র বীরবসন্ত্রিত মহাকাব্য।

বাঙ্গালা সাহিত্যে বীরবসন্ত্রের অবতারণা করিবার পক্ষে 'প্রধান অন্তরায় ছিল বাঙ্গালা ভাষার ও ছন্দের ওজোহীনতা। কবি প্রথম দোষ শুধরাইয়া লইলেন প্রচুরভাবে আভিধানিক সংস্কৃত শব্দ গ্রহণ করিয়া এবং নামধাতুর সৃষ্টি করিয়া। আর ছন্দের ওজোহীনতা নিরাকরণ করিলেন অমিতাক্ষর পয়ার প্রবর্তন করিয়া। প্রায় সকল বাঙ্গালা ছন্দের মূলে পয়ার; পয়ারের প্রধান লক্ষণ হইতেছে অষ্টম ও চতুর্দশ অক্ষরের পর যতি এবং শেষ যতিতে মিল। যতির স্থান নির্দিষ্ট থাকায় পয়ারে ঝঙ্কারময় ওজস্বী সংস্কৃত শব্দ বেশীমাত্রায় প্রয়োগ করা অসম্ভব ছিল, এবং চরণের শেষে মিল থাকায় বাক্য এবং ভাব দুই চরণে শেষ করিতেই হইত। অসীম প্রতিভাবলে মধুসূদন এই দুই বাধা অবলীলাক্রমে অতিক্রম করিলেন। তিনি যে অমিতাক্ষরের সৃষ্টি করিলেন তাহা মোটেই বিদেশী আমদানি নহে, ইহার মূলে বাঙ্গালা পয়ারেরই ধ্বনিপ্রবাহ এবং নির্দিষ্ট অক্ষরসংখ্যা রহিয়াছে, কেবল অন্ত্য অমুপ্রাস নাই এবং অষ্টম অক্ষরে যতি অবশ্যস্বাভাবী নহে। বাঙ্গালা ছন্দঃ স্বীয় বিশিষ্টতা সম্পূর্ণভাবে রক্ষা করিয়াই এই অভূতপূর্ব নূতন রূপ পাইল। বাঙ্গালা সাহিত্য নবজন্ম লাভ করিল।

বিদেশী ভাষা ও সাহিত্যে মশগুল থাকিয়া বিদেশী ধর্ম, পোষাক ও আচারব্যবহার অবলম্বন করিলেও মধুসূদন মনে-

প্রাণে বাঙ্গালী ছিলেন। বাঙ্গালা সাহিত্যের আবহমান ধারার সতিত তাঁহার সাহিত্যসৃষ্টির ঐকান্তিক বিচ্ছেদ ছিল না। বৈষ্ণব গীতিকাব্যের সুর ক্ষীণ হইলেও ব্রজাঙ্গনা কাব্যের মধ্যে অন্তর্গত হইয়াছে। বাঙ্গালা সাহিত্যে ওজোগুণসম্পন্ন কাব্য মধুসূদনের পরে আর রচিত হয় নাই ; মধুসূদনের মত আর কোন কবিই অমিতাক্ষর ছন্দ অতটা সাফল্যের সহিত ব্যবহার করিতে পারেন নাই। হিমালয়ের সর্বোচ্চ শিখরের মতই মধুসূদনের কাব্য বাঙ্গালায় উন্নতশীর্ষ এবং একাকী। মধুসূদনের প্রতিভার শ্রেষ্ঠদেব ইহাই প্রকৃষ্ট প্রমাণ।

মধুসূদনের পরবর্তী দুইজন কবি বচনার মধ্যে বিদেশী কাব্যশুলভ অনুভূতিপ্রধান দৃষ্টিভঙ্গীর প্রথম দেখা মিলিল। এই দুই কবি হইতেছেন বিহারীলাল চক্রবর্তী (১৮৩৫-১৮৯৪) এবং সুবেন্দ্রনাথ মজুমদার (১৮৩৮-১৮৭৮)। বিহারীলাল সংস্কৃত কলেজে শিক্ষালাভ করেন। ১২৬৫ সালে ইনি পূর্ণিমা পত্রিকা প্রকাশ করেন, ইহাতে ইহার কয়েকটি কবিতা বাহির হয়। তাহার পর ইনি অবোধবন্ধু পত্রিকা সম্পাদন করেন, ইহাতে বঙ্গসুন্দরী কাব্যের কিয়দংশ প্রকাশিত হয়। বিহারীলালের শ্রেষ্ঠ কাব্য সারদামঙ্গলের রচনা আরম্ভ হয় ১২৭৭ সালে, এবং ১২৮৩ সালে আর্ধ্যদর্শন পত্রিকায় খণ্ডশঃ প্রকাশিত হয়। ইহা ছাড়া বিহারীলাল বঙ্গসুন্দরী, সাধের আসন প্রভৃতি আবও কয়েকখানি কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। বিহারীলাল শব্দশিল্পী ছিলেন না ; ভাষাতেও যথেষ্ট শৈথিল্য ছিল, এবং কাব্যের প্লট তেমন ঘোরালো নহে। কিন্তু কবি-অনুভূতির স্বতঃস্ফূর্ত প্রকাশই বিহারীলালের কাব্যের অসাধারণতা। ছন্দের লঘুতা ও

লালিত্যেও কবি বেশ নূতন দেখাইয়াছেন। সান্নাইম্ অর্থাৎ বিরাটের মহিমা কবি হিমালয়ের বর্ণনায় যে ভাবে ফুটাইয়া তুলিয়াছেন তাহা চমৎকার। বিহারীলালের কাব্য সম্বন্ধে এই কথা বলিলেই যথেষ্ট হইবে যে, ইহা বাল্যকালে রবীন্দ্রনাথকে কাব্যচর্চায় প্রণোদিত করিয়াছিল। সুতরাং এই হিসাবে বালক রবীন্দ্রনাথ বিহারীলালের ভাবগত শিষ্য ছিলেন।

সুরেন্দ্রনাথ মজুমদারের প্রবন্ধ ও কবিতা বিবিধার্থ-সংগ্রহ প্রভৃতি বিবিধ পত্রিকায় প্রকাশিত হইত। কয়েকটি ছোটখাট কবিতা ছাড়া ইনি একখানি নাটক ও চারি-পাঁচখানি কাব্য রচনা করিয়াছিলেন। তাহার মধ্যে শ্রেষ্ঠ হইতেছে মহিলা কাব্য। এই কাব্য তিন অংশে বিভক্ত—উপহার, মাতা, ও জায়া। ভগিনী নামক চতুর্থ অংশেরও পত্তন করিয়াছিলেন, কিন্তু অল্প কয় ছত্রেব পর আর কবি লিখিবার সুযোগ পান নাই। মহিলা কাব্য রচনা ১২৭৮ সালে আরম্ভ হয়। প্রকাশিত হয় কবির মৃত্যুব পরে। সুরেন্দ্রনাথের প্রথম বড় কাব্য সবিভাসুদর্শন ১৭৭৫ সালে রচিত এবং ১২৭৭ সালে মুদ্রিত হইয়াছিল। সুরেন্দ্রনাথের কাব্যের সহিত বিহারীলালের কাব্যের একটা সাধর্ম্য আছে; উভয়ের কাব্যেই বর্ণনীয় বস্তুর বাহ্যরূপ অপেক্ষা কবিচিন্তে তাহা যে অনুভূতি বা প্রতিক্রিয়া জাগাইয়াছে তাহার মূল্যই বেশী। এই হৃদয়াবেগ বিহারীলালের কাব্যে যতটা বাহ্যবস্তুরনিরপেক্ষ সুরেন্দ্রনাথের কাব্যে ততটা নহে। কিন্তু পদলালিত্যে এবং ভাষার সৌর্ভবে সুরেন্দ্রনাথের রচনা বিহারীলালের লেখার অপেক্ষা উৎকৃষ্ট বলিতে হয়। বিহারীলালের কাব্যে বিদেশী কবির

প্রভাব নিতান্তই ক্ষীণ ; সুবেন্দ্রনাথের কাব্য সম্বন্ধে একথা সম্পূর্ণভাবে খাটে না ।

হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় কাব্যরচনায় বর্ণনাত্মক সাবেক রীতিবই অনুসরণ কবিয়াছিলেন । হেমচন্দ্রের জন্ম হয় ১২৪৫ সালে অর্থাৎ ১৮৩৮ খ্রীষ্টাব্দে ৬ই বৈশাখ এবং মৃত্যু হয় ১৩১০ সালে অর্থাৎ ১৯০৩ খ্রীষ্টাব্দে ১০ই জ্যৈষ্ঠ তাবিখে । ইহার জন্মস্থান হইতেছে হুগলী জেলায় বাজবলহাটের কাছে গুলটিয়া গ্রাম । কবি কলিকাতা হাইকোর্টে ওকালতী করিতেন । শেষ বয়সে অন্ধ হইয়া কষ্ট পাইয়াছিলেন ।

বিহারীলালের সম্পাদিত অবোধবন্ধু পত্রে হেমচন্দ্র কবিতা লিখিতেন । বঙ্গদর্শনেও ইহার বহু কবিতা প্রকাশিত হয় । ১৮৬১ সালে প্রথম কাব্য চিন্তাতরঙ্গিনী প্রকাশিত হয় । তাহার পৰ যথাক্রমে নলিনীবসন্ত নাটক (১৮৬৮), কবিতাবলী প্রথম ভাগ (১৮৭০) বৃহৎসংহার মহাকাব্য (প্রথম খণ্ড ১৮৭৫, দ্বিতীয় খণ্ড ১৮৭৭), কবিতাবলী দ্বিতীয় খণ্ড, ছায়াময়ী, দশমহাবিভা, বোমিও জুলিয়েট নাটক, এবং চিত্তবিকাশ প্রকাশিত হয় । নাটক দুইখানি যথাক্রমে শেক্সপীয়ার প্রণীত টেম্পেষ্ট ও বোমিও-জুলিয়েট অবলম্বনে রচিত । ইতালীয় কবি দান্তেব দিভিনা কোমেদিয়া কাব্যের ভাব অবলম্বনে ছায়াময়ী লেখা হয় । বৃহৎসংহার রচনার মূলে মেঘনাদবধের প্রেরণা ছিল । বীররস সর্বত্র জমিয়া না উঠিলেও বৃহৎসংহার যে বাঙ্গালা সাহিত্যের একখানি উৎকৃষ্ট কাব্য তাহা সকলকেই স্বীকার করিতে হইবে । হেমচন্দ্র খিলক্ষণ ছন্দোনিপুণ ছিলেন । কথ্যভাষায় লঘু ছন্দে সমসাময়িক ঘটনা অবলম্বনে কবি বহু সরস ও উপভোগ্য কবিতা

জিঞ্জিয়াছিলেন; এগুলি ঈশ্বচন্দ্র গুপ্তেব বচনাকে স্বৰণ কৰাইয়া দেয়। সৰ্বেৰূপবি, হেমচন্দ্রেব লেখায় স্বদেশপ্ৰীতি এবং স্বাধীনতাকামনা যতটা নিষ্কপটভাবে ফুটিয়াছে এমন আব কোন বাঙ্গালী কবিৰ কাব্যে প্ৰকাশ লাভ কৰে নাই।

হেমচন্দ্রেব অভ্যদযেব অল্পকাল মধ্যেই নবীনচন্দ্রেব (১৮৭৭-১৯০৯) আবিৰ্ভাব ঘটে। ইহাব জন্মস্থান চট্টগ্ৰাম জেলায় নয়াপাড়া গ্ৰাম। ইনি ডেপুটী কালেক্টৰী কাৰ্য্য কৰিতেন। নবীনচন্দ্র অনেকগুলি উৎকৃষ্ট কাব্য বচনা কৰিয়াছিলেন, তাহাব মধ্যে শ্ৰেষ্ঠ হইতেছে পলাশীৰ যুদ্ধ (১২৮২ সাল), এবং বৈবতক, কুকক্ষেত্ৰ, ও প্ৰভাস। শেষেব কাব্য তিনখানি প্ৰকৃতপ্ৰস্তাবে এক বিবাট কাব্যেব তিন স্বতন্ত্ৰ অংশ মাত্ৰ। এই তিন কাব্যে কবি অপূৰ্ব বল্লায্য শ্ৰীকষ্ণ-চবিত্ৰকে নূতনভাবে ফুটাইয়াছেন, কবিৰ মতে আৰ্য্য ও অনাৰ্য্য সংস্কৃতিৰ সংঘৰ্ষেব ফলেই কুকক্ষেত্ৰ যুদ্ধ সংঘটিত হয়, এবং আৰ্য্য-অনাৰ্য্য দুই সম্প্ৰদায়কে মিলিত কৰিয়া শ্ৰীকৃষ্ণ প্ৰেমৰাজ্য সংস্থাপন কৰেন। নবীনচন্দ্রেব কবিত্ব স্থানে স্থানে খুবই চমৎকাৰ, কিন্তু কবি এই চমৎকাৰিত্ব সৰ্বত্ৰ বজায় ৰাখিতে পাবেন নাই। এই কাৰণে কাব্যেব মধ্যে বাঁধুনী না থাকায় নবীনচন্দ্রেব কবিত্বেব ঠিকমত বিচাৰ কৰা কঠিন হইয়া পড়িয়াছে। নবীনচন্দ্র গদ্য বচনাতেও হাত দিয়াছিলেন; এই জাতীয় বচনাৰ মধ্যে তাহাব আত্মকথা—আমাৰ জীবন—সুপাঠ্য গ্ৰন্থ।।

বঙ্কিমচন্দ্র ও তাঁহার যুগ

নৈহাটীর নিকটে কাঁটালপাড়া গ্রামে ১৮৩৮ খ্রীষ্টাব্দে ২৭শে জুন তারিখে বঙ্কিমচন্দ্রের জন্ম হয়। বঙ্কিমচন্দ্রের চারি ভাই ছিলেন—শ্যামাচরণ, সঞ্জীবচন্দ্র, বঙ্কিমচন্দ্র ও পূর্ণচন্দ্র। ইহাদের পিতা যাদবচন্দ্র ডেপুটী কালেক্টার ছিলেন। বঙ্কিমচন্দ্র প্রধানতঃ হুগলী কলেজে শিক্ষালাভ করেন। ১৮৫৬ খ্রীষ্টাব্দে তিনি হুগলী কলেজ হইতে সিনিয়র স্কলারশিপ পরীক্ষা দেন এবং সর্বোচ্চ স্থান অধিকার করেন। তাহার পর কলিকাতায় প্রেসিডেন্সী কলেজের আইন বিভাগে ভর্তি হন। এইখান হইতে তিনি ১৮৫৭ খ্রীষ্টাব্দে এন্ট্রান্স এবং ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দে বি-এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন। বি-এ পরীক্ষায় তাঁহার সহিত যত্ননাথ বসুও উত্তীর্ণ হইয়াছিলেন। ইহারাই কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রথম বি-এ পাশ প্রাজুয়েট। ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দে বঙ্কিমচন্দ্র ডেপুটী কালেক্টারী চাকুরী পান এবং এগার বৎসর পরে ১৮৬৯ খ্রীষ্টাব্দে বি-এল পরীক্ষা দিয়া প্রথম বিভাগে উত্তীর্ণ হন।

হুগলী কলেজে পড়িবার সময় হইতেই বঙ্কিমচন্দ্রের সাহিত্যসাধনা শুরু হয়। প্রথম জীবনে তিনি ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্তের ধরণে কবিতা লিখিতেন; কয়েকটি কবিতা ১৮৫২ ও ১৮৫৩ খ্রীষ্টাব্দে সংবাদ-প্রভাকরে প্রকাশিত হইয়াছিল। বঙ্কিমচন্দ্রের প্রথম পুস্তক হইতেছে ললিতা ও মানস। এই দুইটি স্বতন্ত্র কাব্য একত্র ১৮৫৬ খ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত হয়।

কবিতা রচনায় বিশেষ কৃতকার্যতা না হওয়ায় বঙ্কিমচন্দ্র কাব্য-সাধনা ছাড়িয়া দেন, এবং কিছুদিনের জন্ত সাহিত্যচর্চাও বন্ধ রাখেন। তাহার পর তিনি উপন্যাস রচনায় হাত দেন। সে যুগের শিক্ষিত বাঙ্গালীর মত তিনি প্রথমে ইংরেজীতে হাত মক্‌স করিতে লাগিলেন। ১৮৫৯-৬০ খ্রীষ্টাব্দের দিকে তিনি বাজমোহনস্ ওয়াইফ্ নামে একখানি উপন্যাস রচনা করেন। উপন্যাসটি পরে ১৮৬৪ খ্রীষ্টাব্দে ইণ্ডিয়ান ফীল্ড্ নামক সাপ্তাহিক পত্রিকায় প্রকাশিত হইয়াছিল। ইংরেজীতে যতই দখল থাকুক না কেন বাঙ্গালীর মনেব ভাব বাঙ্গালাতেই সূচুভাবে প্রকাশ পায়। বিদেশী ভাষায় রচনা ভাল হইলে প্রশংসা পাওয়া যাইতে পারে, কিন্তু শ্রেষ্ঠ সাহিত্য রচনা করা যায় না। ইংরেজী উপন্যাস লিখিয়া বঙ্কিমচন্দ্র তৃপ্তিলাভ করিতে পারিলেন না বটে, কিন্তু তিনি বুঝিলেন যে তাঁহার প্রতিভা এতদিনে আপনার পথ খুঁজিয়া পাঠিয়াছে। তখন বঙ্কিমচন্দ্র বাঙ্গালায় উপন্যাস রচনা আরম্ভ করিলেন। ১৮৬৫ খ্রীষ্টাব্দে দুর্গেশনন্দিনী প্রকাশিত হওয়াব ফলে বাঙ্গালী পাঠকের সম্মুখে অকস্মাৎ এক অপূর্ব রসভাণ্ডার উন্মুক্ত হইল। তাহার পর ১৮৬৬ খ্রীষ্টাব্দে কপালকুণ্ডলা এবং ১৮৬৯ খ্রীষ্টাব্দে যুগলিনী বাহির হইল। ১২৭৯ সালে অর্থাৎ ১৮৭২ খ্রীষ্টাব্দে বঙ্কিমচন্দ্র বঙ্গদর্শন পত্রিকা বাহিব করিলেন। রবীন্দ্রনাথের কথায় বলিতে গেলে, বঙ্কিমের বঙ্গদর্শন বাঙ্গালীর হৃদয় একেবারে লুট করিয়া লইল। বঙ্গদর্শনের প্রথম চারিখণ্ড মাত্র বঙ্কিমচন্দ্র সম্পাদন করিয়াছিলেন, তাহার পর ইহার সম্পাদনের ভার পড়ে তাঁহার মধ্যম অগ্রজ সঞ্জীবচন্দ্রের উপর। বঙ্গদর্শনের পৃষ্ঠায় বঙ্কিমচন্দ্রের এই বইগুলি প্রকাশিত

হইয়াছিল— বিষবৃক্ষ (১১৭৯), ইন্দিরা (ঐ চৈত্র), যুগলাঙ্গুরীয় (১২৮০ বৈশাখ), সাম্য (১২৮০-৮১), চন্দ্রশেখর (ঐ), কমলাকান্তের দপ্তব (আরম্ভ ভাদ্র ১২৮০), কৃষ্ণচরিত্র (১২৮১ হইতে), রজনী (১২৮১-৮২), রাধাবাগী (কার্তিক-অগ্রহায়ণ ১২৮২), কৃষ্ণকান্তের উইল (১২৮২-৮৪), রাজসিংহ (১২৮৪-৮৫), মুচিরাম গুডেব জীবনচরিত (১২৮৭), আনন্দমঠ (১২৮৭-৮৯), দেবী-চৌধুরাণী (আরম্ভ পৌষ ১২৮৯, পুস্তকাকারে সম্পূর্ণ)। নবজীবন পত্রিকায় ধর্মতত্ত্ব (১৮৮৭ খ্রীষ্টাব্দ) এবং প্রচার পত্রিকায় সীতারাম (১৮৮৮ খ্রীষ্টাব্দ) প্রকাশিত হইয়াছিল। ইহাই বঙ্কিমের শেষ উপন্যাস। বঙ্গদর্শনে প্রকাশিত বঙ্কিমের অন্যান্য বচনা লোকবহুত্ব, বিবিধ প্রবন্ধ (দুই ভাগ) ইত্যাদিতে পুস্তক-আকারে প্রকাশিত হয়। ১৩০০ সালে অর্থাৎ ১৮৯৪ খ্রীষ্টাব্দে ৩০শে চৈত্র তারিখে বঙ্কিমচন্দ্র পরলোকগমন করেন।

ইংরেজী রোমান্সের অনুসরণে বঙ্কিমচন্দ্র বাঙ্গালায় যে উপন্যাস বচনার যুগ প্রবর্তন করিলেন আজিও সে যুগের অবসান হয় নাই। ইংবেজীর অনুসরণ হইলেও বঙ্কিমের উপন্যাস সম্পূর্ণ দেশী জিনিষ; 'ইহার পাত্র-পাত্রী, দেশ-কাল, ঘটনা-পরিবেশ সবই দেশী। গল্প শোনার বাসনা মানুষের মজ্জাগত; এতদিন বাঙ্গালী বিভাসুন্দর কাহিনী, আরব্য উপন্যাস, হাতেম তাই ইত্যাদি পড়িয়া গল্পে পিপাসা কথঞ্চিৎ মিটাইয়াছে। বঙ্কিমের উপন্যাসে বাঙ্গালীর নিজের ঘরের মানুষ অপরূপভাবে রূপায়িত হইয়া রোমাটিক স্বপ্নলোকের মধ্যে দেখা দিল; বাঙ্গালীর সাহিত্যপিপাসা চরিতার্থ হইল।

সেই হইতে বাঙ্গালী পাঠকের ভক্তহৃদয়-সিংহাসনে বঙ্কিম অক্ষয়ভাবে প্রতিষ্ঠিত হইলেন; আজ পর্য্যন্ত কোন লেখক এমন কি রবীন্দ্রনাথও, বাঙ্গালী পাঠকের হৃদয়রাজ্যে এমন অখণ্ড অধিকার লাভ করিতে পারেন নাই।

বাঙ্গালা গল্পের ভাষাও বঙ্কিমের হাতে পড়িয়া আরও লঘু এবং ব্যবহারযোগ্য হইয়া উঠিল। ছর্গেশনন্দিনী সম্পূর্ণভাবে বিদ্যাসাগরী রীতিতে লিখিত; কপালকুণ্ডলা এবং মৃণালিনীর ভাষাও মোটামুটি তাহাই। বঙ্গদর্শন প্রতিষ্ঠার সময় হইতেই বঙ্কিম কথ্যভাষার চণ্ড মিশাইয়া ও বাক্যের বহর কমাইয়া ছোট করিয়া ভাষাকে লঘু এবং অধিকতর সহজবোধ্য করিয়া তুলিলেন। ইহা বঙ্কিমের অগ্র্যতম প্রধান কৃতিত্ব।

উনবিংশ শতাব্দীর শেষভাগে ইংরেজীশিক্ষিত মনস্বী বাঙ্গালীর প্রধানতম প্রতিনিধি ছিলেন বঙ্কিমচন্দ্র। হিন্দু-ধর্মের প্রতি বিশ্বাসশীল এবং হিন্দু-সমাজের মধ্যে শ্রদ্ধাসম্পন্ন থাকিয়াও যে গোঁড়ামি-বর্জিতভাবে বৈজ্ঞানিক চিন্তাবৃত্তি লইয়া হিন্দুশাস্ত্রের সার্থক আলোচনা করা যাইতে পারে তাহা বঙ্কিমচন্দ্র তাঁহার কৃষ্ণচরিত্র, ধর্মতত্ত্ব—অতুলীন ইত্যাদি গ্রন্থে ও অন্যান্য প্রবন্ধে প্রতিপন্ন করিয়াছেন। সরসভাবে বিজ্ঞান ও সমাজতত্ত্ব বিষয়েও তিনি সার্থক আলোচনা করিয়াছেন। ভারতবর্ষের সভ্যতাকে জগতের সম্মুখে শ্রেষ্ঠ প্রতিপন্ন করিতে তিনি অত্যন্ত আগ্রহশীল ছিলেন। বঙ্গদর্শনের প্রকাশ হইতে মৃত্যুকাল পর্য্যন্ত বঙ্কিম বাঙ্গালা সাহিত্যের সুস্বদর্শী সমালোচকের আসনে বসিয়া রাজদণ্ড

পরিচালনা করিয়া গিয়াছেন। বাঙ্গালা সাহিত্যে এরূপ একাধিপত্য আর ঘটে নাই।

উপন্যাসরচনার ক্ষেত্রে ত বটেই, সাধারণ গল্প সাহিত্যেও বঙ্কিমের ধারা তাঁহার সমসাময়িক এবং পরবর্তী লেখকদিগের অধিকাংশই এড়াইতে পারেন নাই। এই কথা স্বরণ রাখিয়া এখন বঙ্কিমযুগের প্রধান সাহিত্যিকদিগের রচনা সম্বন্ধে সংক্ষেপে আলোচনা করা যাক।

বঙ্গদর্শনের লেখকদিগের মধ্যে বঙ্কিমচন্দ্রের প্রধান সহযোগী ছিলেন বাজকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায় (মৃত্যু ১২৯৩ সাল) এবং অক্ষয়চন্দ্র সরকার (১৮৪৬-১৯১৭)। দীনবন্ধু মিত্রও বঙ্গদর্শনে কিছু কিছু লেখা দিয়াছিলেন। বঙ্কিমের অগ্রজ সঞ্জীবচন্দ্র (১৮৩৪-১৮৮৯) গল্প এবং পালার্নো প্রভৃতি গল্প বচনাব যথেষ্ট মৌলিকতা আছে। লেখাব ভঙ্গী অত্যন্ত সরস; লেখকের সহানুভূতিও প্রগাঢ়। এই দুই মিলিয়া পালার্নো বইটি বাঙ্গালা সাহিত্যেব শ্রেষ্ঠ ভ্রমণকাহিনী হইয়াছে। অক্ষয়চন্দ্রও সরস গল্পরচনায় বিশেষ দক্ষতা দেখাইয়াছিলেন। ইহাব সম্পাদিত সাধারণী ও নবজীবন পত্রিকা একালে শিক্ষিতসমাজের মুখপত্র ছিল।

বঙ্কিমচন্দ্রের সমসাময়িক লেখকদিগের মধ্যে উপন্যাস বচনায় বমেশচন্দ্র দত্ত (১৮৪৮-১৯০৯) সবিশেষ কৃতকার্য হইয়াছিলেন। বঙ্কিমচন্দ্রের অনুরোধেই ইনি বাঙ্গালা উপন্যাস রচনায় প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন। বঙ্গবিজেতা (১২৮০ সাল) প্রভৃতি ঐতিহাসিক উপন্যাসগুলির অপেক্ষা ইহার সামাজিক উপন্যাস দুইটি—সংসার (১২৮২ সাল) এবং সমাজ (১৩০০ সাল)—অধিকতর উপাদেয়। দরিদ্র পল্লীগৃহস্থের সরল সুন্দর

চিত্র তারকনাথ গঙ্গোপাধ্যায়ের স্বর্ণলতা (জ্ঞানান্দুর পত্রিকায় ১২৭৯ সালে প্রকাশিত) ছাড়া আব কোন সমসাময়িক উপস্থানে দেখা যায় নাই।

ব্যঙ্গ ও রসরচনায় ইন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় (১৮৪৯-১৯১১) এবং তাঁহার পদাঙ্ক অনুসরণ করিয়া বঙ্গবাসী পত্রিকাব প্রতিষ্ঠাতা যোগেন্দ্রচন্দ্র বসু (১৮৫৫-১৯০৫) বিশেষ খ্যাতি লাভ করিয়াছিলেন। প্রবন্ধ রচনায় উল্লেখযোগ্য হইতেছেন কালীপ্রসন্ন ঘোষ (১২৫০ সাল-১৯১১ খ্রীষ্টাব্দ)। বঙ্কিম শিশুদিগেব সর্বকনিষ্ঠ হরপ্রসাদ শাস্ত্রী (১৮৫৩-১৯৩২) একজন বিশিষ্ট সুলেখক ছিলেন। ইহার অনবদ্য ঐতিহাসিক চিত্র বেণের মেয়ে (১৩২৬ সাল) পুস্তকে মধ্যযুগেব বাঙ্গালা ইতিহাসের এক অন্ধকারময় অংশে উজ্জ্বল আলোকপাত করা হইয়াছে। প্রবন্ধ ও ঐতিহাসিক গ্রন্থ রচনায় রজনীকান্ত গুপ্ত (১৮৪৯-১৯০০) বিশেষ কৃতিত্ব প্রদর্শন করিয়াছিলেন।

এই যুগেব কাব্যরচনার কথা পূর্বেই বলিয়াছি। নাটকরচয়িতাদের মধ্যে তিনটি নাম সমধিক উল্লেখযোগ্য—জ্যোতিরিন্দ্রনাথ ঠাকুর, গিরিশচন্দ্র ঘোষ এবং অমৃতলাল বসু। মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের চতুর্থ পুত্র, রবীন্দ্রনাথের অগ্রজ জ্যোতিরিন্দ্রনাথ একজন সুসাহিত্যিক ছিলেন। সঙ্গীত ও নাটক রচনায়, অভিনয়ে, সঙ্গীত বিদ্যায় ইহার অসাধারণ দক্ষতা ছিল। কাব্য ও সঙ্গীত রচনায় এবং সুরসৃষ্টিতে রবীন্দ্রনাথ ইহার নিকট সার্থক প্ররোচনা ও উৎসাহ পাইয়াছিলেন। জ্যোতিরিন্দ্রনাথ অনেকগুলি উৎকৃষ্ট নাটক ও প্রহসন রচনা করিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে কতকগুলি সংস্কৃতের অনুবাদ। ইহার প্রথম নাট্যরচনা কিঞ্চিৎ জলযোগ ১৮৭৩ খ্রীষ্টাব্দে

প্ৰকাশিত হয়, তাহাৰ পৰবৰ্ত্তম পুৰণিকৰ নাটক। জ্যোতিৰিন্দ্ৰনাথৰ বচিত অনেকগুলি নাটকেৰ অভিনয় সে সময়ে বিশেষ সমাদৃত হইয়াছিল। গিৰিশচন্দ্ৰ এবং অমৃতলালেৰ কথা পৰে বলিতেছি।

উনবিংশ শতাব্দীৰ প্ৰথমভাগ হইতেই জোড়াসাঁকোৰ ঠাকুৰ-বাড়ী শিক্ষা দীক্ষায় ও ঐশ্বৰ্য্য-বদান্ততায় কলিকাতাৰ সম্ভ্ৰান্ত সমাজেৰ শীৰ্ষস্থানীয় হন। ঐশ্বৰ্য্যেৰ ও ভোগবিলাসেৰ আভ্যুদয়েৰ জন্ম এই বাড়ীৰ প্ৰতিষ্ঠাতা ছাবকানাথ ঠাকুৰ “প্ৰিন্স” নামে বিখ্যাত ছিলেন। ইনি দুইবাৰ বিলাত যান, ১৮৪২ এবং ১৮৬৫ খ্ৰীষ্টাব্দে। পৰ বৰ্ত্তম বিলাতেই ইহাৰ মৃত্যু হয়। ইহাৰ জ্যেষ্ঠপুত্ৰ দেবেন্দ্ৰনাথ অসাধাৰণ পুৰুষ ছিলেন। তাহাৰ আধ্যাত্মিকতা যেমন গভীৰ ছিল, সাংসাৰিক বুদ্ধি, দৃঢ়চিত্ততা ও দৃবদৰ্শিতা তেমনই প্ৰবল ছিল। দেশেৰ লোকে শ্ৰদ্ধা কৰিয়া তাঁহাকে “মহৰ্ষি” আখ্যা দিয়াছিল। দেবেন্দ্ৰনাথ সেকালেৰ ব্ৰাহ্মসমাজেৰ মূলস্তম্ভ ছিলেন বলিলে অতুক্তি হয় না। সমাজসংস্কাৰ কাৰ্য্যে ইহাৰ প্ৰবল আগ্ৰহ ও উদ্যোগ ছিল, কিন্তু তাই বলিয়া প্ৰাচীন আচাৰবাবহাবেৰ মধ্যে যেগুলি ভাল তাহা পৰিত্যাগ কৰিতে প্ৰস্তুত ছিলেন না। এই কাৰণে অতিমাত্ৰায় প্ৰগতিশীল ব্ৰাহ্মগণ স্বতন্ত্ৰ হইয়া সাধাৰণ ব্ৰাহ্মসমাজ গঠন কৰিল, দেবেন্দ্ৰনাথেৰ সমাজ তখন আদি ব্ৰাহ্মসমাজ বলিয়া পৰিচিত হইল।

দেবেন্দ্ৰনাথেৰ অনেকগুলি পুত্ৰ কন্যা হইয়াছিল, ইহাৰ সকলেই প্ৰতিভাসম্পন্ন ছিলেন। জ্যেষ্ঠপুত্ৰ বিজেন্দ্ৰনাথ একাধাৰে কবি এবং দাৰ্শনিক ছিলেন। ইহাৰ স্বপ্নপ্ৰয়াণ কাব্য বাঙ্গালা সাহিত্যে অপূৰ্ব। উচ্চ দৰ্শন-কথা সবল

বাঙ্গালায় ব্যাখ্যা কবিত্তে দ্বিজেন্দ্রনাথ অদ্বিতীয় ছিলেন। দেবেন্দ্রনাথের মধ্যমপুত্র সত্যেন্দ্রনাথ ছিলেন ভাবতবর্ষীয়দিগের মধ্যে প্রথম সিভিলিয়ান। ইনিও সুসাহিত্যিক ছিলেন। চতুর্থ পুত্র জ্যোতিবিন্দ্রনাথের কথা পূর্বে বলিয়াছি। ইহঁদের নানামুখী প্রতিভা ছিল, নাটকবচনা ইহঁতে চিত্রাঙ্কন প্রভৃতি নানা বিষয়ে ইনি সমান দক্ষতা দেখাইয়াছিলেন। ববীন্দ্রনাথের সঙ্গীত ও সাহিত্যচর্চায় মূলে ইহঁদেরই প্রেৰণা ছিল। দেবেন্দ্রনাথের তৃতীয় কন্যা স্বর্ণকুমারী দেবী বাঙ্গালী মহিলা সাহিত্যিকদিগের মধ্যে সৰ্ব্বপ্রথম ও সৰ্ব্বশ্রেষ্ঠ। ইনি অনেক ভাল উপাখ্যাস, গল্প, নাট্যকাহিনী ইত্যাদি বচনা কবিয়াছেন, দীৰ্ঘকাল যাবৎ ভাবতী পত্রিক। যোগ্যভাবে সচিত্র সম্পাদন কবিয়াছিলেন। ঋনিষ্ঠ পুত্র ববীন্দ্রনাথের মত এত বড় সাহিত্যপ্রতিভা আজ পর্য্যন্ত জগতে খুব কমই আবির্ভূত হইয়াছে। দেবেন্দ্রনাথের পৌত্রদের মধ্যে সুসাহিত্যিক ছিলেন সুধীন্দ্রনাথ ও বলেন্দ্রনাথ। অল্প বয়সে মৃত্যু না ঘটিলে বলেন্দ্রনাথের লেখনীদ্বারা বাঙ্গালা সাহিত্যের ঐশ্বর্য্যাবৃদ্ধি হইত। প্রপৌত্র দীনেন্দ্রনাথ ছিলেন উচ্চশ্রেণীর সঙ্গীতজ্ঞ এবং সুবসন্ত। ববীন্দ্রনাথের অনেক গানের শ্রব দীনেন্দ্রনাথের সৃষ্টি। দেবেন্দ্রনাথের ভ্রাতুষ্পৌত্র গগনেন্দ্রনাথ ও অবনীন্দ্রনাথ চিত্রকলায় নবযুগের অবতারণা কবিয়াছেন। আধুনিক ভাবতীয় চিত্রশিল্পধারার প্রবর্তক ও আদিগুরু অবনীন্দ্রনাথ বাঙ্গালা গল্পের এক নূতন ভঙ্গী সৃষ্টি কবিয়াছেন। ফল কথা, ঠাকুর বাডীকে কেন্দ্র কবিয়া ঊনবিংশ শতাব্দীর শেষভাগে বাঙ্গালা দেশের সাহিত্য, সঙ্গীত এবং শিল্পকলা নবীন প্রেৰণায় বিচিত্রভাবে পল্লবিত হইয়া উঠিয়াছে এবং

আধুনিক ভারতের জাতীয় সংস্কৃতির উদ্বোধনে অপরিসীম সহায়তা করিয়াছে।

৩২

বাঙ্গালা নাটকের মধ্যযুগ : গিরিশচন্দ্র ও তাহার সহকর্মীগণ

বাঙ্গালা নাট্য-সাহিত্যে গিরিশচন্দ্র ঘোষের (১৮৭৭-১৯১১) অভূদয় ঘটে উনবিংশ শতাব্দীর অষ্টম দশকে। ইহার মত উর্ব্বা লেখনী চালনা কবিতে বাঙ্গালা সাহিত্যে থুব কম লেখকই সমর্থ হইয়াছেন। ইনি সবসময়ে প্রায় আশীখানা নাট্যগ্রন্থ বচনা কবিয়া গিয়াছেন।

গিরিশচন্দ্র বাঙ্গালা সাহিত্যেব শ্রেষ্ঠ কৃতি নাট্যকার। ইহার নাটক সংস্কৃত অথবা ঐংবেঙ্গী নাটকের অনুকরণ বা অনুসরণ নহে। বাঙ্গালীর জাতীয় প্রবণতার প্রতি লক্ষ্য রাখিয়া ইনি স্বতন্ত্র প্রথায় সাহিত্য সৃষ্টি করিয়া গিয়াছেন। বাঙ্গালীর মন রামায়ণ-মহাভারত-পুরাণকাহিনীর রসে চিরদিনই পরম তৃপ্তি লাভ করিয়া আসিয়াছে। শুধু বাঙ্গালীর মন কেন, নিখিল ভাবতবষের অন্তরাত্মা যুগে যুগে পুরাণকাহিনীর আদর্শচরিত্রের ছবি-প্রতিচ্ছবি কাব্যে নাটকে প্রতিনিয়িত করিয়া আসিয়াছে। গিরিশচন্দ্রের পৌরাণিক নাট্যগ্রন্থগুলির মধ্যে পুরাণবর্ণিত অনেকগুলি আদর্শচরিত্র: অপূর্বভাবে উপস্থাপিত হইয়াছে।

শুধু পৌরাণিক কাহিনীতে নহে, গিরিশচন্দ্র কতিপয় গার্হস্থ্য চিত্রের এবং বীররসাস্রিত ঐতিহাসিক উপাখ্যানেরও

অন্যসাধারণ নাট্যরূপ দিয়া গিয়াছেন। ইহার শ্রেষ্ঠ নাটকগুলির মধ্যে অন্যতম হইতেছে—জনা, পাণ্ডবের অজ্ঞাত-বাস, চৈতন্যলীলা, বিশ্বমঙ্গল, প্রফুল্ল ইত্যাদি।

বাঙ্গালীর মন ভক্তি ও করুণ রসে যত সহজে আদ্র হয়, এমন আব কিছুতেই নহে। এই দুই রসের সৃষ্টিতে গির্বিশচন্দ্র বিশেষ নিপুণত। দেখাইয়া গিয়াছেন। তাঁহার আশীখানি নাটক-নাটিকা-গীতিনাটো সাত-আট শতাব্দে উপর বিভিন্ন চবিত্র সৃষ্টি কবিত্তে হইয়াছে। কিন্তু বিশ্বয়ের বিষয় এই যে, এতগুলি বিভিন্ন চবিত্রের প্রায় অনেকগুলিই নিজ নিজ বিশেষত্বে ও স্বাতন্ত্র্যে উজ্জল হইয়া ফুটিয়া উঠিয়াছে। গির্বিশচন্দ্র মধ্যবিও বাঙ্গালী ঘরের সন্তান; গ্রীক-ট্রাজেডি লেখকগণের অথবা শেক্সপীয়রের দবেব নাট্যকার তাঁহাকে বলা চলে না; তাঁহার জীবনের অভিজ্ঞতা এবং পারিপার্শ্বিক অনেকটা সঙ্গীর্ণ ছিল।

আমাদের দেশে নাট্যকাবকে কবি বলা হয় না, স্মুতরাং সাধারণ পাঠকে গির্বিশচন্দ্রকে কবি বলিয়া জানেন না। তিনি বিশেষ কিছু কাব্যও বচনা কবেন নাই। কিন্তু গান বচনা করিয়াছিলেন অজস্র। গির্বিশচন্দ্রের অনেকগুলি গান চমৎকাব।

গির্বিশচন্দ্র শুধুই যে বাঙ্গালার অন্যতম শ্রেষ্ঠ নাট্যকার ছিলেন তাহা নহে, তিনি বাঙ্গালার একজন শ্রেষ্ঠ অভিনেতাও বটেন। সম্পূর্ণ পৃথক্ শ্রেণীর প্রতিভাব একপ সমাবেশ বা মণিকাঞ্চনযোগ সকল দেশেই দুর্লভ।

আমাদের দেশে সাধারণ নাট্যশালা, অর্থাৎ যাহা অবৈতনিক বা সখের থিয়েটার নহে, তাহার প্রতিষ্ঠায়

বাঙ্গালার দুইটি শ্রেষ্ঠ নাট্যপ্রতিভা পরস্পর সহযোগিতা করিয়াছিলেন। এই দুইজন হইতেছেন গিরিশচন্দ্র এবং অমৃতলাল বসু (১৮৫৩-১৯২৯)। অমৃতলালও ছিলেন একাধারে সুদক্ষ অভিনেতা এবং যশস্বী নাট্যকার। সরস রচনায় অমৃতলালেব জুড়ি নাই। ইহার নাট্যগ্রন্থগুলি প্রায়ই লঘুধবণের, হাস্যরসবহুল। গদ্য ব্যঙ্গরচনায়, গল্প এবং নক্শায় অমৃতলাল বিশেষ দক্ষতা দেখাইয়াছেন। বিবাহ-বিভ্রাট, তরুণালা ইত্যাদি গ্রন্থ অমৃতলালের শ্রেষ্ঠ রচনা।

এই যুগের নাট্যকারদিগের মধ্যে গিরিশচন্দ্র এবং অমৃতলালের পরেই বিহারীলাল চট্টোপাধ্যায় এবং রাজকৃষ্ণ রায়ের নাম করিতে হয়। রাজকৃষ্ণ অজস্র গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন—কাব্য, উপন্যাস এবং নাটক। ইহার কয়েকটি নাটক রঙ্গমঞ্চে বিশেষ সাফল্যের সহিত অভিনীত হইয়াছিল।

পববর্তী কালের নাট্যকারদিগের মধ্যে দুইজন বিশেষ উল্লেখযোগ্য। ক্ষীরোদপ্রসাদ বিদ্যাবিনোদ (মৃত্যু ১৩৩৪ সাল) অনেকগুলি উৎকৃষ্ট নাটক এবং উপন্যাস রচনা করিয়াছিলেন। ইহার গীতিনাট্য আলিবাণ। বাঙ্গালা রঙ্গমঞ্চে চিরনবীন রহিয়াছে। দ্বিজেন্দ্রলাল ঐয় কবি এবং নাট্যকার হিসাবে খ্যাতিলাভ করিয়াছিলেন। অভিনয়ে ভাল উৎরাইলেও ইহার নাটকগুলি নাটক হিসাবে প্রাণহীন। কবি এবং নাট্যকার হিসাবে যত না হউক হাসির গান রচয়িতা বলিয়া দ্বিজেন্দ্রলাল বাঙ্গালা সাহিত্যে অমর হইয়া থাকিবেন।

ববীন্দ্রনাথ

১২৬৮ সালে অর্থাৎ ১৮৬১ খ্রীষ্টাব্দে ২৫শে বৈশাখ তারিখে কলিকাতা জোড়াসাঁকোয় শ্রীযুক্ত ববীন্দ্রনাথ ঠাকুরের জন্ম হয়। বাল্যকালে গৃহে শিক্ষকদিগের নিকট এবং পরে নিজে পড়াশুনা কবিয়া ইনি বাঙ্গালা, ইংরেজী এবং সংস্কৃত ভাষায় ব্যাপন্ন হন। বিদ্যালয়ে পড়িবার সুযোগ তাঁহার হয় নাই বলিলেই হয়। সতেরো বৎসর বয়সে বিলাতে গিয়া লণ্ডন ইউনিভার্সিটি কলেজে অল্পকাল মাত্র অধ্যয়ন কবিয়া ছিলেন। বাঙ্গালা, ইংরেজী এবং সংস্কৃত সাহিত্য ছাড়া ইনি বিজ্ঞান ও ভাষাবিজ্ঞান শাস্ত্রেও চর্চা কবিয়াছিলেন। বাল্যকাল হইতেই ইনি সাহিত্যসাধনায় হাত দেন। নিজের সাহিত্য-চর্চার গোড়ার কথা ববীন্দ্রনাথ জীবনস্মৃতি পুস্তকে বলিয়াছেন।

বারো তের বৎসর বয়স হইতেই ববীন্দ্রনাথ গল্প পড়া বচনা আৰম্ভ করেন। ববীন্দ্রনাথের প্রথম কাব্য গ্রন্থ বনফুল ১২৮২ সালে জ্ঞানাস্কুর পত্রিকায় এবং ১২৮৬ সালে পুস্তকাকারে প্রকাশিত হইয়াছিল। তাঁহার প্রথম গল্প প্রবন্ধ (সমালোচনা) — ভূবনমোহিনী প্রতিভা, অবসরসবোজিনী ও দুঃখসঙ্গিনী — প্রকাশিত হয় জ্ঞানাস্কুরে ১২৮৩ সালে। বনফুলের পর বচিত হইলেও ববীন্দ্রনাথের দ্বিতীয় কাব্য কবিকাহিনী ১২৮৬ সালে বনফুলের পূর্বেই প্রকাশিত হয়। ১২৮৪ সালের আশ্বিন মাসে দ্বিজেন্দ্রনাথ ভাবতী পত্রিকা বাহির কবিলেন।

ভারতী পত্রিকার আসরে কবি জাঁকাইয়া বসিলেন ; ইহাতে রবীন্দ্রনাথের গদ্য পদ্য বহু রচনা বাহির হইতে লাগিল । সকল রচনার পরিচয় দিতে গেলে স্বতন্ত্র বই লিখিতে হয়, সুতরাং ইহার পর প্রধান প্রধান কাব্য ও অগ্ৰাণ্য রচনার কথাই বলিব । ভারতী পত্রিকার প্রথম বর্ষে রবীন্দ্রনাথ বিদ্যাপতি, গোবিন্দদাস প্রভৃতি বৈষ্ণব কবিদিগের অনুকরণে কয়েকটি ব্রজবুলি পদ রচনা করিয়া ভানুসিংহ ঠাকুরের পদাবলী নামে প্রকাশ করেন । বাল্যের রচনা হইলেও অনেকগুলি পদ চমৎকার ; বাল্যের রচনাব প্রতি কবি যথেষ্ট নিশ্চয়তা দেখাইলেও ভানুসিংহ ঠাকুরের কয়েকটি কবিতার প্রতি উদাসীন হইতে পারেন নাই । এইগুলিই রবীন্দ্রনাথের প্রথম গীতিকবিতা । বাঙ্গালা সাহিত্যের মূল স্তর গীতিকাব্য, যাহা জয়দেব হইতে আরম্ভ করিয়া বৈষ্ণব পদাবলীর মধ্য দিয়া আবহমান কাল চলিয়া আসিয়াছে, এবং যাহা রবীন্দ্রনাথের রচনার মধ্যে নূতন প্রেরণা এবং অপূর্ব রূপায়ন লাভ করিল, ভানুসিংহ ঠাকুরের পদগুলির মধ্যে তাহারই আগমনী প্রতিধ্বনিত হইয়া উঠিল । ইহার পর রবীন্দ্রনাথের প্রথম গীতিনাট্য বাঙ্গালীকিপ্রতিভা রচিত হয় । ১৮৮২ খ্রীষ্টাব্দে সঙ্কাসঙ্গীত প্রকাশিত হইল ; এই কাব্যের রচনায় রবীন্দ্রনাথের নিজস্ব বিশিষ্টতা সর্বপ্রথম পরিলক্ষিত হইল । এই হইতে কবি আখ্যায়িকাকাব্য-রচনা ছাড়িয়া দিলেন । তরুণ কবির অপরিণত লেখনীর সৃষ্টি হইলেও কাব্যটির প্রতি সমজ্ঞার সাহিত্যিকগণের দৃষ্টি আকৃষ্ট হইতে বিলম্ব হয় নাই ; কবি বঙ্কিমচন্দ্রের নিকট সংবর্দ্ধনা লাভ করিলেন । প্রথম ও দ্বিতীয় বর্ষের ভারতীতে (১২৮৪-৮৫) রবীন্দ্রনাথের

প্রথম উপন্যাস করুণা প্রকাশিত হয়। অত্যন্ত কাঁচা লেখা বলিয়া এটি আর পুনর্মুদ্রিত হয় নাই। দ্বিতীয় উপন্যাস বোঁঠাকুরাণীর হাট রচনার সময় গদ্য রচনায় কবির হাত পাকিয়াছে। বোঁঠাকুরাণীর হাট পুস্তকাকারে প্রকাশিত হয় ১২১০ সালে। ইতিমধ্যে কাব্যরচনায় কবির উত্তরোত্তর প্রতিভা ফুরণ হইতেছে। কড়ি ও কোমল কাব্য (১২১৩) হৃদয়াবেগের অক্ষুটতা কাটিয়া গিয়াছে, ভাব সুনির্দিষ্ট এবং ভাষা ও ছন্দ সংযত হইয়া উঠিয়াছে। তাহার পরে মানসী কাব্য (১২১৭) কবির প্রতিভা ক্ষুট বিকাশ লাভ করিয়াছে। কবির তখন পূর্ণ যৌবন, সেই জন্ত প্রেমের কবিতাগুলিই মানসীর মধ্যে বিশিষ্ট স্থান অধিকার করিয়াছে। তাহার পর নাট্যকাব্য চিত্রাঙ্গদা রচিত হয়; ইহারও মূল সুর মারীপ্রেম। তাহার পরে প্রকাশিত সোণার তরী কাব্য ১২১৮ সালের শেষ হইতে ১৩০০ সালের মধ্যভাগে রচিত কবিতাগুলি প্রকাশিত হয়। ১২১৮ সালের অগ্রহায়ণ মাসে কবি ভ্রাতৃপুত্র সুধীন্দ্রনাথের সম্পাদকতায় সাধনা পত্রিকা বাহির করিলেন। রবীন্দ্রপ্রতিভা তখন মধ্যাহ্ন-গগনে; কবিতায় গানে, গল্পে প্রবন্ধে, রবীন্দ্রনাথের প্রতিভা সৃষ্টির প্রাচুর্যে অজস্রধারে উৎসারিত হইতে লাগিল; সাধনার পৃষ্ঠায় পৃষ্ঠায় রবীন্দ্রনাথ গদ্যপদ্যের জুড়ি হাঁকাইতে লাগিলেন।

১২১৮ সালে রবীন্দ্রনাথ আধুনিক বাঙ্গালা সাহিত্যের এক নূতন এবং প্রধান ধারার সৃষ্টি করিলেন ছোট গল্প রচনা করিয়া; এই ছোট গল্পের ধারা এখনকার দিনে বাঙ্গালা সাহিত্যে প্রবল বেগে বহিতেছে, এবং একাধিক প্রতিভাবান

লেখক ছোট গল্পের মধ্য দিয়া প্রথম শ্রেণীর সাহিত্য সৃষ্টি করিয়াছেন এবং করিতেছেন। রবীন্দ্রনাথ ছোট গল্প লেখায় হাত দিবার আগে বঙ্কিমচন্দ্র, সঞ্জীবচন্দ্র প্রভৃতি দুই একজন সাহিত্যিক গল্প লিখিয়াছিলেন বটে, কিন্তু তাহা ক্ষুদ্র উপন্যাস বা “বড় গল্প” জাতীয় রচনা, ছোট গল্প—ইংরেজীতে যাহাকে বলে শর্ট স্টোরি তাহা নহে। বাঙ্গালায় ছোট গল্পের প্রবর্তন রবীন্দ্রনাথেরই কীর্তি, এবং তাহার ছোট গল্প আজিও বাঙ্গালা সাহিত্য ক্ষেত্রে অপরাজিত রহিয়াছে। যথার্থ কথা বলিতে কি, রবীন্দ্রনাথ জগতের শ্রেষ্ঠ ছোট গল্প রচয়িতাদের অন্ততম। রবীন্দ্রনাথের প্রথম ছয়টি ছোট গল্প প্রকাশিত হয় হিতবাদী পত্রিকায়। তাহার পর সাধনা পত্রিকা প্রতিষ্ঠিত হইলে তাহাতে প্রত্যেক মাসে ছোট গল্প প্রকাশিত হইতে থাকে। চারি বৎসর পরে সাধনা উঠিয়া গেলে ভারতী পত্রিকায়, এবং পরে বঙ্গদর্শন (নব পর্যায়) এবং প্রবাসী পত্রিকায়, এবং আরও পরে সবুজপত্রের রবীন্দ্রনাথের বহু ছোট গল্প প্রকাশিত হইতে থাকে।

সোনার তরীর সময় হইতে রবীন্দ্রনাথের কাব্যে একটা বুদ্ধিমূলক আধ্যাত্মিক ভাবের সৃচনা হইল। কবির কাব্যপ্রেরণার মূলে যিনি আছেন তিনিই যেন কবিকে জন্মজন্মান্তরের মধ্য দিয়া পথ দেখাইয়া লইয়া যাইতেছেন এবং তিনিই কবির সকল কামনার মূলে রহিয়াছেন, এমন একটা ভাব সোনার তরীর কয়েকটি কবিতার মধ্যে প্রথম দেখা গেল। চিত্রা, চৈতালি, কল্পনা প্রভৃতি পরবর্তী কাব্যগুলিতে এই ভাব ফুটতর হইয়া উঠিল। মানসী হইতে কল্পনা পর্য্যন্ত এই যুগ রবীন্দ্রকাব্যের শিল্পনৈপুণ্যের যুগ বলা যাইতে পারে। ছন্দের বৈচিত্র্য

অলঙ্কাৰেৰ ঐশ্বৰ্য্যে ভাবেৰ সমাবোহে এই যুগেৰ অনেকগুলি কবিতাব তুলনা মিলে না। গদ্যেও তাহাই দেখি; এই সময়ে লেখা গল্পে ও প্ৰবন্ধে ববীন্দ্ৰনাথ বিচিত্ৰভঙ্গীতে ভাষাব ইন্দ্ৰজাল বচনা কৰিয়াছে। গদ্যও পদ্যেৰ মত সুসমায়ুক্ত এবং ছন্দোময় হইয়া উঠিযাছে।

ক্ষণিকা কাব্যে (১৯০০) ববীন্দ্ৰনাথ সুৰ বদলাইলেন। ভাষাব ও অলঙ্কাৰেৰ আড়ম্বৰ একেবাবে কমিয়া গেল, কবি নিজেৰ মনে যে এক অপূৰ্ব মূৰ্ত্তিৰ আনন্দ উপলব্ধি কৰিয়াছিলেন তাহাই সহজ ভাষায় হালকা সুৰে অনবচ্ছাদে প্ৰকাশ কৰিতে লাগিলেন। এই কাব্যেৰই শেষে যে দুইটি কবিতা আছে তাহাতে কবিৰ আধ্যাত্মিক ব্যাকুলতাৰ প্ৰথম প্ৰকাশ দেখা গেল। এ আধ্যাত্মিক ভাব সোনাৰ তবীৰ যুগেৰ বুদ্ধিমূলক আধ্যাত্মিকতা নহে। এই ভাবেৰ মূলে আছে ভক্তি, ঈশ্বৰপ্ৰেম। পৰবৰ্ত্তী কালেৰ অধিকাংশ কাব্যে, বিশেষ কৰিয়া গীতাঞ্জলিৰ কবিতা ও গানগুলিৰ মধ্য এই সজ্জিতাৰ বিশেষভাবে প্ৰকাশ পাইযাছে। ক্ষণিকাৰ আধ্যাত্মিক ভাব খেয়া (১৯০৬) কাব্যে আৰও সুপৰিস্ফুট হইয়া উঠিল। তাহাৰ পৰ গীতাঞ্জলি (১৯১০)। এইটি ববীন্দ্ৰনাথেৰ শ্ৰেষ্ঠ কাব্য না হইলেও ইংৰাজীতে অনূদিত হইয়া নোবেল পুৰস্কাৰ প্ৰাপ্ত হওয়ায় সৰ্ব্বাপেক্ষা বিখ্যাত হইয়াছে। পৃথিবীৰ প্ৰায় সকল শ্ৰেষ্ঠ ভাষাতেই গীতাঞ্জলিৰ অনুবাদ প্ৰকাশিত হইয়াছে।

তৃতীয় উপন্যাস বাজৰি (১৯২৩) বচনাৰ পৰ ববীন্দ্ৰনাথ বহুকাল উপন্যাস বচনায় হাত দেন নাই। ১৯১৮ হইতে ১৯০৮ সাল পৰ্য্যন্ত এই সময়টা গুচে ববীন্দ্ৰনাথেৰ ছোট গল্প

ও প্রবন্ধ রচনার যুগ বলা যাইতে পারে। এইগুলি প্রধানতঃ হিতবাদীতে, সাধনায় এবং ভারতীতে প্রকাশিত হইয়াছিল। ১৩০৮ সালে কবি বঙ্গদর্শন নব-পর্যায়ের সম্পাদনভার গ্রহণ করেন, এবং ১৩১৩ সালে তাহা পরিত্যাগ করেন। এই সময়ে তাহার চতুর্থ ও পঞ্চম উপন্যাস—চোখের বালি এবং নোকাডুবি—বঙ্গদর্শনে প্রকাশিত হয়। উপন্যাস রচনার মধ্যে এখন যে ভঙ্গী চলিতেছে তাহার সূত্রপাত চোখের বালিতে। ষষ্ঠ এবং শ্রেষ্ঠ উপন্যাস গোরা প্রথম প্রকাশিত হয় প্রবাসী পত্রিকায় (১৩১৪-১৬)। গোরার ভাষা পূর্বের অপেক্ষা অনেকটা হালকা ছাঁদের। তাহার পর প্রবাসীতে (১৩১৮-১৯) কবির জীবনস্মৃতি বাহির হইল। ইহার ভাষা গোরার ভাষা হইতে আরও আড়ম্বরবর্জিত, আরও সুমধুর। জীবনস্মৃতি রবীন্দ্রনাথের শ্রেষ্ঠ গদ্য গ্রন্থ। ইহার পর হইতে রবীন্দ্রনাথের কাব্যজীবনের এক নূতন পরিচ্ছেদ আরম্ভ হইল। ভক্তিমূলক আধ্যাত্মিক কবিতারচনার সঙ্গে সঙ্গে তিনি সিঁড়িভাঙ্গা পয়ার ছন্দে বর্ণনাত্মক ও চিন্তামূলক কবিতা রচনা করিতে লাগিলেন; অনেকটা যেন সোনার তবীর যুগের পুনরাবৃত্তি ঘটিল। কথ্যভাষার ছাঁদে তিনি অনেকগুলি গল্প এবং একটি উপন্যাসও রচনা করিলেন। উপন্যাসটির নাম ঘরে বাইরে। এ যুগের অধিকাংশ লেখা শ্রীযুক্ত প্রমথ চৌধুরী সম্পাদিত সবুজপত্রে প্রকাশিত হইয়াছিল (১৩২১ হইতে)। ইহার পরেও রবীন্দ্রনাথের অনেকগুলি উপন্যাস বা বড় গল্প প্রকাশিত হইয়াছে, তাহার মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছে যোগাযোগ এবং শেষের কবিতা। সবুজপত্রের শ্রেষ্ঠ কবিতাগুলি বলাকা কাব্যে গ্রথিত হইয়াছে। ভাবের ঐশ্বর্য্যে এবং শিল্পনৈপুণ্যে

বলাকা ববীন্দ্রনাথের শ্রেষ্ঠ কাব্যগুলির অন্যতম। ইহাব পবে যে সকল কাব্যগ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছে তাহাব মধ্যে উল্লেখযোগ্য হইতেছে পলাতকা, পূববী, প্রবাহিনী, শিশু ভোলানাথ, ইত্যাদি। কাব্যবচনায ববীন্দ্রনাথ এ যাবৎ বহু নূতন নূতন ভাব ও ঢঙের সৃষ্টি কবিয়া আসিয়াছেন। সম্প্রতি তিনি “গল্প” কবিতাব প্রবণন কবিয়াছেন; এই শ্রেণীৰ বচনায় মিল এব সুনির্দিষ্ট যতিবিভাগ নাই, গল্পকে পড়েৰ মত সাজাইয়া পড়িলে যেমন হয় তাহাই। ইহাকে ঠিক কবিতা বলা চলে কিনা সন্দেহ। সত্ত্বঃপ্রকাশিত প্রান্তিক কাব্যে ও মাসিক পত্রিকায প্রকাশিত নূতন কবিতাগুলিতে দেখা যাইতেছে যে, ববীন্দ্রনাথ “গল্পকবিতা” বচনাব মোহ কাটাইয়া উঠিতেছেন।

১৯১৩ খ্রীষ্টাব্দে গীতাঞ্জলিৰ ইংবেজী অনুবাদেৰ জন্ম ববীন্দ্রনাথকে সাহিত্যেৰ নোবেল প্রাইজ দেওয়া হয়। এখনকাৰ দিনে সাহিত্যিক এবং বৈজ্ঞানিকেৰ পক্ষে এই পুৰস্কাৰপ্রাপ্তি সৰ্ব্বশ্রেষ্ঠ সম্মান। ইহাব কিছু পূৰ্বে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় ইহাতে “ডক্টৰ অব্ লিটারেচাৰ” উপাধি প্রদান কবেন। তাহাব পৰ দেশে বিদেশে—বিশেষ কবিয়া ইউৰোপে—ইনি সেক্ষপ অভূতপূৰ্ব সম্মানলাভ কবিয়াছেন তাহ। আৰ কোনও দেশেৰ কোনও কবিৰ অদৃষ্টে ঘটে নাই। আধুনিক জগৎ ববীন্দ্রনাথকে শুধু শ্রেষ্ঠ কবি বলিয়াই সম্মান কৰে না, জ্ঞানগুরু আচার্য্য বলিয়াও শ্রদ্ধা কবিয়া থাকে।

বাঙ্গালা কাব্যে ববীন্দ্রনাথ যে নূতন খ্রী আনয়ন কবিয়াছেন তাহাতে বাঙ্গালা সাহিত্যেৰ রূপ একেবাবে বদলাইয়া গিয়াছে। কবিতাব ছন্দে ও ভাবে, গানেৰ সুবে,

গল্পের লালিত্যে রবীন্দ্রনাথ যে ঐশ্বর্য্য প্রকটিত করিয়াছেন, তাহার ফলে বাঙ্গালা ভাষা, সাহিত্য ও সংস্কৃতি আধুনিক ভারতবর্ষের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ত বটেই, পৃথিবীর মধ্যে শ্রেষ্ঠ ভাষা, সাহিত্য ও সংস্কৃতির মধ্যে অগ্রতম বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। সত্য বটে যে, রবীন্দ্রনাথ বাঙ্গালা পদ্য ও গল্পের ভাষায় ইংরেজী ইডিয়ম কিছু কিছু প্রবর্তন করিয়াছেন, কিন্তু তাঁহা এমন বেমানুম ভাবে বাঙ্গালা হইয়া গিয়াছে যে, আর বিদেশী বলিয়া চিনিবার যো নাই। ভাষার শক্তি ও ঐশ্বর্য্য বৃদ্ধি ত এমনি করিয়াই হয়। অল্প ভাষার শব্দ ও প্রয়োগরীতি কিছু কিছু আত্মসাৎ করিয়া তবে ভাষার প্রসারলাভ হইয়া থাকে। সংস্কৃত সাহিত্যের প্রভাবও রবীন্দ্রনাথের লেখায় কম দেখা যায় না। কালিদাসের কবিতার, বিশেষ করিয়া মেঘদূতের, ইনি অসাধারণ ভক্ত। উপনিষদ হইতে আরম্ভ করিয়া সংস্কৃত ধর্ম্ম ও কাব্য সাহিত্যের সহিত ইহার ধারাবাহিক পরিচয় আছে। সেই জন্য রবীন্দ্রনাথের কাব্যে ভারতবর্ষীয় আধ্যাত্মিক চিন্তা-ধারার প্রবাহ স্পষ্ট হয় নাই। ভারতবর্ষীয় সংস্কৃতির প্রতি ইহার অসাধারণ শ্রদ্ধা। সেকালে তপোবনে গুরুগৃহে থাকিয়া ব্রহ্মচারী বালকেরা শিক্ষা লাভ কবিত। এই আদর্শের অনুসরণে ইনি বোলপুরের নিকটে শান্তিনিকেতনে ব্রহ্মচর্য্য বিদ্যালয় স্থাপন করেন। ১৯০২ খ্রীষ্টাব্দে স্থাপিত এই বিদ্যালয় এখন বিশ্বভারতীতে বিরাট পরিণতি লাভ করিয়াছে। এখানে স্কুল-কলেজের বিদ্যা, প্রাচ্য ভাষা ও ধর্ম্মবিষয়ক গবেষণা এবং সঙ্গীত ও চিত্রকলার অনুশীলন হইয়া থাকে। ইহার সংলগ্ন শ্রীনিকেতন প্রতিষ্ঠানে কৃষি ও উটজশিল্পের শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। বিশ্বভারতী এখন

ভারতবর্ষে শিক্ষা ও সংস্কৃতির অনুশীলনের অগ্রতম শ্রেষ্ঠ প্রতিষ্ঠান।

রবীন্দ্রকাব্যের প্রধান বিশেষত্ব—অর্থাৎ যাহাতে পূর্ববর্তী বাঙ্গালী কবিদের হইতে তাঁহার স্বাতন্ত্র্য দেখা যায় তাহা—হইতেছে এই। রবীন্দ্রনাথের কাব্যে বিষয়বস্তু, তাহা বহিঃ-প্রকৃতি হউক বা কোন ভাব অর্থাৎ আইডিয়া হউক, কবির মনে যে প্রতিক্রিয়া উপস্থিত করিয়াছে সেই অনুভূতিবই প্রকাশ। পূর্ববর্তী কবিদিগের কাব্যে বিষয়বস্তুরই প্রতিচ্ছবি প্রতিফলিত হইয়াছে। রবীন্দ্রনাথের প্রবর্তিত কাব্যধারায় কবিচেন্দ্র বিষয়বস্তুর মধ্যে ওতপ্রোত হইয়া এক অখণ্ডরূপ লাভ করিয়াছে। পূর্বের কাব্যবীতিতে কবিচিত্ত বিষয়বস্তু হইতে অনেকটা নিরপেক্ষ হইয়া দর্পণের মত শুধু আদর্শ প্রতিবিম্বিত করিত। রবীন্দ্রনাথের প্রবর্তিত কাব্যরীতিই এখন বাঙ্গালা সাহিত্যে অপ্রতিদ্বন্দ্বিভাবে চলিতেছে। দুই একটি ব্যতিক্রম যাহা সম্প্রতি দেখা যাইতেছে তাহা অনেকটা এক্সপেরিমেণ্ট বা “নূতন কিছু” করাব মত।

৩৬

রবীন্দ্র-সমসাময়িক আধুনিক যুগ : শরৎচন্দ্র

উনবিংশ শতাব্দীর শেষ দশক হইতেই রবীন্দ্রনাথের প্রভাব বাঙ্গালা কাব্যে অনুভূত হইতে থাকে ; বিংশ শতাব্দীর প্রথম হইতে সেই প্রভাব একচ্ছত্র হইয়া পড়িয়াছে। গদ্যরীতিতে এই প্রভাব পড়িতে কিছু বিলম্ব হইয়াছিল। এখন কিন্তু রবীন্দ্ররীতি এড়াইয়া গল্প-পন্থ রচনা করা অতিবড় শক্তিশালী

সাহিত্যিকের পক্ষেও অসম্ভব। সম্প্রতি কেহ কেহ অতি আধুনিক ইংবেজী কাব্যের মাছিমাঝে অনুকরণে কবিতা বচনাব প্রয়াস করিতেছেন; কিন্তু এই সকল কবিতার ভাষা না-ইংবেজী না-বাঙ্গালা, ভাব উদ্ভট ও উৎকট, এবং এগুলিকে কাব্যপৰ্য্যায়ের স্থান দিতে হইলে নূতন ধরণের সাহিত্যকচি ও সাহিত্যাদর্শ গঠন করিতে হইবে। কাব্যসৃষ্টির প্রেৰণা এবং ভাষায় উপযুক্ত দক্ষতা না থাকিলে শুধু অভিনবত্বের অবতারণা করিলেই যে কবিতা বচনা হয় না, তাহা এই শ্রেণীর সাহিত্যিকেরা প্রায়ই ভুলিয়া গিয়াছেন।

বরীন্দ্রযুগের আওতায় পড়িয়াও ষাঁহাবা ক্যাব্যবচনায় অল্পবিস্তর মৌলিকই দেখাইয়াছেন তাঁহাদের মধ্যে মুখ্যতম হইতেছেন অক্ষয়কুমার বড়াল (১৮৬৫-১৯১৯), দেবেন্দ্রনাথ সেন এবং সত্যেন্দ্রনাথ দত্ত (১৮৮২-১৯২২)। অক্ষয়চন্দ্র মোটামুটি প্রাচীনপন্থী ছিলেন বলা যায়, ইহাব কাব্যে বিহাবীলালের প্রভাব বিশেষ লক্ষণীয়। সত্যেন্দ্রনাথ প্রধান ভাবে ছিলেন ছন্দঃশিখী; তিনি ছন্দে অনেক নূতনত্ব সৃষ্টি করিয়াছেন। বিদেশী কবিতাকে ভাব ও ভাষা সমেত বাঙ্গালায় আত্মসাৎ করিতে তাঁহাব মত দক্ষতা আন কেহ দেখাইতে পাবেন নাই।

দ্বিজেন্দ্রলাল বায়েব (১৮৬৩ ১৯১৩) নাট্যকাব হিসাবে খুব খ্যাতি ছিল; কবিতা ও হাসিব গান বচনায় তিনি আবও ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। ক্ষৌবোদপ্রসাদ বিজ্ঞাবিবিনোদ কয়েকটি উৎকৃষ্ট গীতিনাট্য ও নাটক বচনা করিয়াছিলেন। ইহাদের কথা পূর্বে বলিয়াছি।

প্রবন্ধবচনায়, বিশেষ কবিতা বিজ্ঞানবিষয়ে, বামেন্দ্রসুন্দর

দ্বিবেদী মহাশয়ের (১৮৬৪-১৯১৯) জুড়ি অতীবধি বাঙ্গালা সাহিত্যে আবির্ভূত হয় নাই। ঊনবিংশ শতাব্দীর শেষে উপন্যাস এবং বড় গল্প রচনায় শ্রীশচন্দ্র মজুমদার নূতনত্বের অবতারণা করিয়াছিলেন। ইহার গড়ভঙ্গী যেমন অনাড়ম্বর তেমনি হৃদয়গ্রাহী। বিংশ শতাব্দীর প্রথমে উপন্যাসক্ষেত্রে নবাগতের মধ্যে দুইজন অসাধারণত্ব দেখাইয়াছেন, রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় (১৮৮৪-১৯৩০) ও শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় (১৮৭৩-১৯৩৮)। রাখালদাসের অধিকাংশ উপন্যাস ঐতিহাসিক। এই উপন্যাসগুলিতে গুপ্ত, পাল ও মোগল-যুগের ইতিহাসকে সজীব করিয়া পাঠকের সম্মুখে ধরা হইয়াছে। যথার্থ ঐতিহাসিক উপন্যাস বলিতে যাহা বুঝায় তাহা বাঙ্গালায় একমাত্র রাখালদাসই লিখিয়াছেন। হরপ্রসাদ শাস্ত্রীর বেণের তেয়ে ঠিক উপন্যাস না হইলেও এই শ্রেণীর একটি উপাদেয় গ্রন্থ।

ছোট গল্পের আসরে আমরা বিংশ শতাব্দীতে চারিটি প্রধান লেখককে পাইতেছি। রবীন্দ্রনাথের আওতায় ছোট গল্পেব ফসল আধুনিক বাঙ্গালা সাহিত্যে যেমন হইয়াছে এমন কাব্য, নাটক বা উপন্যাস কোন বিষয়েই হয় নাই। প্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়ের (১৮৭০-১৯৩৩) গল্প অনাড়ম্বর ও মধুর। রবীন্দ্রনাথের পরেই ইনি বাঙ্গালায় শ্রেষ্ঠ ছোট গল্প লেখক। ত্রৈলোক্যনাথ মুখোপাধ্যায় বাঙ্গালা সাহিত্যে অদ্ভুত রসের স্রষ্টা। ইহার কঙ্কাবতী উপন্যাসে (১২৯৯) অপরূপ রূপকথার রাজ্যে সম্ভব-অসম্ভবকে বিশেষ নিপুণতার সহিত মিলাইয়া দেওয়া হইয়াছে। ত্রৈলোক্যনাথের মুক্তামালা ও ডমরুচরিত বাঙ্গালা সাহিত্যের নব্য আরব্য-উপন্যাস। স্বল্প আয়োজনে

অনাবিল হাশুবসেব সৃষ্টিতে ত্রৈলোক্যানাথের সমকক্ষ এখনও কেহই আবির্ভূত হন নাই। কৰুণ বসের সমাবেশেও ইনি যে বিশেষ দক্ষ ছিলেন তাহাব প্রমাণ পাওয়া যায় ময়না কোথায় উপস্থাসে। ত্রৈলোক্যানাথের সহযোগিতায় তাঁহাব জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা কবি বঙ্গলাল মুখোপাধ্যায় বাঙ্গালা এন্সাইক্লোপীডিয়া বিশ্বকোষের পত্তন কবেন।

আধুনিককালে বাঙ্গালাদেশে সৰ্ব্বাধিক জনপ্রিয় গল্প ও উপস্থাস বচয়িতা শবৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ের বাঙ্গালা সাহিত্যে আবির্ভাব যেমন আকস্মিক তাহাব বচনাব সমাদবও তেমনি অসম্ভাবিত। তাঁহাব প্রথম প্রকাশিত বচনা বড়দিদি ভাবতী পত্রিকায় (১৩১৭ সাল) প্রকাশিত হয়। তাহার তিন চাবি বৎসব পরে যমুনা পত্রিকায় বিন্দুব ছেলে, বামের স্মৃতি প্রভৃতি অনেকগুলি ছোট ও বড় গল্প এবং চবিত্রহীন

- উপস্থাসেব কিয়দংশ প্রকাশিত হয়। তাহার পব ভাবতবর্ষ পত্রিকায় শবৎচন্দ্র আসব জাকাইয়া বসিলেন; দিবাজ বো, অবক্ষণীয়া, পল্লীসমাজ, শ্রীকান্তেব ভ্রমণকাহিনী ইত্যাদি গল্প বাঙ্গালী পাঠকেব মনোহরণ করিয়া লইল। সেই হইতে যত্নেব কয়েক মাস পূর্ব পর্য্যন্ত শবৎচন্দ্রেব লেখনী অজস্র গল্প উপস্থাস রচনা কবিয়া বাঙ্গালী পাঠক-সাধাবণের মন পরিতৃপ্ত কবিয়া আসিয়াছে। তাঁহাব শেষেব লেখাগুলি পূর্বেরকার লেখার তুলনায় অপকৃষ্ট, কেননা ইদানীং তিনি একজ্ঞেয়ী সাহিত্যিক এবং পাঠকের মুখ চাতিয়া লেখনী ধারণ করিতেন।

শবৎচন্দ্রেব গল্পভঙ্গী মূলতঃ ববীন্দ্রনাথের লেখাব উপব প্রতিষ্ঠিত হইলেও ইহাব এমন কয়েকটি নিজস্ব গুণ আছে

যাহা অল্প কাহারও লেখায় দেখা যায় নাই। শরৎচন্দ্রের লেখা অত্যন্ত সবল, ভাব প্রকাশ করিবার পক্ষে যতটুকু প্রয়োজন তাহার অতিরিক্ত একটি কথার প্রয়োগ নাই, অথচ ইহা বসহীন কথোপকথনের ভাষা নহে। আসল কথা হইতেছে, শরৎচন্দ্রের ভাষা বিষয়বস্তু একান্ত অল্পগত।

রবীন্দ্রযুগের মধ্যাহ্নে উদিত হইয়াও শরৎচন্দ্র যে নিজের স্নিগ্ধ কিরণজাল বিস্তারিত করিতে পারিয়াছিলেন, ইহা তাহার অসাধারণ ক্ষমতার পবিচায়ক। সাহিত্যশিল্প হিসাবে তাহার সব গল্প ও উপন্যাস হয়ত নিখুঁত নহে; কিন্তু শরৎচন্দ্রের অনন্ত-সাধারণ বিশেষত্ব হইতেছে দুঃখী-দবিত্ত-নিপীড়িতের প্রতি অজস্র সহানুভূতি। এই সহানুভূতি বাহিরের তৃতীয় ব্যক্তির নহে, অমুকম্পাও নহে, তাহাদের একজন হইয়া শরৎচন্দ্র যে সহানুভূতি মনে প্রাণে অনুভব করিয়াছিলেন তাহাই তিনি মনোজ্ঞ ভাষায় প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন। রবীন্দ্রনাথের সহানুভূতি কিছু কম নহে, কিন্তু তিনি একান্তভাবে কবি, তাহার চিত্তের প্রসার অপরিমিত বৃহৎ এবং ব্যাপক; তিনি যে দুঃখ-বেদনা অনুভব করিয়া কাব্যে ও গল্পে-উপন্যাসে প্রতিফলিত করিয়াছেন, তাহা তীব্রতামাত্রহীন, তাহা “রস”। রবীন্দ্রনাথ শ্রেষ্ঠ রসশ্রুতা, তাহার বসনুষ্টিতে আমাদের আত্মার সৌন্দর্য্যবোধ চরিতার্থ হয়, কিন্তু সে রস-সৃষ্টিতে আমাদের প্রাত্যহিক জগতের স্থূল মন সব সময় পরিতৃপ্ত হয় না। রবীন্দ্রনাথের গল্পগুচ্ছে ও উপন্যাসে আমরা পাঠি প্রধানতঃ এবং প্রচুরভাবে কাব্যরস। শরৎচন্দ্রের শ্রেষ্ঠ বচনার মধ্যেও এই জিনিষই পাওয়া যায়, কিন্তু যথেষ্ট তরল ভাবে; এবং তাহার অধিকাংশ

জনপ্রিয় রচনার কাব্যের রস যত না আছে, তাহার বেশী আছে গল্পের মোহ।

শরৎচন্দ্র সাহাদের সুখ দুঃখ চিত্রিত করিয়াছেন, তিনি যেন তাহাদেরই একজন—এই সমবেদনাই শবৎসাহিত্যের মূল কথা। শবৎচন্দ্রের সৃষ্ট চবিত্রগুলির কোন মাহাত্ম্য নাই, তাহা বা পাঁচপাঁচি মানুষ, দরিদ্র, সাধাবণ লোক। এই সমাজের সহিতই তাহার আত্যন্তিক পবিচয় ছিল বলিয়া ইহাদের ছবি তিনি মন দিয়া জলন্তভাবে আঁকিতে পারিয়াছিলেন, এবং এই চিত্রই পাঠক সাধাবণেব মন অনায়াসে হরণ করিয়া লইতে পাবিয়াছে। ধনী বা অভিজাত সমাজেব অভিজ্ঞতা শবৎচন্দ্রের ছিল না, সেই জন্ত যেখানে এই সমাজের চিত্র আঁকিয়াছেন সেখানে তিনি আশামুকপ কৃতকার্য হইতে পারেন নাই। সাংসারিক অভিজ্ঞতা শবৎচন্দ্রের যতটুকু ছিল তাহা গভীর ছিল বটে কিন্তু বিশেষ ব্যাপক ছিল না। এই কাবণে তাহার অতগুলি গল্প-উপন্যাসেব মধ্যে আমরা প্রায়ই একই নাবীচবিত্রের পুনরাবৃত্তি দেখিতে পাই।

অতি আধুনিক সময়ে বাংলা দেশে অনেক শক্তিশালী সাংগিত্যিক বাংলা সাহিত্যের শ্রীবৃদ্ধি করিয়াছেন এবং কবিতােছেন। তাহাদের সকলের সাহিত্যপ্রচেষ্টার আলোচনা বর্তমান গ্রন্থেব স্বল্প পবিসরের বাহিবে ॥

প্রধান প্রধান প্রাচীন বাঙ্গালা কাব্যের কালানুক্রমিক নিৰ্ঘণ্ট

দশম হইতে দ্বাদশ শতাব্দী

বৌদ্ধগান ও দোহা ।

পঞ্চদশ শতাব্দী

প্রথমার্দ্ধ—কৃষ্ণিবাসেব বামায়ণ ।

দ্বিতীয়ার্দ্ধ—বড়ু চণ্ডীদাসেব শ্রীকৃষ্ণকীর্তন, মালাধর
বন্দুর শ্রীকৃষ্ণবিজয়, বিপ্রদাসের মনসামঙ্গল, বিজয়
গুপ্তেব মনসামঙ্গল (?) ।

ষোড়শ শতাব্দী

প্রথমার্দ্ধ—কবীন্দ্রের মহাভারত, শ্রীকব নন্দীব
অশ্বমেধ-পব, মাধব আচার্য্যের শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল,
ভাগবতাচার্য্যেব শ্রীকৃষ্ণপ্রেমভবঙ্গিনী, বন্দাবন-
দাসেব চৈতন্যভাগবত, লোচন দাসেব চৈতন্য-
মঙ্গল ও দুর্লভসাব ।

দ্বিতীয়ার্দ্ধ—ঈশান নাগরের অদ্বৈতপ্রকাশ, হরিরচণ
দাসের অদ্বৈতমঙ্গল, কৃষ্ণদাস কবিরাজেব চৈতন্য-
চরিতামৃত, কৃষ্ণদাসেব শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল, জয়ানন্দের
চৈতন্যমঙ্গল, বংশীবদনের মনসামঙ্গল নারায়ণ
দেবের মনসামঙ্গল ও কালিকাপুরাণ, মাণিক
দত্তের চণ্ডীমঙ্গল, মাধব আচার্য্যের চণ্ডীমঙ্গল,

মাধব আচার্য্যের গঙ্গামঙ্গল, শ্রীকৃষ্ণকঙ্করের
শ্রীকৃষ্ণবিলাস, মুকুন্দরামের চণ্ডীমঙ্গল, কবিবল্লভের
রসকদম্ব, নিত্যানন্দ দাসের প্রেমবিলাস, “দুঃখী”
শ্যামদাসের গোবিন্দমঙ্গল, কবিশেখবের
গোপালবিজয় ।

সপ্তদশ শতাব্দী

প্রথমার্দ্ধ—কাশীরামের মহাভারত ; গুরুচরণ
দাসের প্রেমামৃত, যতনন্দন দাসের কর্ণানন্দ,
বিদগ্ধমাধব, দানকেলীকৌমুদী ও গোবিন্দ-
লীলামৃত, গদাধর দাসের জগৎমঙ্গল, দোলং
কাজীর সতী ময়নামতী, রাজবল্লভের বংশীবিলাস,
গতিগোবিন্দের বীররত্নাবলী ।

দ্বিতীয়ার্দ্ধ—গোপীবল্লভ দাসের রসিকমঙ্গল,
আলাওলের পদ্মাবতী, সিকন্দরনামা, ও হস্তপৈকব
ইত্যাদি, ক্ষমানন্দের মনসামঙ্গল, অদ্ভুত আচার্য্যের
বামায়ণ, ভবানন্দের হরিবংশ, পরশুরামেব
শ্রীকৃষ্ণমঙ্গল, মনোহর দাসের অম্বরগবল্লী,
মনোহর দাসেব দিনমণিচন্দ্রোদয়, কালিদাসের
মনসামঙ্গল, কমললোচনের চণ্ডিকাবিজয়,
ভবানীপ্রসাদের তুর্গামঙ্গল, কপনারায়ণের তুর্গা-
মঙ্গল, গোবিন্দদাসের কালিকামঙ্গল, রতিদেবের
সুগলুক, কবিচন্দ্রের শিবায়ন, কৃষ্ণরামেব কালিকা-
মঙ্গল, ষষ্ঠীমঙ্গল ও রায়মঙ্গল, সৈয়দ শুলতানের
জ্ঞানপ্রদীপ, ও নবীবংশ ইত্যাদি, শেখ চাঁদের

ବସୁଲବିଜୟ, ମୌତାବାମେବ ଧର୍ମମଞ୍ଜଳ, କପବାମେବ
ଧର୍ମମଞ୍ଜଳ, ଆମ ପଞ୍ତିତେବ ଧର୍ମମଞ୍ଜଳ ।

ଅଷ୍ଟାଦଶ ଶତାବ୍ଦୀ

ପ୍ରଥମାର୍ଦ୍ଧ—କବିଚନ୍ଦ୍ରବ ଗେବିନ୍ଦମଞ୍ଜଳ, ପ୍ରମଦାସେବ
ଚୈତନ୍ୟଚନ୍ଦ୍ରାଦୟକୋୟୁଦୀ ଓ ବଂଶୀଶିଳ୍ପୀ, ଚନ୍ଦ୍ରବି
ଚକ୍ରବର୍ତ୍ତୀବ ଓକ୍ତିବକ୍ତାବ ଓ ନବୋତ୍ଥମବିଳାସ,
ଏନମାଲୋ ଦାସେବ ଜୟଦେବଚବିତ୍ର, ବାମଜୀବନେବ
ମନସାମଞ୍ଜଳ ଓ ଆଦିତାଚବିତ୍ର, ଘନବାମେବ ଧର୍ମମଞ୍ଜଳ,
ବାମେଶ୍ବରେବ ଶିବାୟନ. ଜୀବନକୃଷ୍ଣ ମୈତ୍ରେବ ମନସା-
ମଞ୍ଜଳ, ଭବାନୀଶଙ୍କରେବ ମଞ୍ଜଳଚଣ୍ଡୀପୀଠାଳିକା,
ମହାଦେବ ଚକ୍ରବର୍ତ୍ତୀବ ଅନିଲପୁରାଣ ।

ଦ୍ୱିତୀୟାର୍ଦ୍ଧ—ଭାବଚନ୍ଦ୍ରବ କାଳିକାମଞ୍ଜଳ, ଯୁକ୍ତାବାମ
ସେନେବ ସାବଦାମଞ୍ଜଳ, ବାମଦାସ ଆଦକେବ ଅନାଦି-
ମଞ୍ଜଳ, ବାମପ୍ରସାଦେବ କାଳିକାମଞ୍ଜଳ, ଯାଗିକ
ଗାନ୍ଧୁଲୋବ ଧର୍ମମଞ୍ଜଳ, ଜୟନାବାଧେବେବ କାଶୀଖଣ୍ଡ,
ନିଶ୍ଚିନ୍ତରେବ ଜଗନ୍ନାଥମଞ୍ଜଳ ।





३—इरिजन पाठशाला—इसमें आनेवाले छात्रों की संख्या काफी है और पुस्तकों का भी अच्छा प्रबन्ध है।

४—सेवा समिति—लगभग ५० स्वयंसेवक हैं जो सदैव सेवाकार्य में संलग्न रहते हैं।

श्री जैनरत्न विद्यालय भोपालगढ़ (मारवाड़)

भोपालगढ़ और उसके आसपास की शिक्षा के लिये इसकी स्थापना १५ जनवरी सन् १९२९ में हुई। इसने जैन संस्थाओं में एक उच्च आदर्श स्थान प्राप्त कर लिया है। इससे कई छात्र उच्च परीक्षाओं पास कर चुके हैं। छात्रों के लिये छात्रालय का भी प्रबन्ध है। इसमें औषधालय व छात्रों के लिये व्यायाम आदि का भी अच्छा प्रबन्ध है।

श्री मारवाड़ी छात्र-संघ, गोरखपुर

मारवाड़ी छात्रों के उत्साह से स्थापित एक अच्छी संस्था है। इसको संस्थापित हुए कई वर्ष व्यतीत हो गये हैं। मारवाड़ी समाज की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यवसायिक, शारीरिक और साहित्य विषय की उन्नति करना ही इसका मुख्य ध्येय है। इसने अपनी एक शाखा 'मारवाड़ी व्यायामशाला' नाम से खोली है जिसमें उत्साही सदस्यों को व्यायाम की शिक्षा दी जाती है। इसके छात्र समाज सेवा का सुन्दर स्वरूप समुपस्थित करने वाले हैं।

मारवाड़ी युवक क्लब, देहली

इस संस्था की स्थापना युवकों में संगठन, जागृति, वाक्शक्ति एवं सुयोग्यता पैदा करने के लिये की गई। इसमें नियमित रूप से सदस्यों में बहस हुआ करती है। यहां पर खेल खेलने का भी प्रबन्ध है।

मारवाड़ी यंगमैन एसोसियेशन, देहली

इस संस्था को स्थापित हुए कई वर्ष बीत गये। स्थानीय मारवाड़ी समाज में जो सुधार हुये हैं और जागृति हुई है वह इस संस्था के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उद्योग का ही परिणाम है।

संघ का उद्देश्य निर्धन विद्यार्थियों की सहायता करना है। संघ के तत्वावधान में विद्वान व्यक्तियों के माषण कराये जाते हैं और बड़ा बाजार क्षेत्र में यह संघ ही ऐसी संस्था है, जो जनता की आवश्यक सेवा कर रही है। संघ में पुस्तकालय भी है, जहाँ पर हिंदी, बंगला और अंग्रेजी की पुस्तकों का एक विशाल भंडार है।

हिन्दी साहित्य-समिति पुस्तकालय, कटक

उड़ीसा प्रांत के हिंदी सीखे हुये बन्धुओं के लिये सर्वश्री निरंजीलाल सूरेका के परिश्रम से ता० १-६-३८ को इस पुस्तकालय की स्थापना हुई, जिसमें कलकत्ते के श्रीमान सैठ सूरजमलजी नागरमलजी, श्री श्यामदेवजी देवड़ा व श्री रंगलालजी मोदी आदि की सहायता से इसमें पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हैं और दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्र पत्रिकाएँ भी आती हैं।

श्री माहेस्वरी विद्या-प्रचारक मण्डल, पूना

इस संस्था का उद्घाटन दक्षिण भारत की सुप्रसिद्ध फर्म सैठ दयारामजी सूरज मलजी लाहोटी के मालिक श्री वैकटलालजी लाहोटी के कर कमलों से ता० ६ अप्रैल १९४१ ई० को हुआ।

मारवाड़ी नवयुवक संघ, धनबाद

इस संघ को स्थापित हुये कई वर्ष व्यतीत हुये। इसमें पुस्तकालय स्वास्थ्य (व्यायाम) शिक्षा, सेवा, मनोरंजन, सामाजिक एवं धार्मिक विभाग हैं, जो यथाशक्ति अपना काम जोरों से कर रहे हैं।

कुष्ठिया सेवक-संघ

यह संघ कुष्ठिया के मारवाड़ियों एवं कतिपय अन्य वर्गों के सहयोग से चल रहा है। संघ के सदस्यों की संख्या पर्याप्त है एवं संघ द्वारा निम्नांकित विभाग संचालित किये जाते हैं :—

- १ व्यायाम शाला—साधनों से पूर्ण मैदान में नदी तट पर निर्मित है। इसमें सदस्यों की संख्या लगभग ५० है।
२. लाइब्रेरी—पुस्तकों की संख्या लगभग १००० है और अखबार भी आते हैं। रोज़ आने वालों की संख्या भी अधिक है।

परिच्छेद ७

सार्वजनिक संस्थायें तथा औद्योगिक प्रतिष्ठान

आधुनिक युग में राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों की उन्नति और प्रगति संस्था के रूप से ही सम्भव मानी जाती है। “संघे वाक्तिः कलौयुगे” के रूप से भारतीय आदर्श में भी संस्था और सत्त्व की महत्ता स्वीकार की जाती है। राजनीतिक आगरण की लहर में पड़ कर देश की सामाजिक अवस्था में भी लहरें उठीं अतएव गरवाही समाज में भी अनेकों सामाजिक संस्थायें गठित की जा चुकी हैं। व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्रों में भी संस्थानों की शैली में व्यापक संगठन के आधार पर परिवर्तन हुआ है।

कुछ विशेष दोष

अपनी सामाजिक संस्थाओं का परिचय उपस्थित करने के पूर्व हमें संस्था के गठन, उसके उद्देश्यों का निर्धारण और उसकी पूर्ति, उसके सफल संचालन तथा उसे अर्जित और बनाने आदि के प्रश्न पर उपस्थित होने वाली कुछ बाधाओं पर प्रकाश डालने की आवश्यकता महसूस होती है। अन्य वर्गों की अपेक्षा द्वारा समाज औद्योगिक और आर्थिक रूप से अधिक क्षमता वाला है, इसलिये प्रायः ऐसा कहा जाता है कि संस्थाओं का गठन होने में देर नहीं लगती—फिर भी संस्थाओं के संचालन का कार्य बड़ा ही असन्तोषप्रद रहता है।

संस्थाओं की ऐसी दुर्गति का प्रचल कारण यह है कि संस्था के उद्देश्य की महत्ता पर ठंडे दिल से विचार करने की किसी की फुरसत नहीं रहती और इसी

कारण से निःस्वार्थ और निष्कपट कार्यकर्ताओं का अभाव संस्थाओं में रहता है। संस्था के उद्देश्य को लेकर उसके सामूहिक हित-साधन का कार्य असम्भव बन जाता है तथा उसमें वैयक्तिक स्वार्थ और पदलोभ्यता आदि के ऐसे गुणों का पैदा हो जाता है कि उनके कारण संस्था की जीवित अवस्था भी उसकी शुरुआत के तुल्य बन जाती है।

अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि समाज की कई एक सुदृढ़ और विस्तृत संस्थाओं के अन्दर भी दिन-रात धाधा-गाँधी ही चलती हैं। वैयक्तिक प्रभाव बढ़ जाने से समस्त कर्मचारी वर्ग संस्था का सेवक और सहायक न रहकर व्यक्ति-पूजक ही बन जाता है, जिसका फल यह होता है कि संस्था के समस्त महान् उत्तरदायित्व का समय आने पर खर्च तो लाखों रुपये तक का हो जाता है, परन्तु ठोस कार्य बिल्कुल ही नहीं हो पाता।

दूसरा कारण है सार्वजनिक संस्थाओं के धन के व्यय की विशुद्धता की संस्थाओं के कोष को खर्च करने की कोई अर्थ-शास्त्र सम्मत विधि नहीं होती। अर्थात् सुप्त या हाराम की रकम समझ कर उसको खर्च किया जाता है, जिसका फल यह होता है कि संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति को दिशा में उसका धन अंश मात्र भी खर्च न होकर व्यर्थ की मर्दों में तथा वैयक्तिक आवश्यकताओं की पूर्ति में ही खर्च होता रहता है। दूसरी ओर संस्था के नाम पर भी कलंक आता है और, उसको किसी उड़ाई जाने लगती है तथा उस पर से जनता का विश्वास भी उठने लगता है।

“चन्दा”

चन्दा का नाम भी आजकल एक विशेष महत्वपूर्ण विषय बन गया है। आम तौर पर हमारे समाज के आदमी चन्दा वसूल करने वालों का मुँह देख कर या नज़र नाम सुन कर ही चन्दा देते हैं। यदि चन्दा माँगने वालों में २-४ बड़े आदमी होते हैं, तो बड़ी निश्चिन्तता के साथ मारवाही भाई चन्दा दे देते हैं, भले ही एकत्र होकर वह चन्दे की रकम किसी संस्था के शुभ कार्य में न लगे। यदि चन्दा माँगने वाले आदमी साधारण होते हैं, तो उन्हें कोई चन्दा देने के लिये तैयार नहीं होता। यदि कोई देता भी है, तो बहुत कम ही देता है, भले ही परीषद चन्दा माँगने वाले आदमियों की कर्तव्य-परायणता सुनिश्चित हो। इस प्रकार चन्दे की प्रणाली से

